व्यंग्य विधा के परिप्रेक्ष्य में हरिशंकर परसाई साहित्य का मूल्यांकन

शोध-प्रबन्ध

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

डी.फिल्. उपाधि हेतु

२००२

निर्देशिका

डॉ. निशा अग्रवाल

हिन्दी विभाग,

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

प्रस्तुति

अजय कुमार पाण्डेय

हिन्दी विभाग

भूमिका

शोध विषय का चयन किसी शोधार्थी के लिए गम्भीर एव महत्वपूर्ण समस्या होती है। मेरे समक्ष भी यह समस्या थी। इसी उधेडबुन मे जब प्रस्तुत विषय का सुझाव निर्देशिका डॉ० निशा अग्रवाल की ओर से आया, मैने विचार करने पर पाया कि यह विषय जितना नवीन और प्रासगिक है उतना ही मेरी रुचि का भी। मैने इस विषय पर कार्य करना सहर्ष स्वीकार कर लिया और इतना ही नही, इसे चुनौती के रूप मे भी ग्रहण किया।

जहाँ तक मेरी जानकारी है, इस विधा पर उत्तर–प्रदेश के विश्वविद्यालयो मे शायद ही कोई कार्य हुआ है। हाँ महाराष्ट्र, बिहार और मध्य–प्रदेश के कतिपय विश्वविद्यालयो मे इस विषय पर कुछ कार्य अवश्य हुआ है।

साहित्य का जीवन से गहरा सम्बन्ध होता है। साहित्य मे जीवन की व्याख्या होती है तो व्यग्य मे जीवन की आलोचना। जीवन मे विसगति, विकृति और सतहीपन का एहसास ही व्यग्य को जन्म देता है। सफल व्यग्यकार के लिए यह अति आवश्यक है कि वह विसगति पूर्ण स्थितियो एव आडम्बर पूर्ण जीवन की परतों को उघाडे, चाहे वह स्वय मे ही क्यो न हो।

हिन्दी मे व्यग्य की सुदीर्घ परम्परा नहीं है लेकिन सुदृढ परम्परा अवश्य है। आधुनिक हिन्दी व्यग्य अपनी विकास यात्रा में क्रमश. प्रौढ़ होता गया। भारतेन्दु के समय में व्यग्य लेखन प्रारम्भ तो हुआ, लेकिन परतन्त्र भारत में अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता न होने के कारण व्यग्य की धार अधिक तेज नहीं हो पायी। परवर्ती काल में रचनाकारों ने जोखिम उठाने का साहस नहीं दिखलाया। फलतः व्यंग्य लेखन अवरुद्ध हो गया। क्रान्तिकारी कवि निराला ने प्रारम्भ में व्यग्य लेखन अवश्य किया, लेकिन कालान्तर में प्रगतिशील विचारों की तरफ मुड़ गये। वर्तमान व्यग्य को परसाई ने अकेले अपने दम पर विद्या के रूप में प्रतिस्थापित करने

का कार्य किया। आधुनिक सन्दर्भो मे व्यग्य और परसाई एक–दूसरे के पर्याय है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रो में तीव्र गति से परिवर्तन हुआ। चारो तरफ 'अन्धा युग' कायम हो गया। अधिकाश लोगो ने लोभ और स्वार्थ से प्रेरित हो कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। देश की, समाज की, चिन्ता नही थी। इसी समय प्रबुद्ध लेखको के एक वर्ग ने उन लोगो के ऊपर आक्रोशित होकर 'शब्द–बाण' छोडना प्रारम्भ किया, जो इस स्थिति के लिए जिम्मेदार थे। परसाई ने तो 'आधुनिक रावण' को मारने के लिए अपने कमान से एक साथ कई बाण छोडे, जिससे सम्पूर्ण कुव्यवस्था की जड को समूल नष्ट किया जा सके।

परसाई की सक्रियता के फलस्वरूप ही हिन्दी व्यग्य का परिष्कृत रूप हमारे सामने है। इन्होने अपनी प्रतिबद्धता से व्यग्य को गम्भीर लेखन का दर्जा दिलाया। व्यग्य लेखन की परम्परा मे कबीर का नाम सर्वप्रथम आता है। हिन्दी का गद्य व्यग्य लेखन 'अन्धेरनगरी' और 'शिवशम्भु के चिट्ठे' से माना जाना चाहिए। तब से अब तक व्यग्य लेखन क्षेत्र में अनेक पडाव आये, जहाँ रुक कर प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे चर्चा केन्द्रित की गयी है।

परसाई साहित्य के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे विभिन्न कोणो से करने का प्रयास किया गया है। क्योंकि जहाँ कही भी परसाई साहित्य एव व्यग्य विधा पर कार्य हुआ भी है वहाँ उनके समग्र साहित्य को अध्ययन का विषय नही बनाया गया है। मैंने अपने शोध प्रबन्ध में व्यग्य विधा के परिप्रेक्ष्य मे परसाई के समग्र साहित्य का अध्ययन किया है। व्यग्य की सुदृढ परम्परा मे परसाई जी का योगदान क्या है? परसाई जी अपने पूर्व के व्यग्यकारों से क्या कुछ ग्रहण किया तथा परवर्ती रचनाकारों को किस रूप में प्रेरित किया ? व्यंग्य विधा को परसाई की मौलिक देन क्या है ? और किस प्रकार वह समकालीन व्यंग्यकारों से भिन्न है ? पूर्ववर्ती व्यग्यकारों की परम्परा में उनका स्थान क्या

है तथा परवर्ती रचनाकारो के लिए उनका महत्व क्या है ? न केवल भारतीय साहित्य मे वरन् पाश्चात्य साहित्य मे भी व्यग्य की परम्परा को देखने की चेष्ठा की गयी है। इस सन्दर्भ मे व्यग्य चित्र को भी जानने समझने की एक छोटी सी कोशिश की गयी है। वस्तुत विषय साम्य होने पर भी यह तो शोधक की दृष्टि है जो उसे नवीनता और मौलिकता प्रदान करती है।

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत 'व्यग्य-विवेचन' प्रस्तुत किया गया है। इसमे व्यग्य शब्द का अर्थ, परिभाषा, व्यग्य और व्यग के अन्तर को समझाने का प्रयास हुआ है। विभिन्न उपशीर्षको मे व्यग्य और वक्रोक्ति, व्यग्य और प्रहसन, व्यग्य और व्यग्य-चित्र, व्यग्य और 'सटायर', व्यग्य और त्रासदी, कामदी, आदि का भी विवेचन किया गया है। व्यग्य की परम्परा को सस्कृत साहित्य, पाश्चात्य साहित्य तथा भारतीय भाषाओं के साहित्य के परिप्रेक्ष्य मे भी देखने का प्रयास किया है। व्यग्य की रचना प्रक्रिया, व्यग्य के प्रयोजन, व्यग्य के भेद, व्यग्य के तत्व, व्यग्य और हास्य के अन्तर को भी इस अध्याय के अन्तर्गत विवेचित किया गया है।

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत हिन्दी व्यग्य परम्परा, स्वरूप और विकास को दिखलाया गया है। इसमे व्यग्य के विकास के उत्तरदायी कारणों, विकास का स्वरूप और स्थापक काल के प्रमुख व्यग्यकारो के योगदान का विश्लेषण किया गया है। इस अध्याय के अन्तर्गत कबीर, भारतेन्दु और उनकी मण्डली, निराला, प्रेमचन्द, नागार्जुन, त्रिलोचन, सर्वेश्वर, अमृतलाल नागर आदि के व्यग्य के विकास में किये गये योगदान को देखने का कार्य किया गया है। व्यग्य की शैली से विधा तक की यात्रा पर इस अध्याय में विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

तृतीय अध्याय में व्यग्य विधा की दृष्टि से प्रमुख व्यंग्यकारों एवं उनके साहित्यिक योगदान के महत्व को समकालीनता की दृष्टि से विश्लेषित करने का कार्य किया गया है।

इस अध्याय मे व्यग्य रचनाकारो मे– शरदजोशी, रवीन्द्र नाथ त्यागी, नरेन्द्र कोहली, के० पी० सक्सेना, मनोहर श्याम जोशी, श्रीलाल शुक्ल, अमृत राय आदि के शिल्प, शैली एव विषय वस्तु का विश्लेषण किया गया है। व्यग्य समीक्षको तथा रचनाकारो मे डॉ० बालेन्दु शेखर तिवारी, प्रेम जनमेजय, डॉ० बरसाने लाल चतुर्वेदी, सुदर्शन मजीठिया, डॉ० शकर पुणताम्बेकर आदि के साहित्यिक अवदान को भी विभिन्न दृष्टिकोणो से विश्लेषित करने का कार्य किया गया है।

इसके पश्चात् व्यग्य की दूसरी पीढी के रचनाकारो को भी लिया गया है जिनका काल सामान्यत १९७० के बाद का है। इनकी भी शैली, शिल्प एव वस्तु–कथ्य का विश्लेषण किया गया है।

चतुर्थ अध्याय मे हरिशकर परसाई की जीवन वृत्तियाँ, जीवन–परिचय, जीवन–सघर्ष, जीवन–दर्शन के साथ, विचार धारा एव आदर्श को रेखाकित किया गया है। परसाई, कबीर और मार्क्स से सबसे अधिक प्रभावित थे। इसके अलावा वे गोर्की, चेखव, बर्नाड शॉ, तुलसी एव मुक्तिबोध से भी प्रभावित थे। इसको इस अध्याय का विषय बनाया गया है। इसी अध्याय मे परसाई की सम्पूर्ण रचना को उपन्यास, कहानी, निबन्ध, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, कालम आदि के आधारो पर बाँट करके शैली, शिल्प, भाषा तथा विषय वस्तु का विश्लेषण किया गया है।

पंचम अध्याय में समकालीन कहानी, नयी कहानी, व्यग्य का सौन्दर्य शास्त्र, मार्क्सवादी विचार धारा और परसाई, सामयिक राजनीतिक क्रान्ति और परसाई, परसाई का योगदान, परसाई का साहित्य, परसाई साहित्य की विशेषताए, अन्य साहित्यकारो से उनका पार्थक्य और साहित्य में स्थान आदि विषयों का विवेचन किया गया है। परसाई साहित्य के विश्लेषण क्रम में उनकी सीमाओं को भी रेखांकित किया गया है। इस अध्याय में समकालीनता

बनाम कालजयिता आदि को भी विश्लेषित किया गया है।

षष्ठ् अध्याय उपसहार के रूप में है जिसमे व्यग्य विधा की दृष्टि से परसाई के सम्पूर्ण साहित्य को विश्लेषित करते हुए उसे सार रूप मे प्रस्तुत किया गया है।

विषय चयन से लेकर प्रबन्ध प्रस्तुत होने तक श्रद्धेया **डॉ० निशा अग्रवाल जी** की प्रेरणा एव कुशल मार्ग निर्देशन के फलस्वरूप ही शोध का यह दुरूह कार्य अति सरल होकर सम्पन्न हो सका। "मातृविहीन हृदय" मातृतुल्य 'स्नेहमूर्ति' की छाया मे आकर अक्सर अपार स्नेह पाकर रोने को उद्धत होता था। ऐसी 'स्नेहमूर्ति' को आभार प्रकट करना धृष्टता होगी। मै उन्हे शत्-शत् नमन करता हूँ। प्रो० सत्य प्रकाश मिश्र, डॉ० मीरा दीक्षित आदि गुरुजनो की प्रेरणा, प्रोत्साहन तथा मार्ग निर्देशन भी मुझे बराबर मिलता रहा। इन सबके प्रति हृदय सदा श्रद्धावनत् रहेगा।

'परिवार' के प्रत्येक सदस्य का प्रेम और सहयोग मुझे हमेशा प्रेरित करता रहा है। इन सबके प्रति मै हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। अपने 'आत्मीय' सभी मित्रो का सहयोग और प्रेरणा मेरे लिए सबल रहा है।

अन्त मे जिन सस्थाओं तथा 'व्यक्तियो' ने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इस गहन कार्य मे मुझे सहयोग, प्रेरणा एव प्रोत्साहन दिया, उन सब के प्रति हार्दिक आभार ज्ञापित करते हुए यह शोध-प्रबन्ध मैं बुध समाज को समर्पित करता हूँ।

अजयकुमारपाण्डेय
१५-१२-२००२ **अजय कुमार पाण्डेय**

विषय-प्रवेश

प्रथम अध्याय
व्यंग्य विवेचन

व्यंग्य-विवेचन

मनुष्य की विकलागता की भाँति समाज की भी विकलागता होती है जो मनुष्य की विकलागता से अधिक त्रासद है। मनुष्य की विकलागता तो कृत्रिम ससाधनो द्वारा समाप्त की जा सकती है लेकिन समाज की विकलागता नही।

व्यग्यकार समाज के उन अगो की तस्वीर प्रस्तुत करता है जो विकृत हो गया है और व्यग्य के द्वारा वह विकलाग समाज के अगो को धारदार नश्तर चुभाकर बाहर करने की कोशिश करता है। पगु व्यवस्था, जड जीवन पद्धति पर व्यग्यकार अपने सफल अस्त्र व्यग्य के माध्यम से सर्जनात्मक प्रहार करता है।

व्यग्य की उत्पत्ति

भारतीय परम्परा मे व्यग्य "ध्वनि" के अर्थ मे प्रतिपादित किया गया है। व्यजना शक्ति के द्वारा व्यग्यार्थ की प्रतीति होती है। ध्वन्याचार्य आनन्दवर्द्धन के अनुसार –

यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थो ।
व्यड्क्त. काव्यविशेष स ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः ।।[१]

(ध्वन्यालोक – १/१३)

अर्थात् "जहाँ अर्थ स्वय को अथवा शब्द अपने अर्थ को गुणीभूत करके उस (प्रतीयमान अर्थ) को अभिव्यक्त करते हैं उस काव्य विशेष को विद्वान लोग ध्वनि कहते हैं।" तात्पर्य यह है कि वाच्यार्थ की अपेक्षा जहाँ व्यग्यार्थ प्रधान हो वह ध्वनि काव्य है। वैसे तो किसी भी शब्द या वाक्य से कोई न कोई व्यग्यार्थ ही जा सकता है, लेकिन प्रत्येक व्यग्यार्थ को ध्वनि काव्य नहीं कहा जा सकता है। वस्तुतः चमत्कारी व्यग्य ही काव्य के रूप मे समाहित हो सकता है"।[२]

---

१ ध्वन्यालोक – रचयिता–अभिनव गुप्त पाद, हिन्दी व्याख्याकार, आचार्य जगन्नाथ पाठक–१०२

२ डॉ निशा अग्रवाल – भारतीय काव्य शास्त्र, पृष्ठ – ८०

नालन्दा विशाल शब्द सागर मे "शब्द की व्यजनावृत्ति से प्रकट होने वाले अर्थ को व्यग्य की व्युत्पत्ति का उत्स माना गया है।"[१] हिन्दी लघु शब्द सागर के अनुसार "व्यग्य का अर्थ है, शब्द का वह गूढ अर्थ जो उसकी व्यजना वृत्ति के द्वारा प्रकट हो (ताना, चुगली)।[२] डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी "ध्वनि और वक्रोक्ति जैसे शब्दो के मिलते-जुलते अर्थ के विराट सवाहक के रूप मे व्यग्य की परिकल्पना करते है।"[३]

व्यजना वृत्ति द्वारा अर्थ-प्रतीति होती है। यह एक सर्वमन्य तथ्य है किन्तु जिस विशिष्ट अर्थ मे व्यग्य का आज प्रयोग हो रहा है वह परम्परागत अर्थ से भिन्न है।

व्यंग्य और वक्रोक्ति

ग्यारहवी शताब्दी पूर्वार्द्ध के कश्मीरी विद्वान कुन्तक ने वक्रोक्ति का लक्षण इस प्रकार बताया – "वक्रोक्तिरेव वैदग्ध्य भगी भणिति रुच्यते" अर्थात् – वक्रोक्ति-वैदग्ध्य भणिति है। कवि कर्म की कुशलता का नाम है वैदग्ध्य और भगी का अर्थ है – विच्छिति, चमत्कार, चारुता। भणिति से तात्पर्य है कथन प्रकार। इस प्रकार वक्रोक्ति कवि कर्म कौशल से उत्पन्न होने वाले चमत्कार पर आश्रित कथन प्रकार है।"[४]

वक्रोक्ति के मूल मे 'वाग्वैदग्ध्य' निहित है। लेकिन व्यग्य, वक्रोक्ति की भाँति केवल वाग्वैदग्ध्य नही है। वह एक पूर्वनियोजित प्रतिबद्ध प्रहार होता है जिसके मूल में असामाजिक तथ्यो के विध्वस द्वारा स्वस्थ निर्माण की कामना निहित होती है। वक्रोक्ति, व्यग्य की सृष्टि मे उपयोगी अस्त्र हो सकता है लेकिन बगैर सामाजिक प्रतिबद्धता के हर वक्र उक्ति व्यग्य नही कहला सकता। वक्रोक्ति के द्वारा हास, परिहास, उपहास, उपालम्भ, अतिशयोक्ति व्याजोक्ति

---

१ नालन्दा विशाल शब्द सागर – पृष्ठ – १३०८

२ लघु हिन्दी शब्द सागर – पृष्ठ ९२६, हिन्दी नागरी प्रचारिणी सभा

३ डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – हिन्दी का स्वातन्त्र्योत्तर हास्य एव व्यग्य, पृष्ठ २१

४ डॉ निशा अग्रवाल – भारतीय काव्य शास्त्र – पृष्ठ १०४

विरोधाभास, भर्त्सना, आक्षेप, छिद्रान्वेषण आदि व्यग्य को धारदार बनाने वलो अस्त्रो की सृष्टि हो सकती है लेकिन वह व्यग्य नही है। अत वक्रोक्ति मात्र व्यग्य नही है, वह व्यग्य का माध्यम अवश्य है।

व्यंग्य और सटायर

हिन्दी मे प्रचलित 'व्यग्य' शब्द अग्रेजी के 'सटायर' का पर्याय माना जाता है। ६५ ई पू ग्रीस मे फलो की प्रथम फसल की खुशी मे नकल या स्वाग के रूप मे जो ग्रामीणोत्सव होता था उसे सटायर कहते थे। जिसका अर्थ होता है अर्ध मानव- अर्ध पशु।[१] रोमन लोग Sathyos का प्रयोग Satıre के अर्थ मे नही करते थे। वे गाली, गलौज से युक्त, अश्लील, अमर्यादित नादको के लिए Satyrs का प्रयोग करते थे।

अग्रेजी का Satıre शब्द लैटिन के Satura से बना है जिसका अर्थ होता है पूर्ण या भरा-पूरा। Satura का एक अर्थ खट्टे फलो का सलाद भी है। आधुनिक Satıre ने सम्भवत मिश्रण का गुण इससे ग्रहण कर लिया और व्यग्य विद्या मे विभिन्न विद्याओ के मिश्रित रुप को अपनाया।

अग्रेजी 'सटायर' के पर्याय व्यग्य के अर्थ को लेकर विद्वानो मे मतैक्य नही है। डॉ हरदेव बाहरी 'सटायर' के लिए प्रहसन काव्य, विद्रूपात्मक साहित्य, व्यग्य-साहित्य, व्यग्य लेख उपहास-लेख, मजाक आदि अर्थों के प्रयोग को महत्त्व देते है।[२] रामचन्द्र वर्मा 'व्यग्य-गीत' को ही 'सटायर' के अर्थ में प्रयुक्त होने का आग्रह करते है। बलदेव मिश्र 'सटायर' के हास्य के व्यजना पक्ष पर जोर देने वाला मानते हैं।[३]

---

१ गिलबर्ट रिघेट - दि एनाटामी आफ सटायर, पृष्ठ २३२

२ डॉ हरदेव बाहरी - वृहत अग्रेजी-हिन्दी कोष, भाग एक - पृष्ठ १६३७

३ बलदेव प्रसाद मिश्र - हिन्दी साहित्य में हास्य एव व्यग्य, पृष्ठ ३४०

आधुनिक 'सटायर' जीवन की विद्रूपताओ के प्रति तानाकशी करने वाले अर्थ से साम्य रखता है। विद्वानो ने 'व्यग्य' को सटायर का पर्याय माना है। मानविकी पारिभाषिक कोश मे 'सटायर' का व्यग्य अर्थ करते हुए कहा गया है – "उसका लक्ष्य मानवीय दुर्बलताओ पर प्रहार करके उन्हे उभारना और सुधारना होता है।[१]

व्यंग्य और व्यंग्य चित्र

व्यग्य चित्र के लिए अग्रेजी मे 'कार्टून' शब्द का प्रचलन है। एनसाइक्लोपीडिया अमेरिकाना के अनुसार, "व्यग्य उपहास, हास्य को उत्पन्न करने वाले पहचानात्मक प्रतीकात्मक, रेखाचित्र को व्यग्य-चित्र कहा जाता है। चित्र का शीर्षक नही भी हो सकता है और इसमे क्रमणिका का समावेश भी हो सकता है।

व्यग्य चित्रो की शुरुआत तो सोलहवी शताब्दी मे ही जर्मनी के रिफार्मेशन काल मे शुरु हो गयी थी। इसी अवधि मे कार्टून सामाजिक विसगतियो पर व्यग्य करने के लिए प्रचार का एक कारगर अस्त्र सिद्ध हुआ। इस समय तक कुछ चित्र ही विषय और अभिव्यक्ति की दृष्टि से अपने उद्देश्य मे सफलता पाते थे। अठारहवी शताब्दीके लगभग इग्लैण्ड मे 'कार्टून' वहाँ की पत्रकारिता का एक अविभाज्य अग हो गया। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य अमरीका मे सम्पादकीय कार्टूनों का चित्रण किया जाने लगा। खेल-कूद सम्बन्धी भी कार्टून अब बनने प्रारम्भ हो गये। उस समय के प्रमुख व्यगय चित्रकारों मे इग्लैण्ड के होगार्थ रोलैण्डसन और गितलरे प्रमुख थे। फ्रास के डॉमियर ने भी अपने व्यग्य-चित्रो से खूब प्रसिद्धि पायी।

भारत में व्यंग्य तो लिखे जाते थे लेकिन व्यग्य चित्रों का प्रचलन नही था। परतन्त्र भारत में अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता नही थी जिसके कारण राजनीतिक व्यग्य तो एक दम नही हो पाता था। अगर हुआ भी तो प्रतीकात्मक ढग से। १९४७ की भारतीय स्वतन्त्रता के पश्चात् राजनीतिक व्यग्य करने की स्वतन्त्रता हो गयी। अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के कारण व्यग्य चित्र का प्रचलन

---

१ साहित्य खण्ड – पृष्ठ २२९-३०

तेजी से होने लगा। स्वतन्त्रता पश्चात् व्यग्य और व्यग्य चित्र पत्र पत्रिकाओ मे नियमित स्तम्भ के रूप मे आने लगे जिसने आन्दोलनकारी कार्यों को प्रेरित किया।

व्यग्यकार के साधन भाषा और शब्द है, तो व्यग्य चित्रकार के साधन रग और रेखा है। व्यग्य की अपेक्षा व्यग्य-चित्र अधिक स्थूल और मूर्त होने के कारण लोक ग्राह्य होते है।

व्यग्यचित्र सर्वथा नवीन होता है क्योकि यह ताजी घटनाओ पर ही आधारित होता है। व्यग्य चित्र की सर्वाधिक शक्ति उसकी सम्प्रेषणीयता मे होती है। व्यग्य चित्रकार का प्रयास होता है कि वह कम रेखाओ और अल्प शब्दो के द्वारा अपनी बात कारगर ढग से पाठको को समझा सके। इसी मे व्यग्यचित्र की सफलता भी है।

'व्यग्य चित्र' के समान केरिकेचर भी रेखा-चित्रो के माध्यम से प्रकट होने वाला चित्र है। 'केरिकेचरिस्ट' विसगतियों का चित्रण करने के लिए एक प्रकार आशुलिपि को अपनाता है जबकि कुछ लकीरो को मरोडकर उनके सहारे व्यग्य उत्पन्न करना व्यग्य-चित्रकर का कौशल होता है।

व्यक्ति के रूप में उत्पन्न विकृति को प्रकट करने मे व्यग्य चित्रकार अधिक सफलता प्राप्त करता है। व्यग्य-चित्रकार व्यक्ति के अतिमुख्य लक्षणो को ग्रहण करता है और शेष बातो मे वक्रता लाकर व्यग्य चित्र का निर्माण करता है। केरिकेचर का नाम, व्यग्य की अपेक्षा बहुत कम है।

स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी-व्यग्य चित्रकारो में श्री शकर, श्री लक्ष्मण, श्री सुशील कालरा, श्री प्राण, श्री मारियो, श्री सुधीर, श्री विष्णु, श्री शेखर गुरेरा प्रमुख नाम हैं जबकि परिहास-चित्रकारों में श्री नेगी, श्री आबिद, श्रीरवीन्द्र, श्री सुरेश सावन, श्री राजेन्द्र पुरी, श्री आलोक भार्गव, श्री शिशिर कुमार आदि नामों की लम्बी शृखला है।

व्यग्यकारो की भाँति व्यग्य-चित्रकार भी कथनी और करनी के भेद, बिडम्बना, सत्रास, राजनीतिक विद्रूपता को प्रमुखता से प्रकट करते है।

व्यंग्य और हास्य

कुछ वर्ष पूर्व तक भारतीय आचार्य और समीक्षक व्यग्य को हास्य के एक प्रभेद के रूप मे स्वीकार करते थे। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, बेढब बनारसी और गुलाम अहमद फुरकत आदि अपनी परिभाषाओ मे हास्य के बिना व्यग्य की कल्पना नही स्वीकार करते है। डॉ बरसाने लाल चतुर्वेदी के अनुसार "आलम्बन के प्रति तिरस्कार उपेक्षा या भर्त्सना की भावना लेकर बढने वाला हास्य व्यग्य कहलाता है"।[१]

हास्य को श्री नारायण दीक्षित ने इस प्रकार परिभाषित किया है – "बाह्य वातावरण एव कोई भूली भटकी स्मृति द्वारा मस्तिष्कगत विशिष्ट केन्द्र की हलचल का परिणाम जो होठो एव मन तथा मुख की भाव भगिमा पर लौटकर प्रतीत होता है उसे हास्य कहते है।"[२] डॉ सावित्री सिन्हा के अनुसार "किसी घटना, क्रिया, परिस्थिति, लेख या विचारो की अभिव्यक्ति में निहित वह तत्व जो उनकी असम्बद्धता, बेढगेपन के कारण मनुष्य के मन मे एक विशेष प्रकार का आनन्द या मजा उत्पन्न करता है वह हास्य या ह्यूमर है।[३] डॉ उषा शर्मा हास्य को इस प्रकार परिभाषित करती है – "हास्य स्थायी भाव है, यह उस विद्युत छटा के समान है जो क्षण भर मे चका चौंध कर गति पकडती है उत्कर्ष पर आकर दूसरे ही क्षण विलीन हो जाती है।[४]

गोपाल प्रसाद व्यास हास्य और व्यग्य दोनों के अन्तर एव परिणाम को रेखाकित करते

---

१ डॉ बरसाने लाल चतुर्वेदी - हिन्दी साहित्य में हास्य रस - पृष्ठ-४२

२ श्री नारायण दीक्षित - हास्य के सिद्धान्त तथा आधुनिक हिन्दी साहित्य, पृष्ठ-९६

३ व्यास अभिनन्दन ग्रन्थ - डॉ सावित्री सिन्हा का लेख, पृष्ठ-१२०

४ डॉ उषा शर्मा – स्वातन्त्रयोत्तर निबन्ध में व्यंग्य – पृष्ठ-२९

हुए कहते है– विनोद कालिन्दी की आनन्द लहर है और व्यग्य बरसाती गगा की उफनती धारा का कालग्रासी भँवर। विनोद साहित्य का कान्ता सम्मित रस है और व्यग्य गुलाब के नीचे का काँटा।[१] डॉ शेर जग गर्ग ने उद्देश्य की कसौटी पर कसते हुए हास्य एव व्यग्य का अन्तर इस प्रकार बताया है – "हास्य निष्प्रयोजन होता है और यदि उसका कोई प्रयोजन होता है तो यह निश्चय नही होता।[२]

हास्य और व्यग्य के सम्बन्धो को डॉ बालेन्दु शेखर तिवरी ने इस प्रकार से व्यक्त किया है "हास्य सुन्दर की कामना करता है और व्यग्य लक्ष्य की पुकार करता है, स्पष्ट ही हास्य की अपेक्षा व्यग्य मे तेजी और गर्मी होती है।"[३] हास्य और व्यग्य को प्रयोजन के आधार पर ही अलग किया जा सकता है। हरिशकर परसाई ने इसे इस प्रकार व्यक्त किया है "आदमी कुत्ते की बोली बोले यह एक विसगति है। वन महोत्सव का आयोजन करने के लिए पेड काटकर साफ किये जाँय जहाँ मन्त्री महोदय गुलाब के वृक्ष की कलम रोपे, यह भी एक विसगति है। दोनो मे भेद है, दोनो मे हँसी आती है। दाँत निकाल देना उतना महत्त्वपूर्ण नही है।[४]

हास्य और व्यग्य मे मुख्य अन्तर लक्ष्य और दृष्टि के कारण है। एक मे विसगति का लक्ष्य हास्योद्रेक होता है तो दूसरे मे विसगति चित्रण द्वारा विकृत स्थिति, विकृत मनोवृत्त, विकृत स्वीकृत पर प्रहार है। एक में विनोदी स्वभाव वश विकृति का चित्रण है तो दूसरे में गहरी सूझ-बूझ के परिणाम स्वरूप विकृति का प्रदर्शन है।

हास्य स्वभाव की विनोदप्रियता के कारण हो सकता है परन्तु व्यग्य परिवर्तनकामी चेतना तथा गहरी सामाजिक दृष्टि को साथ लेकर चलता है। हास्य केवल मनोरजन के कारण होता

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान – २४ मार्च १९६८, पृष्ठ ८

२ डॉ शेर जग गर्ग – स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कविता में व्यग्य, पृष्ठ २९

३ डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – हिन्दी का स्वातन्त्रयोत्तर हास्य एव व्यग्य, पृष्ठ–५९

४ हरिशकर परसाई – सदाचार का ताबीज, कैफियत

है। व्यग्य सामाजिक दायित्वो के कारण।

हास्य और व्यग्य मे उद्देश्य के परिणाम स्वरूप भिन्नता अवश्य है परन्तु विषय की दृष्टि से दोनो मे समानता है। इसी कारण पार्थक्य के बावजूद दोनो को एक दूसरे का पूरक माना गया है। अमृत राय के अनुसार "हास्य और व्यग्य के रग-रेशे को एक दूसरे से परस्पर अलग करके देख पाना कठिन है, क्योकि ऐसा व्यग्य मुश्किल से मिलेगा जिसमे हास्य का भी कुछ रग न हो, और ऐसा हास्य भी कम देखने को मिलता है जिसमे कितना ही बारीक क्यो न हो, परोक्ष क्यो न हो, व्यग्य का कुछ काँटा या नोक न हो"[१] अमृतराय की नजर मे दोनो के बीच पृथकता के बावजूद जुडाव अवश्य है। प्रसिद्ध नाटककार बर्नाड शॉ ने दोनो के बीच के सम्बन्धो को इस प्रकार परिभाषित किया है "विश्व का उद्धार उस (व्यग्यकार) पर निर्भर करता है जो दोषों को सहज भाव से नही लेता, वह उनकी ऐसी खिल्ली उडाता है जिससे वह उत्साहित न होकर समाप्त हो। व्यग्यकार का हास्य कठोर हास्य होता है उसमे तरलता नही होती है।"[२]

साराश रूप मे हास्य एव व्यग्य का सम्बन्ध इस प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है। सोउद्देश्यता व्यग्य की अनिवार्य शर्त है, जबकि हास्य निष्प्रयोजन भी हो सकता है। हास्य का सम्बन्ध सवेदनशील मन-भावना से है, जबकि व्यग्य बुद्धि की उपज है, मस्तिष्क की खुराक है। हास्य मनोरजनात्मक होता है जबकि व्यगय सृजनात्मक सुधार।

व्यग्य हास्य से स्वतन्त्र अस्तित्व रखते हुए भी हास्य के सस्पर्श से सर्वथा मुक्त नही होता है। यदि व्यग्यकार की चित्तवृत्ति से हास की मुद्रा एकदम विलीन हो जाय तो वह व्यग्य न लिखकर अन्य प्रकार के गम्भीर लेखन में प्रवृत्त हो चलेगा। किन्तु यह हास्य रजनात्मक हास्य नही, रचनात्मक हास्य होता है, सामाजिक रचनात्मक दायित्व को ग्रहण करने से हास्य व्यग्य

---

१ अमृतराय - मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाएँ, भूमिका

२ बर्नार्ड शॉ का उद्धरण - आधुनिक हिन्दी काव्य में व्यग्य, बरसाने लाल चतुर्वेदी, पृष्ठ १२,

का दर्जा प्राप्त कर लेता है।

व्यंग्य या व्यंग

हिन्दी मे समीक्षको और विद्वानो मे 'व्यग्य' या 'व्यग' शब्द प्रयोग को लेकर हमेशा मतभेद रहा है। कुछ व्यग्य समीक्षक जैसे – डॉ वीरेन्द्र मेहदी रत्तॉ, डॉ खेलावन पाण्डेय, डॉ उषा शर्मा आदि ने आग्रह पूर्वक 'व्यग' शब्द का प्रयोग किया है। डॉ वीरेन्द्र मेहदी रत्ताँ कहते है "सस्कृत साहित्य मे व्यग्य शब्द व्यजना शक्ति द्वारा प्राप्त साधारण से कुछ भिन्न अर्थ के रूप मे प्रयुक्त होता रहा है। हिन्दी मे इसी अर्थ मे व्यग्य शब्द का प्रयोग पर्याप्त है। इसलिए उचित है कि व्यग्य शब्द को सस्कृत से चले आ रहे परम्परागत अर्थ को व्यक्त करने के लिए छोडकर 'सटायर' शब्द के अर्थबोध के लिए हिन्दी मे 'व्यग' शब्द को प्रयुक्त किया जाये"।[१] इसी प्रकार डॉ राम खेलावन पाण्डेय और डॉ उषा शर्मा ने भी 'व्यग' शब्द के प्रयोग पर जोर दिया हैं शरद जोशी ने सुरेश कान्त को एक साक्षात्कार के दौरान बताया था कि "वे आदतन व्यग कहते है इसके पीछे उनका कोई सैद्धान्तिक आग्रह नही है।"

प्रसिद्ध व्यग्यकार हरिशकर परसाई ने केवल 'दुर्घटनारस' मे व्यग्य के स्थान पर 'व्यग' शब्द का प्रयोग किया है, अन्यत्र नही। अमृत लाल नागर 'व्यग' का अर्थ अगहीन मेढक मानते हैं[२] तथा 'व्यग्य' के प्रयोग पर बल देते है।[२] प्रसिद्ध समीक्षक व्यग्यकार डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी 'व्यग्य' शब्द के प्रयोग को अधिक समीचीन मानते है।

प्रसिद्ध समीक्षको ने 'व्यय' और 'व्यग' शब्द के अर्थ बोध को इस प्रकार ग्रहण किया है, व्यग विकृति या दोष है तो व्यग्य इस विकृति या दोष पर किया गया कठोर आघात। 'सटायर' के पर्याय-रूप में 'व्यग्य' शब्द को ही प्रयुक्त किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे 'व्यग्य'

---

१ डॉ वीरेन्द्र में हदीरत्ता – आधुनिक हिन्दी साहित्य में व्यग्य, पृष्ठ–११

२ अमृतलाल नागर – मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाएँ, भूमिका, पृष्ठ – ५

शब्द का ही प्रयोग किया गया है।

व्यंग्य और प्रहसन

'प्रहसन' को अग्रेजी मे 'कामेडी' या 'फोर्स' नाम से जाना जाता है। डॉ ज्ञानमती अरोडा ने प्रहसन को इस प्रकार परिभाषित किया है, "प्रहसन नाट्य की वह विशिष्ट विधा है जिसका उद्देश्य हास्य रस की सृष्टि करना होता है। ब्राह्मण और राजा जैसे उत्कृष्ठ चरित्रो से लेकर निम्न वर्ग के धूर्त, पाखण्डी, आदमी इसके पात्रो मे स्थान प्राप्त कर सकते है। इसका कथानक इतिहास प्रसिद्ध न होकर उत्पाध होता है, यह एकाकी अथवा अनेकाकी परन्तु सक्षिप्त एकान्वितियो से पूर्ण नाट्य रूप है। व्यग्य, परिहास और वाग्वैदग्ध्य इसके सवादो की विशिष्टताए होती है। समाज की विद्रूपताओ और अभिहास्य, परिस्थितियो तथा चरित्रो को दर्शको के सम्मुख प्रस्तुत करने में तथा समाज सुधार की योजना मे ही प्रहसन का चिरतन अभीष्ट निहित है। इस प्रकार प्रहसन उज्ज्वल वर्ण, हास्य रस का प्रतिष्ठापक उत्कृष्ठ नाट्य रूप है।

भारतीय विद्वानो के अनुसार प्रहसन की परिभाषा इस प्रकार की गयी है–

परिहास प्रधानान्या भाषणान्तयत्र बाहुल्येन भवन्ति   अभि भा/८/१०४

दश रूपक के अनुवाद – बौध, जैन, आदि पाखण्डी और विप्र आदि का आश्रय लेकर भाषा आदि के माध्यम से हास्यकर वचन का उपनिबन्धन करना प्रहसन है। प्रहसन के दो प्रकार हैं – शुद्ध प्रहसन और विकृत प्रहसन। विकृत भाषाओ से रचित किसी एक ही व्यक्ति के चरित को हास्यरूप मे उपस्थित करने वाला प्रहसन शुद्ध है। विकृत प्रहसन में वेश्या, नपुसक, विट, धूर्त आदि का वर्णन आता है।

प्रहसन उस सेवक सा है जो अपने स्वामी की अयोग्यताएँ और दुर्बलताए पसन्द करता है किन्तु अवसरानुकूल नकल भी उतारता है और उन्हें मूर्ख भी बनाता है। प्रहसन मातृ का हृदय

स्थल है जो बच्चे की शरारतो पर डाटते हुए भी हसती है। व्यग्य इसके ठीक विपरीत पितृ पक्ष है जो सुधरने के लिए एक तरह से पीटता है। व्यग्य बधिक है तो प्रहसन अभियोक्ता है।

हिन्दी मे प्रहसन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने लिखना प्रारम्भ किया। 'अँधेर नगरी' 'वैदिकी हिसा, हिसा न भवति', विषस्य औषधम्' उनके प्रसिद्ध है जिसमे रीति-रिवाजो परम्पराओ, तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था, लोलुपता आदि के ऊपर मन्दस्मित कटाक्ष है।

व्यंग्य की प्रमुख परिभाषाएं –

हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओ के विद्वानो लेखको और समीक्षको ने 'व्यग्य' को इस प्रकार परिभाषित किय है –

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, "व्यग्य वह है जहाँ कहने वाला अधरोष्ठ मे हस रहा हो और सुनने वाला तिलमिला उठा हो और फिर भी कहने वाले का जबाब देना अपने को और ही उपहासास्पद बना लेना हो जाता है"।[१]

डॉ रामकुमार वर्मा लिखते है, "आक्रमण करने की दृष्टि से वस्तु स्थिति को विकृत कर उससे हास्य उत्पन्न करना ही व्यग्य है।"[२] डॉ इन्द्रनाथ मदान के अनुसार, "परिवेश के प्रति असन्तोष व्यग्य का रूप धारण करता है। इसे खरी-खरी सुनाना भी कहा जाता है"।[३]

डॉ प्रभाकर माचवे के अनुसार, "मेरे लिए व्यग्य कोई पोज या अदाज या लटका या बौद्धिक व्यायाम नही एक आवश्यक अस्त्र है"।[४]

डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी के अनुसार, "आलम्बन के प्रति तिरस्कार उपेक्षा या भर्त्सना की भावना को लेकर बढने वाला हास्य ही व्यग्य कहलाता है"।[५]

१ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी – कबीर, पृष्ठ १६४
२ डॉ रामकुमार वर्मा – रिमझिम, पृष्ठ १३
३ डॉ इन्द्रनाथ मदान – हिन्दी की हास्य व्यंग्य विद्या का स्वरूप एव विकास, पृष्ठ २
४ डॉ प्रभाकर माचवे – तेल की पकौडिया, पृष्ठ ५
५ डॉ बरसाने लाल चतुर्वेदी – हिन्दी साहित्य में हास्य रस, पृष्ठ ३७७

डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी की दृष्टि मे व्यग्य, "एक विशिष्ट समाज धर्मी प्रेक्षण-विधि अथवा एक विशिष्ट मानसिक भगिमा है, जिसका उद्‌भव अन्तर्विरोधो के कारण होता है जिसमें व्यक्ति अथवा व्यवस्था-विशेष्ज्ञ के दौर्बल्य की आक्षेपात्मक अभिव्यक्ति द्वारा परिवर्तन का अभीष्ट पूर्ण होता है"।[१]

श्रीलाल शुक्ल व्यग्य को प्रभाकर माचवे की दृष्टि से देखते हैं, "मैंने व्यग्य को आधुनिक जीवन और आधुनिक लेखन के एक अभिन्न अस्त्र और एक अनिवार्य शर्त के रूप में पाया है"।[२] डॉ वीरेन्द्र मेहदी रत्ता ने व्यग्य की परिभाषा इस प्रकार से दी है, "शास्त्रीय दृष्टि से व्यग्य मानव तथा जगत की मूर्खताओ तथा अनाचारो को प्रकाश में डालकर उनके उपहास्य तथा घृणोत्पादक रूप पर आलोचनात्मक प्रहार करने मे समर्थ एक साहित्यिक अभिव्यक्ति है"।[३]

व्यग्य को सोद्देश्यपूर्ण विधा मानते हुए हिन्दी व्यग्य के पितामह हरिशकर परसाई लिखते है, "व्यग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, विसगतियो-मिथ्याचारो और पाखण्डो का पर्दाफाश करता है"।[४]

शरद जोशी के अनुसार, "सेन्स आफ ह्यूमर ही अन्याय अत्याचार और निराशा के विरुद्ध होने से व्यग्य मे अभिव्यक्त होता है"।[५]

रवीन्द्र त्यागी के अनुसार, "समाज की कुरितियो का भाण्डाफोड़ करने का कार्य प्रमुखतः व्यग्य द्वारा ही हो सकता है। यदि उसमे हास्य भी उत्पन्न हो जाता है तो रग और तेज हो जाता है।[६]

डॉ शेरजग गर्ग ने व्यग्य को परिभाषित किया है– "व्यग्य एक ऐसी साहित्यिक, अभिव्यक्ति या रचना है जिसमे व्यक्ति तथा समाज की कमजोरियों दुर्बलताओ, कथनी एव करनी के अन्तरों की समीक्षा अथवा निन्दा भाषा को टेढी भगिमा देकर अथवा कभी-कभी पूर्णतः सपाट

१ डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – हिन्दी का स्वातन्त्रयोत्तर हास्य और व्यग्य, पृष्ठ ५६

२ श्रीलाल शुक्ला – मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाएँ – पृष्ठ ९-१०

३ डॉ वीरेन्द्र मेहदी रत्ताँ – आधुनिक हिन्दी साहित्य में व्यग्य – पृष्ठ ८

४. हरिशंकर परसाई – सदाचार का ताबीज, पृष्ठ – १०

५ शरद जोशी – मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, पृष्ठ – ६

६ रवीन्द्र त्यागी – नई कहानियाँ, फरवरी, १९७०

शब्द मे प्रहार करते हुए की जाती है। वह पूर्णत अगम्भीर होते हुए भी गम्भीर हो सकती है। निर्दय लगते हुए दयालु हो सकती है प्रहारात्मक लगते हुए तटस्थ लग सकती है, मखौल लगती हुई बौद्धिक हो सकती है, अतिश्योक्ति एव अतिरजना का आभास देने के बावजूद पूर्णत· सत्य हो सकती है। व्यग्य मे आक्रमण की उपस्थिति अनिवार्य है।"[१]

व्यग्य लेखक नरेन्द्र कोहली के शब्दो मे "कुछ अनुचित, अन्याय पूर्ण, अथवा गलत होते देखकर जो आक्रोश जगता है, यदि वह काम मे परिणित हो सकता है तो अपनी असहायता में वक्र होकर जब अपनी तथा दूसरी की पीडा पर हँसने लगता है तो विकट व्यग्य होता है, पाठक के मन को चुभलाता-सहलाता नही, कोडे लगाता है। अत सार्थक और सशक्त व्यग्य कहलाता है"।[२]

शकर पुणताबेकर के मतानुसार, "व्यग्य विसगतियो की तीखी अभिव्यक्ति है। युग की विसगतियाँ हमारे चारो ओर के यथार्थ जगत् से, वैदग्ध्य इन विसगतियो को वहन करने वाले शैली सौष्ठव से तथा तीखापन, विसगति एव वैदग्ध्य के चेतना पर पडने वाले मिले-जुले प्रभाव से सम्बन्धित है।[३]

उर्दू-व्यग्यकार गुलाम अहमद फुरकत के अनुसार, "व्यग्य का वास्तविक उद्देश्य समाज या सोसाइटी की बुराइयों, कमजोरियो और त्रुटियो को हँसी उड़ाकर पेश करना है। मगर इसमे तहजीब का दामन मजबूती से पकडे रहने की जरूरत है। वरना वग्यकार भडैती की सीमाओ मे प्रवेश कर जायेगा।"[४]

गुजराती के प्रमुख व्यंग्यकार विनोद भट्ट ने व्यग्य की परिभाषा इस प्रकार की है "(व्यग्य लिखने वाली) इस कलम की खूबी यह है कि यह गुदगुदाती भी है, चिकोटी भी काटती है,

१ डॉ शेरजग गर्ग - स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कविता में व्यग्य - पृष्ठ-२८

२ नरेन्द्र कोहली - मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाएँ - पृष्ठ - ८

३ शकर पुणताम्बेकर - कैक्टस के काँटे - दो शब्द

४ तंजो-मजाह, पृष्ठ-१७-१८

और जरूरत पडने पर नश्तर भी लगाती है, यह वह कलम है जिससे व्यजना टपकती है, सरलता बोलती है, मार्मिकता हँसती है, और सूक्ष्मता झलक मारती है।"[१]

मराठी व्यग य के पितामह श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर के अनुसार, "गलतियो और कमजोरियो को स्वीकार करने का मानसिक धैर्य जिनमे नही है, अपनी हर बुरी-भली रूढि को येनकेन प्रकारेण दूसरों के गले उतारने का जो प्रयत्न करते रहते है, और देश की वर्तमान दुर्दशा को देवगति के मत्थे मढकर जो निश्चिन्त हो जाना चाहते है, उन पाखण्डी पोगा पडितो की खबर लेना और इस बहाने रूढियो की अनिष्ठता के प्रति पाठको को जागरुक करना ही व्यग्य का उद्देश्य है। समाज को दुलारकर सुधार के अनुकूल बनाना नही अपितु छेडकर और चिढाकर स्वदोष-निरीक्षण के लिए प्रेरित करना है।[२]

मराठी समीक्षक रा प्र कानिटकार ने व्यग्य के सम्बन्ध मे अपनी धारणा इस प्रकर से व्यक्त की- "व्यग्यात्मक साहित्य समाज के हास्यास्पद पहलू को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि पाठको को उसका तीव्र विरोध करने की इच्छा हो उठे।"[३]

व्यंग्य सम्बन्धी पाश्चात्य परिभाषाएँ

ऑक्सफोर्ड इगलिश डिक्शनरी के अनुसार- 'व्यग्य वह रचना है जिसमे प्रचलित दोषो अथवा मूर्खताओ का कभी-कभी अतिरजना के साथ मजाक उडाया जाता है। उसका अभीष्ट किसी व्यक्ति विशेष अथवा व्यक्तियो के समूह का उपहास करना होता है और इस प्रकार जो एक व्यक्तिगत आक्षेप लेख जैसा होता है।[४]

---

१ सुना-अनसुना, अनुवादक की कलम से, पृष्ठ-६

२ सुदामा के चावल- श्रीपाद कीष्ण कोल्हटकर, पृष्ठ-१७-१८

३ वही- भूमिका, पृष्ठ-१५

४ ऑक्सफोर्ड इगलिश डिक्शनरी - खण्ड - ९, पृष्ठ-११९

एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार, "व्यग्य की साहित्यिक तथा ग्राह्य परिभाषा हास्यास्पद अथवा निन्दक तथ्यो की मनोरजक अथवा घृणोत्पादक अभिव्यक्ति के रूप मे दी जा सकती है, बशर्ते उस अभिव्यक्ति मे हास्य-तत्व साहित्यिक रूप मे स्पष्टत परिलक्षित हो। हास्य के अभाव मे व्यग्य गाली का रूप धारण कर लेता है, तथा साहित्यिकता के बिना वह विदूषकी ठिठोली मात्र बनकर रह जाता है।"[१]

ए निकॉल के अनुसार, "व्यग्य इस सीमा तक कटु हो सकता है कि वह किचित भी हास्य जनक न हो। व्यग्य बहुत तीखा वार करता है। उसमे कोई नैतिक बोध नही होता है। उसमे दया, विनम्रता और उदारता का भी लेख नही होता। वह पूरी निर्दयता से प्रहार करता है। वह युग की समूची परिस्थितियो की धज्जियाँ किसी को भी क्षमा किया बगैर उडता है।"[२] स्विफ्ट ने व्यगय को इन शब्दो मे व्यक्त किया है, "व्यग्य वह दर्पण है जिसमे झाँकने वाले को भी अपनी छाया के अतिरिक्त और सबका प्रतिबिम्ब दिखलायी पडता है। यही कारण है कि व्यग्य का समाज मे इतना हार्दिक स्वागत किया जाता है कि कम ही लोग इससे रुष्ट होते हैं। रुष्ट वही होते है जो बदलना या सुधरना नही चाहते और अपने निहित स्वार्थों को ही सिद्ध करने मे तल्लीन रहते है।"[३]

बनार्ड शॉ के अनुसार, "मूर्खों को प्रोत्साहन देने के बजाय हास्य द्वारा उन्हे ध्वस्त करने तथा विकृति को विनोद-भाव से न स्वीकारने वालो पर ही ससार की मुक्ति निर्भर करती है।"[४]

व्यापक-फलक की ओर इगित करते हुए जॉन एम बुलेट लिखते है कि – "व्यग्य शब्द मे मानव तथा उसके आचरण की समस्त त्रुटियो पर किया गया प्रहार निहित होता है।"[५]

---

१ इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका

२ एनइन्ट्रोडक्शन टु ड्रामेटिक थ्योरी, पृष्ठ – २१२

३ बैटल ऑफ बुक्स – स्विफ्ट, पृष्ठ–६

४ स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी व्यग्य निबन्ध – शशिमिश्र, पृष्ठ – ६

५ जोनाथन स्विफ्ट एण्ड दि एनाटामी आफ सटायर– पृष्ठ ३९– जान एम बुलेट

ड्राइडन के अनुसार, "व्यग्य का वास्तविक उद्देश्य शोधन द्वारा दोष सुधार है।"

पौर्वात्य एव पाश्चात्य समीक्षको के मतव्यो से एक बात सामने आती है वह यह कि व्यग्य समाज की विद्रुप्ताओ से उत्पन्न वह रचना है जो समाज की बुराइयों पर प्रहार करके उन्हे समाप्त करने की कोशिश करती है। व्यग्य, कथनी और करनी अन्तराल से उत्पन्न वह अभिव्यक्ति है जो विकृतियो को समाप्त कर आदर्श पक्ष का आग्रह लिये होती है। यह रचनाकारो की वह रचनात्मक दृष्टि है जो बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय के लक्ष्य से प्रेरित होती है। व्यग्य कही निर्मम चिकित्सक की भूमिका में होती है तो कही गम्भीर दार्शनिक चिन्तक की भूमिका मे।

सक्षेप मे कहा जा सकता है कि व्यग्य सामाजिक मूल्यो के विघटन, विद्रूपताओ विसगतियो, सत्रास, पाखण्डो, विडम्बनाओ, तथा कथनी करनी के अन्तराल से उत्पन्न वह साहित्यिक विधा है जो लक्ष्य को भेद करके तिलमिला देती है। व्यग्य अपने मूल मे आदर्श और बहुजन हिताय बहुजन सुखाय की भावना समाये रहता है। व्यग्य वर्तमान जीवन के अधूरेपन क्षेभ की आक्रोश पूर्ण अभिव्यक्ति है।

व्यंग्य परम्परा

मानव-इतिहास मे सभ्यता का विकास वह युग है जो मानव को अन्य प्राणियो से अलग करता है। इसी समय शान्तिपूर्ण जीवन जीने के उद्देश्य से मानव ने आपसी सघर्ष छोडकर समाज का निर्माण किया। मानव की मागो और आवश्यकताओं को ध्यान मे रखकर मनीषियो ने तर्क-वितर्क, औचित्य-अनौचित्य का विवेचन करके, मान्यताओं, विधि-विधानो तथा नियमों की समाज मे स्थापना की। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के कारण इनका पालन करता है।

विकास के चरण आगे बढते जाते हैं लेकिन सामाजिक मूल्य और मान्यताएँ उसी गति से अपने को बढ़ा नही पाते। परिणम स्वरुप विभिन्न प्रकार की विकृतियो और विसगतियों का जन्म होता है। इन्हीं विसगतियों और विकृतियो को प्रगतिशील समाज के प्रतिनिधि, समाजसेवी, साहित्यकार और राजनीतिज्ञ समाप्त करने का अपने-अपने साधनों द्वारा प्रयास करते हैं। साहित्यकार अपनी लेखनी द्वारा तथा समाज सेवी अपने कार्यों द्वारा सुधार के लिए प्रेरित करता

रहा है। लेकिन अभिव्यक्ति जितनी स्वतन्त्रता आज मिली है पहले इतनी कभी नही थी। अभिव्यक्ति की इसी स्वतन्त्रता ने क्रमश साहित्यिक व्यग्य का रूप धारण कर लिया।

व्यग्य की परम्परा को चार मुख्य भागो मे बाँट कर अध्ययन किया जा सकता है।

संस्कृत व्यंग्य-परम्परा

सस्कृत काव्य मे बाणभट्ट की 'कादम्बरी' एव 'अमरुशतक' में 'परिहासपूर्ण सभाषण' के अर्थ मे वक्रोक्ति का प्रयोग मिलता है जो व्यग्योक्ति के समानान्तर अर्थध्वनित करता है। इसी प्रकर भोजदेव ने वक्राक्ति, रसोक्ति एव स्वभावोक्ति तीन भागो मे समस्त वाड्मय को बाँट दिया हे– रसोक्ति, सौन्दर्य परक दृष्टि के लिए है, वक्रोक्ति समूची व्यग्यपरकता को प्रकट करने के लिए, तथा स्वभावाक्ति को केशव ने सजाकर कहने की बात कही है। इसी प्रकार आचार्य दण्डी ने 'दशकुमार चरितम्' मे देवता, लालची ब्राह्मण, चोर, वेश्याए, जुआरी आदि पर प्रहार किया है। तो कथासरित सागर मे, कहानियो के द्वारा समाज के पाखण्डियो, धूर्तों एव बेवकूफो को हँसी का पात्र बनाया गया है।

प्रहसन के सन्दर्भ मे इसकी चर्चा पहले की जा चुकी है।

पाश्चात्य व्यंग्य परम्परा

पाश्चात्य साहित्य मे व्यग्य का प्रादुर्भाव ग्रीस और रोम के साहित्यकारो द्वारा हुआ। ग्रीस के वायन और एरिस्टोफेस तथा रोम के इनियस ने मोनोलॉग (स्वगत-कथन, एकालाप) शैली में समाज की विद्रूपताओं विसंगतियो को प्रकट करना प्रारम्भ किया। लूसीलियस ने इसे सरक्षण दिया तो हॉरेस ने इसको नैतिक गुणों से सुसज्जित किया। परसियस ने अपने स्ट्रोइक शैली से प्रहारात्मक क्षमता प्रदान की जुवैनल और क्लोडियन ने अपने स्वगत कथनों के माध्यम से तत्कालीन समाज को नयी स्फूर्ति प्रदान की। ईसा की दूसरी शताब्दी में लूशियन ने गद्य-रूप मे इसे अपनाने का प्रयोग किया। ईसाई धर्म के प्रारम्भिक काल में 'स्वगत-कथन' का स्थान उपदेशात्मक तथा नैतिकतापूर्ण कथनों ने ग्रहण कर लिया।

सत्रहवी शताब्दी (पुर्नजागरण काल) मे सास्कृतिक विषयो को लेकर अनेक विद्वानो ने जैसे–इटली के विसीग्वेश, वरनी, तथा एरिस्टो, फ्रास के रैगरीय इग्लैण्ड के स्कैलटन, वापूट डौपने, हाल तथा मारसटन आदि ने व्यग्य लेखन कार्य किया। लेकिन इनकी शैली पूर्व विद्वानों से अलग थी।

स्वगत–कथन का कोई निश्चित स्वरूप नही है। यह समसामयिक परिस्थितियो के अनुसार स्वत प्रतिबिम्बित होता है। स्वगत कथन की प्रेरणा घटना, सवाद या भाव कुछ भी हो सकता है। हास, परिहास, बुद्धि चातुर्य, ठिठोली, पैरोडी, विरोधाभास, विडम्बना, आदि द्वारा यह अनुप्राणित होता है। हास्य की भाँति स्वगत कथन का भी विषय पूर्व परिचित होता है। स्वगत–कथनकार व्यक्तिगत चुटकुलो, सामयिक घटनाओ, प्रचलित चर्चाओ, चरित्र चित्रण, कथा तथा आख्यायिकाओ द्वारा अपने विषय की व्याख्या करता है। इसकी भाषा सरल, चालू और शरारत भरी होती है। इसकी शैली चचल, चुटीली प्रताडना युक्त और चेताने वाली होती है। स्वगत–कथन न भाषण है न उपदेश। यह विषय–वस्तु की समस्या को प्रकाशित करता है, व्याख्या करता है। समस्या पर आक्षेप और कटाक्ष करता है। लेकिन ये सब हास्य का पुट लिए करता है ताकि पाठक या श्रोता द्वारा कथन ग्रहणीय हो सके।

लार्ड बायरन ने अपने ग्रन्थ 'आवर्स ऑफ आइडलनेस' के आलोचकों को स्वगत–कथनों के माध्यम से उत्तर दिया। इस परम्परा को आगे बढाया विक्टर ह्यूगो ने, जो अपनी रचनाओ मे स्वगत कथनो के माध्यम से व्यवस्था की पोल खोली। दक्षिण अफ्रिकी साहित्यकार कैपबेल ने अपनी कविता 'दियो रजीड' मे स्वगत कथनो का भरपूर प्रयोग किया। हेनरी मिलर ने 'ट्राफिक आफ कैंसर' तथा 'ट्रैफिक और कैपरीकॉन' मे इस शैली का प्रयोग किया। इस प्रकार प्रारम्भिक पाश्चात्य व्यग्य का पार्दुभाव स्वगत–कथनो से ही होता प्रतीत होता है।

इसी स्वगत कथन ने आगे चलकर एक मुखौटा पहन लिया। जिसके माध्यम से हास्य से लिपटी बात को छोडकर उसे धीर, गम्भीर, शिष्ट ढग से, घृणा, आवेश और भर्त्सना को व्यक्त करने की छूट मिल गयी। इसे नाम दिया गया– 'विडम्बना'। यह स्वगत कथन का ही एक प्रकार

है। विडम्बना मे बात धीर गम्भीर ढग से कही जाती है लेकिन पाठक या श्रोता स्वय सोचने को विवश हो जाता है। हिन्दी साहित्य मे बालमुकुन्द गुप्त का 'शिव शम्भू के चिट्ठे' तथा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की "भारत दुर्दशा" इसी शैली के अन्तर्गत आते है।

स्वगत-कथन को आगे **विडम्बना** और वक्रोक्ति के रुप मे मान्यता मिली। जहॉ लेखक ने गभीर, धैर्यपूर्ण चेहरा पहनकर विकृतियो और विसगतियो को व्यक्त किया है। इस प्रकार से विडम्बनाकार और वक्रोक्तिकार धनुष की भॉति झुककर तीर चलाते है। जिससे लक्ष्य को भेदने मे अधिक सफलता मिलती है। पाश्चात्य साहित्य मे डिनेयल डिफो, स्विफ्ट तथा ऐरिस्टोफेस प्रमुख विडम्बनाकार (आयरनीकार) हुए है। सुकरात प्रमुख विडम्बनाकार हुआ। जिसने मोनोलॉग द्वारा समाज की सच्चाइयो को सबके सामने लाकर खडा कर दिया। जिसके कारण उसे जहर पीना पडा।

अरस्तू के अनुसार, "विडम्बना एक हास्यास्पद शालीनता है, स्वय का अवमूल्यीकरण एव प्रतिकूलीकरण है, यह अज्ञानता और दुर्बलता की व्याख्या झीने आवरण मे से करती है और साथ ही साथ उस आवरण को उठा देने की सद्‌भावना भी इसमे रहती है।[१] वर्तमान व्यग्य साहित्य मे विडम्बना का प्रयोग इसी अर्थ मे किया जाता है। जिसकी अनुभूति सूक्षम और गहरी होती है जो लक्ष्य को सीधा सादा वार न करके वार की गर्जना से उसे हकबका देती है।

इसके अलावा अरस्तू ने त्रासदी और कामदी को काव्य के रूप में स्वीकार किया। अरस्तू के अनुसार "कामदी का लक्ष्य होता है, यथार्थ जीवन की अपेक्षा हीनतर चित्रण और त्रासदी का अर्थ होता है 'भव्यतर चित्रण'।[२] त्रासदी नाटकीय अन्दाज में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें भय और करुणा को उभार कर मानव मन का विरेचन किया जाता है। कामदी गम्भीरता के

---

१ गिल्बर्ट हाइट - दि एनाटॉमी आफ सटायर, पृष्ठ - ४९

२ अरस्तू - काव्य शास्त्र, पृष्ठ - ११

साथ प्रस्तुत की जाती है। इसके चरित्रो की सृष्टि जीवन के निरीक्षण एव अनुभव से प्राप्त होती है। कामदी का हास्य पूर्णतया सामाजिक स्तर पर होता है जो परिहास के उन्मुक्त क्षणो मे भी सोचने को विवश कर देता है।

कामदी मे यथार्थ स्थितियो का अतिरजनात्मक चित्रण किया जाता है। व्यग्य मे कामदी को उस स्तर का स्थान नही दिया जाता है। कामदी और त्रासदी मिलकर व्यग्य का स्वरूप निर्मित करते है क्योकि व्यग्य मे हास्य और गम्भीर्य दोनो का बराबर अनुपात होता है।

भारतीय भाषाओं में व्यंग्य परम्परा

विश्व की सबसे समृद्ध तथा भाषा वैज्ञानिक आधार पर खरी भाषा 'सस्कृत' की परम्परा को दिखलाया जा चुका है। जहाँ 'भोजप्रबन्ध' 'सूक्ति-मुक्तावाली' 'हितोपदेश' 'महाभारत', 'सुभाषित-सग्रह' 'अन्योक्ति विलास' 'अन्योक्तिशतक' आदि काव्यो मे व्यग्य की धारा प्रवाहित होती रही है।

अन्य भारतीय भाषाओं में व्यंग्य परम्परा

गुजराती भाषा मे व्यग्य को 'कटाक्ष' के नाम से जाना जाता है। 'आडकतरी रिते सूचित' कटाक्ष का सूक्ति रूप है, जिसका अर्थ होता है – अनुचित प्रचलित रीतिरिवाजों पर उपहास, प्रहार करने वाला। गुजराती के मध्यकालीन कवि अखा ने 'छप्पा' में कबीर की तरह धार्मिक कर्मकाण्डो पर जमकर प्रहार किया। यही 'कटाक्ष' आधुनिक काल में व्यग्य के रूप मे विकसित हुआ। आधुनिक व्यग्यकारो मे ज्योतिन्द्र दबे, विनोद भट्ट, मधूसूदन पारेख, दामु सगापी, बकुल त्रिपाठी, हरीश नायक, रमेश भट्ट, नवनीत सेवक, चेतन रावल, सारंग बारोट, कृष्ण पडित नसीर इस्माइली, रम्भा बहन गाँधी, निरजना त्रिवेदी, आदि प्रमुख व्यग्य के हस्ताक्षर है।

सिन्धी भाषा में व्यग्य को 'तुज' कहा जाता है। तुज के अर्थ में मल भवनानी ने 'उपहास' तथा हैदर वक्ष जलोई ने 'हुजती' शब्द का प्रयोग किया है। सामाजिक बुराइयों, गरीबी, दहेज प्रथा, महाजनी शोषण पर किशनचन्द्र तीरथदास खत्री, 'बेवस', श्री हरि दिलगीर, श्री दुदराज

दु:खदयाल, पद्मश्री राम पजवानी, श्री गोविन्द भाटिया, आदि लोगो ने 'तुज' लिखकर प्रहार किया। आधुनिक व्यग्यकारो मे हरीश वासवानी, डॉ दयाल आशा, कृष्ण लाल बजाज, श्री एम कमल, श्री पोपटी हिराचाँदनी, श्री अर्जुनशाद मिरचाँदनी, श्री एम जे उत्तम चन्द्र, सुन्दरी उत्तम चद्राणी, श्री आनन्द गोलानी, कीरत बाबानी, श्री कृशन खटवाणी, श्री भयाराम कुकरेजा, प्रो मगाराम मलकारी तथा प्रो सतीश हाडा आदि प्रमुख नाम है।

मराठी साहित्य मे "सटायर" को व्यजित करने वाला शब्द "उपरोध" है। तर्कतीर्थ श्री लक्षमण, शास्त्री जोशी ने मराठी विश्व कोश भाग दो मे 'उपरोध' का अर्थ वक्रोक्ति, विडम्बना, उपहास आदि अर्थों के लिए किया है। इसी अर्थ में उपरोध लिखने वालो मे तुकाराम के अभग, श्री शिवराम पन्त पराजपे, विष्णु शास्त्री चिपणूलकर, श्री श्रीपाद कोल्हटकर, श्री राम गणेश गडकरी, श्री माधव ज्यूलियन, श्री चन्द बाँदेकर, श्री केशवसुत, श्री गगाधर गाडगिल, श्री पु ल देशपाण्डेय श्री बसन्त सबनीस, श्री प्र के अत्रे आदि प्रमुख नाम है।

इनकी रचनाओ में धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक एव सास्कृतिक परिस्थितियो के ऊपर व्यग्य किया गया है। पु ल देशपाण्डे ने 'भी नाही बिसरलो' उपरोधकृति में अन्तर्राष्ट्रीय नीति के सन्दर्भ मे लिखा है कि दिल्ली ला बडे पाहणे अन्तर्राष्ट्रीय कथा चर्चा करतात है, देखील भला अजून सतावणारे कोई आहे समोर फुल दाडया आणि सात आठ पदार्थानी भर लेली काचपात्रे' आदि। इसमें बाते कडवी होने वाली है लेकिन पकवान मीठे हे। इसी विसगति के कारण यह 'उपरोध' तीखा है।

तेलगू भाषा मे कबीर के समान प्रहारक क्षमता वाले भद्र भूपाल ने अपने दो ग्रन्थों 'नीतिसार मुक्तावली' तथा 'सुमित शतकम्' में व्यग्यपरक रचनाए की हैं इसमे इन्होने नीतिपरक उपदेशो के माध्यम से स्वार्थी मनुष्य की प्रवृत्ति पर प्रहार किया है। तेलगू साहित्य के कवि बेमन्न की रचनाओं में सामाजिक व्यग्य अधिक मिलता है। चिलकमर्ति लक्ष्मी नरसिहम की 'गणपति' व्यंग्य पूर्ण कृति है जिसमें समाज को सुधारने की दृष्टि से प्रहार किया गया है।

आधुनिक समय मे ममिडिपारित कामेश्वर राव ने अपनी कृतियो 'कालक्षेपमु' 'अवुनु', 'अप्पुड' तथा 'इप्पडु' मे मानव समाज की विकृतियो तथा कमजोरियो पर मार्मिक प्रहार किया है। तादिगिरि पोतराजु ने अपने ग्रन्थ 'प्रमाण-पत्र' मे गरीब लेगो की समस्याओ पर व्यग्य के माध्यम से विचार किया है। तेलगू साहित्य का व्यग्य हिन्दी साहित्य के व्यग्य की भॉति विषय-वस्तु की दृष्टि से बहुआयामी होता जा रहा है।

बगला साहित्य मे 'सटायर' अर्थ के लिए 'व्यग' 'उपहास' 'प्रहसन' आदि शब्दो का प्रयोग होता है। 'व्यग्य' शब्द आधुनिक काल मे अधिक प्रचलन मे है। यहाँ व्यग्य का विषय, सामाजिक बुराइयाँ, धार्मिक आचार-विचार तथा ब्रिटिश कालीन पद लोलुप भारतीय राजा या राजनेता रहा है। बगला साहित्य व्यग्य परक रचनाओ की दृष्टि से समृद्ध है। जहाँ स्वतन्त्रता पूर्व और स्वतत्रता पश्चात् सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, व्यग्य रचित किये गये। श्री माइकल मधुसूदन दत्त ने 'बुडो' 'शालिकैल घाडेरो' एकेई कि बले सभ्यता मे श्री डी एल राय 'वाह्यस्पर्श', 'पुर्नजन्मा' मे, बकिम चन्द्र 'कमला कोतेर दफ्तर', 'गुडेर', 'जीवन', 'भरित', 'लोकरहस्य' आदि मे, व्यग्य परक रचनाए की हैं। रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने 'चिरकुमरसभा' युक्ति उपाय 'बेकुठेरखाता', 'नतुन अवतार' मे शिवराम चक्रवर्ती ने विश्वपतिर, 'अश्वमेघ' मे, कुमारेश घोष ने 'एकवर अनेक कणे' दाढीन कुमार खोला आदि में, सजीव चट्टोपाध्याय 'सोफा कम बेड', 'लोटा-कम्बल' आदि मे अपने व्यग्य वाणो से बुराइयो, विसगतियो को भेदने का काम करते है।

मलयालम मे श्री कचन नबियार, तमिल में श्री चो के नाम व्यग्य लेखन के लिए जाना जाता है। इन लोगो ने राष्ट्रीय और अपने-अपने परिवेशगत सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, विद्रूपताओं, विसगतियों को अपने व्यग्य का विषय बनाया। इनके व्यग्यों से इस समाज की रूढियों, विडम्बनाओं को कम करने में सहायता मिली।

उर्दू में 'व्यग्य' के लिए 'फकारिया' शब्द का प्रयोग हुआ है। व्यंग्य-काव्यों में अकबर इलाहाबादी का नाम उर्दू साहित्य में शीर्ष पर है। उर्दू के परवर्ती व्यंग्यकारों ने 'फकारिया' के

अतिरिक्त कटाक्ष, फिकरा, उपहास, आक्षेप, वक्रोक्ति आदि शब्दो को 'व्यग्य' के अर्थ मे प्रयुक्त किया। शुरु मे उर्दू व्यग्य ने धर्म को अपना विषय बनाया। शफीबुर्रहमान ने अपनी कृति 'रिव्यू' मे पाश्चात्य की अन्धी नकल को अपना निशाना बनाया।

उर्दू के प्रमुख व्यग्यकारो मे अजीमबेग चुगताई, श्री गुलाम अब्बास, इम्तियाज अलीताज, सादत हसन मटो, सलमा सिद्दकी, फिक्र तोसवी ने क्रमश अपनी रचनाओ 'पट्टी', 'वश वृक्ष', 'चचा छक्कन से झगडा चुकाया', 'प्रगतिशील कब्रिस्तान', 'सिकन्दरनामा', 'खुदा की जन्नत' में व्यग्य के माध्यम से तल्खी प्रहार किया है। शौकत धानवी ने 'स्वदेशी रेल' नामक रचना में प्रशासनिक व्यग्य किए है। जैसे– *"मगर बाबू साहब अभी परसो तक तो एक रुपयो तेरह आना किराया था। आज क्या हो गया जो एकदम बढ गया ? कल की बात के साथ आज देश हमारा है, हमको स्वराज मिल गया है।"*[१]

इसमे उस प्रशासनिक व्यवस्था पर व्यग्य किया गया है जहाँ स्वराज का अर्थ मनमानी करने के लिए मिली स्वतन्त्रता से लिया गया है। इसी प्रकार मिर्जाफर तुल्ला बेग ने 'मजामीने फरहत' 'मुर्दावदस्ते जिन्दा' आदि मे 'फकारिया' लिखा है। उर्दू के मशहूर फकारिया कार कृश्न चन्दर ने 'बसवाहक' तथा 'चक्रपाणि' मे मनमौजी कारोबार की, आज की राजनीति की तथा ऊँची सोसायटी की खिल्ली उडायी है। रसीद अहमद सिद्दकी ने भी अपनी रचनाओ में तीखे व्यग्य किये है। इब्राहीम जबीस ने 'ऊपर शेरवानी, अन्दर परेशानी', 'नेकी कर थाने में जा' आदि मे तीखे व्यग्य बाण छोडे हैं। कन्हैया लाल कपूर ने अपनी रचनाओ में शिक्षा पद्धति, पारिवारिक समस्या, धार्मिक अन्ध विश्वास रिश्वत आदि पर व्यग्य किया है। मुश्ताक अहमद युसुफी ने मूलत· शिक्षा पद्धति पर व्यग्य किये है। मुजतबा हुसैन अपनी रचनाओं 'बिल आखिर', 'आओ जापान चलें', 'हैदराबाद बाई नाइट' आदि मे जीवन के विभिन्न कोणों पर तीखा व्यग्य किया है।

---

१ स. रवीन्द्र त्यागी – उर्दू-हिन्दी हास्य व्यग्य, पृष्ठ ६९

इस प्रकार सक्षेप मे कहा जा सकता है कि सस्कृत, मराठी, सिन्धी, गुजराती, बगला तथा तेलगु आदि भाषाओ मे व्यग्य अभिव्यक्ति के माध्यम रूप मे, भाषा शैली रूप मे आया हुआ है। भारतीय भाषाओ मे व्यग्य निबन्ध कहानी कविता, उपन्यास, नाटक, एकाकी, आदि के माध्यम से प्रकट होने के कारण स्वायत नही हो पाया है। लेकिन हिन्दी मे व्यग्य-विद्या का विकास एक मौलिक आयोजन, नियोजन और प्रयोजन है व्यग्य विधा के रूप मे अन्य भारतीय भाषाओ मे अप्राप्त है। जबकि हिन्दी मे स्वातन्त्रयोत्तर काल मे 'व्यग्य विधा का पौधा वट-वृक्ष बन गया।

व्यग्य के तत्व

मानव की विचार शक्ति बौद्धिकता, विवेकशीलता और हृदय की कोमल सवेदनाए अपनी आवश्यकता के अनुसार साहित्य को नया स्वरूप देती है। मानव मन की यात्रा का मार्ग सतत् गतिशील है। व्यग्य उसी यात्रा का एक चरण है। श्री दिनकर सोनवलकर के अनुसार "जब तक मनुष्य होने का एहसास बाकी है। जब तक ईमानदारी और न्याय के लिए लडने की कचोट उठती है, जब तक हम पूरी तरह मुर्दा नही हो गये है, व्यग्य लिखे जाते रहेंगे।"[१]

व्यग्य के बिन्दुओ को निम्नलिखित तत्वों के अन्तर्गत दिखलाया गया है।

१. **विसगतियो का कथ्य** – व्यग्य का विषय-क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत होता है क्योकि इसका सरोकार समाज के सभी अगो से होता है। व्यग्य सामाजिक पीडा की व्यग्यकार द्वारा की गयी मार्मिक और साहित्यिक अभिव्यक्ति है। इसके लिए किसी राजा का आश्रय नही चाहिए और न किसी सुन्दरी की रूप माधुरी। व्यग्य का मूल प्रतिपाद्य मनुष्य की दुर्बलताएँ हैं और जहाँ भी मनुष्य है, वहाँ उसकी दुर्बलताए मुँह चिढ़ा रही है। मनुष्य की इच्छाओं-कामनाओ और

---

१ डॉ. श्याम सुन्दर घोष – व्यग्य क्या, व्यग्य क्यों ? पृष्ठ ५५

कर्म निष्ठाओ मे जहाँ आचरण की प्रतिकूलता दिखलायी पडती है, व्यग्यकार का कार्य वही से प्रारम्भ होता है।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे व्याप्त विसगतियाँ, रचनाकार की चेतना को झकझोरती है। जिससे वह लेदानी, चिन्तन, अथवा तूलिका के माध्यम से व्यक्त करने को प्रेरित होता है जीवन-जगत मे फैली विसगतियो से रचनाकार आँख नही चुराता है बल्कि उससे आँख मिलाकर उसके वास्तविक रूप को अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट रूप देने का प्रयास करता है।

व्यक्ति और समाज द्वारा व्यवहार के जो मान्य नियम हैं, उसके विपरीत आचरण ही विसगति है। हास्य और व्यग्य के बीच एक अन्तर यह भी है कि हास्य व्यक्ति की शारीरिक विकृतियो, असगतियों पर प्रहार करता है, तो व्यग्य समाज की असगतियो पर प्रहार करता है। हरिशकर परसाई इस सन्दर्भ मे कहते है कि "विसगति से ज्यादा महत्त्वपूर्ण चीज है, विसगति का प्रभाव और उसकी व्यापकता। खीसे निपोरना एक बात है दर्द का एहसास करना दूसरी बात।[१] यह तो 'त्वदीय वस्तु गोविन्दम्' की भावना से समाज को परोस देता है। ये विसगतिया ही व्यग्य का कथ्य है। इनकी विविधता और व्यापकता जितनी अधिक होगी, व्यग्य का प्रभाव, शक्ति एव कार्य उसी अनुपात मे अधिक होगा।

२. **चरित्राकन का वैशिष्ट्य** - पाश्चात्य व्यग्यकार स्विफ्ट के अनुसार "व्यग्य की उत्पत्ति ही चरित्र-चित्रण के लिए हुआ है। क्योकि व्यग्य द्वारा चरित्र का प्रतिबिम्ब दिखाये जाने पर व्यक्ति लज्जित होता है। वे लोग जो अपने कर्तव्य पथ पर न आ सके, जिनको न धर्म का भय है, न नैतिकता का मूल्य है और न दण्ड का डर है। हो सकता है ऐसे लोगों का व्यग्य द्वारा पर्दाफाश किया जाए और वे शर्म खाकर, मानवता को नष्ट करने से रोके जा सकें।

---

१ परसाई रचनावली-भाग छः, पृष्ठ २४१

व्यग्यकार व्यक्ति या समाज की जीवन की विडम्बनाओ को उद्घाटित करने के लिए ऐसे पात्रो का अवतरण करता है जिससे वह जो कहना चाहता है पूर्णतया स्पष्ट हो सके। व्यग्य के चरित्र मे कभी व्यक्ति तो कभी वह परिस्थितियॉ महत्त्वपूर्ण होती है जिनसे विडम्बनाओ का जन्म होता है। व्यग्य मे व्यक्त व्यक्ति भी वर्ग का प्रतिनिधित्व करने लगता है। श्रीलाल शुक्ल का 'राग दरबारी' या परसाई की 'रानी नागफनी की कहानी' मे व्यक्त स्त्री पात्र उस व्यवस्था के घोतक है जिनके कारण विडम्बनाओ का जन्म हुआ। इन दोनों रचनाओ मे तत्कालीन समाज नग्न खडा है। श्री मनोहर श्याम जोशी की 'कुरु-कुरु स्वाहा' मे चित्रित स्त्रीपात्र पहुँचेली बाई या तारा झावेरी केवल आधुनिक स्त्री का प्रतिनिधित्व नही करती है बल्कि उस व्यवस्था को प्रकट करती है जिनके कारण इनका इस रूप मे निर्माण हुआ। बहुधा हमारे मन मस्तिष्क मे घृणा पैदा करने वाले पात्र ऐसे व्यवस्था के प्रति आक्रोश जगा जाते है। जिनके कारण ऐसे पात्रो का सृजन हुआ।

व्यग्यकार चरित्राकन करते समय कभी फतासी का सहारा लेता है तो कभी पौराणिक कथाओ का। महत्त्व पात्र का नही पात्र के माध्यम से कही जाने वाली बात का होता है। लेकिन व्यग्य मे व्यक्ति के माध्यम से जीवनगत सच्चाइयो का चित्रण किया जाता है।

३. **सत्यान्वेषक दृष्टि**– व्यग्यकार की दृष्टि रूमानी प्रकृति की नही होती है, बल्कि वह स्वप्न और कल्पना में भी यथार्थ का चित्रण ही करता चलता हैं व्यग्य स्वप्न में भी 'परती परिकथा' कहता है। डॉ शेरजग गर्ग लिखते है कि "जिस रचनाकार की जीवन दृष्टि जितनी सत्यकेन्द्रित तथा उदात्त है, करुण स्थितियो की मार्मिकता को जो रचनाकार जितनी गहरायी से समझेगा, वह उतना ही श्रेष्ठ दर्शी, मर्म स्पर्शी, एव साहित्यिक व्यग्य लिख सकेगा। एकागी, दुराग्रही, अनुदातदृष्टि रखकर कोई व्यग्यकार श्रेष्ठ और सच्चा व्यंग्य नहीं दे सकता है।[२] व्यग्य

---

१ डॉ बरसाने लाल चतुर्वेदी – आधुनिक हिन्दी काव्य में व्यग्य, पृष्ठ–२०

२ डॉ शेरजंग गर्ग – स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यग्य, पृष्ठ–४५

की मार किसी व्यगयकार मे उसी अनुपात मे तीखी होगी जिस अनुपात मे वह अपने युग की समस्याओ के प्रति ईमानदार होगा। जिस हद तक वह गुटनिरपेक्ष होगा उसकी रचना में प्रभावोत्पादकता उतनी ही अधिक होगी। इस सन्दर्भ मे डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी का अभिमत महत्त्वपूर्ण है, "व्यग्य का गुट निरपेक्ष चरित्र ही उसकी ईमानदारी और सजगता का परिचायक है। गुट अथवा वर्ग मे बँधकर व्यग्य निरपेक्ष नही रह जाता और सापेक्ष व्यगय अपनी चुभन एव सार्थकता खो बैठता है"।[१]

व्यग्यकार व्यक्ति या समूह के प्रति निष्ठावान नही होता है। बल्कि उसकी निष्ठा, सामाजिक सत्य और सामाजिक सौन्दर्य के प्रति होती है वह किसी को प्रसन्न नही करता, बल्कि सत्य को हथियार बनाकर सबसे लडने पर आमादा रहता है।

विविधताओ का मिश्रित स्वभाव- व्यग्य स्वभाव बडा विचित्र है। कभी वह एक पक्ष के समर्थन मे खडा है, पुन॰ उसी की मूर्खताओ अन्धविश्वासो पर कुठाराघात करता हुआ पाया जाता है। ठीक प्रेमचन्द्र की भाँति जो महाजनी सभ्यता के कारण होरी का शोषण दिखलाते है और जगह-जगह होरी के काइयेपन को भी प्रकट करते है। व्यग्य के लिए व्यक्ति नही, वृत्तियाँ प्रधान होती है। व्यग्यकार पुलिस, अफसरशाही, आदि को व्यग्य का विषय बनाता है। तो उनकी लाचारी, बेवसी को अपने व्यग्य मे सम्मिलित करता है। इस प्रकार विचित्रताओ का उद्घाटन ही उसका उद्देश्य होता है किसी का पक्ष लेना या विरोध करना नही।

भाषागत वैशिष्ट्य- सामान्य-साहित्य और व्यग्य साहित्य के बीच पार्थक्य का महत्त्वपूर्ण तत्व भाषा भी है। व्यग्य की भाषा सीधी सपाट बयानी ली हुई रहती है। बिना लाग-लपेट व्यग्यबकार अपनी बात कहना प्रारम्भ करता है। व्यग्य की भाषा सामान्यत. चालू जुबान की

---

१ डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – हिन्दी का स्वातन्त्रयोत्तर हास्य और व्यग्य, पृष्ठ-६६

भाषा तथा लोक-भाषा होती है। उपमाए, मुहावरे इनकी धार को और अधिक तेज करती है। सूक्ति शैली व्यग्यकार के लिए अच्छी शैली मानी जाती है। थोडे मे बहुत कह देना ही व्यग्य का विशिष्ट गुण है। अपेक्षा से अधिक विस्तार इसके प्रभाव को नष्ट कर देता है। व्यग्यकार सामाजिक शब्दावली के प्रयोगो द्वारा उन्ही के ऊपर व्यगय करता है। डॉ बरसाने लाल चतुर्वेदी इस सन्दर्भ मे कहते है, "उत्तम व्यग्यकार श्रेष्ठ व्यग्य की सृष्टि करने के लिए वक्र उक्ति, सन्दर्भ विपयर्य, श्लेष वचन विदग्धता आदि अनेक साधनो का कुशलतापूर्वक प्रयोग करता है"।[१]

फन्तॉसी के प्रयोग- आधुनिक व्यग्य के लिए 'फतासी' महत्त्वपूर्ण आयुध है। जिसकी सहायता से वह मुखौटा ओढकर सामाजिक सत्य को उद्घाटित करने का काम करता है। श्री हरिशकर परसाई के अनुसार "लोक कल्पना से दीर्घकालीन सम्पर्क और लोक मानस से परम्परागत सगति के कारण 'फैटेसी' की व्यजना प्रभावकारी होती है"।[२]

फैटेसी के माध्यम से वह सस्मरण और रेखा चित्रकार बनने से बच जाता है। इसके माध्यम से वह जीवन की अतल गहराइयो मे उतरने मे सक्षम होता है। फैंटेसी के माध्यम से वह पात्रो एव घटनाओं की कल्पना करता है। लेकिन व्यक्त होने वाला सत्य यथार्थ होता है। 'कल्पना' के फ्रेम मे 'यथार्थ की तस्वीर को मढने का कार्य व्यग्यकार करता है। इसके माध्यम से जहाँ व्यग्यकार नीरसता को समाप्त करने मे सक्षम होता है वहीं इसके द्वारा व्यग्य की धार और चुभने वाली हो जाती है।

बुद्धि-पक्ष का प्राधान्य- हृदया की कोमल भावनाओ के स्थान पर व्यग्यकार बुद्धि के द्वारा अधिक सचालित होता है। कतिपय विद्वान बौद्धिकता को व्यग्य का प्राण तत्व मानते

---

१ डॉ बरसाने लाल चतुर्वेदी – आधुनिक हिन्दी काव्य में व्यग्य, पृष्ठ-८१

२ हरिशंकर परसाई- रानी नागफनी की कहानी-भूमिका

है। व्यग्यकार क्यो और कैसे के द्वारा समाज की विसगतियो को उभार कर सबके सामने प्रस्तुत करने का कार्य करता है।

मनुष्य मात्र भावनात्मक प्रतिक्रियाओ द्वारा ही सचालित नही होता है। जीवन की समस्याए उसके विवाद विचार को उकसाती है। जिससे बौद्धिक धरातल पर वह उसका समाधान भी ढूढना चाहता है। व्यग्यकार घटनाओ, स्थितियो तथा सम्भावनाओ का इस प्रकार बौद्धिक होती है और प्रस्तुति सजीव।

तात्पर्य यह कि व्यग्यकार केवल दिल से सचालित नही होता है वह दिल और दिमाग, दोनो से काम लेता है। कोरी भावुकता नही है, तो बौद्धिकता भी नही होती है।

संवेदना की पृष्ठभूमि–

व्यग्यकार का सहज जुडाव और लगाव समाज से अधिक होता है। वह समाज की प्रत्येक घटना, परिवर्तन के प्रति सवेदनशील होता है। समाज की विसगतिया उसे हमेशा जगाती रहती है। जिसके कारण वह 'दुखिया दास कबीर' हो जाता है। व्यगयकार 'व्यग्य व्यग्य के लिए' नही लिखता है। बल्कि सामाजिक प्रतिबद्धता के कारण उसकी पीडा को व्यक्त करता है। अपने समाज और समाज के प्रति उसकी प्रतिबद्धता उसे व्यग्यकार के कठिन दायित्व के निर्वहन के लिए प्रेरित करती है।

व्यग्य तत्व की विवेचना करते हुए प्रसिद्ध विद्वानो ने व्यगय के तत्व को इस प्रकार निर्धारित किया है–

डॉ वीरेन्द्र मेंहदी रत्ता ने अपनी रचना 'आधुनिक हिन्दी साहित्य में व्यग्य के अन्तर्गत व्यग्य के तीन मूल तत्व को स्वीकार किया है–

(१) आलोचना,

(२) हास्य अथवा वीभत्सता

(३) सुधार।[१]

डॉ बरसने लाल चतुवेदी व्यग्य के चार तत्व का उल्लेख करते है–

(१) साहित्यिकता और साहित्य विधा

(२) दूसरो की अथवा अपनी मूर्खताओ की हँसी उडाना

(३) व्यग्य की सृष्टि के लिए हस्य वक्रोक्ति, वचन विदग्धता रूपी उपकरणो का प्रयोग

(४) सुधार करने का उद्देश्य[२]

डॉ शेरजग गर्ग व्यग्य विधा के ऊपर प्रकाश डालते हुए लिखते है कि "व्यग्य मे निहित सवेदनशीलता, गम्भीरता, वौद्धिकता, साकेतिकता एव तटस्थ विश्लेषण ही व्यग्य को सार्थक श्रेष्ठ तथा गहरा बनाते है।[३]

डॉ बापूराव देसाई व्यग्य-विधा का मानदण्ड निम्न तत्वो के द्वारा निर्धारित करते हे– (१) मीठा प्रहार, (२) चरित्र-चित्रण, (३) सुधार, (४) विविध गुण, (५) देश काल तथा वातावरण, (६) शैली।"[४]

व्यंग्य के भेद

डॉ शेरजग गर्ग के अनुसार व्यग्य के दो भेद वैयक्तिक और निर्वैयक्तिक है। वैयक्तिक

---

१ डॉ वीरेन्द्र मेंहदी रत्ता– आधुनिक हिन्दी साहित्य में व्यग्य– पृष्ठ १५-१६

२ डॉ वरसाने लाल चतुर्वेदी– मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाएँ– भूमिका

३ डॉ शेरजंग गर्ग– स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कविता में व्यग्य, पृष्ठ–६१

४ डॉ बापूराव देसाई – हिन्दी व्यंग्य विधा शास्त्र और इतिहास, पृष्ठ–२२

व्यग्य के भी दो रूपो का निर्धारण गर्ग जी ने किया है, आत्म व्यग्य और परस्थ व्यग्य। निर्वैयक्तिक व्यग्य को भी दो रूपो मे बाँटा गया– स्थितियो की विडम्बना को उभारने वाला व्यग्य तथा दैवी एव नियति की दारुणता को दर्शनो वाला व्यग्य।[१]

उद्देश्य की दृष्टि से व्यग्य को दो भागो में बाँटा गया है। 'आशावादी' एव 'निराशावादी'। आशावादी व्यग्य विसगतियो और त्रुटियो को इगित करता है लेकिन उसका उद्देश्य सुधारात्मक होता है। निराशावादी व्यग्य अत्यन्त क्रूर, विखण्डक एव दण्डात्मक होता है। आशावादी व्यग्य चिकित्सक की भूमिका मे होता है और निराशावादी व्यगय बधिक की। सम्भव है एक ही रचनाकार की एक ही रचना आशावादी हो और दूसरी रचना निराशावादी।

आश्रय के आधार पर डॉ बरसाने लाल चतुर्वेदी, व्यगय को दो भागो मे बाँट करके देख रहे है– व्यक्तिगत व्यग्य एव समष्टिगत व्यग्य। समष्टिगत व्यग्य को धर्म, समाज, राजनीति, तथा मानवीय दुर्बलताओं से सम्बन्धित भागो मे बाँट कर चतुर्वेदी जी देख रहे है।

'आश्रय' या आलम्बन के आधार पर किया गया विभाजन अनुचित प्रतीत होता है क्योकि व्यग्यकार निज के व्यग्य द्वारा भी समाज की विसगतियो को उभारने का प्रयास करता है। श्रेष्ठ व्यग्य सामान्यीकरण द्वारा ही अधिक प्रभावी हो सकता है, न कि व्यक्तिगत एव समष्टिगत भेद को रखकर।

डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी ने व्यग्य के प्रयोजन, स्वभाव और प्रभाव को दृष्टि में रखते हुए व्यग्य विभाजन का प्रयास किया है। उन्होने चमत्कारिक विनोद वचन, व्याजोक्ति, उपहास, व्याकृति, आक्षेप आदि को व्यग्य के भेद के रूप मे स्वीकार किया है।

---

१ डॉ शेरजग गर्ग– स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यग्य, पृष्ठ–७०

२ डॉ बरसाने लाल चतुर्वेदी – आधुनिक हिन्दी काव्य में व्यग्य, पृष्ठ–२४

वास्तव मे यह व्यग्य का भेद नही बल्कि व्यग्य के साधन है। व्यग्य भर्त्सना, छिन्द्रान्वेषण, वैषम्य आदि भगिमाओ का अवलम्ब भी लेता है।

प्रभाव की दृष्टि से व्यग्य का विभाजन तीन भागो मे किया जा सकता है–

(१) हास्य से युक्त व्यग्य

(२) कटु यथार्थ से युक्त व्यग्य

(३) करुणा से युक्त व्यग्य

व्यग्य के इस विभाजन के अतिरिक्त सबसे अधिक सर्वग्राह्य और सरल विभाजन विषय की दृष्टि से किया जा सकता है। जो इस प्रकार है –

(१) राजनीतिक व्यग्य

(२) प्रशासनिक व्यग्य

(३) सामाजिक व्यग्य

(४) आर्थिक व्यग्य

(५) शैक्षणिक व्यग्य

(६) धार्मिक व्यग्य

(७) सास्कृतिक व्यग्य

(८) साहित्यिक व्यग्य

(९) वैयक्तिक व्यग्य

(१०) आत्म व्यग्य

व्यंग्य का प्रयोजन

व्यंग्य में समाज का यथार्थ चित्रण हो जाता है। उसका कार्य मुख्यत· उपदेशक, धर्माचार्य का ही नहीं होता है, बल्कि वह शल्य चिकित्सक की भूमिका में होता है जो राग–विराग रहित

होकर आपरेशन करता है।

व्यंग्य का प्रयोजन

सत्य का उद्घाटन- व्यग्यकार सामाजिक जीवन की विसगतियो को और स्वीकृत मानदण्डो के विपरीत चलने वालो को अत्यन्त कुशलता एव ईमानदारी के साथ व्यक्त करता है। व्यग्य मानव को प्रकट रूप से आलोचित और लज्जित करता है। इसलिए यह समाज से सीधे जुडा है। व्यग्यकार की दृष्टि सत्य शोधक है। वह सत्य की तलवार उठाकर सामाजिक-आलोचक का पद ग्रहण करता है।

व्यग्य मे सत्य की आत्मा और निर्भीकता की काया होती है। श्री दिनकर सोनवलकर का मानना है कि "साहित्य की सबसे बडी अदालत व्यग्य है। जहाँ किसी के बारे में व्यग्यकार सत्य और न्याय का दो टूक फैसला करता है।[२]

सुधार की आकाक्षा- व्यग्य समाज की बुराइयो को सुधारने का कार्य करता है इसके अभाव में प्रत्येक व्यक्ति एग्रीयंगमैन की भूमिका मे कार्य करता रहेगा।

व्यग्यकार सामाजिक खतरे के प्रति अति सवेदनशील होता है जिसके कारण समाज मे उत्पन्न बुराइयों को वह सबसे पहले सुनता है। हरिशकर परसाई के अनुसार, "व्यग्य जीवन से निरपेक्ष नही हो सकता है। व्यग्य जीवन से साक्षात्कार करता है। जीवन की आलोचना करता है, विसगतियों, मिथ्याचारो और पाखण्डों का पर्दापाश करता है। यह नारा नही है। मैं कह रहा हूँ कि जीवन के प्रति व्यग्यकार की उतनी ही निष्ठा होती है। जितनी किसी गम्भीर रचनाकार की। बल्कि ज्यादा ही। वह जीवन के प्रति दायित्व का अनुभव करता है।[३]

---

१ डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी- हिन्दी का स्वातन्त्रयोत्तर हास्य और व्यग्य, पृष्ठ, ७०-७३

२ श्यामसुन्दर घोष-व्यग्य क्या, व्यंग्य क्यो, पृष्ठ-२२

३. हरिशंकर परसाई- 'सदाचार का तावीज', पृष्ठ-३

परसाई व्यगय द्वारा सुधार नही करना चाहते है, बल्कि बदलाव की अपेक्षा रखते है। तो यशवन्त कोठारी व्यग्य का मूल उद्देश्य सुधार की ओर प्रेरित करना बतलाते है।

सामाजिक लज्जा का कारक

व्यग्य समाज का स्वर है। वह इन अर्थों में की जो बात आम आदमी खुले रूप में नही कह पाता है। वही बात व्यग्यकार बडे स्पष्ट ढग से कह लेता है। व्यग्य मनुष्य की भूलो की ओर ध्यान आकृष्ट करता है, जिससे उसे लज्जा का बोध हो।

डॉ रामविलास शर्मा व्यग्य की लज्जा शक्ति का उद्घाटन इस प्रकार करते है– "व्यग्य का मूल उद्देश्य इसमे है कि वह हमे अपनी कमजोरियो से सचेत करता है। जहाँ-जहाँ लोग अपनी पतित मनोवृत्तियो से सन्तोष कर बैठ रहे हैं वहाँ प्रतिभाशाली लेखको ने अपने तीव्र व्यगय वाणो से उन्हे जगाया हैं अकर्मण्यता, आलस्य, आत्मसन्तोष के फैले जाल को छिन्न भिन्न करने के लिए लेखक के हाथ मे व्यग्य से अधिक सुन्दर अस्त्र कुछ भी नही हो सकता। मनुष्य को जब मर्मस्थलो मे आहत अपनी निर्बलताओं का ज्ञान होता है तब उन्हे दूर कर अपने को दूसरो के सामने सबल सिद्ध करने का वह प्रयत्न करता है।[२]

सामजिक स्वच्छता का दायित्व

व्यग्यकार एक प्रकार से नैतिकता का समाज में ठेका लिए रहता है जो गन्दगी फैलने पर उसको साफ करने का कार्य करता है। व्यग्यकार अपनी आलोचना की चिन्ता नही करता है बल्कि वह हमेशा इस बात का प्रयास करता है कि समाज गन्दगी रहित रहें। इस दृष्टि से व्यंग्य समाज का शत्रु नहीं मित्र हैं, वह समाज को स्वच्छ रहने के लिए, प्रेरित करता है।

---

१ हरिशकर परसाई– 'सदाचार का तावीज', पृष्ठ–३

२ डॉ रामविलास शर्मा– स्वाधीनता और राष्ट्रीयता साहित्य, पृष्ठ–१३०

क्रान्ति का अग्रदूत

व्यग्यकार समाज रूपी भवन को 'नया रूप' देता है। इसमे जो सुधरने योग्य है उसे सुधरने के लिए प्रेरित करता है जो बदलने योग्य है उसे बदलने के लिए प्रेरित करता है। जो टूटने के योग्य है उस पर कडा प्रहार करता है। व्यग्यकार सडी-गली व्यवस्था को सुधारने के लिए ही नही बदलने के लिए प्रेरित करता है। जैसा कि हरिशकर परसाई लिखते है कि, "मै सुधार के लिए बदलने के लिए लिखना चाहता हूँ यानि कोशिश करता हूँ चेतना मे हलचल हो जाय कोई विसगति नजर के सामने आ जाय इतना ही काफी है।[१] आगे वह लिखते है कि "हम लेखक कुल इतना कर सकते है कि इस व्यवसथा की सडाँध को उजागर करे और परिवर्तन की चेतना का निर्माण करें।[२]

इस प्रकार कतिपय विद्वानों द्वारा घोषित साहित्य के उद्देश्य को व्यग्य पूरा करता है कि यह समाज के आगे झण्डा लेकर चलता है। राजनीति का मार्ग दर्शक है।

युग समस्याओं का ऐतिहासिक महाकाव्यात्मक वृत्तान्त

साहित्य समाज का दर्पण होता है तो व्यग्य तत्कालीन समाज का वास्तविक और प्रामाणिक दस्तावेज होता है व्यग्यकार अपने युग की समस्सयाओं का 'आँखो देखा हाल' प्रसारित करता है। व्यग्य रचनाओ के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक घटनाओं का भविष्य मे अध्ययन किया जा सकता है। व्यग्य वास्तविक इतिहास होता है, सामाजिक और राजनैतिक होता है जो उस समाज का यथार्थ चित्रण करने का साहस करता है।

डॉ नामवर सिह आदि विद्वानो के मतो मे अगर व्यग्य और इतिहास का सम्मिलित

---

१ कमला प्रसाद- परसाई रचनावली, भाग-६, पृष्ठ-२४३

२ वही-४१३

अध्ययन किया जाय तो उस समय की वास्तविक घटनाओ एव परिणामो का श्वेत श्याम चित्र मन पर सरलता से अकित हो जायेगा। इनके अनुसार "स्वय नगा होकर घूमने मे सुख हो सकता है। लेकिन सवाल तो सम्राट को नगा करने का है खासतौर पर ऐसे समय जबकि सभी लोग उसे एकदम नगा देखते हुए भी किसी डर से ऐसा न कह पाते हों।" [१]

'रागदरबारी', 'राजा राज करे', 'किस्सा कुर्सी का', 'रानी नागफनी की कहानी' आदि रचनाए अपने वर्तमान युग की प्रतिबिम्ब है। नारमन फलाग का कथन इस परिप्रेक्ष्य में वास्तविक प्रतीत होता है कि "व्यग्य मे जो ऐतिहासिक कार्य सम्पन्न हुए है उनके कारण प्रत्येक युग की व्यग्य रचनाए महत्त्वपूर्ण माध्यम है अपने युग को जानने का।"[१]

पूर्व काल मे समाज का नियन्त्रण धर्म के माध्यम से होता था लेकिन जब धर्म भी विकृत होना प्रारम्भ हो गया तो समाज के ऊपर व्यग्य नियन्त्रण का कार्य वहन कर लिया। वर्तमान मे यह शिक्षा साहित्य, राजनीतिक, समाज सबको, दिशा-दर्शन करने वाला हो गया है।

❑

द्वितीय अध्याय

हिन्दी व्यंग्य विकास एवं स्थापना
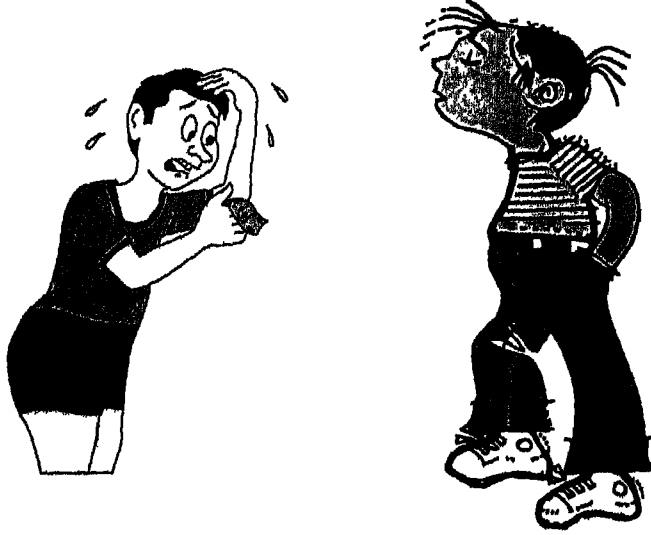
भारतेन्दु और उनके समकालीन बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, राधाकृष्ण गोस्वामी, बद्री नारायण चौधरी, बाल मुकुन्द गुप्त आदि ने समाज की यथार्थ स्थिति के भोक्ता और द्रष्टा थे। इन लोगो ने एक ऐसी शैली मे रचना करनी प्रारम्भ की, जो गद्य और पद्य के बीच थी।

भारतेन्दु और उनकी मण्डली ने प्रहसन, नाटक, निबन्ध, कविता, कहानी आदि विधाओ मे व्यग्य को स्थान दिया। भारतेन्दु ने स्त्रोत शैली मे 'स्त्रोत पचरत्न लिखे' 'ककड स्त्रोत' काशी की नगरपालिका पर मुँह चिढाता है। 'अग्रेज स्त्रोत' गोरे लोगो को चुटकी काटता है। 'वैश्या स्तवराज' में वैशयगमन व्यग्य का विषय है। 'स्त्री सेवा पद्धति' मे स्त्रियो की वकालत, आभरण शीलता के साथ स्त्रियोचित आचरण करने वाले लम्पट पुरुषो को लक्ष्य करके व्यग्य गोले दागे गये है। 'उर्दू की स्यापा', 'पाँचवा पैगम्बर', 'स्वर्ग मे विचार का अधिवेशन', 'भाँति-भाँति का जानवर', 'लेवी प्राण लेवी', 'ईश्वर बडा विलक्षण है', 'आप ही तो है', 'सच मत बोलो', 'मुशायरा', 'चिडिया घर का चेला' निबन्धो के अतिरिक्त विभिन्न विषयो पर मुकरिया लिखकर व्यग्य की चाकू पर धार तेज कर दिया।

'अधेर नगरी' आधुनिक हिन्दी व्यग्य का नीव ग्रन्थ है 'भारत दुर्दशा' सम्पूर्ण भारत की द्रारुण एव क्रन्दन की गाथा है। 'वैदिकी हिसा हिसा न भवति', 'विषस्य विषमौषधय' उनके व्यग्य तीक्ष्णता के ठोस प्रमाण है।

भारतेन्दु कालीन प्रमुख निबन्धकार बालकृष्ण भट्ट ने 'अकिल अजीरन', 'गदहे में गदहापन क्या है', 'ईश्वर क्या ही ठिठोल है', 'हाकिम चलन की गुलामी', 'इगलिश पढे सो बाबू होय', 'पत्नी स्तत्व खटका', पुरातन और आधुनिक सभ्यता आदि निबन्ध कर युगीन दुष्प्रवृत्तियो को उधाड़ा है।

इसी समय के एक अन्य व्यग्य-परम्परा के हस्ताक्षर प. प्रताप नारायण मिश्र 'समझ

का फेरि', 'टेढ जानि शका सब काहूँ', 'वज्रमूर्ख', 'खुशामद', 'नामर्द तो नाखुदा ने भी बनाया है', 'न्याय', 'समझदार की मौत', 'स्वार्थ', 'शिवमूर्ति', 'आप', 'कलिकोष', 'इन्कम टैक्स' आदि मे व्यग्य किया है। श्री बदरी नारायण चौधीर 'प्रेमधन' ने 'विधवा', 'विपत्तिवर्षा', 'दिल्ली-दरबार', 'भारत के लुटेरे', 'नवीन वर्षारम्भ', 'पुरानी का तिरस्कार और नयी का सत्कार' आदि मे तत्युगीन सामाजिक विसगतियो पर सटीक व्यग्य किया है।

श्री राधाचरण गोस्वामी ने 'यमपुर यात्रा', 'नापित स्त्रोत', 'मूषक स्त्रोत', 'रैल्वे स्त्रोत', 'वैद्यराज स्त्रोत', 'होली' आदि रचनाओ मे व्यग्य की बौछार का रुप बिखेरा है।

बालमुकुन्द गुप्त ने अपनी चिट्ठो और खतो के द्वारा सामाजिक विद्रूपताओ का कच्चा-चिठ्ठा खोला हे। 'छद्म' नाम धारण करने की परम्परा बालमुकुन्द गुप्त ने ही प्रारम्भ की है। आत्मा राम नाम से भी इन्होने साहित्य की रचना की है।

भारतेन्दु युगीन साहित्य के मूल उद्देश्य दो थे। पहला प्रसुप्त जनता को दीन-हीन विपन्नावस्था से जाग्रति करना, दूसरा उद्देश्य था सदियो की दासता से मुक्ति दिलाना। इसके लिए साहित्यकारो ने जिस भी विद्या से जनता तक बात पहुँचाने को सरल समझा, अपनाया। हास्य का अवलम्बन लेकर सभी विधाओ मे व्यग्य वाण छुटने प्रारम्भ हुए। आलोचना, निन्दा, सुधार और हास्य इस समय के साहित्य और साहित्यकारों दोनो का मूल स्वर था। भारतेन्दु और तत्युगीन साहित्य के विषय मे डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी ने लिखा है "बात की शुरुआत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से की जा सकती है वस्तु सत्य और प्रचार-सत्य के बीच के अन्तराल को पहचानने की कोशिश भारतेन्दु से काफी पहले कबीर ने की थी लेकिन ये भारतेन्दु हरिश्चन्द्र थे जिन्होंने आँखे खोलकर विविध सामाजिक सास्कृतिक और प्रशासनिक विसगतियो को देखा एवं जी भर कर देशीय विषमता कर कटा किया।

तत् समय की तमाम पाबन्दियो के बावजूद लेखको ने व्यग्य-निबधो, नाटको, प्रहसनो आदि द्वारा समाज की विकृतियो को सुधारने का कार्य किया। वही शोषको को सतर्क किया कि 'दूर हटो ये दुनिया वालो हिन्दुस्तान हमारा है'। व्यग्य की वास्तविक शुरुआत भारतेन्दु युगीन प्रहसनो से हुई।

द्विवेदी युग भाषा-परिष्कार के दृष्टि से प्रसिद्ध रहा है। भारतेन्दु युगीन परम्परा यहाँ आकर शिथिल पड गयी। बद्रीनाथ भट्ट, जी पी श्रीवास्तव, उग्र आदि के अतिरिक्त अधिकाश साहित्यकार दार्शनिक गम्भीरता से युक्त रचना करते रहे। प्रेमचन्द्र, प्रसाद के नाटको मे व्यग्य को प्रहारक क्षमता मिलती है। प्रेमचन्द्र की कहानियो एव उपन्यासो मे व्यग्य, व्यग्य के लिए नही आता अपितु कथा की माग बनकर आता है।

स्वतन्त्रता बाद की परिस्थितियाँ इतनी तीव्र गति से परिवर्तित हुई कि साहित्यिक क्षेत्र मे भी क्रान्ति जैसी स्थिति उत्पन्न हो गयी। इस समय नयी प्रकार की समस्याओ ने जन्म लिया। इसी कारण व्यग्य के तेवर भी बदल गये।

कविता मे व्यंग्य

सूर और तुलसी व्यग्य कवि नही रहे हैं फिर भी अपनी रचनाओ मे इन्होने व्यग्यवाण छोडे है। तुलसी ने दुष्टों की बन्दना की है जो ओले के समान है, स्वय तो नष्ट होते ही है, फसल को भी नुकसान पहुँचाते हैं। इसी तरह दुष्ट को कौओ के समान बताया है जो प्यार से पाले जाने पर भी माँस खाना नही छोडता है।

"बापस पालिहि अति अनुरागा । होहि निरामिष कबहुँ न कागा ।।[१]

सूरदास ने भ्रमरगीत प्रसग मे व्यग्य की सृष्टि की है। जहाँ उन्होंने वाग्वैदग्ध्य के माध्यम

---

१. गोस्वामी तुलसी दास . रामचरित मानस, बालकाण्ड, पृष्ठ ७०

से व्यग्य की सृष्टि की है।

रीतिकाल मे बिहारी ने अपने काव्य मे अनेक स्थलो पर व्यग्य का प्रयोग किया है। बिहारी ने वक्रोक्ति और चमत्कार उत्पन्न कर व्यग्य को स्वर दिया है।

भारतेन्दु युगीन कवियो ने सही अर्थों मे व्यग्य की महत्ता को समझा। तत्कालीन अग्रेजी साम्राज्य की शासन व्यवस्था से क्षुब्ध होकर कवियो ने देशी, विदेशी, लाल, साहब, पुलिस, एडीटर और अग्रेज भक्त, सभी पर तीखा व्यग्य किया। भारतेन्दु व्यग्य के प्रतिनिधि कवि थे। तो बालकृष्ण भट्ट ने टैक्सो की मारी जनता के दु खो को व्यक्त किया। प राधाचरण गोस्वामी 'इल्बर्ट बिल विवाद' पर स्यापा लिखकर व्यग्य बाण छोडा। प्रताप नारायण मिश्र ने अपने समय की सामाजिक पिद्रूपताओ को प्रखर स्वर दिया। बाल मुकुन्द गुप्त ने अपनी रचनाओ मे अग्रेजी साम्राज्यो को व्यग्य का मुख्य विषय बनाया। उनकी 'सर सैयद की बुढापा' शीर्षक कविता में व्यग्य की भरमार है। भारतेन्दु युगीन कवियो ने व्यग्य की स्वस्थ परम्परा की नीव रखी।

द्विवेदी ने मूलत अग्रेजी सभ्यता का अन्धानुकरण करने वालो के ऊपर व्यग्य किया। मैथलीशरण गुप्त ने आडम्बरो एव तत्कालीन कुरीतियों पर व्यंग्य किया। बालकृष्ण शर्मा नवीन और माखन लाल चतुर्वेदी ने भी व्यग्य के तीर अपनी रचनाओ में चलाये है।

छायावादी कवियो मे भावना की आतिशयता थी। उनकी दृष्टि आत्मनिष्ठ और प्रकृति-प्रेम की तरफ थी। वे कोमलकान्त पदावली की रचना करते थे। इस समय के कवियो में निराला ही एक मात्र ऐसे कवि थे जिन्होंने व्यग्य का स्वर अपनाया। स्वातन्त्रयोत्तर काल में अनास्था, निराशा कुण्ठा और असन्तोष को व्यक्त करने के लिए व्यग्य का सहारा लिया गया है। आधुनिक कविता की प्रमुख प्रवृत्ति व्यग्यात्मक है। देश की वर्तमान राजनैतिक गतिविधियों, आधुनिक सभ्यताओं की विसंगतियों, मध्यवर्गीय आदमी की विडम्बनाओ, शान्ति

स्थापित करने की असफल प्रयासो पर सशक्त व्यग्य किया गया है। नागार्जुन मुक्तिबोध इस समय के प्रतिनिधि व्यग्य कवियो मे से है।

उपन्यास मे व्यंग्य

स्वातन्त्रयोत्तर उपन्यासो पर अगर दृष्टि डाले तो व्यग्यपरक उपन्यासो की एक लम्बी परम्परा मिलती है जैसे– निराला का 'कुल्ली भाट' और 'बिल्लेसुर बकरिया', रागेय राघव का 'हुजूर', विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त का 'चाँदी का जूता', राधाकृष्ण का 'सनसनाते सपने', उग्र का 'कढी मे कोयला' (१९५५), परसाई कृत 'तट की खोज' (१९५५), 'ज्वाला और जल' (१९५८), 'रानी नागफनी की कहानी' (१९६२), नागार्जुन का 'हीरक जयन्ती' (१९६३), हिमाशु श्रीवास्तव का 'कथा सूर्य की नयी यात्रा' (१९६४), श्री लाल शूक्ल का 'राग दरबारी' (१९६८), बद्री उज्जमा का 'एक चूहे की मौत', श्याम सुन्दर घोष का 'एक उलूक कथा', नरेन्द्र कोहली का 'आश्रितो का विद्रोह', आबिद सूरती का 'काली किताब', अशोक शुक्ल का 'कालेज पुराण' (१९७४), 'हडताल हरिकथा' (१९७५, बद्री उज्जमा का 'छठातन्त्र', मनोहर श्याम जोशी का 'नेता जी कहिन', 'कुरु कुरु स्वाहा' आदि।

भारतीय जन मानस मे व्याप्त कुरीतियो विसगतियो को, व्यग्य-उपन्यासो मे प्रमुख स्वर दिया गया है। अनोखे शिल्प माध्यम से सम-सामयिक परिवेश को इन उपन्यासो मे चित्रित किया गया है। जिसमें भारतीय जन-जीवन का कटु सत्य उद्घाटित होता है। मध्य वर्ग की विडम्बना और सामाजिक अन्तर्विरोध इन उपन्यासों का प्रमुख विषय रहा है जिसको इन्होने कही कटु यथार्थ रूप में, कहीं करुण व्यग्य के माध्यम से, तो कहीं हास्य मे पाग करके साहित्य में उत्त

नाटक मे व्यंग्य

भारतेन्दु युग के नाटको में भी व्यग्य देखने को मिलता है। इस समय हास्य मिश्रित नाटक अधिक लिखा गया है। भारतेन्दु के प्रहसनों 'अन्धेर नगरी', 'वैदिकी हिसा हिसा न भवति', 'विषस्य विषमौषधम्' 'जाति विवेकनी सभा' आदि को खूब ख्याति मिली। प्रताप नारायण मिश्र का 'कील कौतुक रुपक' तथा भारतेन्दु का 'भारत दुर्दशा' नाटक समाज और राजनीति के ऊपर कठोर व्यग्य है। राधाचरण गोस्वामी का 'बूढे मुँह मुँहासे' नेताओ के पाखण्ड पूर्ण कृत्यो पर करारी चपत है।

प देवकी नन्दन त्रिपाठी ने अनेक नाट्य कृतियाँ की। जिनमे व्यग्य की छटा बिखरी पडी है। गोपाल राम गहमरी ने 'जैसे को तैसा' में वृद्ध विवाह पर व्यग्य किया। ऐतिहासिक नाटक लेखन मे प्रसाद का नाम भी अविस्मरणीय रहेगा। इन्होंने गम्भीर और उद्देश्यपूर्ण व्यग्य लेखन की परम्परा को अपनी रचनाओ मे स्थान दिया।

द्विवेदी युग में व्यग्य परम्परा की गति थोडी अवरुद्ध हो गयी। अन्य विधाओ की भाँति नाटक में भी व्यग्य परम्परा की धारा क्षीण हो गयी। जी पी श्रीवास्तव, उग्र और बद्रीनाथ भट्ट ही नाट्य-व्यग्य-परपरा को आगे बढाने मे थोडा सहयोग कर सकें।

केशवचन्द्र वर्मा का 'चिडी का गुलाम' व्यग्य एकाकी सग्रह है जिसमे उन्होंने सभी मे सशक्त व्यग्य प्रस्तुत किया है। डा सत्यप्रकाश सगर ने अपने नाटक 'दामाद का चुनाव' में शिक्षा के ऊपर व्यग्य वाण साधा है। ज्ञानदेव अग्निहोत्री ने 'शुतुरमुर्ग' में राजनैतिक स्थिति का सफल चित्रण किया है। इसी तरह – विनोद रस्तोगी 'जनतन्त्र जिन्दाबाद', लक्ष्मी नारायण 'कलकी', 'अब्दुल्ला दीवाना', नरेन्द्र कोहली 'शबूक की हत्या', सर्वेश्वर दयाल सक्सेना 'बकरी' आदि नाटकों मे सशक्त व्यग्य है। नाटकों में यद्यपि व्यग्य अधिक नहीं लिखा गया फिर भी इन नाटको का व्यग्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है।

कहानी मे व्यंग्य

इशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' प्रथम कहानी मानी जाती है। इसके पश्चात राजा शिव प्रसाद सिह की 'राजा भोज का सपना', भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की 'स्वर्ग मे विचार सभा का अधिवेशन' आदि कुछ कहानियाँ है। जिसमे व्यग्य का समावेश दिखलायी पडता है। प्रेमचन्द्र की कहानियो मे यदा-कदा व्यग्य की तेज धारा बहती सी प्रतीत होती है।

स्वतन्त्रता पश्चात की कहॉनिया अपने समाजी कवच से बाहर निकलती है। इसी समय सामाजिक सत्य की अगुली पकड कर नयी कहानी आन्दोलन का चलना प्रारम्भ हुआ। इस समय के प्रमुख कहानीकार इस प्रकार है– केशवचन्द्र, हरिशकर परसाई, शरद जोशी, श्रीलाल शुक्ल, मुक्तिबोध आदि। इन कहानीकारो ने अपनी कलम को मुक्त छोड दिया जो समाज के हर कोने मे फैली विद्रूपताओ को ढूढ–ढूढकर कहानी का विषय बना रहा था। इस परम्परा को और आगे बढाने मे जिन लोगो ने सहयोग किया। उनमें शरद जोशी, रवीन्द्रनाथ त्यागी, नरेन्द्र कोहली, प्रेम जनमेजय, श्रीलाल शुक्ल आदि प्रमखु हैं।

जातीय परम्परा के प्रमुख व्यंग्यकार

हिन्दी–व्यग्य की जातीय परम्परा मे जिन व्यग्यकारो की चर्चा की जा रही है वे है– कबीर, भारतेन्दु, निराला और परसाई।

कबीर

कबीर को हिन्दी का प्रथम व्यग्य लेखक स्वीकार किया जाता है। कबीर ने तत्कालीन व्यवस्था मे व्याप्त पाखण्ड, कर्मकाण्ड, अन्ध विश्वास, रुढ़िवादिता, जाति–पाँति आदि विद्रूपताओं के हर मोर्चे पर आक्रमण किया। हजारी प्रसाद द्विवेदी कबीर को श्रेष्ठ व्यग्यकार मानते हुए कहते हैं, "साधारण हिन्दू गृहस्थ पर आक्रमण करते हुए वे लापरवाह होते हैं, और इसीलिए लापरवाही भरी एक हँसी उनके अधरों पर खेलती रहती है। मानों वे इन अदने आदमियों

को इस योग्य भी नही समझ रहे हों, जिन पर आक्रमण किया जाय परन्तु इस लापरवाही के कारण ही इन आक्रमणो मे एक सहज भाव और एक जीवन्त काव्य मूर्तिमान हो उठा है। यही लापरवाही कबीर के व्यग्यो की जान है।"[१]

कबीर सीधी सरल भाषा मे अपनी बात कुशलता से कह जाने वाले व्यग्यकार थे। वे 'घर फूँक तमाशा देखने' को तैयार रहते थे, तो 'सीस कटा के भुँई धरा' कहने का साहस भी रखते थे। उनके इसी साहस और फक्कडपन ने हिन्दी के प्रसिद्ध व्यग्यकार हरिशकर परसाई को अपना शिष्य बना लिया।

कबीर के व्यग्य के मुख्य लक्ष्य थे– काजी, मुल्ला, पडित, ब्राह्मण। उनका विश्वास था कि समाज मे व्याप्त अन्तर्विरोधो और विसगतियो के मूल कारण वे ही है। इसी लिए इनको देखते ही कबीर तन कर खडे हो जाते हैं और व्यग्य बाणो का प्रहार करना शुरु कर देते। कबीर का कटु सत्य और तिलमिला देने वाला व्यग्य उन्हे समाज वेत्ता और क्रान्तिकारी युग स्रष्टा बना गया। कबीर ने ही साहित्य का परिचय यथार्थ से कराया और सुधार की भावना को साहित्य मे स्थान दिया।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

उन्नीसवी शती के अन्तिम चरण मे पूरे देश मे सास्कृतिक जागरण की लहर फैली रही थी। इस समय सम्पूर्ण देश मे एक विशाल मध्यवर्ग तैयार हो गया था। जो अग्रेजी शासन की विद्रूपताओं एव कुचालों को समझने लगा था। उसके अन्दर इस भावना का जन्म होना प्रारम्भ हुआ कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे यथा–सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, परिवर्तन की जरुरत है। वे नवीन युग की सुधार चेतना के प्रतिनिधि थे। साहित्य उनके लिए मनोरजन का साधन नही था वे इसके माध्यम से देश की गिरती दशा को उठाना चाहते थे। अग्रेजी शासन की अनीतियो को इसी कारण अपने लेखन का मुख्य विषय बनाया। वे अंग्रेजी

शासन के भक्तों के ऊपर भी व्यग्य करते थे। 'एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न' (फैटेसी) के माध्यम से उन्होने यथार्थ का अकन करना शुरु किया।

भारतेन्दु ने 'अग्रेजी स्तोत्र' के माध्यम से अग्रेजो की लुटेरी प्रवृत्ति का पर्दाफाश किया। भारतीयो के अग्रेजी प्रेम पर भी इन्होने व्यग्य किया।

– भीतर तत्व न, झूठी तेजी, क्यो सखि साजन नहि अग्रेजी

– ऑखे फूटी भरा न पेट, क्यो सखि साजन नहि ग्रेजुएट।

वास्तविक रूप मे सामाजिक और राजनीतिक व्यग्य लिखने की परम्परा भारतेन्दु काल से शुरु हुई। उनके साथ के साहित्यकारो ने भी इसी प्रकार की रचना करना प्रारम्भ किया। परिणामत· उनकी एक मडली बन गयी। बालेन्दु शेखर तिवारी ने इसी को लक्ष्य कर लिखा है "यह कहा जा सकता है कि भारतेन्दु युग मे हिन्दी की हास्य और व्यग्य परम्परा ने यौवन की प्राप्ति की। साहित्यकारो ने हास्य और व्यग्य की अनिवार्य योजना द्वारा इस युग के साहित्य को सजीवता दी।"[१]

निराला

भारतेन्दु युगीन लेखकों के पश्चात व्यग्य का वास्तविक रुप लाने का श्रेय निराला को जाता है। पूँजीवादी सभ्यता के दुष्परिणाम और राजनीतिज्ञों का ढोग ही निराला के व्यग्यो का मुख्य आधार है। व्यग्य की आत्मा को पहचानने वाली पैनी दृष्टि भारतेन्दु के समान तीखा व्यग्य निराला की कविताओ और कथाओ मे देखने को मिलता है। 'कुकुरमुत्ता' उनकी सशक्त व्यग्य कविता है जिसमें उन्होंने शोषक पूँजीपति वर्ग पर तीखा प्रहार किया है। 'कुल्लीभाट' और 'बिल्लेसुर बकरिया' उनके यथार्थवादी व्यग्य उपन्यास है।

---

१ श्री बालेन्दु शेखर तिवारी : स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी का हास्य और व्यग्य, पृष्ठ ९१

सम-सामयिक सामाजिक, राजनैतिक परिदृष्य पर सार्थक व्यग्य लिखने मे निराला को पर्याप्त सफलता मिली है। वे 'भिक्षुक', 'वह तोडती पत्थर' तथा 'दीन' शीर्षक कविता मे समाज की ओर उन्मुख होते है। 'नये पत्ते' मे हाइकोर्ट के वकीलो के ऊपर व्यग्य करते है। 'महगू महगा रहा' मे ढोगी नेताओ के ऊपर व्यग्य किया है। निराला का व्यग्य सामाजिक परिवेश से जुडा था उनका सिद्धान्त था 'कला जीवन के लिए'।

भारतेन्दु के व्यग्य राष्ट्रीयता को लक्ष्य करते हुए होते थे तो निराला के व्यग्य अन्तर्राष्ट्रीयता को। 'कुकुरमुत्ता' आधुनिक युग का सबसे बडा व्यग्य है 'कुकुरमुत्ता' सर्वहारा वर्ग का प्रतीक है और गुलाब पूँजीवाद वर्ग का – कुकुरमुत्ता गुलाब से कहता है –

भूल मतगरपाई खूशबू रगोआब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतराता है कैपीटलिस्ट।

निराला के अन्दर प्रखर बुद्धि थी, तो हृदय की विशाल सवेदनशीलता भी। शेरजग गर्ग के अनुसार "निराला के सम्बन्ध मे यह निस्सकोच स्वीकार किया जा सकता है कि निराला आधुनिक हिन्दी के युग-प्रवर्तक व्यग्यकार है जिन्होने व्यग्य को अभिजात्य और छन्द दोनो से युक्त किया।"[१]

पन्त ने मानवीय विसगति पर केन्द्रित 'ताज' कविता मे व्यग्य किया है। नागार्जुन की प्रायः सभी रचनाओ का मूल स्वय व्यग्य है। अज्ञेय ने 'साँप और मनुष्य' नामक कविता में व्यग्य को प्रभावशाली स्वर प्रदान किया है।

---

१ डॉ शेर जग गर्ग • हिन्दी कविता में व्यग्य, पृष्ठ १८३

हरिशंकर परसाई

स्वतन्त्र भारत का नवजात शिशु था– 'प्रजातन्त्र'। स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय आनन्द और खुशी का वो उल्लास नही था। देश-विभाजन ने भीषण रक्त पात कराया। हर तरफ, उत्पीडन अत्याचार और अमानवीयता का बोलबाला था। देशवासियो की आशाओं पर तुषारापात हो रहा था। चोरबाजारी और घूसखोरी का साम्राज्य चारो तरफ फैल गया था। सिद्धान्त पर चलने वाले मूर्ख माने जाने लगे, चारो तरफ सिद्धान्तहीन नेतृत्व, भ्रष्ट नौकरशाही का बोल-बाला था। सम्पूर्ण परिवेश मे जैसे अराजकता का साम्राज्य फैला हो। सभी लोग 'सैयाँ भये कोतवाल तो अब डर काहे का' वाली मानसिकता से सचालित हो रहे थे।

साहित्यकारो के सामने अभी नयी भूमि तैयार थी जिस पर वह साहित्य की खेती कर सकते थे। उन्हे यह सुविधा थी कि वे परम्परा को अपनाये अथवा नही। परम्परा मे आस्था नही थी क्योकि वर्तमान, आशाओ, अकाक्षाओ एव आस्थाओ को चूर-चूर कर रहा था। देश की वर्तमान विसगतिमय परिस्थितियाँ व्यग्य लेखन को प्रोत्साहित कर रही थी। व्यग्य लेखन इस काल के लिए अनिवार्य सा हो गया। प्रसिद्ध समालोचक शिवकुमार मिश्र के अनुसार "स्वातन्त्रयोत्तर युग में कतिपय प्रखर यथार्थ-दृष्टा रचनाकारो के माध्यसम से व्यग्य को पुन. एक स्वतन्त्र महत्व प्रदान किया। इन रचनाकारो के माध्यम से व्यंग्य की विधा को उसकी सारी क्षमताओ के साथ प्रस्तुत करने की कोशिश की गयी और उसका आश्रय लेकर सम-सामयिक जीवन विकृतियों का निर्ममतापूर्वक उद्घाटन किया गया। सम-सामयिक जीवन का शायद ही कोई पहलू हो जो इन व्यग्यकारो की पैनी निगाह से छूट पाया हो।"[१] समाज की विसगतियो का साहस पूर्वक मुकाबला करने और व्यग्य की सही शैली अपनाने में परसाई का नाम सबसे ऊपर है।

---

१ शिव कुमार मिश्र : यथार्थवाद, पृष्ठ १९१

परसाई की रचनाएँ भारतीय जन-जीवन की समस्याओ से जुडी है। स्वतन्त्रता के बाद के भारत की सामाजिक शैक्षिक व राजनीतिक यथार्थ तस्वीर उनके लेखन मे देखने को मिल जाती है। वे परिवेश को बदलने में विश्वास करते थे। इनकी रचनाओ ने एक प्रबुद्ध वर्ग तैयार किया। उन्होने मनुष्य के जीवन को गहराई तक देखा और उसकी बेहतरी के लिए काम किया। भारतीय मनुष्य को कष्ट देने वाले हर तन्त्र की खबर परसाई ने लिया। 'सदाचार का ताबीज', 'भोलाराम का जीव', 'वैष्णव की फिसलन', 'जैसे उनके दिन फिरे', 'सुदामा के चावल', 'रामसिह की ट्रेनिग', 'अकाल-उत्सव' आदि आम आदमी की तकलीफो को व्यक्त करने वली रचनाए है। परसाई सहज अभिव्यक्ति के अप्रतिम कलाकार है। पुरुषोत्तम दास अग्रवाल ने परसाई के विषय मे लिखा कि 'जीवन के अशुभ और असुन्दर से साक्षात्कार कराने के लिए परसाई के पात्र विसगतियो से पैदा होते है वे कीर्तन या उपदेशक के रूप मे नही, बल्कि व्यग्य को योद्धा के रूप मे देखते है। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा के लिए जीता आदमी सदैव उनके व्यग्य का शिकार हुआ है। वे कुचले हुए व्यक्ति पर हँसते नही है। उसे लडने के लिए तैयार करते है और मानवीय रिश्तो को नष्ट करने वाली सत्ता की क्रूरता के खिलाफ उसे खडा करते है इसी कारण उनका लेखन आस्था और व्यथा की तनावपूर्ण कलात्मकता का श्रेष्ठ उदाहरण है।"[१]

अन्त मे कहा जा सकता है कि "व्यग्य के पास अति दीर्घ परम्परा नही है किन्तु एक सुदृढ परम्परा की नीव है जिसने वर्तमान की ऊँचाईयो को स्थायित्व का गहरा आधार प्रदान किया है।" समूचे इतिहास मे मील का पत्थर बनने का गौरव भले की कबीर, भारतेन्दु और निराला को ही मिला लेकिन उन अनेक विश्राम-स्थलों को विस्मृत नही किया जा सकता है जहाँ हास्य की गुदगुदी होठो पर मुस्कान ला देती है और व्यग्य का आक्रोश सोचने के

---

१ स्मारिका २-३ अक्टूबर १९८२, प्रगतिशील लेखक संघ का आयोजन, पृष्ठ १२

लिए विवश कर देता है।

भारतेन्दु युग और उसके बाद व्यग्य लेखन हिन्दी–साहित्य मे महत्वपूर्ण हो उठा था। व्यग्य की दृष्टि से देखा जाय तो अनेक कवियो और लेखको ने सशक्त व्यग्य लिखकर अपना–अपना सहयोग दिया। किन्तु व्यग्य जीवन को उपजीव्य मानकर साहित्य सृजन करने वाले सहित्कारो की परम्परा व्यग्य की परम्परा के लिए महत्वपूर्ण है।

हिन्दी मे व्यंग्य विधा का विकास

स्वातन्त्रयोत्तर काल मे व्यग्य विधा का उदय एक विलक्षण घटना थी। इस समय की लगभग सभी पत्र पत्रिकाओ मे व्यग्य लेखन देखने को मिल जाता है। एक तरह से पत्रिका की प्रतिष्ठा का व्यग्य कालम मानक बन गया था। इस समय साहित्यकारो ने समाज का यथार्थ चित्र खीचा है।

हिन्दी व्यग्य विधा के विकास मे हरिशकर परसाई, शरद जोशी, रवीन्द्रनाथ त्यागी, केशवचन्द्र, श्रीलाल शुक्ल, डॉ नरेन्द्र कोहली, के पी सक्सेना, लतीफ धोधी, डॉ बरसाने लाल चतुर्वेदी, डॉ इन्द्र नाथ मदान, अमृतराय, डॉ शकर पुणताबेकर, डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी, श्रीकान्त पाण्डेय आदि लोगों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इन सभी व्यग्यकारों ने विशाल तथा तीक्ष्ण दृष्टि रखते हुए अन्याय, अत्याचार, व्यभिचार, कथनी और करनी मे विसगति, पाखण्ड, अवसरवाद, भ्रष्टाचार को अपनी लेखनी का माध्यम बनाया। अपनी जिन्दगी में अवाछित परिवेश देखकर जो छटपटाहट होती है व्यग्य उसी के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होता है।

बुराई के प्रति तीक्ष्णता के साथ प्रहार करने की शक्ति व्यंग्य–विधा के अन्तर्गत ही है। आज की परिस्थितियों में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक विसगतियों को व्यक्त करने

के सामने रखा।

१९६० का दशक व्यग्य के विकास के लिए अधिक उर्वर काल था। इस समय की परिस्थितिया ऐसी थी जिसमे व्यग्य का विकास बडी तेजी से हुआ। तत्कालीन परिस्थितियों में अन्याय, घूसखोरी, भ्रष्टाचारिता, दो-मुँहापन आदि इस तरह से व्याप्त हो गया था कि यह जीवन का अनिवार्य अग सा प्रतीत होने लगा था। ऐसे में व्यग्यकारो ने अपने कटाक्षों द्वारा उसकी अनुपयोगिता सिद्ध की तथा समाज को सोचने के लिए विवश किया कि यह उचित नही है।

हिन्दी व्यग्य के पितामह हरशिकर परसाई ने व्यग्य विधा का एक तरह से मानक स्वरूप तैयार कर दिया। इन्होने 'वसुधा', 'प्रहरी', 'परिवर्तन', तथा अनेक पत्रिकाओ से जुडकर व्यग्य को उच्च भावभूमि पर बैठाने का कार्य किया। इसी प्रकार 'कल्पना' में कालम लेखन, 'और अन्त मे', 'सारिका' मे 'कबिरा खडा बाजार मे', 'माया' में 'मै कहता आँखन देखी', 'हिन्दी व्यग्य' मे 'माटी कहे कुम्हार से', 'नई दुनिया' मे 'सुनो भाई साधो', 'नई कहॉनिया' में 'पाँचवाँ कालम' लिखकर परसाई जी ने व्यग्य का खूब प्रचार-प्रसार किया। इन सभी मे राजनीतिक व्यग्य के अलावा सामाजिक और धार्मिक व्यग्य भी हुआ करते थे। परसाई की शक्ति को पहचानते हुए वालेन्दु शेखर तिवारी जी लिखते है कि "व्यग्य विधा को स्थापित करने में परसाई ने वस्तु और शैली के स्तर पर अर्थ गर्भसर्जना की है। उनका व्यग्य लेखन पारम्परिक रुपो और घिसी हुई मर्यादाओ को नकार कर भूमि का विधान करता है।"[१]

व्यग्य विधा के विकास मे परसाई ने प्रारम्भिक रुप से सहयोग प्रदान किया। इनकी दृष्टि और सर्जना दोनों बाद के व्यग्यकारो के लिए आदर्श रुप में उपस्थित हुआ।

शरद जोशी, परसाई के बाद दूसरे बडे व्यग्यकार हैं जिन्होंने तत्कालीन विद्रूपताओं को

---

१ डॉ वालेन्दु शेखर तिवारी · हिन्दी का स्वातन्त्रयोत्तर हास्य और व्यग्य, पृष्ठ २७०

प्रकट करने के लिए 'परिक्रमा', 'नावक के तीर', 'ताल-बेताल', 'बैठे ठाले' आदि स्तम्भो का लेखन किया। नवभारत टाइम्स मे 'प्रतिदिन' स्तम्भ के अन्तर्गत लिखते रहे है। इन्होंने राजनीलति, प्रशासन, साहित्य, समाज सबके ऊपर व्यग्य का घोडा दौडाया है।

व्यग्य के प्रारम्भिक विकास काल मे राधाकृष्ण, रवीन्द्र नाथ त्यागी, केशवचन्द्र वर्मा, श्री लाल शुक्ल, डॉ नरेन्द्र कोहली, के पी सक्सेना, डॉ बरसाने लाल चतुर्वेदी, लतीफ घोषी, डॉ ससार चन्द्र आदि ने महत्वपूर्ण योगदान किया।

रवीन्द्र त्यागी ने सारिका में 'पराजित पीढी के नाम' का स्तम्भ लिखा। लतीफ घोघी ने रायपुर से प्रकाशित अमृत-सदेश मे 'व्यग्य-प्रसग' लिखा। श्री बाल पाण्डेय ने 'तीसरा कोना' विनोद शकर शुक्ल ने 'नवभारत' (रायपुर) मे "मै कहता आँखन देखी" कालम लिखा। अजात शत्रु 'बयान जारी है', कृष्ण चन्द्र चौधरी का 'तीसरी आँख' आदि स्तम्भ लेख व्यग्य रुपी पौधे को जल और आक्सीजन दे रहे थे जिससे वह आगे चलकर विशाल वटवृक्ष का रुप ग्रहण कर सका।

डॉ शकर पुणताम्बेकर ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओ में स्तम्भ लिखकर व्यग्य के विकास मे अपना योगदान कर रहे थे। डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी ने पटना से प्रकाशित 'ज्योत्स्ना' पत्रिका मे 'प्रतिभास मिस्टर भारतेन्दु' स्तम्भ के अन्तर्गत लिखते रहे हैं। व्यग्य पत्रिका 'अभीक' का १९७३-७५ तक सम्पादन किया। इसके अलावा तमाम पत्र-पत्रिकाओ में लेख लिखकर व्यग्य के विकास के लिए सही जमीन तैयार की। व्यग्य विकास मे इनका योगदान मूल्यवान है।

व्यग्य की नई पौध के सन्दर्भ में श्याम सुन्दर घोष का कथन है कि "व्यग्य का पौधा यथार्थ की गहरी, जानकारियों मानवीय रिश्तों, मनोंभावों और पुष्ट तथा परिपक्व संवेदनाओ

की जमीन पर उगता है। वह ऊपर-ऊपर जितना तथा जैसा दिखता है ठीक वैसा ही और उतना ही नही होता है। व्यग्य का एक अलक्षित स्वभाव और चरित्र भी होता है वह पर्दे के पीछे रहकर भी अपनी ओजस्विता और तेजस्विता का सकेत भी देता रहता है।"[१]

व्यग्य की नयी पौध ने गाँधी के कथन बुरा मत देखो, बुरा मत बोलो, बुरा मत सुनो के विपरीत व्यवहार किया है। इसने समाज की बुराइयो को देखा, समाज की बुराइयो को अपनी रचनाओ मे कहा, और इस उद्देश्य से कहा कि सभी लोग उस बुराई को सुने। इस प्रकार युगीन परिस्थितियो को स्वर देना तत्कालीन साहित्यकारो का मुख्य उद्देश्य था। इसके लिए वे जहाँ-कही भी बुराई पाते थे, उसे अपनी रचना का विषय बनते। तत्कालीन रचनाकारो मे स्पष्टवादिता और प्रखरता का स्वर अधिक तीक्ष्ण था।

सक्षेप मे कहा जा सकता है कि १९४७ से १९६० तक का कालकाण्ड व्यग्य का शैशव काल था। जिसमे व्यग्य कोई निश्चित विचारधारा, तत्व तथा मानक रुप स्थापित नही कर सका। यह काल व्यग्य के गिरने और सभलने का काल था। इसमे मजबूती से पैर रखने के लिए व्यग्य उठ रहा था। व्यग्य की शैशवास्था १९६० के बाद समाप्त होती है और वह अपने बल चलना प्रारम्भ करता है।

व्यंग्य 'विधा' रुप में

१९६० तक हिन्दी साहित्य मे हास्य और व्यग्य सम्मिलित रुप से आता रहा है लेकिन १९६० के पश्चात व्यग्य विधा के रुप में स्थापित हो गया। इसके पूर्व भी हिन्दी साहित्य में व्यग्य परम्परा मिलती है लेकिन यह विधा के रुप मे न होकर शैली के रुप मे था। शैली से होकर विधा तक की यात्रा मे व्यग्य अपने को परिवर्तित और परिवर्द्धित करता रहा है। स्वातन्त्रयोत्तर काल का व्यग्य जिन सवेदनाओं को अपने में समेटे है उसके पूर्व का व्यग्य

---

१ श्याम सुन्दर घोष : व्यग्य और विधा, पृष्ठ ६०

परिहास सा ही जान पडता है।

इधर का व्यग्य लेखन निश्चित रुप से शैली के रुप मे व्यग्य लेखन न होकर विधा के रुप मे व्यग्य लेखन है क्योकि कोई भी शिल्प एव प्रविधि जब किसी लेखक के या व्यक्ति-विशेष के अन्तर्गत ही होती है तो वह शैली का रुप धारण किये रहती है। लेकिन वही शिल्प और प्रविधि जब बहुतायत रुप मे मिलना प्रारम्भ हो जाती है तो 'विधा' का रुप धारण कर लेती है। डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी के अनुसार "विगत शताब्दी मे लिखे गये हिन्दी व्यग्य लेखन ने व्यग्य को लेखन-शैली से उठकर विधा के रुप मे प्रतिष्ठित किया है। जब किसी विशेष शिल्प एव प्रविधि की रचनाएँ पर्याप्त सख्या मे लिखी जाने लगती है एव उस पर किसी विशिष्ट लेखक के स्थान पर साहित्य की परम्परा का आधिपत्य हो जाता है, तब उक्त शिल्प-प्रविधि को विधा के रुप मे स्वीकार कर लिया जाता है। नाटक, कहानी, उपन्यास, निबन्ध जीवनी आदि साहित्य की विविध रुप-विधाओ के स्थापित होने की यही प्रक्रिया रही है। अपने सम-सामयिक परिवेश मे व्याप्त असगतियो को अणु-वीक्षण-यन्त्र से देखने और विसगतियो को ध्वस्त करने का साहस रखने वाले व्यग्यकारो ने स्वातन्त्रयोत्तर व्यग्य लेखन को विधा का बाना दिया है।"[१]

व्यग्य विधा के रुप मे आने से पहले इस कोटि का लिखा जाता था कि न तो वह निबन्ध की कोटि में रखा जा सकता था और न कहानी की कोटि के अन्तर्गत। इसे मात्र व्यग्य ही कहा जा सकता था। हिन्दी व्यग्य में गद्य के इस मिश्रित स्वरुप को ही ग्रहण कर लिया तथा स्वातन्त्रयोत्तर काल के व्यग्यकारो ने इसी, रुप-शिल्प-प्रविधि को अपनाकर अपना लेखन कार्य आगे बढाया। अतः इस नये रुप शिल्प-प्रविधि को ही 'व्यग्य विधा' के रुप मे स्वीकार कर लेना चाहिए।

---

१ बालेन्दु शेखर तिवारी : हिन्दी का स्वातन्त्रयोत्तर हास्य और व्यग्य, पृष्ठ १९८

यद्यपि हिन्दी के प्रमुख व्यग्यकार परसाई व्यग्य को विधा के रुप मे स्वीकार करने का आग्रह नहीं करते है। उनके अनुसार "मेरे मत मे व्यग्य कोई विधा नही है, इसका अपना कोई स्ट्रक्चर नही है, यह एक स्पिरिट है जो हर विधा मे आ सकती है। कहानी मे नाटक मे, उपन्यास मे। बर्नाडशाँ का प्रधान स्वर व्यग्य है लेकिन उसका मूल्याकन नाटककार के रुप मे होता है, व्यग्य कविता से लेकर उपन्यास तक मे आ सकता है।"[१] परसाई जी का मन्तव्य व्यग्य को विधा के रुप मे स्थापित करने के लिए आन्दोलन चलाने का नही था। उनकी दृष्टि मे व्यग्य कथन का प्रकार है कथ्य का नही, इसलिए वह किसी भी विधा मे आ सकता है।

आधुनिक व्यग्यकारो ने व्यग्य की उपेक्षा पर तीखा आक्रोश जताया और व्यग्य को विधा के रुप मे स्थापित करने मे अपना महत्वपूर्ण सहयोग भी दिया। इसमे डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी, शकर पुणतोम्बेकर, प्रेम जनमजय, नरेन्द्र कोहली आदि प्रमुख हस्ताक्षर है।

व्यग्य को एक लम्बे अरसे से विद्वत समाज विधा के रुप मे देखने को तैयार ही नही था। निबन्ध और कहानी का यह मिश्रित रुप किसी सज्ञा से अभिहित नही था। जैसाकि परसाई ने 'भूत के पाँव पीछे' की भूमिका मे कहा है– "अब मन मे यह अभिमान उठाये कि यह विशेष चीज है जिसका नाम तक होना बाकी है यह बात मै समाप्त करता हूँ।" तात्पर्य यह कि व्यग्य एक विशेष उत्पाद्य है जिसे अभी मान्यता नही मिली थी। लेकिन दूसरी तरफ बहस छिड गयी थी और इसे स्वीकार किया जाने लगा था तभी तो परसाई जी कहते हैं यह (व्यग्य) अब शूद्र से ब्रह्मणत्व को प्राप्त हो गया है।

व्यग्य को विधा के रूप मे प्रतिस्थापित करने में स्वातन्त्रयोत्तर परिवेश की विसगतियो

---

१ स कमला प्रसाद : आँखन देखी, पृष्ठ ४६

ने बहुत अधिक सहयोग दिया, क्योकि इन्ही विसगतियो के कारण व्यापक स्तर पर रचनाकारो का झुकाव व्यग्य की तरफ हुआ। इसी काल ने व्यग्य को सरक्षण दिया तथा विकास के लिए कच्चा माल भी उपलब्ध करवाया। नित-नवीन विचारधाराएँ और समाजगत विखण्डित-मान्यताओ के कारण व्यग्य ने अनेक रास्ते तलाशे। व्यग्य मे अपनी पैनी दृष्टि के कारण प्रचारित सत्य और वास्तविक सत्य के अन्तर को स्पष्ट कर जन सामान्य के सामने रखने का साहसपूर्ण कार्य किया। जैसे-जैसे जनता इस अन्तर को समझती गयी व्यग्य के प्रति उसकी स्वीकारिता भी बढती गयी। इस प्रकार सबसे पहले 'व्यग्य' को जनता ने स्वीकार किया। विवश होकर आलोचको को भी इसे स्वीकार करना पडा।

इस समय के रचनाकारो ने भी अपनी व्यापक एव पैनी दृष्टि तथा गहरी सवेदना से व्यग्य को विधा के रूप मे स्थापित करने मे महत्वपूर्ण योगदान दिया।

आज का समाज, व्यग्य मे सबसे अधिक सजीव है। जहाँ उसका सुख और दु:ख, आकाक्षा और आशा, निराशा और कुण्ठा सभी कुछ एक साथ जीवित है। जीवनगत विसगतियो को रोकर के समाप्त नही किया जा सकता है। इसलिए उचित होगा इस पर सर्जनात्मक व्यग्य करके जिया जाय। हिन्दी व्यग्यकारों ने व्यग्य की आत्मा को बराबर अपनी प्रतिभाओ से सपृक्त किया।

❑

तृतीय अध्याय

हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकार और उनका साहित्यक अवदान

हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकार और उनका साहित्यिक अवदान

व्यग्य समाज का एक्सरे है जो वास्तविक चित्र खीचता है जो यह दिखलाने का प्रयास करता है कि उस समाज के अन्दर रोग कहॉ स्थित है। व्यग्य समाज को समझने की नयी दृष्टि पैदा करता है। व्यग्य मानव को समझदार बनाने का कार्य करता है। डॉ धनजय वर्मा इसी सन्दर्भ में कहते है कि "सच्चे और सार्थक व्यग्य की यह ताकत होती है कि वह मूल्यो की आपा धापी और सक्रान्ति का चित्र ही नही देता वरन् नये मूल्यो की तलाश और उनकी और इशारा भी करता है।"[१]

आज का समय मँहगाई, अभाव, अकाल, बाढ, भ्रष्टाचार आदि से चारो तरफ घिरा हुआ है। इस त्रासदी को व्यग्य ही प्रमुख स्वर दे सकता है। वर्तमान समय रुमानियत और भावुकता का नही है, युग की कटु स्थितियो मे इनका कोई स्थान नही रह गया है। व्यग्य को जिन लोगो ने अपना प्रमुख हथियार बनाया। उनके नाम इस प्रकार है।

हरिशंकर परसाई

"हरिशकर परसाई हिन्दी व्यग्य क्षेत्र के ऐसे हस्ताक्षर है जिन्होने व्यग्य को विधा नही 'स्पिरिट' कहा और उन्ही के कारण व्यग्य को विधा का दर्जा प्राप्त हुआ और अन्तत स्वय उन्होने भी स्वीकार किया कि मै एक व्यग्यकार हूँ।"[२]

इनके ऊपर अलग से विस्तृत विचार किया जायेगा।

शरद जोशी

व्यग्य को विधा के रूप में प्रतिस्थापित करवाने में परसाई के साथ शरद जोशी भी लगे

---

१ नई कहॉनिया • मार्च १९६९, पृष्ठ ११७

२ हरिशंकर परसाई, मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाएं 'लेखक की बात'

हुए थे। शरद जोशी ने अपनी सम्पूर्ण क्षमता के साथ जीवन की सभी विसगतियो पर कडा प्रहार किया है।

शरद जोशी ने धर्म के क्षेत्र में व्याप्त ढकोसलों पाखण्डो धर्म स्थलों के अनैतिक कार्यों को अपने व्यग्य का प्रमुख विषय बनाया है। 'अतृप्त आत्माओ की रेल यात्रा' 'बुद्ध के दॉत' आदि इसके उदाहरण हैं।

शरद जोशी की निगाह मे सास्कृतिक कार्यक्रमो का आयोजन जनता से पैसा बटोरने के लिए, अखबारो मे प्रसिद्धि पाने के लिए किया जाता है। 'एक बैले की तैयारी' में शरद जोशी लिखते है।

"कला के क्षेत्र मे सफलता की सबसे बडी ट्रिक है, 'शहर मे जाकर गाँव बेचिए' यदि एक मुट्ठीभर लडकिया ग्रामीण वस्त्रो में मच पर बिखेर दी जाये तो शहर का दर्शक आँखे फाडे देखता रहता है, जब तक पर्दा न गिरे।"[१]

कला के नाम पर नकली विकृतियो को जीवन में अपनाने पर वे खोखला बना देती है। इसकी ओर लेखक इगित करते हुए शरद जोशी कहते हैं–

"लोग कपडा नही रग देखते है, खोपडी नहीं बालों की सजावट देखते है, चूडिया, लिपिस्टिको और कपडो के रग मैचिग की खोज की जाती है।"[२]

'विदेश से लौटे' नमक निबन्ध में उन्होंने विदेश जाने वाले के ऊपर व्यग्य किया है तो अपना सर्वस्य त्याग करके भी विदेश जाना चाहते हैं। वे लिखते हैं कि "विदेश हमारे लिए आकर्षण का केन्द्र है हर भारतीय की ख्वाइश होती है कि जीवन में कम से कम एक बार विदेश यात्रा करें। विदेश से यात्रा कर आने पर वह पहले जैसा नहीं रह जाता। वह धरती

---

१ शरद जोशी – तिलिस्म, पृष्ठ १२८, १२९

२ शरद जोशी – रहा किनारे बैठ

से बित्ता भर ऊपर उठ जाता है विदेश यात्रा के लिए अपनी जमीन, अपना घर सब कुछ बेच डालता है क्योकि विदेश स्वर्ग है। वहाँ पव है, पेय है, यहाँ वहाँ छितराती कन्याए है। पॉप-शो है।"[१]

आत्म प्रशसा और आत्म व्यग्य के छीटे भी शरद जोशी के व्यग्य रचनाओं मे देखने को मिलते है – "आ गया, आ गया। शरद जोशी का वह उपन्यास आ गया। जिसका स्वय लेखक को बरसो से इन्तजार था। आ गया, जिसने पढा वह पछताया, जिसने न पढा वह पछताया। हिन्दी की बहुमूल्य कृति, शरद जोशी की लौह लेखनी से प्रसूत एक लोचदार रचना। हिन्दी मे कचरे मे एक रत्न ग्राण्ड रिडक्शन सेल। दो रुपये का उपन्यास, डेढ रुपये में, पृष्ठ पूरे।"[२]

जासूसी और सैक्स से भरपूर रचनाओं की मॉग पर शरद जोशी ने 'मुडिका रहस्य' मे व्यग्य किया है। इसमें लिखते हुए उन्होने प्रतिपादित किया। इसका शीर्षक ही इस प्रकार का हो जायेगा 'मुडिका रहस्य उर्फ किस्सा कुमारी शकुन्तला का'। इसी प्रकार दिनकर कालिदास का गुणगान करने वाले दरबारी कवि शाम को जासूसी उपन्यास खरीदकर घर ले आते और उनका पाठ स्वय, उनकी पत्निया करती।

व्यक्ति व्यंग्य भी शरद जोशी ने बहुत किया अज्ञेय के ऊपर व्यग्य करते हुए वे लिखते है कि "आज का साहित्यकार आरामकुर्सी पर बैठे-बैठे इन्द्र धनुष रौदने का दम भर रहे हैं।" उनकी 'नदी मे खड़ा कवि' रचना परोक्ष रुप से नव कविता प्रयोग पर आधारित है। जैसे-

"कितने आगन में कितने द्वार। कितनी भावों में कितनी बार। कभी भँवती, कभी शाश्वती। जमाता रहा। स्रोत और सेतु कभी हरी घास पर क्षण भर। कभी महावृक्ष के नीचे। बैठ महान तो करा लिया। लो मैं नहा लिया।"[३]

---

१ धर्म युग – १३ जुलाई १९७५ पृष्ठ २०, विदेश से लौटे

१ शरद जोशी – रहा किनारे बैठ – पृष्ठ ३६

२ शरद जोशी – यथा सम्भव, पृष्ठ ३२६

इसी प्रकार शरद जोशी आगे भी ऐसे धन्य मान्य कवि और सेवको पर आलोचना करते हुए दिख जाते है।

शरद जोशी किसी वर्ग से प्रतिबद्ध होकर रचना नही करते थे। वे मात्र विसगतियो को उभारने वाले लेखक थे वे सेना के सिपाही नही बल्कि अखबार के पत्रकार थे।

शरद जोशी ने विश्वविद्यालय मे होने वाले शोध पर भी व्यग्य करता है इनके अनुसार शैली, भाषा और विभिन्न वादों का प्रभाव शोध-पत्रों मे दिखला कर उन्हे मुर्दा-इतिहास की अलमारी मे पटक दिया जाता है। इसी प्रकार विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम को लेकर इन्होने 'घास छीलने का पाठ्यक्रम' मे व्यग्य किया है। शिक्षा के बाजारीकरण पर इन्होने 'उत्तम शिक्षा की व्यवस्था शीघ्र प्रवेश लें' के अन्तर्गत खूब करारा व्यग्य कसा है।

बहुधा शरद जोशी के ऊपर यह आरोप प्रक्षेपित किया जाता है कि उनका व्यग्य लेखन सुविधा परस्त या मौका परस्त है। वे सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यिक क्षेत्रो की उन्ही विसगतियो को चुनते है जिन पर खतरे उठाये बगैर चोट की जा सके। कतिपय विद्वान उनके व्यग्य लेखन को 'फैशनेबल व्यग्य लेखन' स्वीकार करते है। यह आरोप एकागी प्रतीत होता है।

शरद जोशी व्यग्य और सरकार की दोस्ती को स्वीकार नही करते हैं उनके मत मे इन दोनों का शाश्वत अलगाव है क्योकि व्यग्य प्रहार करता है और सरकार प्रचार द्वारा प्रहार को कम करना चाहती है।

सरकारी काम काज की आलोचना शरद जोशी ने अपनी आलोचना का प्रमुख विषय बनाया है वे लिखते हैं कि सरकारी कामकाज मे 'आँख' नहीं होती है उसे हर बात का प्रमाण चाहिए। जीवित आदमी को भी 'जीवित होने का प्रमाण पत्र' देना पडता है। यहाँ बैठा व्यक्ति अपने बाप को भी नहीं पहचानता क्योंकि वह सिद्धान्त का पक्का है।

शरद जोशी ने 'साहित्य के महाबली' मे 'साहित्य के दादाओं' के ऊपर व्यंग्य कसा है।

'सरकार का जादू' मे वे मुर्गी और अण्डा दोनो के गायब होने की कहानी गढते है। अन्तत जॉच होने पर अण्डा मिनिस्टर की जेब से, सी आई डी की नाक से श्रमिक नेता की टोपी से, इजीनयर की बगल से तथा बाबू के मेज से निकलता है।

शरद जोशी ने 'हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे' मे भ्रष्टाचार के विभिन्न मौको की तलाश की है। वे लिखते है "जहॉ जहॉ जाती है सरकार, उसके नियम, कानून, मत्री, अमला कारिंदें। जहॉ-जहाँ जाती है सूरज की किरन, वही-वही पनपता है भ्रष्टाचार का पौधा। आई ए एस , एम ए विदेश रिटर्न आजादी के आन्दोलन मे जेल जाने वाले चरखे के कतैया, गाँधी जी के चेले, बयालीस के जुलूस वीर, मुल्क का डण्डा अपने हाथ से बढाने वाले, जनता के अपने, भारत माता के लाल, काल अग्रेजन के, सभी के ठाठ हो गये है, सुसरी आजादी मिलने के बाद। इस मामले मे राष्ट्र मे एकता है।"[१]

शरद जोशी अफसरशाही पर व्यग्य करने के लिए 'जीप पर सवार इल्लिया' लिखी है। इसमे उन्होने दिखलाया है कि इल्लियो का चने के खेत मे आतक की जाँच के लिए, सरकारी अफसर जीप पर सवार होकर जाते हैं। लौटते वक्त उनकी जीप पर हरे-भरे चने के पेड लदे है। "एकाएक मुझे लगा कि जीप पर तीन इल्लिया सवार है जो खेतो की ओर चली जा रही है, तीन बडी-बडी इल्लिया, सिर्फ तीन ही नही ऐसी हजारो इल्लिया है, लाखो है इल्लिया, ये सिर्फ चना ही नहीं खा रहीं है। सब कुछ खाती है और निश्शक जीपो पर सवार होकर चली जा रही हैं।"[२]

'समाज' और 'गरीबी हटाओ' जैसे नारे शब्द मात्र रह गये। "भूख के मारे विरहा विसर जाये, कजरी-कबरी भूल जाये समझ मे आता है मगर अभाव और मँहगाई में समाजवाद को भूल जायेगे यह कल्पना मार्क्स को भी नही होगी।[३] गरीबी हटाने के लिए सरकार कमर कस

१ शरद जोशी – पिछले दिनों – पृष्ठ ७८

२ शरद जोशी – जीप पर सवार इल्लियाँ – पृष्ठ ३२, ३३

२ शरद जोशी – रहा किनारे बैठ, पृष्ठ ४७

रही है लगता है हमे कुर्बानी देना होगा। जो जहॉ है, और जिसकी जो गरीबी है, हटा ले। जैसे जिसकी गरीबी साइकिल मे है तो वह उसे फेककर स्कूटर मोल ले। जहॉ गरीबी दिखे, हटाओ, हटाओ, हटाओ वह हटेगा।[१]

'सेवकराम निर्भय के तीन पत्र' मे उन्होने चुनाव खर्च को लेकर लिखा है। इसमे जाति के आधार पर वोट मागने की परम्परा को भी व्यग्य का विषय बनाया गया है। 'चुनाव एक मुर्गाबीती' मे उन्होने उल्लेख किया है कि जनता का वोट पहले कम्बल, रजाइयाँ देकर छीन लिया जाता है, जीतने के बाद इनकी खाल खीच ली जाती है और खून पी लिया जाता है 'वर्माजी चुनाव और टूटू' में नेताओ के कृत्यो को लेकर लेखन किया है। वे कहते है तुम भाषण तो देते हो जनता की सरकार, जनता के लिए लेकिन जब खाते हो तो केवल अपने लिए। आगे वे लिखते हैं राजनीति में शर्मिन्दा होने का रिवाज नहीं है, अगर राजनीतिज्ञ शर्मिन्दा भी होते है तो अपने कृत्यों के लिए नही बल्कि दूसरों के कृत्यों के लिए।

'सरकार का जादू' मे दल-बदल की ओछी राजनीति पर भी चर्चा की गयी है। जो स्वार्थ के कारण मत्री पद पाने के उद्देश्य से दल-बदल करते है।

जहाँ शरद जोशी ने 'सरकार का जादू' मे काग्रेस सरकार की नीतियों का कच्चा-चिट्ठा खोला है वही 'कार साक्षात्कार' रचना मे जनता सरकार के ऊपर व्यग्य किया गया है जो एक व्यक्ति नही बल्कि पाँच व्यक्ति मिलकर चला रहे है। 'नाई-नाई कितने बाल' में आयोग प्रणाली के ऊपर प्रश्न सूचक दृष्टि डाली गयी है। 'अलविद्या पधश्री', 'कालपात्र', 'सम्पूर्ण क्रान्ति' आदि रचनाओ में विसगतियो को उठाकर करारा व्यंग्य किया गया है।

शरद जोशी का अधिकाश व्यग्य राजनीतिक रहा है। वे हमेशा वर्तमान सरकार की विसगतियों पर प्रहार करते है उनकी दृष्टि में शासक के सुधरने पर शासन व्यवस्था अपने आफ सुधर जायेगी।

---

१ शरद जोशी – रहा किनारे बैठ – पृष्ठ ४७

शरद जोशी का अधिकाश व्यग्य आक्रोशित मानसिकता की प्रतिक्रिया होती है परिणामत उनका व्यग्य किसी घटना से सन्दर्भित होती है। सन्दर्भ के अभाव मे रचना की प्रभावशालिता और उसकी तीखी मार कम समझ मे आती है। वे अपने विभिन्न स्तम्भ लेखो मे भी किसी घटना पर प्रतिक्रिया स्वरुप लिखते रहे है। डा बालेन्दु शेखर तिवारी उनके लेखन कार्य को इस प्रकार व्यक्त करते है –

"घटना के घटने मे देर लगती है उसे टॉपिक बनाकर अपना नया व्यग्य रच डालने मे शरद जोशी को देर नही लगती है।"[१]

डॉ शकर पुणतोबकर के अनुसार "शरद जोशी के व्यग्य में विवरण का कौशल, तर्क, चुटकी भरी विमुग्धता, रुप विधान मे रचना-वक्रता मिलती है। वे पौराणिक प्रसग को कम ही छेडते है।"

शैली

विषय विभिन्नता के साथ शरद जोशी के व्यग्य मे शैली की भी अनेकरुपता देखने को मिलती है। भाषा का प्रभावी प्रयोग एव शिल्प की अच्छी भगिमाए उनके व्यग्य रचनाओ मे बिखरी पडी है।

इनकी रचनाए विभिन्न शैलियो का प्रतिनिधित्व करती है 'चुनाव एक मुर्गाबीती' प्रचतन्त्र शैली में लिखा गया है, 'मुद्रिका रहस्य' जासूसी शैली का प्रतिनिधित्व करती है। 'लिलिस्य' तिलिस्म शैली में, 'अतृप्त आत्माओं की रेल यात्रा' फैटेसी शैली में, 'मेघदूत की पुस्तक समीक्षा' आलोचना शैली में लिखी गयी रचनाए है।

शरद जोशी अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय 'क्रिकेट का अन्धायुग', 'नदी में खडा कवि', 'टाइपराइटर पर धारा प्रवाह' आदि रचनाओं मे दिया है। इन रचनाओं में व्यक्ति केन्द्रित व्यंग्य

---

१ बालेन्दु शैखर तिवारी – हिन्दी व्यग्य के प्रतिमान, पृष्ठ १६

किया गया है।

शरद जोशी का व्यग्य शिल्प का अच्छा उदाहरण है लेकिन कभी-कभी वे शिल्प के चक्कर मे कथ्य को किनारे कर देते है। 'आये न बालम वादा करके, कैसा जादू डाला' मे इसी प्रकार का प्रभाव लक्षित होता है। बम्बइया फिल्मी भाषा का भी प्रयोग कही-कहीं दिखलायी पडता है। इसी प्रकार हिन्दी मिश्रित अग्रेजी के भाषा प्रयोग को 'गॉडेस लक्ष्मी याने पाइसा का गॉडेस' में उन्होने दिखलाया। "आक्खा होम शुड लुक ब्यूटीफुल, यू सी नई तो गाडेस लक्ष्मी घर मे आयेगा तो बोलेगा ओह शिट ये कोई गॉडेस के रहने का जगह है। अम इधर नही आयेगा। ओ चला जायेगा, नाराज होकर। गॉडेस नाराज होकर चला जायेगा, तो तुम्हारा बाप को पइसा कइसे मिलेगा ? तुम पिक्चर कइसे जायेगा, स्कूल का फीस कइसे देगा ?"[१]

'पुराने पेड की बातें' मे 'हेड आफ डिपार्टमेन्ट' का मानवीकरण करके व्यग्य किया गया है। 'उपमाओं की उपयोगिता' मे पुरानी उपमाओ को ही व्यग्य का आधार बनाया गया है। मुहावरों एव लोक्तियों का प्रयोग इन्होने व्यग्य में अधिक किया है।

व्यंग्य के सम्बन्ध मे

शरद जोशी 'व्यग्य' के सम्बन्ध मे कोई निश्चित विश्लेषण नहीं प्रस्तुत करते है। यदा-कदा यथा प्रसग ही इन्होने व्यग्य के सम्बन्ध में कुछ वक्तव्य दिया है। अपनी दो रचनाओ 'यथासम्भव' और 'मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाएं' मे ही इन्होने भूमिका लिखी है। अन्य रचनाओं की इन्होंने भूमिका भी नहीं लिखी है।

व्यग्य के सन्दर्भ में उन्होंने 'व्यग्यम्' में लेख लिखा है कि "व्यग्य कर्म से पलायन नही, बल्कि निष्कर्ष और दुष्कर्म के खिलाफ लिखा गया सार्थक साहित्य है। हिन्दी व्यग्य उपेक्षा एव

---

१ शरद जोशी – यथा सम्भव – पृष्ठ ४२९

२ शरद जोशी – १ जनवरी १९७७ – पृष्ठ ८

विरोध की स्थितियो मे गुजर चुका है और उसका स्वरूप अब साफ है, जहाँ कही सच है, वहाँ व्यग्य है। एक अन्य स्थान पर वे लिखते है कि "मेरे अन्तर में एक कवि है जो काफी देर होने के बाद सुप्त हो जाता है भीतर के कवि को सुप्त करने के लिए यह 'हूटिग' किसने की तो यह निश्चित है– व्यग्य ने। कवि अतिरिक्त कल्पनाशीलता, भावुकता का प्रतीक माना जाता है और व्यग्य इस सबका विरोध करता है जो सन्दर्भ यथार्थ से कटते है और विसगति उत्पन्न करते है लेखक उन पर व्यग्य करता है क्योकि व्यग्य कोई अजूबा या ताज्जुब नही है। जिस देश के लोग हजारो वर्षों से आक्रमण, अत्याचार, अन्याय, भूख, गरीबी, बीमारी, निराशा सहन करते हुए अपने कतिपय मूल्यो, विश्वासो और आस्थाओ से जुडे है। उनमे जिन्दा रहने के लिए कोई 'सेन्स आफ ह्यूमर' है यही सेन्स ऑफ ह्यूमर' व्यग्य की प्रतिबद्धता है जो अन्याय, अत्याचार और निराशा के विरुद्ध लडने की ताकत देता है, प्रदान करता है और व्यग्य की पहचान बन जाती है कि साहित्य कष्ट सहती सामान्य जिन्दगी के करीब है या जुडा हुआ है।"[१]

शरद जोशी ने समाज की सभी विसगतियो को लक्ष्य करके व्यग्य किया है। उनकी शैली प्रभावी रही है। इनके बाद की एक पीढी इनका अनुसरण कर रही है। डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी जी शरद जोशी के विषय में कहते है "हिन्दी व्यग्य मे सप्रेषण की जितनी विविधताए उपलब्ध है भाषा का जितना अनूठापन विद्यमान है, शिल्प की जितनी भगिमाए मौजूद है उन सबका समन्वित श्रेय शायद सबसे अधिक शरद जोशी को दिया जा सकता है।"[२]

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि सामाजिक व्यवहार, साहित्यकारों का खोखलापन, प्रशासनिक कमजोरी अन्धविश्वास आदि के ऊपर शरद जोशी की कुशलतापूर्वक व्यग्य प्रहार किया है। शरद जोशी का विशिष्ट योगदान व्यग्य विधा की दृष्टि से यह रहा है कि इन्होंने अपनी विशिष्ट शैली द्वारा, व्यग्य विधा को रोचक, प्रौढ और उदात्त चेता बनाया।

---

१ शरद जोशी – मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाएं (भूमिका)

२ डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – हिन्दी व्यंग्य के प्रतिमान, पृष्ठ १५

श्री लाल शुक्ल

परसाई के समकालीन श्रीलाल ने 'स्वर्ग ग्राम और वर्षा' नामक रचना के माध्यम से व्यग्य क्षेत्र मे प्रवेश किया। 'अगद का पॉव' उनकी दूसरी व्यग्य रचना थी। लेकिन व्यग्यकार के रूप मे प्रतिष्ठित करने वाली उनकी महत्वपूर्ण रचना थी 'राग दरबारी'। 'राग दरबारी' से पूर्व जितने भी व्यग्य उपन्यास लिखे गये। वे किसी आवरण मे छुपे होते थे। 'रानी नागफनी की कहानी' फैटेसी मे लिखित उपन्यास है। राधाकृष्ण का उपन्यास सपनो की चादर ओढकर लिखी गयी है। श्याम सुन्दर घोष का 'उलूक कथा' उल्लू प्रतीक को पकडता है। डॉ पुझताम्बेकर 'एक मत्री स्वर्ग लोक' मे पाठकों को स्वर्ग की यात्रा कराते है। लेकिन 'राग दरबारी' रेणु के अचल को अपनाकर पहला आवरणहीन उपन्यास है जिसे 'व्यग्य उपन्यास' कहा जाता है।

'राग दरबारी' सम-सामयिक राजनैतिक विचारधारा का स्पष्टीकरण करने वाला उपन्यास है। उपन्यास की विशेषता इस बात में विशेष है कि इसमे किसी समस्या या पात्र विशेष पर व्यग्य नही किया गया है। बल्कि इसमें सम्पूर्ण देश को व्यग्य का विषय बनाया गया है। इस कृति में 'शिवपालगज' की कथा के माध्यम से 'भारत की आत्मा' गॉवो में सभ्य समाज की धुल रही विकृतियो को दिखलाया गया है। श्रीलाल शुक्ल 'राग दरबारी' मे एक स्थान पर लिखते है –

"जो कही नही है, वह यहॉं है, और जो यहॉं नही है वह कहीं नहीं है।[१] सक्षेप में यह रचना मात्र नही है, एक सामाजिक दस्तावेज है जिसमे देश की मनोदशा का खाका खींचा गया है।

श्रीलाल शुक्ल का व्यग्य एक वैचारिक आधार और तीक्ष्ण भावात्मक सम्बन्ध को सम्मिलित करते हुए लिखा गया है।

स्तरहीन और ऐरी-गैरी रचना के सन्दर्भ मे व्यग्य करते हुए शुक्ल जी कहते है कि

---

१ श्रीलाल शुक्ल – रागदरबारी, पृष्ठ ६६

"भूमिहीन लेखको के लिए भूमिका का इसलिए और भी महत्व है। भूमिका इसलिए होती है कि पाठक समझ ले लेखक की एक अपनी भूमि भी होती है।" इसी प्रकार उन आलोचको को फटकारते है जो अपनी आलोचना द्वारा रचना को सरल बनाने की अपेक्षा दुरुह बना देते है। उनकी दृष्टि मे आलोचना का मूल कार्य सुपाच्य और रसनिष्पत्ति मे सहायता करना होना चाहिए। इसके विपरीत आज की आलोचना मूल कृति को ही क्लिष्ट बना देती है।

शुक्ल जी का व्यग्य वाण किसी प्रतीक पर चढकर नही छूटता। वे लक्ष्य पर सीधे-सपाट व्यग्य करना प्रारम्भ करते है।

पाश्चात्य शैली को अपनाने तथा गोरे लोगों से मिलने में हम गर्व का अनुभव करते है। इसको लेकर उन्होने 'यहॉ से वहाँ' मे व्यग्य किया है कि किस प्रकार हम गोरे लोगो से मिलने को लालायित रहते है और उनके प्रभाव मे आकर पहनावा और अपनी सस्कृति को बदलने पर उतारु हो जाते है।

सास्कृतिक आदान-प्रदान करने के बहाने विदेश भ्रमण की प्रवृत्ति पर भी शुक्ल जी ने प्रभावी व्यग्य किया है।

राजनैतिक व्यग्य शुक्ल जी की रचनाओ मे अधिक मिलता है। नेताओं के ऊपर व्यग्य करते हुए वे लिखते हैं कि नेताओं का काम आज क्या है ? बोलते रहना। बहुत बोलने से लोग उसे विचारशील प्राणी समझने लगते है।[१]

प्रजातान्त्रिक प्रणाली की बैलगाडी से तुलना करते हुए कहते हैं जिस प्रकार कालिदास को उत्कृष्ट साहित्य रचने की प्रेरणा बैलगाडी से मिली थी ठीक उसी प्रकार प्रजा तन्त्र को बैल गाडी से प्रेरणा मिली है। बैलगाडी कैविनेट के समान है गाड़ीवान प्रेसीडेन्ट का कार्य करता है जो बैलो को चलाता है और नहीं भी चलाता है।[२]

---

१ श्रीलाल शुक्ल – मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाएं, पृष्ठ ९

२ श्रीलाल शुक्ल – अंगद का पाँव, पृष्ठ ८६

शुक्ल के सबसे अधिक प्रभावशाली व्यग्य अफसरशाही से जुडे हुए है। जिसमे उन्होंने अफसरो की कार्य प्रणाली, उनकी भाव-भगिमा, अपने मातहतों से उनके व्यवहार आदि के ऊपर व्यग्य किया गया है। 'अगद का पॉव' मे 'सी आफ' करने को लेकर नौकरों की लाचारी का प्रदर्शन किया गया जिसमे चाहकर भी रेलगाडी छूटने से पहले वे लौट नही सकते।

अफसरो के व्यवहार और कार्यप्रणाली को 'कुत्ते और कुत्ते' में अच्छी तरह से शुक्ल जी ने व्यग्य का विषय बनाया है।

छात्रो की अनुशासनहीनता को उन्होने उन अर्थों मे अनुशासनहीनता होते नही प्रकट किया जो सर्वमान्य है। "क्लास न आना, फीस न देना, अध्यापको से अबे-तबे करना, किताबो को कभी न देखना, सहपाठिनी छात्राओं को टकटकी लगाकर देखना, ऊल-जुलूल कपडे पहनना, उससे भी ज्यादा ऊलजुलूल बोली बोलना यह सब अनुशासनहीनता मे नही आता।"[१]

डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी ने श्रीलाल शुक्ल के विषय मे लिखा है कि "श्री लाल शुक्ल का व्यग्य बुरा बतलाने भर का पक्षधर नही हे। अपितु बुरी बात के परिपार्श्व से झाँकती अच्छी बात को कुरेदकर निकालने का प्रयास भी है।"[२]

शैली

श्री लाल शुक्ल की अधिकाश रचनाए व्यग्य की फुलझडी मे दिखलायी पडती है। जैसे-

"आज के साहित्यिक, साहित्यिक नही लठैत है लठैत"

"अफसर का कुत्ता विकासशील देशो की तरह पनपता है"

"अपनी परीक्षाए छात्रो के लिए भले बेकार हो, मास्टरो के लिए बडे काम की चीज है।

---

१ श्रीलाल शुक्ल – अंगद का पाँव, पृष्ठ १०६

२ डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – हिन्दी व्यग्य के प्रतिमान

अलकारो एव मुहावरो का प्रयोग भी श्रीलाल शुक्ल ने यत्र-तत्र किया है। सस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग भी वे करते है।

श्री लाल मे व्यग्य शैली की विविधता नही थी। व्यग्यकार के रुप मे प्रतिष्ठित होकर भी उनकी एक रचना 'राग दरबारी' ही का नाम आता है।

व्यंग्य के सन्दर्भ मे

'मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाए' के अन्तर्गत 'परिचय' के द्वारा तथा 'यह घर मेरा नहीं' मे 'अपने बारे में' इन्होने व्यग्य के ऊपर प्रकाश डाला है। वे अपने व्यग्य लेखन के विषय मे वे कहते है कि क्षमा तब माँगनी पडेगी जब ये रचनाए पाठको का केवल मनोरजन करे।[१] मुझे जो कुछ कहना था वह मैंने अपनी रचनाओ मे कह दिया है। उसके अलावा मुझे कुछ नही कहना है।"[२]

श्री लाल शुक्ल के व्यग्य वैशिष्ठ्य के विषय मे उपेन्द्रनाथ अश्क लिखते है कि "श्री लाल शुक्ल ऐसे सशक्त लेखक है जिन्होने व्यवस्था के अन्दर रहते हुए भी नितान्त निर्मम और निरपेक्ष-भाव से उसे बीच बाजार नगा कर दिया।"[३] श्री रघुवीय सहाय उनके व्यग्य को और अधिक स्पष्ट करते हुए कहते है कि "वह (श्रीलाल शुक्ल) अपने समकालीन परसाई से काफी भिन्न है, जो कि टूटने योग्य है उसे तोड डालने के कायल है और शरद जोशी या रवीन्द्रनाथ त्यागी से तो बहुत ही भिन्न है जिन्होंने चुनी हुई चीजो पर हँसने-हँसाने में दक्षता अर्जित की है। श्रीलाल शुक्ल प्रेमचन्द्र और अज्ञेय के अधिक निकट पडते है जो टूटे हुए मूल्यों की स्थापना के लिए प्रयत्नशील है और बकिम के तो बहुत निकट है क्योंकि वह भी बार-बार उसकी याद दिलाते है जो टूट चुका है वह टूटकर नष्ट होने योग्य नहीं था।"[३]

विसगतियो को उभारने में श्रीलाल लाठी और आक्रोश का सहारा नही लिया है उन्होने

१ श्रीलाल शुक्ल – मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, पृष्ठ ६

२ प्रकर, अप्रैल १९८१, पृष्ठ १५

३ श्रीलाल शुक्ल – यहाँ से वहाँ, 'परिचय' पृष्ठ २, श्री रघुवीर सहाय का अभिमत

परिवेश के द्वारा विद्रूपताओं को प्रकट होने दिया। शिक्षा, साहित्य, समाज और राजनीति के ऊपर शुक्ल जी अधिक व्यग्य कसा है।

रवीन्द्र नाथ त्यागी

रवीन्द्र नाथ त्यागी हिन्दी व्यग्य के प्रतिस्थापक 'व्यग्यत्रयी' मे से एक है। परसाई और शरद जोशी के बाद ये अगली कडी है जिन प्रमुख लोगो ने व्यग्य को स्वतन्त्र विधा के रूप मे प्रतिष्ठा दिलाने मे सहयोग किया रवीन्द्र नाथ त्यागी उनमे प्रमुख हस्ताक्षर है। डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी जी ने उनकी रचना-प्रक्रिया के सन्दर्भ मे कहा है कि "रवीन्द्र नाथ त्यागी की व्यग्य रचनाओ मे कही सें रोचकता का सबल नही छोडा गया है। सम्भवत यह उनकी व्यग्य रचना की विशेषता भी है और खामी भी।"[१]

रवीन्द्र नाथ त्यगी ने बहुत अधिक व्यग्य रचनाए की है जिनमे प्रमुख इस प्रकार है– 'खुली धूप मे नॉव (१९६३), 'भित्ति चित्र' (१९६६), 'मल्लिनाथ की परम्परा' (१९७१), 'कृष्णवाहन की परम्परा' (१९७१), 'देवदार के पेड' (१९७३), 'शोक सभा' (१९७४), 'फुटकर' (१९७६), 'अतिथिकक्ष', 'मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाए' (१९७७), 'उर्दू–हिन्दी हास्य व्यग्य' (१९७८), 'फूलो वाले कैक्टस' 'सुन्दर कली' (१९७८), 'ऋतु वर्णन' (१९७९), 'भद्रपुरुष' (१९८०), देश-देश के लोग (१९८२), 'पदयात्रा' (१९८५), 'पराजित पीढी के नाम' (१९८८), 'प्रसग वश' (१९८८), 'रवीन्द्र नाथ त्यागी', 'प्रतिनिधि व्यग्य' (१९८९) आदि।

रवीन्द्र नाथ त्यागी का रचना ससार विस्तृत था जहाँ साहित्य, सरकारी कर्मचारी, प्रेमी-प्रेमिका, मित्र–शत्रु, नौकर–चाकर, भ्रष्टाचार–रिश्वत, मँहगाई–बेकारी, रुढिया अन्धविश्वास, साहित्य प्रकृति, शिक्षा–दीक्षा, आलोचना, शोध कार्य, समाजवाद, परिवार नियोजन आदि सभी विषय सम्मिलित है। इन सभी के बीच रवीन्द्र नाथ त्यागी 'सजीली नव यौवना' के लिए भी स्थान

---

१. डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – हिन्दी का स्वातन्त्रयोत्तर हास्य और व्यग्य, पृष्ठ २१०

निकाल कर उसे डाल देते है जिसके कारण उनके व्यग्य को 'काता सम्मत और कान्ता सग' व्यग्य कहा जाता है।

धर्म के ठेकेदारों के ऊपर इन्होंने 'इतिश्री भगवान उवाच' मे जमकर खबर ली है। इसमे इन्होने उनके इच्छित फल देने की घोषणा को व्यग्य का मुख्य लक्ष्य बनाया है। इसी प्रकार 'अन्धे लोगो का देश' मे उन्होंने ढोंगी साधुओ और अन्ध भक्तो के ऊपर व्यग्य करते हुए लिखा कि "कोई दस ही दिन मे उन्होंने सेठानी जी से लेकर जमादारिन तक सबको पवित्र कर दिया, सन्तो मे भेदभाव कहाँ"[१] 'यथा कदा हि धर्मस्य' मे इन्होने भगवान को भी नही छोडा जो समाज के पतित होने की प्रतिक्षा करता है।

समाज और साहित्य की चर्चा करते हुए उन्होने 'एक बदलता हुआ नायक' में लिखा कि "अब साहित्य और समाज के बीच से दर्पण हट गया और वह नाई की दुकान पर चला गया।"[२]

साहित्य चोरी के ऊपर 'अन्धे लोगो का देश' मे व्यग्य किया गया है तो कवि-सम्मेलनों, अभिनन्दन ग्रथों के ऊपर 'कवि सम्मेलनो की याद में', 'वीर रस का एक कवि सम्मेलन', 'सिदबाद की अन्तिम यात्रा' आदि रचनाओ को व्यग्य का विषय बनाया है।

रवीन्द्र नाथ त्यागी की व्यग्य की एक विशेषता है 'प्रसग वक्रता' इसमें विषय कोई उठाते है और व्यग्य किसी अन्य पर करते हैं जैसे – डिनर में मुझे तो एक सभ्रान्त महिला अपने साथ खीचकर ले गयी थी क्योकि उनके पति थे दौरे पर, काफी जोडे हमारे ही तरह के थे।"[३]

वर्तमान जीवन प्रणाली और उसमें नैतिकता की गिरावट को भी उन्होने अपने व्यग्य का

---

१ रवीन्द्र नाथ त्यागी – देवदार के पेड, पृष्ठ ११२

२ रवीन्द्र नाथ त्यागी – भित्तिचित्र, पृष्ठ ५५

३ रवीन्द्र नाथ त्यागी – अतिथिकक्ष, पृष्ठ ६२

विषय बनाया है। जहाँ अलग से चाय मे चीनी लेने, पापा कहे जाने तथा लडकियों के सम्पर्क मात्र से आधुनिकता को निर्धारित किया जाता है वहॉ नैतिकता का हृदय यह है मित्रो की पत्नियो को पतियो के सामने दीदी और अकेले मे भाभी कहते हुए पाये जाते है। इस सतही जीवन प्रणाली और छद्म आवरण को उन्होने प्रमुख रुप से व्यग्य रचनाओं मे स्थान दिया है।

दहेज समस्या को 'प्राप्ते तु पोषडे वर्षे' के अन्तर्गत उठाया है। जहॉ घर से विदाई के साथ घर का अस्तित्व भी समाप्त हो जाता है। 'कुमार सम्भव के वाक्याश' में इसी विषय को लेकर रवीन्द्र जी ने व्यग्य किया है।

प्रजातन्त्र के वास्तविक अर्थ को बतलाते हुए लिखते है कि प्रजा की हम इज्जत करते है और इसी कारण प्रजा शब्द का प्रयोग तन्त्र से पहले किया है पर सच्चाई मे स्थिति यही है जो सीता राम शब्द में सीता की और राधा कृष्ण शब्द मे राधा की। इसे इन्होने 'अपना देश चिन्तन के कुछ क्षण' के अन्तर्गत व्यक्त किया है। 'एक खबरदार लेख' में ससद और विधान-सभाओ की कार्य प्रणाली के ऊपर व्यग्य किये है जहाँ गाली-गलौच, मार-पीट तो होती है, समस्या के ऊपर बहस नही। 'पाँच लडकियो की कहानी' मे उन्होने नेताओ के दल बदल प्रवृत्ति को व्यग्य का विषय बनाया है।

भूदान आन्दोलन की विसगतियो को 'सहयात्री' निबन्ध में, समाजवादी की आडम्बर पूर्ण शैली को 'मेरा अन्तिम हास्य लेख' तथा 'अ-डाकुओं का आत्मसमर्पण' मे चित्रित किया है। 'तीन ऐतिहासिक पत्र' में बैल को प्रतीक बनाकर सत्ताधारियो के ऊपर चोट की है।

न्याय प्रणाली की दुरुह क्रिया-कलापों को आधार बनाकर 'किस्सा एक दिलचस्प गवाह का' मे रवीन्द्र त्यागी ने व्यग्य वाण छोडे है। गवाह कभी सच्चा नहीं होता उसे बच्चों के पाठ की तरह झूठ बोलने वाले वाक्यों को रटाया जाता है। इसी प्रकार न्याय मिलने में देरी को लेकर उन्होनें लिखा है कि "न्याय प्रणाली खूब समय लेती है परिणाम स्वरूप न्याय मँहगा और जान

लेवा बन जाता है   सबसे पुराना जो मुकदमा है १९३० का है।"[१]

सार्वजनिक सेवाओं के विभिन्न पहलुओं पर व्यग्य हुए वे 'पुलिस को गाँधीवादी कहते है' तो सब कुछ देखने के बाद भी हस्तक्षेप नही करती है। अस्पताल को वह स्थान बताते है जहॉ आदमी बीमारी की हालत मे दाखिल होता है और मुर्दा होकर बाहर निकलता है।'

'मृत्युबोध' के कुछ क्षण' मे उन्होने डॉक्टर की परिभाषा इस प्रकार की है। "जब कोई आदमी सबके सामने आपके पैसे लेकर आपकी हत्या करता है तो वह डॉक्टर कहलाता है, बढिया डॉक्टर वह होता है जिसका मरीज ठीक उसी बीमारी से मरता है जिसका डॉक्टर ने निदान किया था।"

रेल और बसो को केन्द्र मे रखकर भी रवीन्द्र त्यागी ने व्यग्य रचना की है। 'ग्यारहवे राजकुमार का चरित्र' मे दिल्ली मे बसो की स्थिति के विषय में लिख गया है।

प्रशासकीय विषयो से सन्दर्भित व्यग्य भी उनकी रचनाओ मे आता है 'घर से चलकर दफ्तर की परिभाषा कुछ इस प्रकार देते हैं "दफ्तर उस जगह को कहते है जहाँ लोग कपडे साफ पहनते है, काम गन्दे करते है।" दफ्तर की महत्वपूर्ण वस्तु फाइलो को लेकर उन्होने अनेक व्यग्य लेख लिखे। 'फाइले और फाइले', 'एक फाइल का सफर', 'कर्मों का बन्धन और गीत गोविन्द' आदि।

'सगीत मेरा दुश्मन' शीर्षक से लिखे गये व्यग्य लेख में उन्होंने सार्वजनिक निर्माण विभाग का लेखा जोखा किया है।

प्रशासनिक और राजनीतिक व्यग्य उन्होंने अपेक्षाकृत कम ही लिखा है। इसका कारण वे बताते हुए कहते हैं कि "सरकारी बातो को एक सीमा के बाहर नहीं ले जा सकते। व्यवस्थापिका जो है उसके अधिकार इतने व्यापक है कि वह चाहे तो आपको जेल भी भिजवा

---

१   रवीन्द्र नाथ त्यागी – आत्मलेख, पृष्ठ ५६

सकती है। कार्यकारिणी के पास 'ऑफिसियल सीक्रेट्स एक्ट' है जिसके पीछे सब कुछ छिपा है। अदालत जो है वह अपनी मानहानि के लिए आप पर मुकदमा चला सकती है और आपको सजा दे सकती है।"[१]

रवीन्द्र नाथ त्यागी सस्कृत, हिन्दी, अग्रेजी और उर्दू साहित्य के उद्धरणों द्वारा अपने रचना विधा मे चमत्कार उत्पन्न कर देते है। जैसे– "मेरे पिता कहा करते थे कि बडो होकर तू गोबर निकलेगा। उनका आर्शीवाद सोलहो आने फलीभूत हुआ गोदान मे एक पात्र गोबर है और उसके बाद दूसरा गोबर मैं हूँ इस दृष्टि से मेरे पिता का दर्जा मुशी प्रेमचन्द्र के बराबर ठहरता है।"[२]

शैली

रवीन्द्र त्यागी के व्यग्य की प्रमुख शैली उद्धरण युक्त रचना है। इसकी प्रमुख विशेषता है इनके वाक्याशों मे अनावश्यक रुप से 'जो' का प्रयोग –

"जो साहित्य प्रेमी मच्छड है उन्हे छोड दे [३]

"हिन्दी का भविष्य जो है वह सदा से उज्ज्वल रहा है परेशानी जो रही है वह हमेशा वर्तमान को लेकर रही।"[४]

रवीन्द्र त्यागी– व्यग्य मे उपमाओ का प्रयोग कुशलता और नवीनता के साथ करते है जैसे –

"वह गाजर के हलवे की भाँति मुलायम, नाशपाती की तरह सुडौल और फूलगोभी की भाँति खुली थी।"[५]

"सडक के साथ बलात्कार करने वाले जो ठेले है उनका तो कोई जबाब ही नही।"[६]

---

१ रवीन्द्र नाथ त्यागी – आत्मलेख, पृष्ठ ५६
२ रवीन्द्र नाथ त्यागी – आत्मलेख, पृष्ठ १०८
३ रवीन्द्र नाथ त्यागी – सहयात्री, पृष्ठ ५६
४ रवीन्द्र नाथ त्यागी – सहयात्री, पृष्ठ ८३
५ रवीन्द्र नाथ त्यागी – अतिथिकक्ष, पृष्ठ ८८
६ रवीन्द्र नाथ त्यागी – फूलों वाले कैक्टस, पृष्ठ ३२

मूल्यांकन

रवीन्द्र नाथ त्यागी ने व्यग्य की किसी स्पष्ट अवधारणा का विवेचन नही किया है लेकिन उनके 'साक्षात्कारो' एव भूमिका मे लिखे लेखो द्वारा व्यग्य के सन्दर्भ मे उनका अभिमत स्पष्ट होता है। डॉ रणवीर सागा के साथ साक्षात्कार मे वे कहते है कि "हास्य और व्यग्य अलग-अलग चीजे है और दोनो मे शुद्ध रुप से पृथकता रखते हुए भी कलाकार प्रथम श्रेणी की रचनाए दे सकता है।"

डॉ कमल किशोर गोयनका से बातचीत करते हुए कहते है, "जब मै दु:खी होता हूँ तो हास्य व्यग्य लिखता हूँ और जब प्रसन्न चित्त होता हूँ तो उदास कविता" वे आगे कहते है कि "मैने व्यग्य का उद्देश्य मनोरजन माना है।"[१]

'मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाए' मे धनजय वर्मा द्वारा भूमिका लिखी गयी है जिसमें वे लिखते है कि "रविन्द्र नाथ त्यागी ने साहितय और लालित्य पर विशेष ध्यान दिया है और समाज तथा नौकरशाही को पकडा जिसके कारण वे परसाई और शरद जोशी से अलग हो गये"[२]

केशव चन्द्र वर्मा

व्यग्य के प्रतिष्ठापक व्यग्यकार केशव चन्द्र वर्मा की मूल विशेषता किस्सागोई का रुप शिल्प और परिस्थितियो का सूक्ष्म पडताल रहा है। इनकी प्रमुख रचनाए इस प्रकार है – 'लोमडी का माँस' (१९५४), 'मुर्गा छाप हीरो' (१९५९), 'प्यासी और बेपानी के लोग' (१९५९), 'अफलातूनों का शहर' (१९७४), 'वृहन्नला का वक्तव्य' (१९७४), 'ज्यादातर गलत' (१९७५), 'हडताली बाबू' (१९७७), आधुनिक हिन्दी हास्य व्यग्य (स)(१९६१)।

केशवचन्द्र वर्मा समाज के किसी भी वर्ग को अपने व्यग्य का विषय बनाते हैं, नेता के

---

१ सपादक कमल किशोर गोयनका – प्रतिनिधि व्यग्य रचनाए, पृष्ठ २९३, ३२०

२ रवीन्द्र नाथ त्यागी – श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाए, पृष्ठ – २५

ऊपर व्यग्य करते हुए वे लिखते है कि "समस्या का उत्पादन नेता के लिए सजीवनी बूटी है, जो नेता समस्या नही उठा पाता, वह मर जाता है। उसकी नेतागिरी समाप्त हो जाती है, उसे सब जाहिल और बेकार समझने लगते हैं। जब जनता खर्राटा भर रही हो उस आकाक्षी नेता को चाहिए कि वह इतनी जोर जोर से चोर-चोर चिल्ला कर सडक पर दौडने लग जाय कि भले चगे सोने वाले घबडा उठे और समझे कि उनका असली चौकीदार यही नेता है जो बेबात से भडक उठता है।"[१]

केशव चन्द्र वर्मा का अधिकाश व्यग्य कथोपकथन के द्वारा ही उभरता है। पौराणिक प्रसगो जैसे विश्वामित्र मेनका के द्वारा भी ये व्यग्य को उभारते है। अग्रेजी-हिन्दी उर्दू के शब्द इनके व्यग्य निबन्ध की शोभा बढाते है। इनकी विशेषताओं का उल्लेख शेरजग गर्ग इस प्रकार करते हैं "केशवचन्द्र वर्मा की व्यग्य कथाओ मे विसगतियों को चुटकियो मे उडाने का भाव नही है। अपितु विसगतियो को छीलकर सार्थक और सगतियों की दीशा मे कुछ करना ही अभीष्ट है।"[२]

लतीफ घोघी

आधुनिक व्यग्यकारो में लतीफ घोघी का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। इनका व्यग्य आक्रामक नही होता है, ये अधरोष्ठ मे हँसने वाले व्यग्य करते है। अपने व्यग्य के विषय मे ये कहते है कि "मेरी व्यग्य रचनाओ में आक्रमकता नही है, तिलमिलाहट पैदा करने वाली स्थितिया नही है दरअसल आक्रमकता को व्यग्य के लिए गैर जरुरी मानता हूँ जो रचना आपके मुँह का स्वाद बिगाड दे उसे मै सफल रचना मानने को तैयार नहीं हूँ मेरी रचनाए आपको आलपिन की चुभन सा मीठा-मीठा दर्द दे ओर एक गुदगुदी आपके अन्दर पैदा कर दे, मै समझूँगा कि मेरा व्यग्य लेखन सफल हुआ।"[३]

---

१ केशव चन्द्र वर्मा – प्यासा और बेपानी के लोग, पृष्ठ ८०

२ डॉ शेरजग गर्ग – व्यग्य के मूलभूत प्रश्न, पृष्ठ १५२

३ लतीफ घोंघी – मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाएं, भूमिका

घोघी की प्रमुख व्यग्य रचनाए इस प्रकार हैं –

'उडते उल्लू के पख' (१९७२), 'मृतक से क्षमा याचना सहित' (१९७४), 'बीमार न होने का दु ख' (१९७७), 'सकट लाल जिन्दाबाद' (१९७८), 'बब्बूमिया क्रबिस्तान मे' (१९७९), 'तीसरे बन्दर की कथा' (१९७९), 'मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाए' (१९७९), 'किस्सा दाढी का' (१९८०), 'कुत्ते से साक्षात्कार' (१९८१), 'खबरदार व्यग्य' (१९८२), 'जूते का दर्द' (१९८४), 'सोने का अण्डा' (१९८४), 'चोरी न होने का दु ख' (१९८४), 'मुर्दानामा' (१९८५), 'बधाइयो के देश मे' (१९८६), 'लाटरी का टिकिया' (१९८६), 'क्षमा करना हम दुखी नही है' (१९८७), 'सडे हुए दाँत' (१९८७), 'ज्ञान की दुकान' (१९८८), 'बुद्धिमानो से बचिए' (१९८८), 'जुगुलबन्दी' (१९८७), मेरा मुख्य अतिथि हो जाना (१९८९)।

घोघी के इस विस्तृत साहित्य मे व्यग्य के विषय भी कई क्षेत्रो से सम्बन्धित है। राजनीति सरकारी नौकरी, प्रशासन, दोस्ती, साहित्यकार, चित्रकला दिखावा, सगीतकार, सच-झूठ आदि।

सरकारी काम-काज को सबसे अधिक राजनीति प्रभावित करती है जिसमे घुसने वाला व्यक्ति सबसे पहले अपने लिए साधन जुटाना प्रारम्भ करता है तत्पश्चात जनसेवा की बात सोचता है।

लतीफ घोघी कहते है कि 'पिछले अडतीस सालों मे देशी' बन्दर बहुत अधिक चालाक हो गये हैं।

रवीन्द्र नाथ त्यागी की भाँति लतीफ घोंघी के व्यंग्य में भी किसी न किसी बहाने औरत अवश्य आती है। उन्होंने औरतों के ऊपर खूब व्यग्य किया है जैसे –

"मेरी मरने के पश्चात मेरी पत्नी ने पानी पिया, फिर आदतन मेरी जेबे टटोलने लगी, कमीज की जेब से तीस पैसे निकले"[१]

---

१ लतीफ घोंघी – बीमार न होने का दु ख, पृष्ठ १२०

"जीते जी जिन महिलाओ के दर्शन ने कर सका वे आज बेपरदा होकर खडी थी"[१]

"औरते बेवकूफ मर्दों को पसन्द करती है यही कारण था कि मैने भी दाढी बढा ली"[२]

मुस्लिमो की धर्म आधारित रुढियॉ, विवाह की अधिकता, बच्चो की बहुतायत आदि को लेकर लतीफ घोघी ने व्यग्य कसा है –

"हाजी साहब की यह चौथी बीबी थी। मुस्लिम कानून का पूरा फायदा उन्होने जीते-जी उठा लिया था"[३]

"उसके तीन लडके और सात लडकियॉ थी। दो बीबीया थी। वह पक्का मुसलमान था, इसलिए उसने परिवार नियोजन नही करवाया था"[४]

लतीफ घोघी कबीर के बाद पहले साहित्यकार है जो अपने समाज को सुधारने का प्रयास करते है। मुस्लिम समुदाय की सभी प्रकार की बुराइयो को इन्होंने अपने व्यग्य का लक्ष्य निर्धारित किया। उनके तेवर के बारे मे डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी कहते है– लतीफ घोघी ने बिना लाग लपेट के स्थितियो और अनुभवों का प्रस्तावन किया है। इन व्यग्य रचनाओ में परम्परागत रुढियो और नई आस्थाओ के खिलाफ सघर्ष किया गया है।"[५]

अपनी चुलबुलीदार शैली और अश्लील सा हो जाने वाले स्त्री प्रसग से लतीफ धोधीं जल्द बाहर निकल गये और उन्होंने समाज के ऊपर अपना ध्यान खींचा। १९८० के पश्चात उनके व्यग्य के तेवर में तिक्तता और प्रहारात्मक क्षमता का गुण विकसित हो गया।

---

१ लतीफ घोंघी – बीमार न होने का दुःख, पृष्ठ ५०

२ लतीफ घोंघी – किस्सा दाढ़ी का, पृष्ठ ८५

३ लतीफ घोंघी – किस्सा दाढी का, पृष्ठ २२

४ लतीफ घोंघी – बुद्धिजीवी की चप्पले, पृष्ठ १३

५ डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – हिन्दी व्यग्य के प्रतिमान, पृष्ठ ३०

विद्यार्थी की नकल करने की प्रवृत्ति पर व्यग्य करते समय वे कहते है कि प्रश्न इस प्रकार का आना चाहिए जिससे शिक्षा का भविष्य उज्ज्वल हो जैसे – "जूली और सन्तोषी माता मे अन्तर स्पष्ट कीजिए। नीतू सिह के पतन के कारण बताइए ? रेखा और राखी का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।"[१]

डॉक्टरो और वकीलो के ऊपर भी उन्होने अपनी रचनाओ द्वारा व्यग्य वाण छोडे है। 'इक्कसवी सदी का पाणिग्रहण अधिनियम' 'इक्कीसवी सदी का गर्भाधान विधेयक', 'बाकी बाते अदालत मे होगी' मे लेखक ने अधिवक्ताओं को व्यग्य का विषय बनाया है।

"वकील के यहाँ जाकर पाँच रुपये के स्टाम्प पेपर पर जो कुछ लिखा जाता है वही सच्चा होता है नकारने की स्थिति मे अदालत मे जाना पडेगा और चार पेशी मे ही फरिश्ता भी भूल जायेगा कि वह फरिश्ता है"[२]

'कश्मीर से कन्या कुमारी तक' और 'किस्सा फिल्मी पुलिस का' में पुलिस के ऊपर व्यग्य किया है। 'ज्ञान की दुकान' मे वे लिखते है कि "भारत मे पुलिस और मौत का कोई भरोसा नही है।"[३] इसी प्रकार 'पी के घर आज प्यारी दुल्हनिया चली' में डाकू और पुलिस में अन्तर करते हुए लिखा है कि "डाकू से बचकर सही सलामत आ ही जाओगे लेकिन जब पुलिस के चगुल मे फसोगे तो भीख मागने के लायक होकर ही निकलोगे"[४]

'एक टिकट का सवाल है बाबा', में उन्होने कॉंग्रेसी सोच को व्यग्य का आधार बनाया है जो सोचता है "मेरा जन्म कस्तूरबा गॉधी अस्पताल में हुआ अतः मै गॉधीवादी हूँ।"[५] 'हमें इक्कीसवी सदी में जाना है' राजीव गाँधी की घोषणा से प्रभावित होकर उन्होंने लिखा है कि–

---

१ लतीफ घोंघी – किस्सा दाढी का, पृष्ठ १०७–१०८

२ लतीफ घोंघी – बुद्धिजीवी की चप्पले, पृष्ठ १०–११

३ लतीफ घोंघी – कश्मीर से कन्याकुमारी तक, पृष्ठ ४०–४५

४ लतीफ घोंघी – बुद्धिजीवी की चप्पले, पृष्ठ २३

५ लतीफ घोंघी – बुद्धिजीवी की चप्पले, पृष्ठ ३६

"हम (कुत्ते) इसलिए नही जाना चाहते क्योकि आदमी वहाँ जा रहा है, साम्प्रदायिकता वहॉ जा रही है, स्वार्थ वहॉ जा रहा है, इसलिए कोई वहाँ नहीं जायेगा।"[१]

'पटवारी को मत पकडो' मे राजस्व विभाग एव घूसखूरी-भ्रष्टाचार का पर्दाफाश किया गया है। 'गरम हवा और भैया जी' मे नेताओ की कथनी और करनी के अन्तर को दिखलाने का सफल प्रयास धोधी जी ने किया है।

मार्डन आर्ट के ऊपर लतीफ घोघी चित्र खीचते हुए कहते है कि "चित्र भिखमगो का और शीर्षक करोडपति वे बोले यही मार्डन आर्ट है जिन्दगी की विसगतियों का रेखाकन है।"

शैली

एक ही मुहाबरे का बार-बार प्रयोग करके अनुप्रास युक्त व्यग्यार्थ को प्रस्तुत करते है-

"वह बोली बडे आये नाक वाले ! मैं कहती हूँ इतने पैदा करवा दिये तो कहॉ गयी थी तुम्हारी नाक, परिवार नियोजन करवा लेते तो क्या तुम्हारी नाक कट जाती।"

नवीन उपमानो को उन्होंने अपनी रचनाओ मे स्थान दिया है –

"अपनी नाक तो देखा लगता है जैसे चेहरे पर छिपकली चिपकी है"

"टयर इतने चिकने कि ताजमहल का सगमरमर भी शरमा जाए"

आत्म व्यग्य और सवाद तथा सूक्ति वाक्यों द्वारा भी इन्होंने व्यग्य को स्वर प्रदान किया है।

"बिना पालिश का जीवन किस काम का' (सूक्ति)

"यह तेरा दुर्भाग्य कि मै मरा भी तो इतवार के दिन। खामखाँ एक दिन की छुट्टी बेकार हो गयी।"

---

१ लतीफ घोंघी – बुद्धिमानों से बचिए

रवीन्द्र त्यागी, लतीफ घोषी के योगदान एव रचना ससार का मूल्याकन करते हुए कहते है "हिन्दी मे हास्य व्यग्य को उपेक्षा के बिन्दु से उठाकर उसे एक समृद्ध विधा बनाने की दिशा मे जिन गिने-चुने लेखको ने काम किया उनमें लतीफ धोधीं का महत्त्वपूर्ण योगदान है। उनका हास्य बडा निश्छल और स्वाभाविक है और उनका व्यगय वेहद तीखा और मर्मान्तक चोट करने वाला है।"[१]

लतीफ घोषी के रचना ससार को देखने के पश्चात निश्चयपूर्वक यह कहा जा सकता है कि इन्होने परसाई की भाँति वैचारिक प्रतिबद्धता नही दिखलायी, रवीन्द्र नाथ त्यागी की भाँति शैली के नये-नये आयाम विकसित नही किये तथा के पी सक्सेना की भाँति भाषिक प्रयोग नही किया। यही लतीफ की विशेषता है तो सवादो की बहुलता इनकी दूसरी विशेषता है।

नरेन्द्र कोहली

हिन्दी के प्रमुख प्रतिस्थापक व्यग्यकार और व्यग्य समीक्षक डॉ नरेन्द्र कोहली 'मै बच्चो से घृणा करता हूँ' नामक व्यागयात्मक निबन्ध के साथ व्यग्य विधा मे प्रवेश करते है। यद्यपि व्यग्य लेखन वे १९५७-५८ से ही करते रहे है लेकिन इनकी व्यग्य कृतिया १९७० से प्रकाशित होना प्रारम्भ हुई। इनकी प्रमुख व्यग्य रचनाए इस प्रकार है।

१ एक और लाल तिकोन – १९७०

२ पाँच एब्सर्ड उपन्यास – १९७२

३ जगाने का अपराध –

४ आश्रितो का विद्रोह – १९७३

५ शम्बूक की हत्या – १९७४

६ मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाए – १९७९

---

१ लतीफ घोंघी – नीर-क्षीर, भूमिका

७ आधुनिक लडकी की पीडा – १९७९

८ त्रासदिया – १९८२

९ परेशानिया – १९८६

नरेन्द्र कोहली का रचना ससार विस्तृत है। आक्रोश में व्यक्तिगत भाव को मिलाकर उन्होंने 'व्यग्य' का सृजन किया है। वे कहते है "मै व्यग्य तभी लिखता हूँ जब केवल व्यग्य लिखने के लिए मेरे पास कुछ नया हो। लिखने को नया हो तो शिल्प भी गया बन जाता है।"[१]

इनके रचना ससार में खोखले रोमास, नकली फैशन, रेलवे प्रशासन, शिक्षा, परिवार-नियोजन पुलिस, लोकतन्त्र आदि सम्मिलित है। यथार्थ की पृष्ठभूमि पर इन सभी विषयो को लेकर इन्होने व्यग्य रचना की है। डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी इनके व्यग्य के विषय मे कहते है कि "नरेन्द्र कोहली का व्यग्य सामाजिक सच के एकदम निकट है और व्यग्य विधा को अपनाकर उन्होंने अपने मन की पीडा को वाणी दी है हरिशकर परसाई और शरद जोशी की अपेक्षा नरेन्द्र कोहली का व्यग्य गम्भीरता के लबादे से अधिक बोझिल है।"[२]

धर्म के पाखण्ड और धर्म के प्रभाव को नरेन्द्र कोहली ने करीब से देखा है। उनकी रचनाओ में इस कारण धर्म के ऊपर किया गया व्यग्य बडा ही चुटीला होता है। 'कर्तव्य निष्ठ पडोसी' मे वे लिखते है कि "धर्म के नाम पर लोगो को नगे रहने, सशस्त्र रहने, एक से अधिक पत्निया रखने का अधिकार है। वैसे सत्यवादिता के नाम पर चुगली करने का अधिकार है– धर्म तो इस देश में 'वीटो' है उसके सामने न कोई तर्क चलता है, न नियम, न कानून।"[३]

इसी प्रकार धर्म से जुडी सस्कृति के ऊपर भी उन्होंने अपना व्यग्यवाण छोडा है जो मात्र 'चमडे के जूते' पहनने से नष्ट हो जाती है।

---

१ नरेन्द्र कोहली – मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाए

२ डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – हिन्दी का स्वातन्त्रयोत्तर हास्य और व्यग्य, पृष्ठ – २१७

३ नरेन्द्र कोहली – जगाने का अपराध, पृष्ठ ८०

कला साहित्य तथा इनके सर्जक की दशाओ के ऊपर कोहली ने लेखनी चलायी है। साहित्यकार एव कलाकार की दयनीय स्थिति के विषय में वे कहते है– "कला का पुरस्कार ज्ञानपीठ का एक लाख रुपये का पुरस्कार नही है। कला का पुरस्कार तो विक्षिप्त होकर, बिना इलाज के मरना है निराला को यही पुरस्कार मिला, प्रसाद भी कुछ इन्हीं परिस्थितियो मे मरे। शम्भू महाराज के चित्र रोज समाचार–पत्रो मे निकलते रहे, वे कैसर से पीडित होकर कलाकार का पुरस्कार पाते रहे और अन्त मे मृत्यु का गोलड मेडल पाकर निगम बोध घाट जा पहुँचे।"[१]

विसगतियों के ऊपर व्यग्य करते हुए नरेन्द्र कोहली इतने अधिक उत्तेजित हो जाते है कि अपने ऊपर नियन्त्रण खो देते है और बेहिचक गाली देना प्रारम्भ कर देते है 'जगाने का अपराध' मे वे इसी प्रकार आक्रोशित लेख लिखते है "इस देश का पुरुष क्या है ? कूप मडूक ! अपनी पत्नी और परिवार के हितों के खूँटे से बँधा, रहट का बैल। स्वार्थी ! नीच। देश को लूटकर अपने परिवार का पेट भरने वाला। न उदार दृष्टि न, न उन्मुक्त चिन्तन।"[२]

समाज की निरन्तर घिस रही नैतिकता को उन्होने 'प्रेम पत्र और हेड मास्टर' के माध्यम से वाणी दी जै। इस लेख मे हेड मास्टर साहब पाखाने मे छिपकर सिगरेट पीते है। लडकों को धूम्रपान करने से मना करते है। विद्यार्थियो को शृगार के पद पढाते हैं अगर किसी लडके ने किसी लडकी को प्रेम पत्र लिख दिया तो उसे कालेज से निकाल देते है। इस मे नैतिकता का भेद खुले और छिपे के कारण है। वे छिपकर सिगरेट पीते है इसलिए नैतिकतावादी है और लडके सडक पर पीते है इसलिए वे अनैतिक है।

'मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाए' मे सकलित रचनाओ में विदेशी वस्तुओ की ललक, विदेशी जीवन शैली, खान–पान, नामकरण आदि की दोगली मानसिकता पर कोहली जी ने गम्भीर व्यग्य किया है। 'इम्पोर्टेड' कपडे को नीलामी से खरीद कर भी हम गर्व का अनुभव करते है।

---

१ नरेन्द्र कोहली – आधुनिक लड़की की पीड़ा, पृष्ठ ३७

२ नरेन्द्र कोहली – आधुनिक लडकी की पीडा, पृष्ठ ३७

विदेशी आयतित माल की हम लोगों को खाने-पीने की इतनी अधिक और स्वाभाविक आदत पड गयी कि हम लोगों को यह आभास ही नही होता कि एक तरह का परजीवी होना है। गेहूँ है अमरीका से चला आ रहा है मशीने है अमरीका से चला आ रही है। हथियार है वह भी अमरीका से चला आ रहा है– आदत नही पड गई रेडीमेड चीजो की तो और क्या-क्या भिखमगे कही के।[१]

'दि लाइफ' के द्वारा नरेन्द्र कोहली ने हाई सोसाइटी की जीवन शैली पर व्यग्य किया है जो क्लबों एव सतसगो के माध्यम से बढावा देती है। इन सबमे एकाकीपन का भाव कुण्ठा के रुप मे धर लेता है जिसके कारण यौन कुण्ठा का भी जन्म होता है। नरेन्द्र कोहली 'पाँच एब्सर्ड उपन्यास' मे इसे स्थान दिया है वे लिखते है "मम्मी, तुम अपने व्वॉय-फ्रैण्ड से डैडी की गर्ल-फ्रैण्ड को नही पिटवातीं'।

मध्यवर्ग का असन्तोष, अभाव, कुण्ठा, निराशा, आकाक्षा। नरेन्द्र कोहली ने 'पाथेय' मे ध्वनित किया है। मध्यवर्ग हमेशा अपना जीवन जोड-गाँठ करके चलाता है। उसकी आवश्यकताओे की पूर्ति कभी नही होती है। वह छोटी-छोटी जरुरतो के लिए भी अपने से समझौता करता रहता है। इसी आत्मतोष को सन्तुष्ट करने के लिए वह परनिन्दा शुरू कर देता है। दूसरो को वह अपनी बुद्धि, शक्ति और चतुराई द्वारा नीचा दिखाना चाहता है।

निम्न मध्यम वर्गीय मनोदशा का चित्रण उन्होने 'पाँच एब्सर्ड उपन्यास' मे इस प्रकार किया है "ये लोग कालेज की लायब्रेरी में बैठते है, सबसे डरते है। किसी से मन की बात नही कहते। न ऊँचा बोलते है न ऊँचा हँसते है। ये कालेज के वैकवर्ड लोग हैं। एकदम डल और भोदू समझे जाते है। इनसे कोई बात करना भी पसन्द नही करता है ये लोग ऐसे मूर्ख है, केवल पढने के लिए ही कालेज में आते हैं।[२]

---

१ नरेन्द्र कोहली – एक और लाल तिकोन, पृष्ठ ४४

२ नरेन्द्र कोहली – पाँच एवसर्ड उपन्यास, पृष्ठ ४

शिक्षा, शिक्षा सस्थान, शोध प्रबन्ध और उनकी प्रकृति पर भी नरेन्द्र कोहली ने अपने विभिन्न रचनाओ मे व्यग्य का विषय चुना है। 'दि कालेज' में अध्यापको की स्टाफ रुम मे बैठकर गप्प बाजी की चर्चा की है तो 'रिसर्च एक्सपीरियेन्स' मे उच्च कोटि की थीसिस भी नही जमा हो पाती है इस पर प्रकाश डाला गया है।

'अस्पताल' रचना मे अस्पताल की कार्य प्रणाली को व्यग्य का विषय चुना है। जहाँ 'एप्रोच' के बगैर मरीज भर्ती भी नही हो पाता।

पुलिस की मनमानी प्रवृत्ति और उसकी लूट खसोट को नरेन्द्र कोहली ने अपनी गम्भीर व्यग्य शैली के द्वारा व्यक्त किया है वे कहते है कि पुलिस का आदमी आदमी नही होता है वह सिपाही होता है सब उसे आदमी समझने लगेगे तो उनसे डरेगा कौन ?" अर्थात पुलिस से डरने मे उसकी अमानवीय प्रवृत्ति ही मुख्य कारक है।

'साहित्यकार की घोषणाए' में इस बात की कल्पना की गयी है कि अगर कभी स्वर्ग पृथ्वी पर आ जाये तो क्या होगा "भूदानी अपना झोला लिए दौडेंगे कि डाकुओ के आत्म समर्पण के समान ही स्वर्ग भी बिनोबा ने ही उतारा है। काग्रेसी अपनी टोपी सभाले दौडेगे कि स्वर्ग उनके लिए उतरा है और गाँधी ने उतारा है। नई काग्रेस वाले गुलाब के फूल लिए दौडेगे कि भेज दिया, भेज दिया नेहरू जी ने हमारे लिए भेज दिया। और इस झगडे का परिणाम यह होगा कि "प्रत्येक दल स्वर्गवासी होना चाहेगा और वामपन्थी दल इसलिए सब स्वर्ग से नाराज होगे कि वह धार्मिक सी चीज साली उतरी ही क्यो ?

'ब्लड बैंक की अप्सरा' मे युवती नेताओं का खून लेने से मना कर देती है। वह कहती है एक बार लिया था से खटमल मारने लिए रख दिया।

नरेन्द्र कोहली का व्यग्य समाज के सभी क्षेत्रो में फैली विसगतियो पर घोरतम प्रहार है। इसमें किसी को छूट नहीं मिली है। जो गलत है उस पर प्रहार अवश्यम्भावी है। विचार और

दृष्टि को लेकर वे सीमावद्ध नही होते है। मुक्त भाव से विसगतियो पर प्रहार ही उनके व्यग्य की पहचान है।

शिल्प

नरेन्द्र कोहली स्वीकार करते है कि अन्य विधाओ की अपेक्षा व्यग्य मे पुनरावृत्ति का खतरा होता है इस कारण शिल्प परिवर्तन कर उसे नये रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। नरेन्द्र कोहली ने ऐसा किया भी। उनकी रचनाओ मे शिल्प–वैविध्य देखने को भी मिलता है।

'पॉच एब्सर्ड उपन्यास' मे शिल्प वैविध्य स्थितियो के एब्सर्ड होने के कारण आया है। यह उपन्यास हिन्दी व्यग्य साहित्य का बेजोड शिल्प विचित्र उपन्यास है।

नरेन्द्र कोहली ने उपमा और सादृष्य विधान को प्रस्तुत कर गम्भीर किस्म का व्यग्य किया है–

"पत्नी का स्वास्थ्य देश की आर्थिक स्थिति के समान बिगडता जा रहा है विशेष रूप से उसकी खाँसी दिनोदिन मँहगाई के समान बढती जा रही थी।"

"वे देश को चूस रहे है जैसे कुत्ता हड्डी को चूसता है"

"एक वृहद डिक्शनरी जैसे महिला" "वे खडे है जैसे बस स्टाप नही सयुक्त राष्ट्र सघ की जनरल असेम्बली मे खडे हो"

उदाहरणो एव दृष्टान्तों द्वारा नरेन्द्र कोहली जहाँ व्यग्य की धार को तेज कर देते हैं वही वे प्रभावी भी बना देते है।

"मकड़ा स्वय जाला बुनकर उसमे उलटा लटककर तडपता है आदमी जात बुनकर सन्तान चाहता है और जब सन्तान उसे अगूठा दिखाकर दुखी करती है तो वह तडपता है एक ओर

---

१ नरेन्द्र कोहली – आधुनिक लड़की की पीड़ा, पृष्ठ २६–२७

लोग पेन्शन, बीमा तथा भविष्य निधि का प्रबन्ध करते हैं ताकि वृद्धावस्था में आराम से रह सके दूसरी ओर वे सन्तान का प्रबन्ध भी करते है ताकि वह उनका सारा पैसा उडा दे और वे आराम से न रह सके।"

व्यग्य के विषय मे

नरेन्द्र कोहली अपने व्यग्यकार बनने के पीछे पीडा को मुख्य मानते है 'अस्पताल' रचना को लडके की मृत्यु से उत्पन्न पीडा ने ही लिखने को प्रेरित किया। 'पाँच एब्सर्ड उपन्यास' में वे कहते है जब तक सह सका, सहा पर जब सह न सका तो मै व्यग्य पर उतर आया पीडा ने ही मुझे अपने से कुछ बडा कर दिया था और एक ऐसी ऑख दी थी, जिसने उस सारे वातावरण को एक कार्टूनिस्ट की दृष्टि से देखा था।"

नरेन्द्र कोहली की व्यग्य अवधारणा ने इस प्रकार की रूपरेखा ग्रहण की है। व्यग्य का निर्माण पीडित आक्रोश की असहाय स्थिति मे वक्र होकर आता है। सशक्त व्यग्य पुचकारता नही कोडे लगाता है। दूसरो की पीडा पर हॅसना विकट व्यग्य बन जाता है व्यग्य की हॅसी में असहायता एव पीडा होती है।

समग्र रूप से नरेन्द्र कोहली का अगर मूल्याकन किया जाय तो बालेन्दु शेखर तिवारी के कथन से बात स्पष्ट हो जायेगी "व्यग्य के माध्यम से एक विशिष्ट सोच को विकसित करने वालो में नरेन्द्र कोहली की पहचान इसी कारण सुस्थिर हो सकी है कि उन्होने सोद्देश्य और प्रभावक व्यग्य की गम्भीर प्रस्तुति की है।"[१]

नरेन्द्र कोहली हिन्दी व्यग्य साहित्य के गद्य लेखकों में मात्र एक ऐसे व्यग्यकार है जिन्होंने प्रचलित सभी गद्य विधाओं का प्रयोग किया और सफलता पूर्वक किया।

---

१ डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – हिन्दी व्यग्य के प्रतिमान, पृष्ठ २६

अमृत राय

योग्य पिता के, योग्य पुत्र अमृत राय ने प्रेमचन्द्र की भाँति दुखियो, पीडितो, शोषित की आवाज बनकर कहानी तथा उपन्यास का लेखन किया। सामाजिक कुप्रथाओ, विसगतियों तथा विद्रूपताओ को उन्होने अपने लघु निबन्धो मे स्थान दिया। उनके व्यग्य सकलन इस प्रकार है—

१ बतरस – १९७३

२ मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाए १९७७

३ विजिट इडिया – १९८२

व्यग्यकार का यह सामाजिक दायित्व बनता है कि जो कुछ गलत दिखता है कुत्सित दिखता है उसे लक्ष्य करके चोट करे। अमृत राय ने व्यग्यकार के दायित्व को निभाते हुए राजनीति, साहित्य, समाज, व्यक्ति आदि के दोषों को खोज–खोजकर व्यग्यवाण द्वारा भेदना प्रारम्भ किया।

मनुष्य की अनैतिकतावादी प्रवृत्ति दिनो–दिन बढती चली जा रही है वह अपने मूल कर्तव्यो से भी च्युत होता जा रहा है। युवा पीढी अगर इसमें सबसे आगे है तो बुजुर्ग भी कम पीछे नही है वे अपना समय इस चर्चा मे अधिक व्यतीत करते है कि मुहल्ले के किन लोगो का किनसे सम्बन्ध है। इसकी तरफ अमृतराय ने सकेत किया है "मतलब यह कि मुहल्ले के जो बडे–बूढे हैं उनका पडोसी धर्म है कि मुहल्ले के हर लडके–लडकी के चाल–चलन पर कडी निगरानी रखे।"[१]

सदियों से शान्तिप्रिय देश भारत में आज अशान्ति की हवा चल रही है। बन्धुत्व की भावना लुप्त हो गयी हर पड़ोसी एक दूसरे से डरा सहमा रहता है। इसको लेकर अमृत राय लिखते हैं "अब तो ये हाल है कि हमारी रगों का खून हरदम खैलता रहता है जरा सा बत–बडाव

---

१ अमृतराय – मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाए, पृष्ठ १३५

हुआ नही छुरा चल जाता है या फिर सीधे धॉय-धॉय होने लगती है जैसी कि शोले फिल्म मे होती है। सच तो यह है कि अब हम विकट सूरमो की कौम है, हमारा बच्चा गब्बर सिह है।[१]

कानून की विसगतियो को लक्ष्य करके भी अमृतराय अपने व्यग्य-वाण छोडते हैं। कानून का दीर्घकालीन अलाप, जिसमे व्यक्ति अपने सर्वस्य को नष्ट कर देता है, बेकार की कवायद है इसका कोई निश्चित परिणाम नही। आज के समय में कानून की इतनी अधिक सख्या है कि बगैर कानून तोडे हम सास भी नही ले सकते है इसको लेकर अमृतराय ने यह विचार दिया—

"हम तो साँस भी नही ले सकते, एक न एक कानून तोडे बिना। लोग सारी-सारी उम्र मुकदमे ही लडते रह जाते है, घर-दुआर, दुकान-दौरी, लुटिया-थरिया तक बिक जाती है मगर मुकदमा चलता रहता है क्योकि हमारे कानून का कही अन्त नही है।[२]

गाँधीवादी चिन्तको, विचारकों के ऊपर आरोप लगाते है कि "सब झूठ बात है और तुम्हारे ये तीनो बन्दर एक नम्बर के ढोगी है। तुम्हारे सामने कैसे कान पूँछ दबाये बैठे रहते थे और तुम्हारी पीठ फिरी नहीं कि सब कुछ तहस-नहस करके रख दिया।"[३]

प्रशासनिक अव्यस्था, भ्रष्टाचार, मूल्य हनन, अन्धविश्वास आदि को लेकर उन्होंने व्यग्य किया है कि "बलुक आदमी क जान सबसे सस्ते बिकाय रहता है, सौ पचास रुपैया में दिन दहाड़े ठाँय-ठाँय मार के खूनी चपत। जो न हो जाय सब थोडा है धब्बा जौन आ गया है सूरज के भीतर। ऊ न आया होता तो सब ठीकै रहा। ऊसरवा बिडिओ दोनों हाथ से रुपया बटोर रहा है जानै कै ठो हवेली खडी हो गयी उसकी पैसा आता है बिलाक के काम बेद बिडिओ सब अपने ही घर में रख लेता है"।[४]

---

१ अमृतराय – विजिट इण्डिया, पृष्ठ १४
२ अमृतराय – विजिट इण्डिया, पृष्ठ १३
३ अमृतराय – मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाए, पृष्ठ १०२
४ अमृतराय – विजिट इण्डिया, पृष्ठ ९४

राजनीतिक नेताओ की जन सेवा को छोडकर, स्वसेवा करने की प्रवृत्ति को लक्ष्य किया है–

"ये हमारे बस का रोग नही है बुराई को न देखें न सुने और न उसके बारे मे कुछ कहे। यह काम कोई मन्त्री ही कर सकता है। सारी दुनिया देख रही है कि जहाँ–तहाँ लोग भूख से मर रहे है मगर खाद्य मन्त्री को ऐसा कुछ दिखायी नही पडता है।"[१]

भारतीयो के विदेश प्रभाव को लक्षित करते हुए अमृतराय कहते हैं कि "क्विट इण्डिया की बडी तडप है आज हिन्दुस्तानियो मे। तमाम तमाम डॉक्टर, इजीनियर, गतिणतज्ञ, अर्थशास्त्री, रसायनशास्त्री, भौतिकशास्त्री, आदि–आदि क्विट इडिया किये चले जा रहे हैं।"[२] क्विट इण्डिया ब्रिटिश शासन को भगाने के लिए प्रयुक्त किया जाता था। लेकिन वर्तमान मे शिक्षित भारतीय विदेश बसने को आकुल है।

भारतीय आर्थिक स्थिति और उसकी हमेशा धन मागने की प्रवृत्ति को कटाक्ष के माध्यम से अमृतराय ने व्यक्त किया है "पता नही क्यो भारतीय पासपोर्ट देखते ही दूतावासों के होश उड जाते हैं जैसे भूत देख लिया हो बाप रे बाप हिन्दुस्तानी है। घुसने भर मत देना इसको नहीं चार दिन में अपने ही जैसे कगाल कर देगा और तुम भी कटोरा लेकर गली–गली भीख माँगते दिखायी दोगे।"[३]

शिल्प

अमृतराय के निबन्धों मे विषय वैविध्य के साथ शिल्प मे भी परिवर्तन हुआ है"

भाषा के स्तर पर अमृतराय ने अपने पिता की भाँति ऐसी भाषा का प्रयोग किया जो जन

---

१ अमृतराय – विजिट इण्डिया, पृष्ठ ३५

२ अमृतराय – विजिट इण्डिया, पृष्ठ १२४

३ अमृतराय – विजिट इण्डिया, पृष्ठ १२०

साधारण को आसानी से समझ में आ जाय। मुहावरों, कहावतों, का प्रयोग भी यथा स्थान इनकी रचनाओ मे मिलता है। उनके व्यग्य शीर्षक कभी बहुत छोटे तो कभी बहुत बडे होते हैं जैसे– 'भोपू, वोटर' 'मेरे पिया गये रगून वहाँ से किया है टेलीफोन' फिर भी भगत ने जब तक दिन खुश होकर छोटे लाट साहब को चिट्ठी लिखी" आदि।

अमृतराय के व्यग्य निबन्ध मनोरजनपूर्ण, रोचक, सजीव, सारगर्भित, व्यग्ययुक्त है इनके वाक्य, कथन और शब्द व्यग्य की सार्थक उत्पत्ति करते हैं। उनके व्यग्य में विघटित मानवीय मूल्यो को पुन. स्थापित करने का प्रयास किया गया है, वे केवल विसगतियो को सकेतित ही नही करते, उससे छुटकारा पाने के लिए प्रेरित भी करते हैं।

'मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाए' की भूमिका मे वे कहते है व्यग्य पाठक के क्षोभ या क्रोध को जगाकर प्रकारान्तर से उसे अन्याय के खिलाफ सघर्ष करने के लिए सन्नद्ध करता है और हास्य उस अशिव और असुन्दर का मखौल उडाकर जहाँ एक ओर पाठक को हँसाता है, वहाँ दूसरी ओर उस अशिव को हास्यास्पद बनाकर उसके आतक को समाप्त कर देता है।[१]

अन्यत्र उनकी मान्यता है कि "हास्य व्यग्य सच्चे अर्थों में दुःख हरण साहित्य होता है। लेकिन व्यग्य के लिए न्याय और अन्याय का प्रश्न होता है और हास्य के लिए सुन्दर असुन्दर का।"[२]

राधाकृष्ण

१९३० से ३ फरवरी १९६९ तक इन्होने विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में हास्य-व्यग्य का लेखन कार्य किया।

मुर्गे और लोमड़ियों के प्रतीक विधानों द्वारा इन्होंने अपनी बात को प्रखरता प्रदान की है

---

१ अमृतराय – मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं

२ अमृतराय – विजिट इण्डिया, पृष्ठ ३०

इनके दृष्टान्त पौराणिक कथाओ से सन्दर्भित होने के कारण और अधिक प्रभावशाली हो जाते है। 'कुम्भकर्ण गोलिया' 'अनुत्तर योगक्षेम की पर्येषणा' आदि इनकी पुष्ठ रचनाए है। राधाकृष्ण का सिद्धार्थ चुनाव टिकट लेने के लिए यशोधरा को अपने 'वॉस' के पास छोड देता है और वर्तमान कुम्भकर्ण 'युवक' हमेशा गोली खाकर नीद मे रहना पसन्द करता है।

राधाकृष्ण के राम गॉधीवादी चिन्तन से ओत-प्रोत है जो सोचते है "इतने खूने-खराबे और शोर-शराबे की क्या जरुरत है ? रावण का यदि हृदय परिवर्तन कर दिया जाय तो सब कुछ ठीक हो जायेगा। हृदय परिवर्तन होने पर वह आप ही समझ जायेगा कि बुरा काम किया है। तब उसे पाश्चाताप होगा और वह आप ही सीता को लेकर आ जायेगा और क्षमा मॉग लेगा"[१]

राधाकृष्ण का अधिकाश व्यग्य लेखन काल के गाल मे समाहित हो गया। इसे डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी ने निकालने का प्रयास किया है। वे राधाकृष्ण के व्यग्य के विषय मे कहते है कि "राधाकृष्ण ने गोबर पर भी कलम चलाकर, उसे सोहन हलवा बनाया है बॉसुरी से लाठी का काम किया है तो लखेनी धारदार तलवार की तरह चलती है।"

डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी

हिन्दी व्यग्य साहित्य के प्रतिष्ठा प्राप्त लेखक एव व्यग्य समीक्षक ऐसे पहले व्यग्यकार है जो उच्च शिक्षा प्राप्त है। इन्होने व्यग्य मे पी एच डी एव डी लिट की है। इन्हे स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी व्यग्य का 'प्रवक्ता' कहा जा सकता है। अपनी सूक्ष्म अन्तर दृष्टि और गहरी विषय पैठ के कारण हास्य-व्यंग्य के पार्थक्य को इन्होने जिस प्रकार विवेचित किया है, शोधार्थियो एव व्यग्य आचार्यों के लिए वह आधार ग्रथ का कार्य करता है। हिन्दी व्यग्य के प्रतिमानो को भी इन्होंने भी उसके सम्पूर्ण गुणो-अवगुणों के साथ विश्लेषित किया है। व्यग्यकार एव व्यग्य

---

१ सारिका – फरवरी – १९७०, पृष्ठ २६, हिन्दी व्यग्य के प्रतिमान

२ डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – हिन्दी व्यंग्य के प्रतिमान, २०

समीक्षक के रूप मे इनकी रचनाए इस प्रकार है – व्यग्यकार के रूप मे

१ रिसर्च गाथा – १९७९

२ बानगी – १९८०

३ बिना यात्रा की यात्रा – १९८०

४ किरायेदार का साक्षात्कार – १९८५

५ व्यग्य ही व्यग्य (सपा) – १९८७

६ क्रिकेट कीर्तन (सपा) – १९८८

७ मेरी प्रिय व्यग्य रचनाए – १९८८

८ इक्कीसवी सदी मे व्यग्यकार (सपा) – १९८९

व्यंग्य समीक्षक के रूप मे

१ हिन्दी का स्वातन्त्रयोत्तर हास्य और व्यग्य – १९७८

२ वचन देव कुमार की व्यग्य रचनाए – १९८०

३ राग दरबारी व्यग्य सन्दर्भ की परख – १९८३

४ हिन्दी व्यग्य के प्रतिमान – १९८८

डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी व्यग्य के लघु रुप 'लघु व्यग्य' को विधा के रुप मे प्रतिस्थापित करने के लिए आन्दोलन छेड़ा हुआ है। इसी के तहत उन्होंने 'व्यग्य ही व्यग्य' नाम के लघु व्यग्य का सपादन किया। 'लघु व्यग्य' को प्रतिस्थापित करने के उद्देश्य से इन्होने 'हिन्दी व्यग्य के प्रतिमान' में एक स्वतन्त्र अध्याय को जगह दी है।

डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी का रचना ससार बहुआयामी और बहुरगी है। इनकी रचना यात्रा 'झडते बालों की दास्तान' से शुरु होकर 'किरायेदार से साक्षात्कार', 'पुलिस प्रकरण की पावनता' से होते हुए 'जेल डायरी' तक पहुँचती है। इनके व्यंग्य विषय सामाजिक, राजनीतिक, सास्कृतिक, साहित्यिक रहे हैं। डॉ तिवारी स्वय यूनिवर्सिटी में कार्यरत हैं इसलिए साहित्यिक एव शैक्षिक

के साथ सास्कृतिक विषय इनके प्रिय रहे है। 'रिसर्च गाथा' की भूमिका मे वे लिखते है "जिस इलाके मे मै रहता हूँ उसकी कुल पॉच समस्याए है। कापिया देखकर उसके बिल को चेक के रूप मे प्राप्त करना, तरक्की पाना, पाठ्यक्रम मे पुस्तकें लगवाना, समितियो के सदस्य बनना और सहकर्मियो के कार्यकलापों की शास्त्रीय समीक्षा करना।"[१]

हिन्दी पी एच डी के गिरते स्तर पर उन्होने लिखा है "हिन्दी साहित्य को विषय मानकर एम ए करने वाले हर प्राणी का यह परम पावन धर्म है कि एम ए कर लेने के बाद वह पी एच डी करे। हालत यह कि छात्र एम ए करते ही घास खोदना शुरू कर देते है।"[२]

बालेन्दु शेखर तिवारी के व्यग्य मे आक्रोश का तेवर दिखलायी नही पडता है जबकि व्यग्यकार के लिए यह अनिवार्य सा माना जाता है। वे व्यग्यकार एव व्यग्य समीक्षक भी है फिर भी उनके अन्दर वह आक्रोश नहीं है। सीधी भाषा, सरल भाव को उचित स्थन पर बैठाकर तिवारी जी तेजी धार वाली व्यग्य छुरी चलाने मे सक्षम है। जैसे –

"अनुभवी जन सेवक ठेकेदार तो इतनी खूबसूरती से सडक बनाते हैं कि आगे सडक बनती जाती है और पीछे-पीछे मरम्मत का कार्यक्रम भी शुरु हो जाता है"[३]

भारतीय परिवेश के भीड और बस के रिश्ते को रेखाकित करते हुए तिवारी जी लिखते हैं कि "रुस और अमरीका ने भी अभी तक बसों के मामले मे ऐसा विकास नही किया है कि इन्सान बस के अन्दर ही नही, वो बस के ऊपर भी सफर करे।"[४]

पुलिस के ऊपर सजीला लेकिन सटीक व्यग्य किया है। जो पुलिस समाजवाद को अपनाकर अपना आर्थिक स्तर ऊपर उठा रही है भौतिक संशाधनों को आवश्यक रुप से जुटा

---

१ डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – रिसर्च गाथा, पृष्ठ ५

२ डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाएं, पृष्ठ ३८

३. डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – किराएदार से साक्षात्कार, पृष्ठ ७८

४ डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाए, पृष्ठ ८५

रही है लेकिन समाज के कुछ पदों के बराबर नही समझी जाती है इसलिए उसकी छटपटाहट अभी भी विद्यमान है इसको चुटीले ढग से तिवारी जी कहते हैं –

"भारत वर्ष को नेताओ, दलालो, इजीनियरो और ठेकेदारों का स्वर्ग कहा जाता है जबकि पुलिस का विनम्र निवेदन यह है कि इस लिस्ट मे पुलिस कर्मियो का भी उल्लेखनीय होना चाहिए।"[१]

तिवारी जी की व्यग्य प्रहारात्मक क्षमता का परिचय उनके 'लघु व्यग्यो' मे मिलता है। 'आत्मा की टोक', 'अगूर खट्टे नही हैं', 'मच के नीचे', 'मरम्मत', 'रिश्वत', 'प्रश्न प्रसग' आदि उनके प्रसिद्ध 'लघु व्यग्य' है। (अगूर खट्टे नही है) मे नेताओ की खिल्ली उडायी गयी है जिनकी छाया मात्र पडने से लोगो के विचार बदल जाते है। एक नमूना – "ऊँची दीवार पर फैली अगूर की बेलो मे लटके गुच्छो को देखकर लोमडी बहुत परेशान थी। उसने लोमडी सघ की बैठक में यह खबर करने का मन ही मन फैसला कर लिया था कि अगूर खट्टे है। भारी मन से वह वापस हो रही थी कि उस पर भूतपूर्व मत्री की छाया पड गयी। बस लोमडी का सारा सोच बदल गया। उसने लोमडी सघ में 'अत्यन्त गूढ वक्तव्य दिया – 'अभी अगूर मीठे है, कल भी मीठे थे और अब से शायद खट्टे हो जायेंगे।"[२]

'परिचर्चा' के माध्यम से भी तिवारी ने व्यग्यकार मेघा का परिचय दिया है। इसी प्रकार की एक 'परिचर्चा' जिसका विषय था 'यदि राम राज्य में व्यग्यकार होते' में तिवारी जी कहते हैं "राम राज्य में सब कुछ था। नहीं था तो केवल व्यंग्यकार। रामराज्य इसी कारण राम राज्य बना रहा। यह भी मालूम है भला कि राम राज्य मे पुलिस क्या करती थी ? क्योंकि चोरी नही होती थी, डाके नहीं पड़ते थे, बलात्कार नहीं होते थे, तस्करी नहीं थी तो क्या पुलिस बेचारी मक्खियां मारती रही होंगी। और एक बात की ऊपर आमदनी के भयानक सूखे में पुलिस

१ डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – किराएदार से साक्षात्कार, पृष्ठ ५८
२ डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – किराएदार से साक्षात्कार, पृष्ठ ५८

का काम कैसे चलता था।"[1]

डॉ तिवारी का व्यग्य इस अर्थ मे अधिक महत्वपूर्ण है कि यह सीधे फटकार न लगाकर, बौद्धिक फटकार लगाता है।

शिल्प एव भाषा

व्यग्य के लिए वाग्वैदग्ध्य एक अनिवार्य गुण है। डॉ तिवारी की रचनाओ मे वाग्वैदग्ध्य की प्रचुरता है इन्होने सीधी-सपाट शैली मे व्यग्य का गहरा घाव करने वाला वाक्य गढा है। जैसे—

"अपना यह बॉस है न, सहसा प्रवेश करने की कला मे पद्मविभूषण है"[2]

"वे जिस उत्साह से इन्दिरा जी की जय बोलते है, उसी शक्ति के साथ जय प्रकाश नारायण की भी जय बोलते है।"[3]

डॉ तिवारी ने कथोपकथन के द्वारा सुन्दर व्यग्य का सृजन किया है, जो व्यग्य विषय को, सीधे मन मस्तिष्क को सोचने के लिए विवश करता है इनका व्यग्य हास्य नहीं दर्द, चुभन उत्पन्न करता है।

"आपके पति क्या काम करते हैं ?"

"जी वे काम करने के लिए बचे ही कहाँ है ?"

"मतलब।"

"उनके मरे दस साल हो गये"

"दस साल ! क्या कह रही हैं आप ? आपकी गोद में डेढ साल की लडकी है मेरा मतलब है ?

---

१ डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – किराएदार से साक्षात्कार, पृष्ठ ६१–६२

२. डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी – किरायदार से साक्षात्कार, पृष्ठ ६४

३ डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – किरायदार से साक्षात्कार, पृष्ठ २७

"अजी बाबू जी वे नही है तो क्या हुआ ? मै जिन्दा हूँ।"[१]

डॉ तिवारी ने सर्वथा नवीन उपमानो की इतनी सुन्दर सृष्टि की है कि यह देर तक मन-मस्तिष्क को झकझोरता है –

"मेरे सिर के बालो ने अपनी मातृभूमि के खिलाफ विद्रोह कर दिया"[२]

"बालों के झुड मे भगदड मच गयी।"

डॉ तिवारी व्यग्य तक चुटकुले से होकर पहुँचते है यही उनके व्यग्य की पहचान भी है और कमी भी। 'बाल वर्ष बीत जाने पर' मे वे ७ चुटकलो का प्रयोग किया है।

डॉ तिवारी ने एक 'अदद', 'मुसम्मात', 'सीन पर', 'कन्या राशि', 'फ्रूट सलाद' जैसे शब्दों का प्रयोग अधिक किया है।

व्यंग्य सम्बन्धी विचार

'रिसर्थ गाथा' के अतिरिक्त तिवारी जी ने अन्य किसी कृति की भूमिका नही लिखी है। लेकिन अपने समीक्षात्मक लेखो, एव रचनाओं में इन्होंने व्यग्य के ऊपर प्रकाश डाला है–

"व्यग्य किसी अध्यात्मिक दृष्टि का परिणाम नहीं है अपितु सर्जक का अनुभव इस विधा में एक तार को छूकर सहस्त्रों तार झनझना डालने की विलक्षण क्षमता पर सगम कर डालता है व्यग्य लेखन बनावट और दिखवट भरे परिवेश मे सच को पकडने की जोखिम भरी कोशिश है।"[३]

इसी प्रकार अपने शोध-प्रबन्ध में भी इन्होने व्यग्य की परिभाषा की है।

डॉ तिवारी की मान्यता है कि व्यग्य का उद्देश्य मनोरजनात्मक नहीं है निर्माणात्मक होता है।

---

१ डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – किराएदार से साक्षात्कार, पृष्ठ ५५

२ डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी – किराएदार से साक्षात्कार, पृष्ठ ५५

३ डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – किराएदार से साक्षात्कार, फ्लैप से

डॉ तिवारी के व्यग्य और उनके व्यग्य साहित्य में योगदान को रेखाकित करते हुए डॉ शकर पुणताम्बेकर लिखते है कि "बालेन्दु शेखर तिवारी व्यग्य साहित्य के जाने माने व्यग्य समीक्षक है।

समीक्षक एक प्रकार से रेफरी होता है खेल मे अनुभवी खिलाडी या रिटायर्ड खिलाडी अच्छे रेफरी सिद्ध होते है। साहित्य मे ऐसी बात नही है। तिवारी जी लगता है रेफरीशिप के चक्कर मे शैक या व्यवसाय के कारण पड गये, परास्त खिलाडी के कारण नही। अब वे मैदान मे उतरे है तो उनका खेल लोग बडी चौकस दृष्टि से देखेंगे।[१]

डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी के व्यग्य साहित्य के विषय मे कहा जा सकता है कि "साधारण बोल-चाल की भाषा मे गहरी चोट करने वाले, गिने-चुने व्यग्यकारो में डॉ तिवारी सबसे आगे खडे है।"[२]

डॉ. शंकर पुणताम्बेकर

दूसरी पीढी के प्रमुख व्यगकारो में एक डॉ शकर पुणताम्बेकर केवल कथ्य के आधार नवीनता का सृजन नहीं करते, बल्कि नये शिल्प का निर्माण और विकास भी करते है। जीवन की विसगतियों को व्यजित करता इनका व्यग्य 'जीवन की व्याख्या' करता है। डॉ बालुन्दु शेखर तिवारी आपके व्यंग्य की प्रमाणिकता पर प्रकाश डालते हुए लिखते है "डॉ पुणताम्बेकर के व्यग्य कर्म में दश की तीखी अनुभूति केवल चमत्कार की आतिशबाजी नही है।"[३]

डॉ पुणताम्बेकर की प्रमुख व्यग्य रचनाए इस प्रकार है –

१ रेडीमेड कपडे – १९७३

२ कैक्टस के काँटे – १९७९

---

१ डॉ पुणताम्बेकर – अंगूर खट्टे नहीं हैं, अभिमत

२ डॉ पुणताम्बेकर – अंगूर खट्टे नहीं हैं, अभिमत

३. डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – हिन्दी व्यंग्य के प्रतिमान

३ प्रेम-विवाह – १९८१

४ विजिट यमराज की – १९८१

५ अगूर खट्टे नही है – १९८५

६ बदनामाचा – १९८८

दो एकाकी सग्रह भी है –

१ बचाओ मुझे डाक्टरो से बचाओ – १९७२

२ बचाओ मुझे कवियों से बचाओ – १९८०

इस प्रसग मे उस व्यवस्था के ऊपर चोट किया है जहाँ कौरवों का साम्राज्य है। अर्थात अराजकता का राज्य है और उन सामाजिक कार्यों को करने वाला व्यक्ति प्रतिष्ठा पाता है।

डॉ पुणताम्बेकर ने व्यग्य की सफलता का कितना सरल एव सीधा उपाय बताया है "मै बहरा हूँ, और तुम गूँगे, इसलिए आओ हम आपस मे मिले और प्रजातन्त्र को सफल बनाए।"[1]

कम्प्यूटर और ब्यूरोक्रेसी की तुलना करते हुए उन्हे यन्त्र बना दिया है– "जिस तरह की आबोहवा में तुम्हें (कम्प्यूटर) रखा जाता है तुम्हारी तुनक मिजाजी को देखकर बिल्कुल इसी तरह की आबोहवा में ब्यूरोक्रेट को रखा जाता है। फर्क बस यही है कि तुम्हारी तटस्थता मशीनी है, इनकी तटस्थता पथरीली है। इसलिए हे कम्प्यूटर हमें तुम अधिक अपने लगते हो बनिस्पत इन पत्थरों के।"

आदमी की आवश्यकताए एव विवशताए उसकी सचेतना को ही नहीं बल्कि पूरी मानसिकता को भी प्रभावित करती है। डॉ पुणतोम्बेकर इसको लक्ष्य करके लिखते हैं कि "वह खिड़की में आयी। इन दोनों ने उसे देखा। एक पेट भरा था सो इसे उसके चेहरे के सौन्दर्य

---

१ डॉ पुणताम्बेकर – अंगूर खट्टे नहीं है, पृष्ठ १८१

२ डॉ. पुणताम्बेकर – अंगूर खट्टे नहीं है, पृष्ठ १७८

ने लुभा दिया। दूसरे का पेट खाली था सो इसके इसके उसके गले के हार ने। दोनों ने उसकी ओर कदम बढाया। इनमे पहला प्रेमी कहलाया दूसरा चोर। इस उद्धरण द्वारा इस बात की शकर पुणतोम्बेकर ने खुलासा किया है कि आदमी के गुण-अवगुण परिस्थितियो के कारण भी निर्मित होते है।

भाषा शिल्प

डॉ पुणतोम्बेकर की रचना बहुआयामी और बहुविध है। उन्होने निबन्ध, एकाकी, उपन्यास, कहानी कथा, लघुकथा, व्यग्य, लघुव्यग्य, परिचर्चा, प्रश्न पत्र आदि लिखे।

शुरु की इनकी व्यग्य रचनाए सामान्य स्तर की थी लेकिन जैसे-जैसे इनके अन्दर बौद्धिकता का समावेश होता गया इनकी रचनाए हास्य से कटती गयी और व्यग्य की तरफ मुडती गयी। इनका व्यग्य मूलत व्यक्ति और उससे सन्दर्भित विसगतिया पर केन्द्रित रहा है। साहित्य समाज, राजनीतिक, प्रेम, पूँजी, न्याय, धर्म, प्रचार, कला, सस्कृति आदि सभी पर व्यग्य करते है। अपने व्यग्य विषय के विषय मे कहते हैं कि "व्यग्य आस पास के कूडे-कचरे को कच्चे माल के रुप में इस्तेमाल करता है। कचरा जितना यथार्थ होगा, उतना वह व्यग्य के लिए आदर्श है।"

चिकित्सा के क्षेत्र में फैली कुव्यवस्था को 'विजिट यमराज की' मे व्यक्त किया गया है। जहाँ यमराज के आने पर लेखक को विश्वास नहीं होता वह कहता है। आप अकेले डॉ है जो खुद को यमराज स्वीकार कर रहे है।

स्त्री पुरुष के सम्बन्ध प्रेम के कारण नहीं आज दहेज के कारण बनते-बिगडते है। इसे लक्ष्य करके पुणतोम्बेकर जी ने लिखा है कि –

स्त्री – देखो, तुम कहाँ की मैं कहाँ की ?

---

१ प्रकर – १९८४ मार्च – २५

२ डॉ. पुणताम्बेकर – विजिट यमराज की, पृष्ठ ८

पुरुष – हाँ, न तुम मुझे जानती थी न, तुम्हे मै

स्त्री – पर दोनो को देखो जिन्दगी भर के लिए दहेज सूत्र ने कैसा बाँध दिया है।

डॉ पुणतोम्बेकर ने पुराने धार्मिक प्रसगों मे नये अर्थ को व्यक्त करने वाले प्रभावी व्यग्य की सृष्टि की है "उस लडके से उस दिन गोपी की दही की हाडी फूट गयी तो वह गुस्सा नही हुई उसके पास जा करके बोली, बस अब तू नौकरी लायक हो गया है, जा, कौरवो के दरबार मे तुझे जरुर कोई ऊँची जगह मिल जायेगी।"[१]

प्रशस्तिपत्र, पुस्तक-समीक्षा, भाषण-सम्बोधन, सलाप आदि विभिन्न विधाओ के माध्यम से व्यग्य की छटा विखेर दी। गद्य की प्राय. सभी विधाओं मे इन्होने अपनी लेखनी चलायी है।

इनका भाषण (भाषण जोकर सम्मेलन का), संलाप (पहली रात के सलाप, कौरव प्रगति), साक्षात्कार (कविवर बिहारी का इन्टरव्यू, इण्टरव्यू मेरा मेरे ही द्वारा), प्रश्न पत्र (एक परचा व्यग्य बोध का), गणितीय शैली (नया अक गणित), पुस्तक समीक्षा (एक व्यग्य यात्रा की समीक्षा, रग में प्रकाशित, दी लब बुक . एक रिव्यू), उपन्यास (एक मन्त्री स्वर्ग लोक में), नुक्कड नाटक (प्रेत का बयान), लघु कथा (सत्य की बात, अवैध सन्तान, टैक्सट बुक और गाइड, मरियल और मासल, विरोध आदि) परिचर्चा (व्यग्यकार होम फट पर, प्रेमिका जब पत्नी बन जाए, आप हास्य-व्यग्य क्यो लिखते हैं, आज के सन्दर्भ मे इसके महत्व तथा पसन्द के क्या कारण है) लघु-व्यग्य (समाचार सुनकर, तीन बैल), व्यग्य छटा (वदनामचा), 'टुकड़े-मुखडे शब्द कोश' (विजिट यमराज की, अगूर खट्टे नही है)

उनके शब्दकोश और टुकड़े व्यग्य को नयी देन है।

"जिनका भूगोल होता है, उनका इतिहास नही होता।"[२]

"उनका व्यक्तित्व फाइव स्टार होटल की तरह कैसा भव्य और ऊँचा है उसमें किराया

---

१ डॉ शंकर – कैक्टस के लॉट – पृष्ठ १०४

२ डॉ पुणताम्बेकर – विजिट यमराज की, पृष्ठ १७४

देकर कोई भी ठहर सकता है स्मगलर भी, वेश्या भी।"[1]

"जब वे सभी इलाजों से हार गये तो जाकर देश भक्ति मे एडमिट हो गये।"[2]

व्यग्य अमरकोश के एकाध उदाहरण देखिए –

छात्र सघ – शिक्षा जगत का हाई कमान।

जाच कमीशन – फर्माइशी न्यायालय।

इस अमरकोश का शिल्प नया है जो व्यग्य मे पहले नही प्रयुक्त होता था। यह एक प्रभावशाली शिल्प वैशिष्ट्य है जो पुणतोम्बेकर को विशिष्ठ व्यग्यकार बनाता है।

अन्य विद्वानो की भाँति ही इन्होने भी नये उपमानों का सृजन किया। इनके उपमान व्यग्यार्थ स्पष्ट करने मे महती भूमिका निभाते है जैसे –

"किताब चीटी होती है पर भूमिका में हाथी दर्शायी जाती है।"

"भाषण एक ऐसी रेलगाडी है जो पटरी को छोड़कर चलती है।"

मुहावरे – गैया केवल बछडा कूदे

समरथ को नही प्रेस गोसाई,

उनका व्यग्य के सन्दर्भ में मानना है कि "व्यग्य युग की विसगतियों की वैदग्ध्यपूर्ण तीखी अभिव्यक्ति है। युग विसंगतिया हमारे चारो ओर के यथार्थ जगत के वैदग्ध्य इन विसगतियो को वहन करने वाले शैली सौष्ठव से तथा तीखापन विसगति एव वैदग्ध्य के चेतन पर पडने वाले मिले–जुले प्रभाव से सम्बन्धित है।

पुणताम्बेकर विसगति, विदग्धता, तीखापन को व्यग्य का तत्व स्वीकार करते है। वे व्यग्य

---

१ सं पाटील – एक व्यग्य यात्रा, पृष्ठ ११४

२ सं पाटील – एक व्यग्य यात्रा, पृष्ठ ११४

को नकारात्मक दर्शन मानते है। व्यग्य विडम्बना और विरूपता को नकारता है। रावणत्व को नकारते हुए रामत्व मे आस्था रखता है। इसलिए व्यग्य नकारात्मक होते हुए भी अनास्थावादी लेखन नही है। अनास्थावादी की चोट ध्वसात्मक होती है जब कि व्यग्य की चोट विधायक विचार प्रवर्तक होती है।

सक्षेप में डॉ शकर पुणताम्बेकर दूसरी पीढी के नये शिल्पकार है जिन्होंने नये साँचे में ढालने का कार्य किया। इनके टुकडे और शब्द-अमर कोश व्यग्य के नये रास्ते ढूढने को दीपक लेकर आगे-आगे चल रहा है।

प्रेम जनमेजय

युवा व्यग्यकार एव व्यग्य समीक्षक प्रेम जनमेजय का रचना ससार आस पास के परिवेश गत विसगतियो के आक्रोश के कारण निर्मित हुआ है।

'राजाधानी मे गँवार' रचना में उन्होने एक ऐसे व्यक्ति का चित्र खीचा है जो दिल्ली आते ही कुली, टी सी आदि के चक्कर में पडकर जेल चला जाता है अर्थात सामान्य आदमी की 'व्यवस्था' में दुर्गति हो जाती है। इसी प्रकार 'मन्त्री की कृपा' मे उन्होंने दिखलाया है किस प्रकार मन्त्री की कृपा पर हर छोटे-बडे कार्य सम्पादित हो जाते हैं।

नेताओं की दिन प्रतिदिन की बढती सख्या और उनकी अनिवार्य योग्यता को प्रेम जनमेजय कुछ इस प्रकार से परिभाषित करते हैं। "जहाँ महत्ता होता है वहाँ कोई न कोई नेता होता है।"[१] जब यह सिद्ध हो गया है कि में नालायक हूँ और रहूँगा तो पिताश्री ने और कोई चारा न देखकर मुझे राजनीति में डाल दिया।"[२]

प्रेम जनमेजय ने 'पुलिस' को केन्द्र में रखकर अधिक रचनाए की है। 'पुलिस लीला' में

---

१ प्रेम जनमेजय – राजधानी में गँवार, पृष्ठ ९८

२ प्रेम जनमेजय – देश मैं जयते, पृष्ठ ३९

उन्होने समाज के उस आतक को दिखलाया है जो पुलिस के कारण उत्पन्न होता है लोग रेल यात्रा के समय पुलिस के पास नही बैठना चाहते है।

'प्रमाण पत्र' रचना मे सरकारी कार्यालयों के भ्रष्टाचार को उधेडा गया है तो 'परीक्षा पेपर थोक मे जाँचना' मे ठेके पर कापी दिखलाने की दृष्प्रवृत्ति को रेखाकित किया गया है।

'आह। आया महीना मार्च का' परसाई शैली मे लिखा व्यग्य है। जिसमे छात्र को अध्यापक का कई चित्र दिखलायी पडता है। कही छात्र रावण के रूप में देखते हे कही कृष्ण के रूप मे, कही नायिका रूप मे। तात्पर्य यह कि अपनी आवश्यकताओं और उनकी प्रतिक्रिया के कारण एक अध्यापक का कई रुप दिखलायी पडता है।

प्रेम जनमेजय ने अपने आस-पास के हर उस विषय को लेकर व्यग्य किया है जिसको लेकर उनका मन आक्रोशित होता था।

शिल्प एवं भाषा

प्रेम जनमेजय शकर पुणताम्बेकर की भाँति नवीन शिल्प का खूब प्रयोग करते हैं जैसे – समस्याए समाधान (हरिश नवल के साथ), सिर मुडाते ओले (सपादक स्तुति), मत्री जी का कुत्ता, राजधानी में गँवार, मत्री क्षेत्र, कुरुक्षेत्र, सीता अपहरण केस (जासूसी) आदि।

मुहाविरे- अगूठा चूसना (प्रकाशका) गगा नहा आना का प्रयोग किया है।

उपमा का सुन्दर प्रयोग इनकी रचनाओ में मिलता है – डालडेसी अलभ्यपिये, देशी घी, की मधुर स्मृतिया "तेल मँहगाई की तरह भारत की पुण्य धरती पर फैल गया।"

डॉ शंकर पुणताम्बेकर कहीं कहीं का व्यग्य पक्तियों द्वारा भी व्यग्य वाण छोड़ते हैं –

क्षमा बडन को चाहिए, छोटन को उत्पात

क्या विष्णु को घट गयो, जो भृगु मारी लात ।

व्यंग्य सम्बन्धी विचार

'राजधानी मे गॅवार' की भूमिका मे डॉ प्रेमजनमेजय लिखते है कि "इन्होने व्यग्य की समसामयिकता, प्रहारक शक्ति, तीव्र सम्प्रेषणीयता और जनवादी दृष्टिकोण के कारण उसे प्रगतिशील माना है व्यग्य विधा मे जनसम्पर्क की जितनी शक्ति है उतनी अन्य किसी विधा मे नही है। व्यग्य आम आदमी से जुड़ा हुआ है जनतन्त्र मे सरकार से प्रत्यक्ष लडने का एक मात्र साहित्य के आधार व्यग्य ही है वह आक्रोश को प्रहारात्मक अभिव्यक्ति देता है।"[१]

इस कथन द्वारा प्रेम जनमेजय की व्यग्य सम्बन्धी धारणा का पता चलता है कि उनका व्यग्य आम आदमी की पीडा से निकला है।

प्रेम जनमेजय का व्यग्य पढ़ने के बाद यह आभास होता है कि मै अपने को कही अधिक बेहतर समझने लगा हूँ। इनके व्यग्य की यह सबसे बडी विशेषता कही जा सकती है।

डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी

डॉ बरसाने लाल चतुर्वेदी पहले व्यग्यकार है जिन्होंने व्यग्य पर डॉ की डिग्री ली है। 'राष्ट्रपति' पुरस्कार प्राप्तकर्ता चतुर्वेदी जी ने व्यग्य को परिभाषित करने का कार्य किया है। इनका व्यग्य हास्य के रस में पगा होता है। ये हास्य-व्यग्य धारा के बुजुर्ग विद्वान है। इन्होने काव्य निबन्ध एव कैरिकेचर रुपों को व्यग्य के लिए अपनाया है –

इनकी कुछ प्रमुख कृतिया इस प्रकार है –

१ महामति चाणक्य राजदूत बने – १९६२

---

१ प्रेम जनमेजय – राजधानी में गँवार, पृष्ठ ५७

२ भोला पण्डित की बैठक – १९७५

३ बुरे फँसे – १९७६

४ नेता और अभिनेता – १९७७

५ मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाए – १९७७

६ टालू मिक्स्चर – १९७८

७ मिस्टर चोखेलाल – १९८०

८ चमचागिरी – १९८१

९ मुसीबत है – १९८२

१० नेताओ की नुमाइश – १९८३

११ हसी के इन्जेक्शन – १९८६

१२ साली वी आई पी की – १९८९

डॉ वरसाने लाल चतुर्वेदी का लेखन शुरुआती दौर मे हास्य युक्त था। लेकिन जैसे–जैसे अनुभव गहराता गया। हास्य किनारे होता गया और व्यग्य घुसता गया। डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी इनके व्यग्य लेखन के विषय में कहते है –

"वरसाने लाल चतुर्वेदी का व्यग्य लेखन हँसाता है और विसगतियों के प्रति सचेत भी करता है।"[१]

चतुर्वेदी जी ने अपने लेखन में राजनीति, शिक्षा और समाज पर खूब चुटकी ली है। शिक्षा जगत की कुप्रवृत्तियों पर डॉ वरसाने लाल ने सटीक व्यग्य किया है क्योंकि वे स्वय उन स्थितियों से दो चार हुए थें एक महोदय को पी एच डी मिलने पर वे लिखते हैं कि बिना गर्भधारण किए बालक कूँ जन्म देकर प्रोफेसर वर्मा ने भारत में दूसरा भूमिगत विस्फोट किया। इसमें किराये पर व्यंग्य लिखे जाने का जिक्र है जो कि एक तरह का आम प्रचलन हो गया है।

१ बालेन्दु शेखर तिवारी – हिन्दी व्यग्य के प्रतिमान, पृष्ठ ३२

इन्टरव्यू को इन्टरव्यू के रुप मे न देखकर उसे वास्तविक रुप में चतुर्वेदी जी देखते है तभी उनकी लेखनी लिखती है "इन्टरव्यू वह थर्मामीटर है जिससे इच्छानुसार टेम्प्रेचर लिया जाता है।"

सामाजिक बुराइयो पर व्यग्य करते समय उनकी दृष्टि जीवन की आवश्यकताओ की ओर जाती है। तो चतुर्वेदी जी देखते है कि जीवन मे आवश्यक वस्तुओ का अभाव है, कारण व्यापारियो ने माल गोदामो मे छिपा रखा है।

"जिसकी रग-रग मे मुनाफाखोरी और जमाखोरी भरी हुई है कभी मान सकते है ? बाहर से तेल मॅगाया इसे भी या लोग पी गये, मानो दाले वातानुकूलित स्टोर में ठडक ले रही है और उनके अन्दर ही अन्दर बढ रहे है।"[१]

इसी प्रकार बडे-बडे लोगो द्वारा अपना अभिनन्दन कराने के लिए 'अभिनन्दन समिति' का भी गठन कर लिया जाता है। इसे व्यापारिक प्रतिष्ठान माना जाता है जिसका प्रचार किया जाता है खुल गई, खुल गयी शैली मे -

बरसाने लाल चतुव्रेदी जी भ्रष्टाचार को एक परिवार मानते है इसीलिए उन्होने लिखा है कि -

"भ्रष्टाचार की पत्नी का नाम रिश्वत देवी है। चिरजीवी श्री पक्षपात प्रसाद है, लडकी का नाम कु लाल फीता शाही है, साले का नाम तस्करमल है, साली मिस मिलावट देवी है।, मौसा काला बाजार सिह है"[२] इस प्रकार इन सबके बीच एक परिवारिक सम्बन्ध हैं सभी एक दूसरे की सहायता करत हैं -

भ्रष्टाचार को लेकर उन्होंने अन्य कई जगह कटाक्ष किया है एक स्थन पर वे लिखते

---

१ बरसाने लाल चतुर्वेदी - दालू पिक्चर, पृष्ठ २२

२ बरसाने लाल चतुर्वेदी - मूँछ पुराण, पृष्ठ २८-३३

है कि "नौकरी योग्यता से नही सिफारिश से मिलती है जैसी सिफारिश करो तुलसी, वैसी मिलेगी नौकरी। यानि सोर्स की योग्यता पर, नौकरी का पद निर्भर होता है।

राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए सरकारी कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जाता है लेकिन हालात उससे भी अधिक खराब हो जाता है इसे लेकर वे लिखते है कि

"सरकारी कर्मचारी कूँ हिन्दी पढाइबे की योजना की कहानी सुनि के कहावत याद आवै है कि नौ दिन चलै अढाई कोस। पूँछ टेढी की टेढी।"[१]

राजनीतिज्ञों को सफलता का मत्र बताते हुए चतुर्वेदी जी कहते है कि "एक कुशल राजनीतिज्ञ को साहसी, चालबाज, बदला लेने की तीक्ष्ण भावना रखने वाला होना चाहिए। शत्रु को न्याय अन्यथा दोनो ही तरह से तबाह कर डालना है।[२] यह राजनीतिज्ञो के लिए आवश्यक गुण भी है।" इसी प्रकार राजनीतिज्ञो और मन्त्रियो की सर्वज्ञता के ऊपर चतुर्वेदी जी अपनी लेखनी को घसीटा है। नेता किसी भी विषय पर बोल लेते है चाहे वह अन्तर्राष्ट्रीय विषय हो अथवा स्थनीय हो, धर्म से सम्बन्धित हो अथवा भ्रष्टाचार से इसी को लक्ष्य करके चतुर्वेदी जी लिखते है– "चाहे गीता जयती हो अथवा आधुनिक बोध पर विचार गोष्ठी प्रात स्मरणीय अभिनन्दनीय मत्री किसी न किसी रुप में अपने दो शब्द अवश्य कहेंगे। मत्री जी को सर्वज्ञ माना जाता है आकाश में ईश्वर तथा पृथ्वी पर मत्री।"[३]

समग्र रुप से कहा जा सकता है कि चतुर्वेदी जी का व्यग्य धीरे-धीरे गुदगुदाता है लेकिन एकाएक जो की चिकोटी काटता है, इनका व्यग्य हँसाता भी है, चिढाता भी है।

---

१ बरसाने लाल चतुर्वेदी – भोला राम की बैठक, पृष्ठ ४६

२ बरसाने लाल चतुर्वेदी – मिस्टर चोखे लाल, पृष्ठ ६९

३ डॉ प्रकाश चतुर्वेदी – डॉ बरसने लाल चतुर्वेदी-अभिनन्दन, पृष्ठ १५२

शिल्प वैशिष्ठ्य

इन्होने मानवीकरण एव उपमाओ द्वारा भाव को उपस्थित करके व्यग्य किया है। यहाँ इनका हास्य मिश्रित भी अधिक परिलक्षित होता है जैसे – "बस रुपी प्रेयसी को अब लोग टकटकी लगाकर देख रहे है और गुनगुना रहे हैं 'आजा ओ आने वाली आ जा' और तब वह पधारती है।"[1]

कविता और दोहो के माध्यम से भी इन्होने व्यघ्य की सृष्टि की है –

रहिमन चुप हवै बैठिये परिमिट में लखि देर
जब नीके दिन आइहै, बनत न लागि बेर।[2]

"विज्ञापन देखकर भेज आया अर्जी
सूट सिलाने गया, हँसने लगा दर्जी" [3]
है कोई पुल, वरना रोशनी गुल

इसी प्रकार की अनेक कविता, गीत, दोहे के माध्यम से चतुर्वेदी जी ने सार्थक व्यग्य को हँसाते हुए कह डाला है।

व्यग्य के सन्दर्भ में इनकी मान्यता है कि "हास्य की मात्रा इतनी अधिक न हो जाये कि व्यग्य का प्रभाव ही नष्ट हो जाये। व्यग्य मे जितनी अधिक मात्रा मे वक्र उक्तिया होगी जितनी उसमें वचन-विदग्धता होगी जितनी अधिक प्रेषणीयता होगी उतना ही प्रभावी होगा।[4]

सृजन में अद्वितीय चतुर्वेदी, अपने समकालीन व्यग्यकारो में इस कारण अलग दिखलायी

---

१ चतुर्वेदी – टालू पिक्चर, पृष्ठ ४९
२ चतुर्वेदी – मूँछ पुराण, पृष्ठ ८९
३ चतुर्वेदी – मूँछ पुराण, पृष्ठ ३४-३५
४ चतुर्वेदी – मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, भूमिका

पडते है कि इनके हाथ मे तलवार ही नही, फूलों का उपहार भी रहता है। जिससे मन प्रसन्न होता है।

सुदर्शन मजीठिया

सुदर्शन मजीठिया ने व्यग्य को मुर्गे की बॉग कहा है जो सुख की नीद मे सोये हुए व्यक्ति के मानस मे उद्धिग्नता भर देती है और सुख की नीद हराम हो जाती है। इस उद्धिग्नता में मजीठिया खिल्ली भर देते है जिससे हॅसी का स्रोत फूट पडता है। डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी इनके व्यग्य की दिशा को निर्धारित करते हुए लिखते है कि "उनका व्यग्य एकदम वैष्णव तथा सहज है। एक किस्म की वर्फ है यह व्यग्य की तराश, लेकिन इस वर्फ की शीतलता के पीछे सघन उष्णता छिपी रहती है।[१]

मजीठिया का व्यग्य सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक तथा साहित्यिक सभी क्षेत्रों से उठ कर आया है। इनका व्यग्य मनुष्य को हँसाते-हँसाते रुला देने वाला है। अपनी विशिष्ट शिल्प योजना के कारण इनके व्यग्य मे दो विपरीत भाव, अधिक तेजी से उभरता है। इनका व्यग्य आचरण ध्वसात्मक न होकर, निर्माणात्मक है।

इनकी प्रमुख रचनाए इस प्रकार है –

१ इडिकेट बनाम सिडीकेट – १९७१

२ मुख्यमत्री का डडा – १९७४

३ कुछ इधर की कुछ उधर की – १९७६

४ टेलीफोन की घण्टी से – १९८३

५ मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाए – १९८५

६ डिस्को कल्चर – १९८५

---

१ डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – हिन्दी व्यग्य के प्रतिमान, पृष्ठ ३४

७ इक्कीसवी सदी – १९८८

८ छीटे – १९८९

९ पब्लिक सेक्टर का साड – १९८९

धर्म के ठेकेदारो सन्त, महात्मा, साधु को लताडते हुए मजीठिया लिखते हैं कि "यदि ससार से राम-नाम को हटा दिया जाये तो सब 'राम की बहुरिया' बनने वाले एम्प्लायमेन्ट एक्सचेज' मे नाम लिखवा लेगे क्याकि भगवान के नाम से ही, कितने लोगो को नौकरी मिली हुई है।"[1]

राजनीति को मजीठिया ने सबसे अधिक अपने व्यग्य का विषय बनाया है। अपनी प्रमुख रचनाओ 'कागजी सुल्तान', 'इडीकेट बनाम सिडीकेट', 'मुख्यमत्री का डडा', 'त्रिमूर्ति', 'भारत की समाजवादी नीति', 'डॉ भाठ जी भाई के विचार' आदि में इन्होने भारतीय राजनीति की जमकर खबर ली है। राजनीतिज्ञों को बैल एव 'साड' का प्रतीक बनाकर इनके ऊपर चोट की है।

"बैल को काग्रेस ने अपना चुनाव चिन्ह रखा है क्योंकि उसमे बैल जैसे गुण है। काम करते हैं आराम के साथ। जैसे बैल खेत जोतता है उसके बाद उसकी बला से खेत में कुछ उगे या नहीं उसी तरह हमारी सरकार योजनाए बना देती है आगे वे पूरी हो या न हों।"[2]

वर्तमान नेताओं की प्रतिबद्धता को उनकी जेल की यात्रा पर तय किया जाता है चाहे वे जेल चोरी में ही गये हों। अधिकाश नेता छद्म देशभक्ति का चोला पहने घूम रहे है। मजीठिया इन सभी को अपने व्यग्यवाणों द्वारा आहत कर गिराने का कार्य किया है –

"उस समय तुम चोरी के अपराध में जेल गये थे। तुम्हारी भूख ने चोरी के लिए मजबूर कर दिया था और तुम अन्य भूखे मित्रों के साथ सरकारी गोदाम में चोरी करते पकडे गये

---

१ सुदर्शन मजीठिया – कुछ इधर की कुछ उधर की, पृष्ठ ४६-४७

२ सुदर्शन मजीठिया – इन्डीकेट बनाम सिडीकेट, पृष्ठ ९१

थे।

नेता की परिभाषा जो मजीठिया द्वारा दी गयी वह बहुत अधिक सही प्रतीत होती है जिस प्रकार भारतीय राजनीति में अपराधी तत्वो का प्रवेश हो रहा है तथा उसका वर्चस्व दिन-प्रतिदिन बढता जा रहा है उससे तो मजीठिया की परिभाषा अधिक अर्थवान हो गयी है –

"सफल गुण्डे लीडर होते है, असफल लीडर गुण्डे कहलाते है।"

मजीठिया भारतीय पराभव का कारण नेता को मानते है इसलिए वे कहते हैं "नेता ही सारी समस्याओं की जड है। जिसका निराकरण 'एक नेता की मौत' है। यदि भारत को भावात्मक और राष्ट्रीय एकता का विकास करना है, प्रगति करना है तो भारत के समस्त नेताओ का एक्सपोर्ट कर दिया जाये"[१]

राजतन्त्रातात्मक प्रणाली हो अथवा प्रजातन्त्र, राजा हो या शासक अथवा मुख्यमत्री सभी का शासन शक्ति के बल पर चलता है इसे मजीठिया ने 'मुख्यमत्री का डण्डा' मे चित्रित किया है। जहाँ डण्डा चोरी होने से मुख्यमत्री का भव्य व्यक्तित्व ही समाप्त हो जाता है।

'गरीबी हटाओ' नारे की तात्विक-विवेचना सा प्रस्तुत करते हुए वे लिखते है "सरकार गरीबी मिटाने की नहीं हटाने की बात करती है वह आपकी गरीबी हटाकर दूसरे को दे देगी गरीबी हटाने के लिए ही हर वस्तु की कीमत ऊपर जा रही है। कीमतों के ऊपर जाने से गरीब आटोमैटिक आत्महत्या कर लेंगे अतएव गरीबों के मरते ही गरीबी भी मिट जायेगी"[२] इस प्रकार सरकार गरीबी को आसानी से भारत से निकालने में सक्षम हो जायेगी।"

'कुँआ डूब गया' में भ्रष्टाचार की पोल खोली गयी है यहाँ कुआँ कागजों पर ही खुदता

---

१ सुदर्शन मजीठिया – मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाएं, नलघट पर ९०

२ सुदर्शन मजीठिया – मुख्यमंत्री का डण्डा, पृष्ठ ६५

है, डूबता है। 'राय बहादुर का चमत्कार' मे पुलिस व्यवस्था की कार्यवाही पर सवालिया निशान उठता है। 'सर्टिफिकेट फाडो आन्दोलन', 'गाइड विश्वविद्यालय' रचनाए शिक्षा जगत की विसगतियें पर प्रकाश डालती हैं तो 'सास-बहू प्राइवेट लिमटेड' सास-बहू के सम्बन्धो की पडताल करती है।

समाज की विसगतिया मजबूरी मे आदमी स्वीकार करता चला जाता है। आदमी का यही स्वीकार्य विसगतियो का प्रेरक सिद्ध होता और उसकी भर्त्सना उसके पतन का कारण मजीठिया विसगतियो की भर्त्सजना करते है।

डा बालेन्दु शेखर तिवारी उनके व्यग्य के विषय मे लिखते हैं कि "डॉ मजीठिया का व्यग्य शिक्षा और सस्कृति, समाज और राजनीति के क्षेत्र मे फैली अराजकता का उद्घाटन करता है।

मजीठिया का व्यग्य माँ का ह्रदय धारण किये है जो स्नेह भी करता है और गलती पर पीटता भी है।

शिल्प

इनकी रचनाओं में काव्य-पक्तिया, शेर-शायरी, वाक्य-प्रचार, मुहाविरा आदि का प्रयोग बहुतायत हुआ है।

सवाद और प्रश्न शैली में भी इनके व्यग्य हाल के वर्षों मे प्रकाश मे आये हैं।

व्यग्य-विचार

अपनी विभिन्न रचनाओं में यथा- 'इडीकेट बनाम सिडीकेट', 'मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाए', 'पब्लिक सेक्टर का सॉण्ड' आदि में व्यग्य कर्म को लेकर मन की बात कही है वे कहते हैं "हर हँसी के पीछे दुःख और पीड़ा के आँसू होते हैं।"[२] यदि शहर में जितने ज्यादा डाक्टर

---

१ बालेन्दु शेखर तिवारी – हिन्दी व्यग्य के प्रतिमान

२ सुदर्शन मजीठिया – पब्लिक सेक्टर के सांड, पृष्ठ ७८

हो मतलब उतने ही अनुपात में रोगियो की सख्या भी बढ रही है यदि व्यग्यकारों की सख्या बढ रही है तो समाज अपने गिरेबॉ मे झॉक कर क्यो नही देखता।"[1] समाज की बुराइयो को उभार कर, मनुष्य को प्रेरित कर व्यग्य एक स्थान पर दोनों ला खडा कर देता है जिससे मनुष्य दुश्मन को देखकर तिलमिला उठता है और उसको समाप्त करने का प्रयास करने लगता है।

'मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाए' की भूमिका मे व्यग्य के सन्दर्भ मे सुदर्शन मजीठिया कहते है– "व्यग्य के वर्फ की ठण्ड, उस गर्मी के समान है, जिसके अन्दर हास्य के माध्यम से त्रासदी, करुणा तथा दर्द छिपा है।"

के. पी. सक्सेना

लखनवी अन्दाज मे व्यग्य परोसने वाले, सौम्य व्यग्यकार के पी सक्सेना का व्यग्य हास्य तिक्त है। डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी ने के पी सक्सेना के व्यग्य विषय मे लिखा है कि – "उनका व्यग्य लेखन हास्य की फआरों से भीगता हुआ विकसित हुआ है और अपने आस-पास की विसगतियो पर हँसते हुए प्रहार करता है।"[2]

के पी सक्सेना की प्रमुख रचनाए इस प्रकार हैं –

१ नया गिरगिट – १९७५

२ कोई पत्थर से बात – १९७८

३. मूँछ-मूँछ की बात – १९८०

४ रहिमन की रेलयात्रा – १९८३

५ रमइया तोर दुल्हन लुटे बाजार – १९८३

६ लखनवी ढग से – १९८३

---

१ सुदर्शन मजीठिया – इन्डीकेट बनाम सिंडीकेट, अपनी बात

२. बालेन्दु शेखर तिवारी – हिन्दी व्यंग्य के प्रतिमान, पृष्ठ २९

७ बाजू बन्द खुल-खुल जाय – १९८५

८ तलाश फिर कोलम्बस की – १९८६

९ खुदा खुद परेशान है – १९८८

इनका 'तरकश' नाम से कालम भी निकलता है।

के पी सक्सेना का व्यग्य क्रिकेट, सिनेमा, तस्करी, विदेशी मानसिकता और बदले जीवन मूल्यो से उत्पन्न विसगतियों आदि के दर्शन कराता है।

के पी सक्सेना ने समाज के हर वर्ग को अपने ढग से उधाडा है। कही-कही परत दर परत उधाडा, तो कही एकाध परत।

देश की वर्तमान व्यवस्था मे नेताओं का आश्रयाश्रम है सरकारी व्यवस्था जहॉ सफेद हाथी पलते है जो देश की सेवा करते समय और अधिक मोटे होते जाते हैं –

भ्रष्टाचारी नेता पार्टी से मत्री, मत्री से राज्यपाल का पद ग्रहण करता जाता है। केवल स्थान परिवर्तन से वह सच्चरित्र हो जाता है। इस बात को के पी सक्सेना इस प्रकार कहते है–

नेता चीफ मिनिस्ट्री से इस्तीफा देकर, राज्यपाली पकड लेता है, कैबिनेट से हटने पर पार्टी पदों पर आ जाता है।"[१]

के पी सक्सेना उसे सच्चा नेता मानते है जो अपनी कुर्सी बचाये रहता है राज्य तो खाला जी का घर है।

सगीत सभाओं, सांस्कृलिक कार्यक्रमों आदि में अधिकारियों की पत्निया 'शो पीस' के रुप में अग्रिम पंक्ति में बैठी रहती है इसको लक्ष्य करके के पी सक्सेना लिखते हैं "मैंने कई भैंसों की संगीत सभाओं में, मुँह में चुईगम डाले पगुराते ही देखा है चाहे पूरबी बजे या भैरो, एकदम

---

१ धर्म युग – २० अप्रैल १९८६, ५२

निर्विकार स्वेटर बुन रही है, पुगरा रही है स्ट्रेटस की भारी सगीत सभाओ मे जाना उनकी सास्कृतिक मजबूरी है।"[१]

क्रिकेट की दीवानगी, खिलाडियो के प्रदर्शन, दर्शको का व्यवहार, मैच का ड्रा होना आदि विषय को लेकर लेखक ने खूब चुटीले व्यग्य किये है।

फिल्मी शौक और कॉमिक्स पढने की लत को लेकर के पी सक्सेना ने 'बम्बई से लौटे चूजें' काश मनोरजन कर लिया होता' 'कस्बा और फिल्म लेन' 'कामिक्स' आदि में व्यग्य धारा को उसी प्रकार से छोडा जैसे शिव ने गगा की धारा को अपनी जटा से छोडा था।

'पक्की और मजबूत पढाई के दिन' रचना मे के पी सक्सेना ने किताबो के बोझ को लेकर व्यग्य किया है। वे लिखते है कि "दो पतली-पतली किताबो पर कही बच्चा जीनियस बनता है ? राम भजिए। आज का बच्चा जीनियस है क्योंकि कमर पर पूरी नेशनल लाइब्रेरी का बोझ उठाये, सिर झुकाये सुकरात जैसा चुपचाप स्कूल चला जा रहा है। जो कधे बचपन में वस्ते का बोझ न उठा सकेगे वे देश का बोझ क्या खाक उठायेंगे।"[२]

शिल्प

के पी सक्सेना का व्यग्य लखनवी अदाज की अदा लिए होता है जो सौम्य व्यक्तित्व के साथ अपने को प्रकट करता है-

"वे इस कदर बाल की बाल थे कि चेहरा नहीं नजर आ रहा था"

"कनपटी के सफेद बालों ने अगर सहारा न दिया होता तो पहली ही नजर मे उसके इश्क ने मुझे डुबो ही दिया होता"[३]

---

१ धर्म युग – २९ जून १९८६

२ धर्म युग – १ सितम्बर १९८५, पृष्ठ ३०

३ के पी सक्सेना – मूँह की बात, पृष्ठ २१

उपमाओ की सुन्दर योजना के पी सक्सेना की रचनाओ मे मिलती है।

"जिस तरह पुराना जूता कुछ ज्यादा पॉलिश खाता है उसी तरह मुन्ना की अम्मा ने सिगार पिटार खूब चुपडा।"

"वह कुल मिलाकर कमर से जितेन्द्र, बाडी से प्रेमनाथ और शक्ल से पेटल नजर आता था।"

के पी सक्सेना का व्यग्य हास्य से भीगा अवश्य है लेकिन तेवर को छोडा नही है जब कभी के पी सक्सेना पत्रकारिता से निकलकर लेखन कार्य करते है तो व्यग्य के तेवर तेज हो जाते है।

रामनारायण उपाध्याय

समाज की सुन्न पड गयी शरीर को जगाने के लिए राम नारायण उपाध्याय ने व्यग्य लेखन किया है। इनका व्यगय गाँधी के असहयोग आन्दोलन की भाँति है जो बुराई का विरोध सयत ढग से करता है।

अपने सयत और लघु सवादों द्वारा रामनारायण उपाध्याय ने अच्छा व्यग्य किया है। व्यवस्था की सच्चाई को उभारता इनका यह लघु व्यग्य है –

"शेर ने बकरी से पूँछा – क्यों री बकरी, माँस खायेगी ?

बकरी ने कहा – मेरा ही बच जाये, तो बहुत है।

पुलिस और थाने के दलालों के बीच की साठ-गाँठ को रेखाकित करते हुए वे लिखते हैं – "एक व्यक्ति ने थानेदार साहब से कहा, हुजूर आज तो एक-दो चालान कर ही लीजिए। पूरा-पूरा एक महीना बीत गया अभी तक आप ने एक भी चालान नहीं किया है। ऐसे में दोनों

---

१ श्याम सुन्दर घोष – व्यंग्य क्या, व्यंग्य क्यो, पृष्ठ ६८

फसेगे और सरकार को हमारी मिली भगत पर शक भी हो सकता है।"[१]

जिस कुर्सी की हम रोटी खाते है उसकी कसम तो न खाया करो। नही तो कुर्सी हमे खा जायेगी"[२] उद्धरण मे ऐसे नेताओ के ऊपर व्यग्य किया गया है तो जनसेवा नही बल्कि इसे उपजीविका का साधन मान बैठे है।

इसी प्रकार पुलिस का जन्म सुरक्षा के लिए हुआ था लेकिन वर्तमान मे वह समाज मे भय उत्पन्न कर रही है इसे लेकर उन्होने 'सेवकनामा' शीर्षक से व्यग्य लिखा है।

इस प्रकार रामनारायण उपाध्याय का व्यग्य, चुटकी-काट कर रोने को बाध्य करता है।

अजात शत्रु

परसाई सी भाव-भगिमा लिए अजात शत्रु का व्यग्य उन्ही की तरह आक्रोश को व्यग्य करता है अभी तक उनकी एक मात्र रचना 'आधी वैतरणी' (१९८५) ही प्रकाशित हो सकी है। उनका अधिकाश व्यग्य पत्र-पत्रिकाओं मे ही विखरा पडा है।

डॉ शकर पुणताम्बेकर अजात शत्रु को 'परसाई जैसा धारदार व्यग्य देने वाला एक मात्र समर्थ व्यग्यकार' कहा है तो डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी उनके व्यग्य स्वरुप को समायित करते हुए कहते हैं "अजात शत्रु की भाषा वस्तु चयन और सम्प्रेषण सब कुछ उत्तेजनात्मक है इसी कारण इनका व्यंग्य गभीर बना है।"

समाज की सभी विरुपताए अजात शत्रु की व्यग्य विषय बनी है। पूँजीवाद, सरकार, कानून, पुलिस, नेता सभी को उन्होंने व्यग्य दरबार मे बुलाकर खूब डॉट पिलायी है।

---

१ रामनारायण उपाध्याय – मुस्कराती फाइले, पृष्ठ १५

२ प्रा. रा वा पाटील – एक व्यंग्य यात्रा, पृष्ठ ६८

३ डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी – हिन्दी के व्यग्य के प्रतिमान, पृष्ठ ३७

कानून का कार्य हे व्यवस्था को सही ढग से चलने मे सहायता करना, लेकिन ठीक इसके विपरीत कानून अव्यवस्था फैलाने को वाध्य करता है इसी बात को लक्ष्य करके उन्होने लिखा है –

"अगर मै हफ्ता न दूँ तो ?

फिर कानून किस लिए है ? यही पर तो हम कानून का सहारा लेते है।"[१]

सभी अपने–अपने स्थान पर यथासम्भव भ्रष्टाचार को बढावा देकर सन्तुष्ट है। क्योकि उन्हे आभास होता है कि उन्होने कुछ समाज के लिए सार्थक कार्य किया। समाज में रहकर केवल खाना और सोना। समाज के प्रतिष्ठित सस्थानो मे अपना सहयोग देना आज के समय मे निठल्लापन है। इस विषय को लेकर अजात शत्रु ने कई स्थनो पर भौहे तानी है।

एक फूड इस्पेक्टर की ईमानदारी का बयान करते हुए लिखते है

"इस सदी में अगर किसी को निखालिस दूध मिलता था तो उसे ही क्यो कि वह शहर के होटलो में दूध चेक करता था उसके बच्चे भी मोटे ताजे थे और उसकी बीबी गहनो से लदी रहती थी। वह स्वय घी का व्यापारी नहीं था पर उसके घर में घी के कनस्तर रखे रहते थे।"[२]

गरीब की परिभाषा को रेखाकित करते हुए अजात शत्रु लिखते हैं "गरीब वह नही है जो गरीब है, गरीब वह जिसके पास गरीबी का प्रमाण पत्र है। शासकीय शब्दकोश मे सच वही होता है जो राजपत्रित शासकीय अधिकारी अपने दस्तखत तथा मुद्रा के अन्तर्गत लिख दें। इसके लिए लोगों को पैसा देना होता है और जो वास्तव में गरीबी के कारण पैसा नही दे पाता। वह सरकारी दृष्टि से गरीब नही माना जाता।"[३]

---

१ आजत शत्रु – आधी वैतरणी, पृष्ठ ३३

२ आजत शत्रु – आधी वैतरणी, पृष्ठ ३३

३ काका हाथरसी एवं गिरिराज शरण – श्रेष्ठ हास्य व्यग्य कहानिया

अजात शत्रु का व्यग्य अन्यों से इस बात मे अलग है कि वे भ्रष्टाचार के विरोध मे खडे है, जहाँ कही भी उन्हे भ्रष्ट आचरण दिखलायी पडता है वे सघर्ष के लिए तनकर खडे हो जाते है, उसे ललकारते है जिससे उनकी भाषा आक्रोशयुक्त हो जाती है। अन्य व्यग्यकार भ्रष्ट आचरण को देख केवल बुद-बुदाकर आगे निकल जाते है।

लक्ष्मीकान्त वैष्णव

लक्ष्मीकान्त वैष्णव समाज की विदूपताओ की देख शिव का रौद्र रुप धारण कर लेते है। वे अपनी बात कहने के लिए किसी माध्यम यथा – फैटेसी, प्रतीक, बदहवासी आदि की पूँछ नही पकडते है, बल्कि सीधे शब्दो मे, सीधे अन्दाज मे व्यग्य कसने लगते है।

जीवन की विसगतिया, परेशानिया इस व्यग्यकार के पास इतनी अधिक थी कि अन्तत. इसे मई १९८९ मे आत्महत्या करनी पडी।

पीडा को निकालने के लिए इसने व्यग्य को माध्यम चुना। जीवन की सभी स्थितियो मे उभरने वाली विदूषताओं को इन्होंने व्यग्य द्वारा सार्थक प्रहार किया।

शिक्षा जगत की विसगतिया को जिससे छात्रो के बीच बढती अनुशासनहीनता मुख्य विषय है, को लेकर इन्होने लिखा है। अपनी रचना 'अश्वमेघ', 'तीन अदद मास्टर, तीन अदद झलकियाँ', 'खुलना कालेज का' मे इन्होंने बेवजह के प्रतिदिन होने वाले छात्र आन्दोलनो, नकल करने और नम्बर बढवाने के लिए अध्यापकों की पिटाई करने तथा दिखावे के लिए इन्टरव्यू कार्यक्रम आयोजित करने, को विषय बनाकर व्यग्य किया है।

'पुलिस लीला' नुक्कड़ नाटक में पुलिस आक्रान्त को व्यग्य का विषय बनाया गया है।

शिल्प

कथा, नाटक, चम्पू, रेखाचित्र आदि के अलावा इन्होंने निबन्ध और कहानी के द्वारा भी व्यग्य किया है।

इनके व्यग्य की सबसे बडी विशेषता नाटकीयता है जिससे सवादो द्वारा ही विसगति को उभारा गया है।

(मास्टर और नकल करती छात्रा के बीच बातचीत)

– यह क्या है देवि ।

– यह चाक् है तात् ।

– और यह क्या है देवि ।

– यह पुस्तक है गुरुदेव ।

– इन दोनो का यहाँ क्या कार्य ।

– पारस्परिक सम्बन्ध है आर्य। चाक् पुस्तक के कारण है पुस्तक चाक् के कारण है।

व्यग्य के सन्दर्भ मे अति सक्षिप्त ढग से उन्होने अपने विचार व्यक्त किया है– व्यग्य किसे कहेगे जो पत्रिका के कालम मे हजार-बारह सौ शब्दों मे छपा होता है।

मधु सूदन पाटिल

मधु सूदन उन व्यग्यकारो का प्रतिनिधित्व करते है जो उभरते व्यग्यकारो के अन्तर्गत सम्मिलित है। १९८९ से थे एक त्रैमासिक 'व्यग्य-विविधा' का सम्पादन कर रहे है।

राजनीति की प्रवृत्ति पर मधुसूदन पाटिल लिखते है। जो फूट डालो और राजकरो को लेकर आगे बढ रही है–

"बबूल के बीज बोए तो रसाल की आशा कैसे की जा सकती है। फूट के बीज बोकर एकता की फसल खड़ा करने का आडम्बर राजनीति ही कर सकती है।"[१]

चुगलखोर की मनोदशा का चित्रण करते हुए वे लिखते हैं कि "चुगलखोर बिल्ली है सामने चाटती है, पीछे खसोटती है। अधिकारी के आगे मिमियाती है अधीनस्थ के आगे गुर्राती है।

१ मधुसूदन – अथ व्यंग्यम्, पृष्ठ ७

अँधेरे मे मुँह पर मलाई चुपडती है, उजाले मे भीगते हुए भागती है नौ सौ चूहे खाती है फिर हज जाने की घोषणा करती है।"[१]

समाज में नेताओं की स्थिति और उनकी दादागिरी को लेकर उन्होने 'हम सब एक हैं' की रचना की है। इसमे इन्होने दिखलाया है कि किस प्रकार प्रचार और नारे के बीच वर्चस्व उन नेताओ का ही किसी वस्तु पर है। कहने को तो प्रजातन्त्र है लेकिन वास्तव मे काम 'डण्डा तन्त्र' द्वारा चलाया जाता है।

"हमारा लोकतन्त्र हमे यही सिखाता है कि बकरी और शेर एक घाट पर पानी पीये, लेकिन घाट शेरो का ही रहेगा।"

शिल्प

मधुसूदन पाटिल की शैली विश्लेषण के करीब निबन्धात्मक है – एक उदाहरण देखिए–

"स्कूल आते समय सुभाषचन्द्र बोस की चाल मे, शाम को छुट्टी के समय महात्मा गाँधी बनी मास्टरनिया।"

"बस मे एक–एक पायदान चढने के लिए बिनाका गीतमाला से कही ज्यादा सघर्ष करना पडता है।"[३]

वम्बइया तरीके से हिन्दी बोलने के प्रयोग को इन्होने अपने व्यग्य में स्थान दिया है–

"अपने फिकर नाट सर"[४]

मधुसूदन पाटिल के अनुसार व्यग्य मानवता और राष्ट्रीयता के प्रति आस्था का द्योतक

---

१ हरिगंधा – जुलाई-अगस्त १९८८,

२ मधुसूदन पाटील – हम सब एक हैं, पृष्ठ ८०

३ हरिगंधा – जुलाई अगस्त १९८८, पृष्ठ ३६

४ मधुसूदन – 'हम सब एक हैं' पृष्ठ ८०

है– यह क्रोध का अहिसक रुप हैं।

मधुसूदन पाटिल का व्यग्य स्थितियो को समझता है यह सोचने को विवश करता है, लडने को प्रेरित नही करता।

संतोष खरे

सतोष खरे वकालत के साथ, लेखन का कार्य भी कर रहे हैं। इनकी रचनाए पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित होती रही है। केवल इनकी दो रचनाएँ पुस्तक के रूप मे उपलब्ध है– 'धूप का चश्मा', 'सरकारी दफ्तरी में कबीर'।

दहेज को लेकर उन्होने लिखा है "आज हर जगह शादी व्याह के लिए रिश्ते में मोल किया जाता है। भाव न तय होने पर लडकी 'मगली' करार दिया जाती है। लेकिन दहेज मिलते ही लडकी का मगलीपन दूर हो जाता है।"

'पति–पत्नी की निरीहिता' को इन्होंने त्रासदी रुप मे स्वीकार किया है जो लगातार बिछुड रहे हैं।

लेखक, प्रोफेसर से एक क्लर्क आज अधिक खुश है इस बात को लक्ष्य करके उन्होंने धूप का चश्मा मे लिखा है कि "मुझे हर्ष है कि मैं अग्रेजी द्वारा निर्धारित की गयी शिक्षा–प्रणाली का सही प्रतिफल हूँ। और मुहल्ले में प्रोफेसर या लेखक से ज्यादा इज्जत है कारण कि कोटे के अतिरिक्त, गल्ला–शक्कर की अतिरिक्त व्यवस्था कर लेता हूँ।"[३]

सतोष खरे का व्यग्य कमेटरी शैली मे होता है इसके दर्शन उनकी रचनाओं 'आम के आम गुठलियों के दाम' तथा 'आधुनिक नायिका का नख–शिख वर्णन' मे होते है।

---

१ मधुसूदन पाटील – अथ व्यंग्यम्, पृष्ठ १५

२ मधुसूदन पाटील – हम सब एक है, मगल चरण

३ संतोष खरे – धूप का चश्मा, पृष्ठ ८३

डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी ने इनके व्यग्य कर्म के विषय मे कहा है "सतोष खरे ने अपने व्यग्यो द्वारा जीवन की कटुता का उद्घाटन मृदुल तरीको से किया है।"[१]

यशवन्त कोठारी

समाज की विसगतियो, विद्रूपताओ को देखकर हृदय मे उठी पीडा व्यग्यकार की वाणी बनकर 'व्यग्य' के रूप हमारे सामने आती है। यशवन्त कोठारी का व्यग्य वह कुत्ता है जो काट खाने की तैयारी करता दिखता है।

सूत्र शैली मे यशवन्त कोठारी का व्यग्य है

सस्था शरणम् गच्छामि।

कलक्टर शरणम् गच्छामि।

नेता शरणम् गच्छामि।

टीका – बाढ के समय लोगों को स्वय सेवी, सस्थाओ, जिलाधीशों तथा नेताओं की शरण में जाना चाहिए।

व्यर्थ शका – बाढ मे जिलाधीश और नेताओ की शरण मे क्यो जाना पडता है।"

निवारण – बाढ पीडित का प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के लिए जिलाधीश व नेताओं की मदद आवश्यक है और असली बाढ पीडित तो बेचारा यह प्रमाण पत्र प्राप्त भी नहीं करना चाहता।"[२]

बाढ में जहाँ जनता को परेशानी है वही बडे लोग और उनके परिवार पिकनिक स्पाट समझकर घूमने आती है – एक सीन

---

१ सतोष खरे – धूप का चश्मा, पृष्ठ ८३

२ रंग चक्कर मरन – ४४

३ यशवन्त कोठारी – यश का शिंकजा, पृष्ठ १०१

अफसर की पत्नी अपनी कॉन्वेन्ट मे पढी लडकी से कहती है, यू सी बेबी इट इज फ्लड।

बेबी का उत्तर— मम्मी। आऊ लबली। रियली फनी मम्मी ऐसी खूबसूरत बाढ हमेशा क्यो नही आती ? आओ आज पिकनिक मनाए।[१]

राजनीतिक चलवाजियो को विषय बनाकर 'ससद का आँखो देखा हाल' तथा 'यश का शिकजा' रचनाए की है।

परिभाषिक शैली मे भी इन्होने व्यग्य लिखा है।

साहित्य – जो पढा न जाये वो साहित्य है, और जो पढकर समझ मे न आये वह सत्साहित्य है। वैसे जो थोडा बहुत भी समझ मे आये वह घटिया साहित्य है।

बजट पूर्व कीरातो मे चोर, उचक्के, गुण्डे, धूम्रपान करने वाले बैठकर सरकार को कोसते "यार ये सरकार हम गरीबो की रोजी–रोटी क्यो छीन रही है।"[२]

यशवन्त कोठारी का व्यग्य बच्चे और और दादा–नानी की हँसी ठिठोली है जो मूँछे उखाडता है लेकिन हँस–हँस करके।

श्याम गोइन्का

श्याम गोइन्का आधुनिक चर्चित व्यग्यकारो में एक है। इनका पहला व्यग्य सकलन (१९७९) मे, दूसरा गजत्व दर्शन (१९८९) में प्रकाशित हुआ।

अपने व्यग्य लेखन को 'सौ फीसदी धरती की' बातें बताने वाले गोइन्का ने समाज के सभी क्षेत्रों से व्यंग्य विषय को चुना है।

किसी भी मुकदमें में वादी और प्रतिवादी का तो दीवाला पिट जाता है लेकिन वकील

---

१ यशवन्त कोठारी – यश का शिंकजा, फ्लैप

२ यशवन्त कोठारी – यश का शिंकजा, पृष्ठ १७०

मालोमाल हो जाता है।

"मुकदमे रुपी मुकाबले मे फतह मुदई की हो या मुदाहिल की दिवाला दोनों का पिटता है, वकील की तो हर हालात मे दिवाली ही दिवाली है।[१]

डॉ और डाकू की तुलना करते हुए लेखक लिखता है कि "डाक्टर को सक्षेप मे डॉ लिखा जाता है जो डाकू का भी सक्षेप है डाक्टर भी डाकू जैसा व्यवहार करता है डाकू चाकू से जान लेता है और डाक्टर भी"[२]

'दूल्हे का सौदागर' मे उन्होंने दहेज प्रथा के प्रचलन को दिखलाया है जहाँ लडके के परिवार वाले दूल्हे को बेचेते है "दूल्हे ले लो-दूल्हे। बीस हजारी। तीस हजारी। अधलखिया लेलो नये नवेले ले लो। किस्म-किस्म के दूल्हे ले लो। दूल्हे ।"[३]

'साहिबी की खूब बाढ' मे आजादी बाद की स्थितियो को चित्रित किया गया है। साहब हर तरफ से फायदा ही फायदा जाता है, पुरस्कार, उपहार, चोरी, सभी से वह कमा रहा है।

परनिन्दा से ऊर्जा प्राप्त होती है जो जीने के लिए आवश्यक है इसको लेकर उन्होने लिखा है कि "आदमी भोजन के बिना दो माह पानी के बिना दस दिन निकाल सकता है लेकिन परनिन्दा और आलोचना के बिना एक दिन भी निकालना मुश्किल है।"[४]

इनके उपमान, मुहाविरे, कहावते व्यग्य सूक्तिया बनकर गहरे चोट पहुँचाती है।

"चट नालिस पट तलाक"

"सीधे खाते से घी नही निकलता है"

"बिना रोये वोटर वोट नहीं देता है।"

---

१ श्याम गोइन्का – गंजत्व दर्शन, पृष्ठ ९

२. श्याम गोइन्का – गंजत्व दर्शन, पृष्ठ ३७

३ श्याम गोइन्का – नसबन्दी, पृष्ठ १०७

४ श्याम गोइन्का – नसबन्दी, पृष्ठ ३९

सूक्तिया – "यह भी भला कोई घास मे सूई या नेता मे चरित्र ढूढने वाल बात है।"

"सौ-सौ जुल्मो के बलबूते पर पुलिस का कैरियर बनता है।"

श्याम प्रसाद गोइन्का का व्यग्य खुली धूप है जहॉ सब कुछ स्पष्ट दिखलायी पडता है।

अशोक शुक्ल

परसाई, अजातशत्रु के समानधर्मा अशोक शुक्ल का व्यग्य की अधिक आक्रामक है इनकी रचनाए पत्र-पत्रिकाओ मे इधर-उधर बिखरी पडी है 'प्रोफेसर पुराण' और 'हडताल हरिकथा' इनके उपन्यास है जहॉ इन्होंने शिक्षा जगत की विसगतियो को उजागर किया है। इनका एक मात्र सकलन 'मेरा पैतीसवा जन्म दिन' है।

अशोक शुक्ल का व्यग्य सहलाता नहीं है, कोडे लगाता है यह वह निर्दयी पिता है जो लगातार फटकार देता है।

ज्ञान चतुर्वेदी

ज्ञान चतुर्वेदी ऐसे रचनाकार है जो सूक्ष्म अन्तर दृष्टि से, नीर-क्षीर विवेक शैली मे, समाज की विसगतियो को अपनी सवेदना से निकाल ले आते है। शिक्षा, साहित्य, राजनीति, समाज, अर्थनीति आदि सभी पर इनका व्यग्य चोट करता चलता है।

गाँवों की परम्परागत प्रचलित शिक्षा पद्धति को लक्ष्य करके ज्ञान चतुर्वेदी जी लिखते हैं

"गाँव में शिक्षा का माध्यम हिन्दी तथा डण्डा था। शिक्षक हिन्दी की गालिया देते तथा डडे चमकाते स्कूल के इस कमरे से उस कमरे में शिक्षा बाँटते फिरते।"[१]

'गरीबी हटाओं' नारे को लेकर लेखक व्यग्य करता है भारत में २४०० कैलोरी प्रति व्यक्ति उर्जा से कम पाने वाले को गरीबी रेखा के नीचे रखा जाता है। साहब लोग गरीबी को कैसे

---

१. धर्मयुग – १४ जुलाई, १९८५

मिटा रहे है।"

"साहब को आते देख किसान अपने हाथ की रोटी छुपा लेता है। यह देख साहब ने घुडककर कहा क्या खा रहा है, पीछे क्या छिपा रहा है।"

"कुछ नहीं साहब जवार की रोटी है।"

"कितनी कैलोरी खा गया रे"

"कैसी कैलोरी – अन्नदाता"

× × ×

"बाते मत बना, कुर्की हो जायेगी, चुपचाप कबूलकर ले कि २४०० कैलोरी खाता हूँ खाता है कि नहीं।"

"हॉ साहब खाता हूँ, खाता हूँ"

"शावश – हाँ भई लिखो इनका नाम जटाशकर, गरीबी रेखा से ऊपर"

कथोपकथन द्वारा व्यग्य प्रकट करने की विशिष्ट शैली ज्ञान चतुर्वेदी की पहचान है। जहॉ विसगतिया स्वत. स्पष्ट हो जाता है।

सूर्य बाला

'सूर्य बाला' का व्यग्य सोफे पर बैठ कर की गयी गप्पबाजी सा लगता है जहाँ मनोरजन और निन्दा करने के लिए किसी एक विषय को उठाकर उसमें प्रसग-दर प्रसग जोडे जाते है। इनके व्यग्य का विषय कुत्ता, सोफा, सलवार, शाल है जहाँ ये चुस्त और सधी भाषा मे अभिव्यक्ति देती हैं।

'सोफानामा' में बुर्जुगों को लेकर व्यग्य कसा गया है जो नई चीज को गन्दी होने, जल्दी टूटने के डर से छूने नहीं देते। 'आत्मकथा हिन्दी फिल्म के पिताओं' में उस दयनीय स्थिति का वर्णन किया गया जहाँ पिता की मृत्यु किसी दीर्घकालीन बीमारी से हो जाती है। 'काटना

पागल कुत्ते का उर्फ देखना कला फिल्म का' मे गाँव की अनर्गल और अश्लील दृश्यों का छायाकन करने की प्रवृत्ति पर व्यग्य मिलता है। इसी प्रकार 'बन गयी मेरे उपन्यास पर एकअदद कला फिल्म' मे मूलकथा के साथ की गयी छेडछाड का वर्णन है। तो 'तुलना कलियुगी और सतयुगी वोटरो' की रचना मे भगवान को उलझते हुए दिखलाने का प्रयास किया गया है।

सूर्यबाला के व्यग्य तेवर प्रेमी का सा तेवर लिये हैं जो प्रिय से इसलिए नाराज होना चाहता है क्योकि उसे खुश करना चाहता है।

घनश्याम दास अग्रवाल

कवि, कथाकार, व्यग्य लेखक के रुप मे प्रसिद्ध घनश्याम दास अग्रवाल नयी पीढी के सशक्त व्यग्यकारों मे शामिल है।

इन्होने अपनी महत्वपूर्ण रचना 'क्रिकेट इज इण्डिया, इण्डिया इज क्रिकेट' मे क्रिकेट की दीवानगी को दिखलाया है। जहॉ सभी लोग सारे काम छोडकर जीतने हारने की सारी परिस्थितियो का विश्लेषण करते रहते हैं। इन्हे भोजन की चिन्ता नही रहती है लेकिन रनों का ग्राफ इण्डिया का बढ रहा है कि नहीं इसके लिए वे व्याकुल रहते है।

'ईमानदार की खोज' मे इन्होने कम ईमानदार व्यक्ति को ईमानदार घोषित किया है। इनकी लघु व्यग्य कथाए इस प्रकार है – 'आजादी की दम', 'निष्कर्ष', 'गवाही', 'पुल की ईमानदारी', 'शाहजहाँ के बाद', 'मजबूती का रहस्य' आदि।

मनोहर श्याम जोशी

हिन्दी गद्य 'व्यग्यकारों' मे मनोहर श्याम जोशी अपनी किस्सागोई प्रवृत्ति के कारण काफी प्रचलित रहे है। विज्ञान के विद्यार्थी मनोहर श्याम जोशी लखनवी अन्दाज को ओढे हुए भी करारा व्यग्य करने में सक्षम हैं। 'कसप' (१९९५), 'नेता जी कहिन' (१९८२), 'कुरु–कुरु स्वाहा' (१९८०) और व्यंग्य संकलन 'उस देश का यारों क्या कहना' (२००१) उनकी रचनाए हैं।

इसके अलावा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भी ये लेखन कार्य करते है। टी वी सीरियलो और फिल्मो के लिए भी इन्होने लेखन कार्य किया है।

इनके व्यग्य सकलन 'उस देश का यारो क्या कहना' मे विविध विषयो से सम्बन्धित व्यग्य रचनाए है जिससे समाज, राजनीति, पत्रकारिता, शिक्षा, साहित्य, घोटाला, धर्म, क्रिकेट, नौकरशाही, वोट, चुनाव, प्रजातन्त्र आदि है।

राजनीतिक नेताओं की भ्रष्टाचारिता पर उनका एक छोटा सा उद्धरण ही काफी बडा व्यग्य करता है जहाँ सरकारी खजाने से उनकी समाधि बनती है।

"जो तीन पीढियों के लिए पैसा छोड सकता है वह अपने अन्तिम सस्कार के लिए भी पैसा छोड सकता है, जय भारत, जय भ्रष्टाचार"[१]

तमाम प्रयासों के बाद भी भारत की समस्याए कम नही हो रही है। १०वी पचवर्षीय योजना आ गयी लेकिन अभी भी भारत सभी क्षेत्रो में पिछडा है इसे लेकर लेखक व्यग्य करता है।

"परमात्मा हमारे देश की पवित्र छवि को बनाए रखने के लिए इतना चिन्तित है कि उसने देश माता को एक अद्‌भुत वरदान दे डाला है। चाहे विकास के कितने भी पचवर्षीय आयोजन पूरे हो जाये, चाहे तेरे कितने भी बेटो के लिए कितना भी आरक्षण कर दिया जाये, चाहे तेरे कितने भी बेटे शहरों को चले जाये, तू जहाँ है वही रहेगी, पवित्र धूल से धूसरित गाँव में।"[२]

मनोहर श्याम जोशी शिल्प के स्तर पर किस्सागोई अपनाते हैं – सस्कृति, अग्रेजी और हिन्दी की कविताओं का उद्धरण भी ये खूब देते है।

इनका व्यग्य चटखारे लेता, देसीपन के साथ फटकार लगाता ग्रामीण बुजुर्ग सा है।

---

१ मनोहर श्याम जोशी – उस देश का यारों क्या कहना, पृष्ठ २४०

२ मनोहर श्याम जोशी – उस देश का यारों क्या कहना, पृष्ठ ६९

व्यग्य साहित्य की यात्रा मे ऐसे अनेक व्यग्यकार सम्मिलित है जो अपनी लेखनी से अच्छे परिणाम (रचना) दे रहे है लेकिन अति विस्तार के डर से उनका 'साहित्य विवेचन' नही कर रहा हूँ। लेकिन उनकी चर्चा व्यग्यकार के रुप मे अवश्य की जानी चाहिए। ऐसे महानुभावो के नाम इस प्रकार हैं –

श्री रोशन सुरीवाला – खाट पर हजामत (१९५८), डॉ एम ए पी एच-डी १९६८, मच के विक्रमादित्य १९६९, शख और मूर्ख १९७१, पत्नी शरणम् गच्छामि १९७६, ये मगाने वाले १९७६, मुर्दा शिरोमणि १९७६।

डा ससार चन्द्र – सटक सीताराम १९५८, सोने के दाँत १९६२, अपनी डाली के काँटे १९६८, बाते ये झूठी है १९७४, गगा जब उल्टी बहे १९८१।

श्रीवाल पाण्डेय – जब मैने मूँछ रखी १९६८, माफ कीजिए हुजूर १९८२, साहब का अर्दली १९८५।

इस पीढ़ी के अन्य रचनाकार रहे डॉ आत्मानन्द मिश्र, डॉ सत्य प्रकाश सेंगर, डॉ जयनाथ नलिन, श्री रामावतार त्यागी।

दूसरी पीढ़ी ऐसे व्यग्यकार जिनकी अभी बहुत प्रतिष्ठा नहीं है। ये परसाई की पीढी और व्यग्य समीक्षकों के बाद की पीढी है–

श्री सुवोध कुमार श्रीवास्तव – शहर बन्द क्यों है १९७४, बचिए भभूत गिर रही है १९७४

श्री शिव शर्मा – 'ईश्वर जब नगा हो गया' १९७८

श्री सुरेशकान्त – 'अफसर गये विदेश' १९८२, 'पडोसियों का दर्द' १९८४

श्री कृष्णाचराटे – 'मेरे मोहल्ले का सूर्योदय' १९८२, 'साहब का टेलीफोन' १९८५

श्री सुरेश सेठ – 'तीसरी आजादी का इन्तजार' १९८३, 'सिरहाने के मीर' १९८६

डॉ हरिश्चन्द्र वर्मा – 'चमचापुराण' १९८०, 'व्यग्य के रग' १९८७

श्री राम ठाकुर – 'अभिमन्यु का सत्ता व्यूह' १९८०, 'ऐसा भी होता है' १९७८, 'पच्चीस घण्टे' १९८०

श्री रास बिहारी पाण्डेय – 'उधार का भाषण' १९७८, 'स्पीकर क्रान्ति' १९७९, 'काका के जूते' १९८८, 'तीसरी आँख' १९९२

श्री कुन्दन सिह परिहार – 'अन्तर्रात्मा का उपद्रव' १९८२

श्री विष्णुदेव पाण्डेय – 'नेताजी' १९७६, 'चौराहे पर' १९७९

श्री परन शर्मा – 'आत्म हत्या के पहले' १९८५, 'स्वयवर आधुनिक सीता का', १९८६

डॉ शिवानन्द कामड़े – 'इन्टरव्यू के चोचले' १९८४, 'विधवा सहानुभूति' १९८५,

डॉ रामेश्वर प्रसाद सिह – 'एक अगूठे की मसीहाई' १९८१, 'शिवमेव जयते' १९८३

डॉ र श. केलकर – 'कुत्ते की दुम', १९६७

श्री गोविन्द शेनॉय – 'मिस्टिक साहब का कुर्ता', 'आगे कौन हवाला' १९७१

श्री मालीराम शर्मा – 'आमने-सामने' १९७६, 'कैप्सूल नही टूटता' १९७७

श्री धर्म स्वरुप – 'लघु व्यग्य कथाए' १९७७

श्री मानिक बछावत – 'आदम सवार' १९७८

श्री सनत मिश्र – 'एक और अभिमन्यु' १९७८

श्री सुरेश सैनी – 'मरे आस पास' १९७९

श्री शशिकान्त – 'कुछ महाभारत और' १९८०

श्री दिलीप टेल – 'मैं मुन्ने को नहीं सम्भालूँगा'

डॉ रमाशंकर श्रीवास्तव – 'नमः प्रोफेसराय' १९८२, 'हल्ला मचाओ', 'गर्दन बचाओ' १९८२

डॉ धनराज चौधरी – 'गौतम बुद्ध और दु खी आत्मा', १९८२

श्री पार्थ सारथी डबराल – 'नानीमदी दादी युग की' १९८२

डॉ पूर्ण सिह डबराल – 'जब जुल्फो पर रिसर्च होगी' १९८२

डॉ रत्नलाल शर्मा – 'इधर से उधर' १९८२

श्री प्रेमेन्द्र श्रीवास्तव – 'लीक से हटकर' १९८०

श्री सुशील कालरा – 'चमचे का ढक्कन' १९८०

श्री वीरेन्द्र कुमार जैन – 'रावण की राख' १९८२, 'एक लोहार की' १९८५

श्री हरि मेहता – 'मारे गये शराफत में' १९८३

श्री शेर जग जागली – 'नेता जी का चमचा' १९८३

श्री प्रदीप पन्त – 'प्राइवेट सेक्टर का व्यग्यकार'

डॉ मनोहर प्रभाकर – 'अति सर्वत्र वर्जयते' १९८३

श्री बिहारी दुबे – 'आकडेबाजी' १९८४

श्री एम उपेन्द्र – 'राजधानी मे हनुमान' १९८४

श्री हरिकृष्ण तेलेग – 'कुत्ता पालक कलोनी' १९८४

श्री बलवीर त्यागी – 'पेट कन्धे पर' १९८४

श्री मनुमंत मनगटे – 'शोक चिन्ह' १९८४

श्री हरिजोशी – 'अखाडों का देश' १९८३

श्री शरतेन्दु – 'हम हड़ताली जनम के' १९८३

श्री कृष्ण मायूस – 'भ्रष्टाचार और हम' १९८३

श्री राजेश कुमार – 'पद के दावेदार' १९८४

श्री विश्वमोहन ठाकुर – 'मेरा इक्कीसवां मकान' १९८४

श्री धर्मपाल महेन्द्र जैन – 'सर क्यो दॉत फाड रहा है' १९८४

श्री राम आयगर – 'एक बीमार सौ अनार' १९८५

श्री रामस्वरुप – 'प्रभु का पसीना' १९८५

श्री गोपाल चतुर्वेदी – 'असर की मौत, पोथी पढि-पढि' १९८५

श्री दिलीप गुप्ते – 'एक फइल का पोस्टमार्टम' १९८५

श्री राजेन्द्र नि.शेष – 'दीवारो के कान' १९८५

श्री दिनेश चन्द्र दुबे – 'खुदा गवाह अपनी हत्या का' १९८५

श्री राजेन्द्र शर्मा – 'नेता जी का सफेद चूहा' १९८५

डॉ चन्द्रेशेखर – 'बीबी के जन्मदिन पर' १९८५

श्री हरमन चौहान – 'पूत के पाँव' १९८६

श्री नन्द किशोर यादव – 'शुभ-लाभ' १९८६

श्री स्वय प्रकाश – 'स्वतः सुखाय' १९८६

श्री हरीशनवल – 'बागपत के खरबूजे' १९८७ आदि।

व्यग्य कर्म क्षेत्र की महिला कर्मियों का योगदान भी कम नही रहा उनमे जिन महिलाओं ने खासी उपलब्धि हासिल की है उनके नाम इस प्रकार हैं – डॉ सरोजनी प्रीतम, डॉ शान्ति मेहरोत्रा, विमला रैना, ऊषावाला, मृणाल पाण्डेय, डॉ कुसुम कुमारी, स्नेहलता पाठक, अलका पाठक, साधना उपाध्याय, सुभद्रा मिश्र, सुशीला जोशी, कुसुम सेठी, और भीरी सीकरी।

विमला रैना का 'आहे और मुस्कान' १९६९, उषाबाला का 'कफन चोर का बेटा' १९७६, युधिष्ठिर के बेटे' १९८०, डॉ कुसुम कुमारी के नाटक – 'ओम् क्रान्ति-क्रान्ति' १९७८ तथा 'रावणलीला' १९८३, मृणाल पाण्डेय के नाटक 'जो राम रचि राखा' १९८३ तथा डॉ सरोजनी प्रीतम का 'बिके हुए लोग' १९८६ अधिक प्रसिद्ध रचनाए हैं।

अब थोडा सा उनके विषय में भी जो मूलत व्यग्यकार नही है लेकिन व्यग्य मे अपनी लेखनी चलायी है उनका कृति के साथ नाम इस प्रकार है –

प्रभाकर माचवे – 'खरगोश के सीग', 'तेल की पकौडिया'।

इन्द्रनाथ मदान – 'सुगम और शास्त्रीय सगीत', 'कुछ उथले और कुछ गहरे', 'रानी और काकी', 'बहाने बाजी', 'भनुमति का पिटारा'।

डॉ आत्मानन्द मिश्र – 'जो हैसो', 'बेबात की बात', 'बात का बतगड'।

अमृत लाल नागर – 'भारत पुत्र', 'नौरगी लाला काल दड की चोटी', 'कृपया दाए चलिए', 'चकल्लस'।

धर्मबीर भारती – 'ठेले पर हिंमालय', 'गुलवीर की तीसरी यात्रा'।

उमाकान्त मालवीय – 'साहित्य महोदधिका चयन', रमेश बक्शी – 'गुप्ता जी माफ', रामेश्वर शुग्ल अजच – 'गणत त्रवीदेन', फणीश्वर नाथ रेणु – 'उत्तर नेहरु परिचम'।

अन्त मे व्यग्य विधा को पूर्णत समर्पित एक प्रतिष्ठित पीढी मौजूद है, कुछ लोग है जो अपनी कहानी, उपन्यास आदि में यत्र-तत्र व्यग्य की चर्चा भर कर देते हैं तो कुछ लोग कभी-कभी एकाध, व्यग्य रचना कर देते है। कुल मिलाकर इन सभी से व्यग्य विधा का विकास हो रहा है, व्यग्य प्रौढ हो रहा है, व्यग्य के नित नये प्रतिमान निर्धारित हो रहे हैं। व्यग्य विधा पुराने लोगों से सीख कर नयी पीढी के लोगों की अगुली पकडे आगे बढ़ रही है।

❑

चतुर्थ अध्याय

हरिशंकर परसाई – कृतियाँ और उनकी विशेषता

जीवन परिचय

हरिशकर परसाई का जन्म २२ अगस्त १९२४ को हुआ और मृत्यु १९९५ में। इनका जन्म स्थान जमानी (इटारसी) के पास गाँव रहा है। एम ए हिन्दी में इन्होने नागपुर से किया है।

बचपन के दिन बहुत अच्छे नहीं बीते। पिताजी (झुमकलाल परसाई) कोयले की ठेकेदारी करते थे। माँ घर पर रहती थी। अपने बचपन के दिनो को याद करते हुए वे कहते है, "खूब पढने वाला, खूब खेलने वाला और खूब खाने वाला मै शुरू से था। पढने और खेलने में मै सब भूल जाता हूँ। मौट्रिक हुआ जगल विभाग में नौकरी मिली। जगल मे सरकारी टपरे मे रहता था। ईटे रखकर, उनपर पटिए जमाकर बिस्तर लगाता, नीचे जमीन चूहों ने पोली कर दी थी। रात भर नीचे चूहे, धमाचौकडी करते रहते और मैं सोता रहता। कभी चूहे ऊपर आ जाते थे। तो नीद टूटजाती पर मै फिर सो जाता छह महीने मै धमा चौकडी करते चूहो पर सोया"। [१]

कुछ समय पश्चात इनकी जिन्दगी मे वह दिन आया जब वृक्षरूपी माता की छाया इनसे दूर हो गयी इसको लेकर वे लिखते है" बचपन की सबसे तीखी याद प्लेग की है। १९३६ या ३७ होगा। मै शायद आठवी का छात्र था। कस्बे मे प्लेग पडी थी। आबादी घर छोडकर जगल मे टपरे बनाकर रहने चली गयी थी। हम नही गये थे। माँ सख्त बीमारी थी। उन्हें लेकर जगल नहीं जाया सकता था। भॉय-भॉय करते हुए पूरे आस पास मे हमारे घर ही चहल-पहल थी काली राते। इनमे हमारे घर जलने वाली कदील। मुझे इन कदीलो से डर लगता था। कुत्ते तक बस्ती छोड़ गये थे। रात के सन्नाटे में हमारी आवाजे हमे ही डरावनी लगती थी। रात को मरणासन्न माँ के सामने हम लोग आरती गाते- जय जगदीश हरे भक्त जनो के सकट पल में दूर करे। गाते-गाते पिताजी सिसकने लगते माँ विलख कर हम लोगों

---

१ सं कमला प्रसाद - आँखन देखी-३६

को चिपटा लेती और हम भी रोने लगते। रोज का यह नियम था। फिर रात को पिता जी चाचा और दो एक रिश्तेदार लाठी बल्लम लेकर घर के चारो तरफ घूम-घूमकर पहरा देते। ऐसे भयकारी त्रासद दायक वातावरण मे एक रात तीसरे पहर माँ की मृत्यु हो गयी। कोलाहल और विलाप शुरू हो गया। कुछ कुत्ते भी सिमटकर आ गये और योग देने लगे।"

"पाँच-भाई-बहनो मे माँ की मृत्यु का अर्थ मै ही समझता था। सबसे बडा था"।[१]

माँ की मृत्यु के पश्चात पिता जी टूट गये थे। वे अपना कार्य बन्द कर दिये थे। उस समय परसाई मैट्रिक भी पास नही किये थे कि परसाई समझने लगे थे कि "पिता जी भी अब जाते ही है। बीमारी की हालत मे उन्होने एक बहन की शादी कर दी थी बहुत मनहूस उत्सव था वह। मै बराबर समझ रहा था कि मेरा बोझ कम किया जा रहा है पर अभी दो छोटी बहने और एक भाई था।"[२]

इसी बीच पिता जी भी मृत्यु के नजदीक और उनको अपनी जगल की नौकरी भी छोडनी पडी फिर स्कूल मास्टरी फिर टीचर्स ट्रेनिग और नौकरी की तलाश इधर पिता जी, मृत्यु के नजदीक। भाई पढाई रोककर उनकी सेवा मे, बहनें बडी बहन के साथ, हम शिक्षण की शिक्षा ले रहे है।"

इस बीच होशगाबाद शिक्षा अधिकारी से नौकरी के लिए कहने लगे। लेकिन निराशा हाथ लगी। नौकरी जबलपुर मे। होशगाबाद से जबलपुर तक जाने के लिए पैसे नहीं थे लेकिन बेटिकट बैठ गये। कलेक्टर के एक खानसाये ने प्लेटफार्म से बाहर भी निकलवा दिया। "पहले दिन जब बाकायदा 'मास्साब' बना तो अच्छा लगा। पहली तनख्वाह मिली ही थी कि पिता जी की मृत्यु की खबर आ गयी । माँ के बचे जेवर बेचकर पिता का श्राद्ध किया।

---

१ सं कमला प्रसाद - ऑखन देखी-३६

२ स कमला प्रसाद - ऑखन देखी- ३६

और अध्यापकी के भरोसे बडी जिम्मेदारियाँ लेकर जिन्दगी के सफर पर निकल पडे।"[1]

किसी भी लेखक के कृतित्व को उसके व्यक्तित्व से अलग करके नहीं देखा जा सकता है और व्यक्तित्व बना बनाया नही मिलता है। हमे केवल अस्तित्व प्राप्त होता है यही अस्तित्व जीवन-यथार्थ से टकरा कर प्रतिभाशाली एव चेतना सम्पन्न व्यक्ति के अन्दर आत्मसघर्ष की प्रक्रिया से व्यक्तित्व मे बदल जाता है। परसाई के व्यक्तित्व का निर्माण इन्ही माध्यमो से हुआ। मध्यमवर्गीय परिवार की आर्थिक परेशानिया झेलते हुए परसाई अभी कायदे से अपने पैरो पर खडे भी नही हो पाये थे कि इसके ऊपर से माँ बाप की छाया हट गयी और जिम्मेदारिया, जिम्मेदारिया दो बहनो और एक भाई की।

लेखक का आत्मकथ्य है कि गर्दिश के दिनो मे एक चीज सीखी कि मुझे 'बेचारा परसाई' नही बनना है उसी उम्र से दिखाऊ सहानुभूति से मुझे बेहद नफरत है। बेटिकट यात्रा करना भी उन्ही दिनो सीखा। जिस दूसरी विधा मे कुशल हुए, वह था "निसकोच भाव से किसी से भी उधार माग लेना। तीसरी चीज सीखी अपनी बुआ से जो हमेशा कहती- 'चल चिन्ता नही।' उनका यह वाक्य मेरे लिए ताकत बना 'कोई चिन्ता नही'।[2]

इन सबके बीच ही लेखक के व्यक्तित्व का निर्माण हो रहा था "मैने कहा- मैं बहुत भावुक सवेदनशील और बेचैन तबियत का आदमी हूँ। सामान्य स्वभाव का आदमी ठडे ठडे जिम्मेदारिया भी निभा लेता। रोते-गाते दुनिया से ताल-मेल भी बिठा लेता और एक व्यक्तित्व हीन नौकरी पेशा आदमी की तरह जिन्दगी साधारण सन्तोष से भी गुजार लेता।

लेकिन मेरे साथ ऐसा नही हुआ, जिम्मेदारिया, दुखों की वैसी पृष्ठिभूमि, और अब चारो तरफ से दुनिया के हमले, इन सबके बीच सबसे बडा सवाल था अपने व्यक्तित्व और चेतना

---

१ स कमला प्रसाद - ऑखन देखी-३८

२ स कमला प्रसाद - ऑखन देखी- ३७

की रक्षा।"[1]

इधर लेखक के व्यक्तित्व का निर्माण हो रहा था उधर उसकी गर्दिशे जारी थी। जो तीन जगह अध्यापिकी की, छोडी। १९४३ मे मॉडल स्कूल में अध्यापन शुरू किया। १९५२ मे इस्तीफा दे दिया। १९५३ से ५७ तक प्राइवेट स्कूल में पढाया। १९५७ मे सदा के लिए तिलाजलि दे दिया। १९५६ से जबलपुर से बसुधा नामक साहित्यिक पत्रिका का सम्पादन किया। अन्तत आर्थिक कारणो से १९५८ मे बन्द हो गया।

भाई बहनो की जिम्मेदारी आर्थिक सकट और समाज से सम्बन्धो का अभाव। इन सबके बीच लेखक जीना सीख रहा था और उसने सीखा-जिम्मेदारी को गैर जिम्मेदारी की तरह निभाओ। "पहले अपने दु·खो के प्रति सम्मोहन था। अपने को दु·खी मानकर और मनवाकर आदमी राहत भी पा लेता है मुझे भी पहले ऐसा लगता पर मैने देखा, इतने ज्यादा बेचारो मे मै क्या बेचारा। इतने विकट सघर्षों मे मेरा क्या सघर्ष।

"मेरा अनुमान है कि मैं व्यक्तिगत दु ख के सम्मोहन-जाल से निकल गया। मैं अपने को विस्तार दे दिया। दु.खी और भी है अन्याय पीडित और भी है। अनगिनत शोषित है मै उनमे एक हूँ पर मेरे हाथ मे कलम है और मै चेतना-सम्पन्न हूँ मैने सोचा लडना है, जो हथियार हाथ मे है उसी से लडना है। और तब एक औघड व्यक्तित्व बनाया और बहुत गम्भीरता से व्यग्य लिखना शुरू किया।

साहित्यक उपलब्धियाँ अनगिनत है डी लिट की उपाधि जबलपुर विश्वविद्यालय ने दी। १९६२ मे विश्वशानित सम्मेलन मे भारतीय प्रतिनिध मडल से एक सदस्य की हैसियत से सोवियत रूस की यात्रा की। १९८२ में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित।

---

१ स कमला प्रसाद - ऑखन देखी-३८

रचना के प्रेरणा स्त्रोत

जो कुछ जैसा है उसे उसी रूप मे स्वीकार कर लेना परसाई के स्वभाव मे नही था। इसी कारण जीवन क्षेत्र मे उन्हे तमाम उपलब्धियो से वचित होना पडा। वे व्यक्तित्व को लेकर अधिक सतर्क थे। उन्होंने जब अपने दु:खो का विस्तार दिया तो समाज के असहायो मजबूरों, शोषितो की परेशानियों को अपना मानकर जीना प्रारम्भ किया। वे जागने वाला व्यक्तित्व का निर्माण कर सके। अपनी रचनाओं का प्रेरणा स्त्रोत वे उसी से पाते है एक स्थान पर साक्षात्कार देते समय उन्होने अपने व्यग्य पात्रो के चयन के सन्दर्भ मे कहा "पात्र मे जीवन से लेता हूँ, सालों उनके चरित्र का अध्ययन करता हूँ तब व्यग्य चरित्र बनता है। और मित्र कहते हैं कि तुम इस आदमी को ऐसे ही चिपकाये रहते हो। मैं कहता हूँ ऐसे ही नहीं चिपकाये रहता हूँ। मै स्टडी कर रहा हूँ। आगे इसका परिणाम पढना।"[१]

परसाई की रचना के स्त्रोत वे झूठ, पाखण्ड, अन्याय, विसगति पैदा करने वाले लोग भी है जो समाज के लिए खतरनाक है। हर व्यक्ति सामाजिक विसगतियाँ भोगता है, जीता है, लेकिन सभी के अन्दर रचनाकार उपस्थित नही होता कि उसे अभिव्यक्ति भी प्रदान कर सके। परसाई उन विरले लेखकों मे से है जो अपने भोगे यथार्थ को साहित्य मे हथियार के रूप मे प्रयोग कर सके है।

एक साक्षात्कार के उत्तर मे वे कहते है "व्यक्तिगत पीडा के प्रति एक मोह होता है। मनोविज्ञान मे इसे 'मेसाफिज्स' कहते है – याने स्वय पीडा प्रमोद। मै स्वय–पीडा प्रमोद के मोहजाल से जल्दी मोह भग हो गया और मेरी अनुभूति व्यापक होती गयी।

"मैने समझ लिया कि रोने से कुछ नहीं होता लडने से होगा और व्यापक पैमाने पर होगा।"[२]

---

१ सं कमला प्रसाद – ऑखन देखी–५९

२ समय चेतना/अक्टूबर १९९५–पृष्ठ–३०

"हर लेखक जीवन की खोज और समीक्षा करता है इसी बीच उसे किसी माध्यम की तलाश होती है जिससे वह अपनी बात स्पष्ट रूप से कह सके। समाज की विसगतियो विकृतियो, अन्याय, शोषण, पाखण्ड दोमुँहेपन इत्यादि को पकडने और उसे अभिव्यक्ति देने के लिए परसाई को व्यग्य माध्यम ही उचित प्रतीत हुआ।"

परसाई के लेखन का उद्देश्य क्या है ? इसके विषय मे वे बतलाते है। मेर` लेखन मे तिरस्कार नही, बल्कि आलोचना और जीवन समीक्षा है अगर मैने विभिन्न क्षेत्रो में, व्याप्त विसगतियो पर व्यग्य किया है तो यह बतलाने की चेष्ठा की है कि कहाँ-कहाँ क्या गलत है और उसे बदलना चाहिए। तिरस्कार मे मनुष्यता को नकारने, मनुष्य मे आशा खो देने का भाव होता है। यह मेरे लेखन मे नही है। यही से यह प्रश्न उठता है कि लेखन का उद्देश्य क्या है सारे लेखन का उद्देश्य मनुष्य है-वही केन्द्र है। जैसा जीवन हमारा है, उससे बेहतर जीवन हो यही मेरी इच्छा है-उसे उद्देश्य भी मान सकते है इसलिए मनुष्य जीवन के प्रति एक अटूट प्रतिबद्धता मेरे लेखन मे है।"[१]

जीवन दर्शन

स्वतन्त्रता के बाद भी सामन्त वादी व्यवस्था, जड हो चुकी सामाजिक सरचना, पूजीवादी व्यवस्था के बीच आदमी का दूषित चरित्र विद्यमान था। लगातार परेशानियाँ मजबूरियाँ झेलते-झेलते आदमी नियतिवादी हो गया था। 'हर हाल में जीने की कल्पना करने लगा था।

परसाई ने इन सभी लोगों पर खोज-खोजकर चोट करना प्रारम्भ किया। उनकी मान्यता थी कि जिस प्रकार भी मनुष्य वर्तमान परिस्थिति से अच्छा बन सके वही कार्य करना चाहिए। अपने जीवन दर्शन के विषय वे बतलाते "आरम्भ में ही राजनैतिक लोगो के साथ रहने के

---

१ समय चेतना - अक्टूबर १९९५- ३०

कारण राजनैतिक चेतना मुझमे थी। वे लोकतान्त्रिक समाजवादी लोग थे जिनके नेता जय प्रकाश नारायण थे पहले आम चुनाव मे इनका सफाया हो गया। इनमे खीझ आयी और फ्रस्ट्रेशन आया और वे टूट-फूट गये। सयोग से तभी मेरा सम्पर्क कम्युनिष्ट पार्टी से हो गया और मार्क्सवादियो के सम्पर्क से मैने बहुत कुछ सीखा।"[१]

आपके दर्शन का एक अन्य स्थान पर पता चलता है "लेखक यही बताता है कि समाज मे यह बुरा है, यह असगत है, यह कल्याणकारी है। वह ऐसा इसलिए करता है क्योकि वह दु खी है कि इतना बुरा क्यो हुआ ? वह एक बेहतर मनुष्य, एक समाज व्यवस्था के प्रति आस्था रखता है इसलिए जो बुराई आज उसे दिखती है उन्हे इगित करता है। डॉ अगर मरीजो को रोग बताता है तो वह निराशावदी नही, नकारात्मक और सिनिकल नही है वह आदमी को स्वस्थ करना चाहता है, इसलिए रोग बताता है, अगर वह रोगी से कह दे कि वह तो स्वस्थ है तो वह मर जायेगा, यह लहजा क्या सकारात्मक है ?

परसाई की जीवन-दृष्टि मार्क्सवाद से प्रेरित रही है। वे अनुभवों से परिपक्व अवश्य हुए लेकिन उनकी धारणा मे मार्क्सवाद ही वह दर्शन है जो जीवन की सही तरीके से व्याख्या करता है। "मैने दर्शन और इतिहास बहुत पढा। भारतीय दर्शन मैने पूरा पढा है। पश्चिम में सुकरात से लेकर, कॉट, हीगेल, मार्क्स सब पढा है। पर मुझे विश्वास हे कि समाज में मानवीय सम्बन्धो का न्याय पूर्ण हल मार्क्स वाद ने ही दिया है।

परसाई को प्रभावित करने वाले व्यक्ति

कबीर परसाई के आदर्श पुरूष थे। उनके फक्कडाना अन्दाज, घर-फूँक तमाशा देखने का साहस, लापरवाही तथा अखण्ड विश्वास ने परसाई को अधिक प्रभावित किया।

कबीर सच्चे अर्थों में समाज के सिपाही थे जो समाज को सुधरने के लिए प्रेरित करते

---

१ सं कमला प्रसाद - आँखन देखी - ४९

थे। कबीर विसगतियो को समाप्त करने के लिए काव्य रचना करते हैं वे इसके लिए अपनी आत्मलोचना करने से भी नही चूकते है। परसाई कबीर की भाँति स्वीकार करते है" मै काफी बेहूदा हूँ मै पहुँचते ही आयोजको के चेहरो व्यवहार और आवभगत, से हिसाब लगाना शुरू कर देता हू कि ये अच्छे पैसे देगे या नही।"[१] कबीर धर्म निरपेक्षता की प्रतीक थे। ऑखन देखी की बात करते थे। परसाई भी कबीर की भॉति दुनिया को देखकर आत्मसात करके उसे अभिव्यक्ति देते थे। परसाई कबीर की परम्परा को और अधिक आगे ले जाते लेकिन वर्तमान प्रेस और उसकी प्रबन्ध व्यवस्था के कारण परसाई को पूरा अवसर नहीं मिला, अपनी अभिव्यक्ति क्षमता के प्रदर्शन का। उनके तमाम कालम इसलिए रोक दिए गये क्योकि व्यवस्थापक को उनकी खरी खरी बाते सुहाती नही थी। "आज छापाखाना बीच मे आ गया और बीच मे आ गये छापाखाने के मालिक जो धन–दौलत और पार्टीगत स्वार्थ भूल–भूलैयो मे परसाई की उस वाणी को फटकने नही देते जो वास्तव मे परसाई को कबीर बनाने मे समर्थ हुए है। इस कबीर के 'कितने सुनो भाई साधो' के कालम छपने से रुक गये। क्योकि छापेखाने के मालिक इस कबीर की फक्कडता को नही झेल सकता है।"[२]

परसाई कबीर की कुछ पक्तियों को दुहराते है। जैसे– हम न मरिहै मरिहै, ससारा। सब कहते कागद की लेखी मै कहता ऑखन देखी। तो उनके चेहरे पर सहज तेज दौड जाता है। सूनोभाई साधो' 'माटी कहे कुम्हार से, कविरा खडा बाजार मे आदि कालम उन्होने कबीर से प्रभावित होकर ही लिखा था। परसाई कबीर से अधिक जन मानस को समझते है। जहाँ कबीर धार्मिक एव सामाजिक कॉइयेपन को उजागर करते है वही परसाई देश विदेश के बीच दर्शन, धर्म, आर्थिक सभी क्षेत्रो मे देख आते है। कबीर के प्रभाव मे आकर परसाई मे भी बेफ्रिकी, निर्भीकता और जीवन की समस्या आती है। भारतेन्दु, प्रताप नारायण मिश्र, निराला,

---

१ सं. कमला प्रसाद – ऑखन देखी – २५

२ स कमला प्रसाद – आखन देखी – ६३

नागार्जुन आदि सभी मे औघडाई आती है परसाई औघडाई मे सबसे आगे है वे कही न कही कबीर से बेहद जुडे है परसाई जी हिन्दी साहित्य मे दूसरे कबीर है जो धर्म राजनीति एव व्यवस्था की विद्रूपता को बिना किसी खटके के साथ समाज के समक्ष रखते है। परसाई ने कबीर की परम्परा से अपने को जोडा है कबीरदास ने 'जतन' से चदरिया ओढी फिर भी अगर कही–कही फट गयी है तो हमारे आने वाले साथी रफू करवा लेंगे।

परसाई और मार्क्स

मार्क्सवाद ने सम्पूर्ण विश्व को एकजुट किया है। वह सामाजिक परिवर्तन मे नही क्रान्ति मे विश्वास करता है। वह सामन्तवादी पुरानी व्यवस्था को समाप्त करने के लिए तत्पर रहता है। अपने सिद्धान्तो मे वह द्वन्द्वात्मक भौतिक वाद और श्रम को अधिक महत्व देता है। उत्पादन के साधनो द्वारा इतिहास की व्याख्या करता है। उत्पादन कभी भी अकेले नही किया जा सकता है वह आपसी सहयोग पर निर्भर है।

मार्क्स व्यक्ति की स्वतन्त्रता को स्वीकार नही करता है। समाज मे पुराने मूल्यों का विध्वस और नये मूल्यो की स्थापना होती रहती है। समाज के आपसी अर्न्तविरोध से ही समाज का विकास होता है। वर्तमान व्यवस्था में सर्वहारा और पूँजीवाद के बीच हमेशा द्वन्द्व चलता रहता है।

परसाई ने 'चूहा और मै' नामक कहानी मे इसी तरह की क्रान्ति का पक्षलिया है। वे लिखते है। तुम जिसे अपने हक का समझते हो उसे सत्ताधीशों के सिर पर सवार होकर वसूल कर लो उनके अनुसार मुक्ति कभी अकेले नही मिलती है। परसाई मार्क्सवाद से गहरे रूप से प्रभावित थे। "मार्क्सवादी हूँ, बेवकूफ मार्क्सवादी नहीं हूँ। इसीलिए अनजाने बैद्धिक गलती का सवाल मेरे सामने है ही नही। मै मार्क्स की इतिहास की व्याख्या मानता हूँ। वर्ग सघर्ष में विश्वास करता हूँ।" "मैं ठेठ जनवादी हूँ और यदि मार्क्सवादी दलों को मेरे लेखन से

सहायता मिलती है तो ठीक बात है।"[१]

"वे मार्क्सवादी विचार धारा से प्रतिबद्ध है। उन्होने पूँजीवादी समाज और सस्कृति के विघटनकारी तत्वों का विश्लेषण किया है और समाजवादी जीवन–मूल्यों की पक्षधरता को स्पष्ट किया है कि परसाई के व्यग्य सोद्धेश्य है। परसाई ने आधुनिक भारतीय समाज मे सडते हुए वर्ग–वैषम्य के स्तर–दर–स्तर की खोज की है। वे भारत के इतिहास मे घुसे है। पुरातन–दर्शन धर्म–नीति और आचार मान्यताओं से परिचित है। उन्हे भारतीय मन से ऐतिहासिक विकास की जानकारी है उन्होने भारतीय इतिहास के प्रत्येक युग के सामाजिक सम्बन्धो का विश्लेषण किया है। इसलिए परसाई आधुनिक समाज के शत्रुपूर्ण अन्तर्विरोधी को पकडने में सफल हुए है।"

"परसाई ने भारतीय समाज की वर्ग–विसगति को पहचाना है उसे अपने लेखन में खोल–खोलकर नगा किया है। खूब उघारा है तथा उसके मर्म स्थलो पर चोट की है। इस तरह परसाई ने भारत के जीवन–दर्शन की मार्क्सवादी मीमासा की है।[२]

परसाई की व्यंग्य दृष्टि

किसी भी सफल रचनाकार के लिए आवश्यक है कि वह उसकी रचना मे यथार्थ भविष्य की रचनात्मक सवेदन सस्कृति विद्यमान हो। इसके अभाव में रचना मृतप्राय और निष्चेष्ठ होती हें इसके लिए आवश्यक है कि रचनाकार को यथार्थ–बोध की द्वन्द्वात्मक समझ हो। समकालीन गुण तत्वों की प्रगति मान प्रारूप उपस्थति हो। रचनाकार के अन्दर एक पूरा समाज और एक समूचा युग अपने बाहरी और भीतरी अर्न्तविरोधों के साथ उद्धेलित हो। रचनाकार को इसी समय अपनी रचनात्मक अन्तर्विरोधो के बीच हल खोजना पड़ता है। जागने

---

१ सं कमला प्रसाद – ऑखन देखी – ५७

२ सं कमला प्रसाद – ऑखन देखी – २६७

वाले का रोना कभी खत्म नही होता"

भारतीय सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्था इस कोटि की थी एक तरफ स्वतन्त्रता का बिगुल बज रहा था तो दूसरी तरफ भ्रष्टाचार का भोज हो रहा था। मानवीय आचरण और मानवीय विद्रूपताए इस कदर फूल करके समाज के ऊपर उतराने लगी जैसे किसी तालाब को मथ दिया गया हो और पूरी गन्दगी ऊपर आ गयी हो। पूँजीवादी जीवन प्रणाली और नव स्वतन्त्र मन चेतना के बीच एक अन्तर्विरोध स्वाभाविक रूप से जन्म लेना प्रारम्भ किया। इस बीच लेखक एव रचनाकार को एक पक्ष लेना पडा कि वह पूँजीवादी व्यवस्था का साथ दे अथवा उस व्यवस्था का जो समाज का प्रतिनिधित्व कर रहा है। "अधिकार सम्पन्न सम्पत्तिशाली वर्गो का नग्न दमन। इस भयानक यथार्थ के बीच सतह के आदमी के दु.खपूर्ण जीवन वास्तविक स्थितियो को विश्लेषित कर सामने प्रस्तुत करना और व्यापक सामाजिक और वैयक्तिक पाखण्ड और मूल्यहीनता के विरूद्ध करना यह परसाई के व्यग्य रचना की जमीन है अपनी वैचारिक दृष्टि के साथ उन्होने इस भीषण यथार्थ का सामना किया है। और इस आदमी के साथ अपनी सम्बद्धता प्रकट की है। जो एकदम सतह का आदमी है।"[१] इसमे हरिशकर परसाई ने भारतीय मनुष्य की मुक्ति का रास्ता देखा।

अगर परसाई का व्यग्य हथियार है, तो करूणा का एक रूप भी। परसाई के पास एक दृष्टि है "मैने विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त विसगतियों पर व्यग्य किया है तो मैने यही बतलाने की चेष्ठा की है कहाँ क्या गलत है और उसे बदलना चाहिए।"[२] परसाई की निगाह मे जो गलत है वह समाप्त होना चाहिए।

परसाई व्यक्ति समाज और समूचे राष्ट्र की भीतरी कक्षाओं में घुसते हैं और गुँथी हुई,

---

१ डॅ मनोहर लालदेवलिया - हरिशकर परसाई की दुनिया - १५

२ समय चेतना - अक्टूबर, १९९५ - ३०

उलझी हुई, गाँठो भरी व्यवस्था मे विद्रूपो, विसगतियो, और विडम्बनाओ को सामने लाते है। इस तरह परसाई ने समूची, सास्कृतिक अधिरचना को अपने लेखन का विषय बनाकर प्रस्तुत किया है। परसाई आधुनिक भारत के सामन्तवादी–पूँजीवादी, सामाजिक व्यवस्था की शल्य चिकित्सा की है उसके बीमार दिमाग और भष्ट आचरण की गन्दगी और बदबू को साफ किया है।

परसाई की व्यग्य दृष्टि से कई पहलू उभरकर सामने आते है। प्रारम्भ से लेकर अन्त तक परसाई की दृष्टि मे परिपक्वता आती रही है और उनकी दृष्टि को एक नयी जमीन मिलती रही है। मानवीय प्रतिबद्धता से, युगीन समस्याओ से रचनाकार बहुत अधिक टकराता है। इसी कारण छोटी–छोटी घटनाओ को आधार बनाकर परसाई रचना कर सकते है। रजनीश को आधार बनाकर 'टार्च बेचने वाला' कहानी लिखे। परसाई अपनी दृष्टि से उनघटनाओ को खोज निकाला जिनसे विसगतियों का जन्म होता है। परसाई की दृष्टि को व्यापकता से जितना विशाल लोक शिक्षण किया है। वह उस समय की आवश्यकता थी। परसाई भारतीय मनुष्यता की क्षुद्रता एव सहायता का एक–एक चित्र खीचने मे सफलता पायी है दृष्टि की सूक्ष्मता के कारण ही परसाई संवाद एव भाषा पर भी गहरी पकड बनाने में सक्षम है।

एक रचनाकार की पूँजी उसका अनुभव ससार हैं अनुभव का ज्ञान आदमी को नयी दृष्टि देता है। जीवन अनुभव की विविधता से आदमी के लेखन उद्देश्य में भी विविधता आती है। कभी–कभी अनुभव का सही विश्लेषण न होने पर उससे प्राप्त सज्ञान गलत होता है। इसलिए आवश्यक है कि अनुभव का विश्लेषण सही दिशा मे किया जाय। जीवन की विराटता में सही विश्लेषण हो ही जाय यह आवश्यक नही है। परसाई ने जीवन अनुभव को सारे कोणो से विश्लेषण करके व्यंगय की अपनी सूक्ष्म दृष्टि का परिचय दिया है।

परसाई अनेकों मनुष्यों के व्यवहार आचरण तथा इसके आचरण एव व्यवहार को

प्रभावित करने वाली परिस्थितियो घटनाओ का विश्लेषण बडे ही सूक्ष्म ढग से किया है। इस प्रकार परसाई का आदमी अपने परिवेश से अजनबी नही है वह उससे पूरी तरह सम्पृक्त है।

परसाई की रचनाए एलीट वर्ग की भाषा मे प्रस्तुत नहीं है उनका उद्देश्य शब्द चमत्कार करना नही था। बल्कि भाव उत्पन्न कर जनता की भावनाओ को जगाकर, लडने के लिए प्रेरित करना था। इसके लिए वे उन्ही की भाषा में उनकी तकलीफों को समझाते है और जब पाठक समझ जाता है तब लडने के लिए उठ खडा होता है।

परसाई के लेखन काल से लेकर अन्त तक व्यग्य चेतना और व्यग्य दृष्टि के विकास के कई चरण आये। शुरू की रचनाओ मे परसाई की दृष्टि उतनी स्पष्ट नहीं थी। उनका लेखन भावुकता पूर्ण था। वे किसी को चोट नही पहुँचाना चाहते थे। सस्कारित मर्यादावादी व्यग्य लिखते थे। यह लक्षण 'हसते है रोते है', 'तट की खोज', 'ज्वाला और जल' आदि से मिल सकता है। लेकिन बाद की रचनाओं में उनकी व्यग्य प्रखरता बडी तीक्ष्ण एव स्पष्टवार करने वाली बनी।

परसाई ने तुलसी की समन्वयवादी, आदर्शवादी लोक दृष्टि के विपरीत कबीर की क्रान्तिकारी लोक दृष्टि को अपनाया। परसाई की दृष्टि वहाँ भी पहुँची है जहाँ नौकरशाही घूस में नारद की वीणा रख लेती है। (भोला राम का जीव) तो घूस लेने के कारणो को खोजते हुए उन्होने उसे ढूँढ निकाला (सदाचार का ताबीज)। आदमी अपने अधिकारो के लिए नही लड रहा है। लेकिन चूहा लड रहा है। (चूहा और मैं) इसी प्रकार 'गाँधी की शाल' और 'लँका विजय के बाद' 'आजादी की घास' मे उन्होने आजादी के लिए लडने वालों की मानसिकता का स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया है। परसाई की दृष्टि आर-पार की दृष्टि है "उनकी रचनाओं में राजनैतिक सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक विसगतियों का सम्पूर्ण लेखा-जोखा उपलब्ध होता है। इन विसंगतियो के प्रति रचनाकार की दृष्टि मात्र व्याख्यात्मक नही है। वे

इन्हे सास्कृतिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य मे उभारते है। और उन कारणो की तह तक जाते है जो इन्हे जन्म देते है।"[१]

परसाई की रचना दृष्टि मौलिक है उनका पूरा लेखन अनुभव और मार्क्सवाद के गहन अर्थो के चिन्तन से उदभूत है। वे आत्म व्यग्य भी करते हैं। लेकिन इसके माध्यम से समाज के एक वर्ग के प्रतिनिध का ही चुनाव वे करते है। इस प्रकार परसाई विचारात्मक अनुशासन की राजनीति के सबल तर्को से मिथ्यावादी सास्कृतिक आचरण और चिन्तन के विरूद्ध यथार्थ वादी विकल्प को ही सामने रखा है।

परसाई की विचारधारा

परसाई ने अपने लेखन का केन्द्र समाज के छूत अछूत सभी विषयों को चुना है। इसमें धार्मिक, शैक्षिक, साहित्यिव, सामाजिक, व राजनीति, सम्बन्धी विषयो पर विचार करना उचित है।

धर्म सम्बन्धी विचार

विश्व के सभी धर्म सदभाव प्रेम और भाई चारा की भावना को लेकर ही प्रकट हुए थे लेकिन उनके अनुयायी सिद्धान्तों के विपरीत कार्य करने लगे। धर्म का जो वास्तविक तत्व है उसे छोडकर, उसके बाहरी रूप को ग्रहण कर लिया है।" तत्व को खो दिया है, तप को पकडे बैठे है। इसीलिए झगडे होते है धार्मिक दगों में जो लडते है वे क्या भक्त लोग होते है उनको धर्म से कुछ लेना देना नहीं। ईश्वर को वे कुछ नही समझते वे ऐसे होते है जो किसी भी धर्म के लिए कलक होते है। गुण्डे, हुल्हडबाज और गुण्डे।"[२] धर्म का जो वास्तविक तत्व है उसे भुलाकर आडम्बर किये जा रहे है। धन के चोचले बताये जा रहे है। मैने पहले

---

१. परसाई रचनावली - खण्ड चार, पृष्ठ २

२ परसाई रचनावली - खण्ड छः, पृष्ठ ४१

भी कहा था कि जिस धर्म के पालन करने में लाख रूपये लगे, वह धर्म नही धधा होगा।"[१] सभी धर्मो मे ऐसे पाखण्ड का जन्म हुआ है। "सबधर्मों को उसके भक्तो ने ही कलकित किया है। सनातन धर्म वाले कभी बौद्धो के सिर काटते थे। फिर बौद्ध राज्य हुए तो सनातन धर्मियो के मस्तक उतारने लगे। इसाई धर्म वाले हिरोशिमा में बम पटकते है। और ओयान मे नरसहार करते है। इस्लाम वाले कश्मीर में लूट, आगजनी हत्या करते है। जैन धर्म वाले पानी छानकर पीते है, मगर खुले बाजार आदमी का खून बगैर छना पी जाते है।"[२]

व्यक्ति समाज मे प्रतिष्ठा पाने के लिए लाखों रूपये का घी, दूध, दही पानी की तरह बहा देता है। इस सन्दर्भ मे वे लिखते है कि "उसे यह नही मालूम कि उसके देश का उसके देश का अर्थमत्री तमाम दुनिया मे हाथ फैलाये भीख माँग रहा है उसे यह नहीं मालूम कि उसके देश का अर्थ मत्री तमाम दुनिया मे हाथ फैलाये भीख माग रहा है उसे यह नही मालूम कि पचवर्षीय योजना के लिए हमारे पास पैसे नहीं है।"[३] ऐसे लोगो से परसाई का कहना हे कि "तुम वो तीन लाख रूपये बर्बाद न करके समाज के हित मे लगा दो। अस्पताल खुलवा दो, भिखारियों के सोने के लिए सराय बनवा दो। शिक्षा सस्था खुलवा दो। उपाधि चाहे जो ले ले, सारे समाज से आरती उतरवाने पर देश का धन बर्बाद न करे। घी को आदमी के पेट मे जाने दे, रथ के पहिये मे न डाले।"[४]

परसाई का धर्म मानवीयता का धर्म है वह मानवता को सबसे बडा धर्म मानते हैं वे लिखते है कि "धर्म से बडा कोई नही है मनुष्य का जिससे कल्याण होता है वह धर्म है

---

१ परसाई रचनावली – खण्ड छ., पृष्ठ ५४-५५

२ परसाई रचनावली – खण्ड छः, पृष्ठ ४१

३ परसाई रचनावली – खण्ड छ, पृष्ठ ४७

४ परसाई रचनावली – खण्ड छः, पृष्ठ ४७

जो मनुष्य का हित करता है वही साधु है जो मनुष्य को ऊपर उठाता है वही सन्त है।"[1] आज के धर्म-सन्दर्भ बदल रहे हैं यज्ञ का अर्थ अब हो गया है उत्पादन बढाना, अशिक्षा दूर करना, नहर खोदना, जमीन तोडना आदि। जो धर्म के नाप पर बडे-बडे हवन कुण्डो में लाखो टन घी उडेलता है वह धार्मिक नही पाखण्डी है।

धर्म की विडम्बनाए इस कदर बढ गयी है कि यहाँ भक्त पैसे देकर भगवान का नाम जपवाता है आखिर भगवान के पास इतनी तो अकल है कि जाप का फल किसे दिया जाय हमे तो आपका नाम लेने की फुर्सत नही इन्हें पैसे दे दिये है ये तुम्हारी स्तुति गा देगे।" साधो अष्ठग्रहो को बुद्धू बनाने के प्रयत्न चालू हो गये है। जगह-जगह यज्ञ हो रहे है-हजारो लाखो रूपये यज्ञ के लिए चन्दे में मिल जाते है। जहाँ अस्पताल या स्कूल के लिए फूटी कौडी गाँठ से नही निकलती। वहाँ यज्ञ के लिए रूपये निकल आते है इस तरह से यज्ञ हो रहे है कि सारे देश मे धुँआ छा जायेगा। और ग्रहो को दिखेगा ही नही कि भारत कहाँ है बस वे चीन की ओर चले जायेगे"।[2]

मध्य युग में धर्म की सत्ता थी। भारत और विश्व दोनो जगह धर्म की प्रधानता थी लेकिन आज के समय मे विज्ञान और मनुष्य का बोलबाला है वे लिखते है कि "धर्म बीते युग का सिक्का था। जो खोटा हो गया है इसकी मूल्यवत्ता समाप्त हो गयी है"[3]

शिक्षा सम्बन्धी विचार

परसाई जी की मान्यता है कि इस देश में एक परम्परा विकसित हो गयी है कि जो जितने उँचे पद पर कार्य करेगा, वह उतना ही कम कार्य करेगा। यह क्रम प्राइमरी, मिडिल,

---

१ परसाई रचनावली - खण्ड छः, पृष्ठ ४७

२ परसाई - सदाचार का ताबीज, पृष्ठ ९

३ परसाई - पगडण्डियों का जमाना, पृष्ठ ८९

हाईस्कूल, कालेज और फिर विश्वविद्यालय होते हुए पीठो तक पहुँचता है। विश्वविद्यालय के शिक्षक पढाते नही है आर्शीवाद देते है। "अब साधो जहाँ तक अच्छे नम्बर मिलने और पहला दर्जा पाने का सवाल है। प्राइमरी से लेकर विश्वविद्यालय तक सब गुरू कृपा से आती है। गुरू अगर प्रसन्न हो जाये तो अपने प्रिय विद्यार्थी को एकलव्य का अगूठा काटकर दे सकता है।"[१]

शिक्षको की कमी और उनकी दुर्दशा पर परसाई जी लिखते है कि "साधो मुझे लगता है, सरकार जानती है कि देश को शिक्षक बगैरह की कोई खास जरूरत नही है। देश को जरूरत है कलेक्टर की आबकारी अफसर की। शिक्षक एक गैर जरूरी चीज है।"[२]

"साधो शिक्षको को गर्मी की छुट्टी मे नौकरी से अलगकर दिया जाता है और जुलाई में फिर भरती कर लिया जाता है यही कमी है शिक्षकों को रोज मजदूरी पर रखना चाहिये जिससे इतवार तथा छुट्टियो की मजदूरी भी न देनी पडे। सुबह चौक मे शिक्षक इकट्ठे हो और स्कूलो के मैनेजर तथा इसपेक्टर वहाँ से मजदूरी तय करके दिन भर के लिए जरूरी शिक्षक ले आये।"

शिक्षा के मामले विशेषज्ञो द्वारा तय न होकर मन्त्रियो द्वारा तय किये जाते है। इसके ऊपर परसाई जी कहते हैं एक और विचित्र बात है। हमारे यहाँ भाषा और साहित्य के मामले भी मन्त्रियों द्वारा तय किये जाते है। इन मन्त्रियों की शिक्षा साहित्य और भाषा के विषय में कितना ज्ञान है यह कोई बताने की बात नहीं है हमारी हर वस्तु का भाग्य विधाता-राजपुरूष था राजनेता है, सर्वज्ञ है। शिक्षा मन्त्रियो ने तय कर लिया है कि अग्रेजी अनिवार्य रूप से

---

१ परसाई रचनावली – खण्ड छः, पृष्ठ ६३

२ सुनो भाई साधो, पृष्ठ ६९

३ परसाई रचनावली – खण्ड ५, पृष्ठ ५६

पढाया जाने वाला विषय होना चाहिए।"[1] पाठयक्रम मे नित नये परिवर्तन होते रहते है। इसके लिए परसाई लिखते है। "शिक्षा मत्री ने बडे साहस से स्थिति को स्वीकारा उन्होने जवाब दिया कि बच्चे गधे को गणेश की अपेक्षा अधिक जानते है और गधा गणेश की अपेक्षा जीवन के अधिक निकट है। यह सही है इसीलिए बच्चो को शुरू से ही समझाना चाहिए कि बेटो, गणेश को भूल जाओ। उनका जमाना गया। आज गधे का जमाना आया है। इस जमाने मे सफलता के लिए गधे का स्मरण करो पढो ग-गधे का।"[1]

भाषा के सन्दर्भ मे परसाई जी कहते है "भाषा वह होती है जिसे लोग बोलते है। वह भाषा नहीं होती जो विश्वविद्यालय और हिन्दी के दर्जनो सस्थान बनाते है"।[2]

बोल चाल की भाषा मे अछूत प्रथा नही मानना चाहिए। बोलचाल की भाषा के अग्रेजी शब्द आ गये है, उन्हे हिन्दी मान लेना चाहिए हिन्दी को अधिक से अधिक दूसरी भाषाओं के शब्द ले लेना चाहिए। तब हिन्दी समृद्ध होगी"।[3]

आज कल शिक्षा को अधिक से अधिक प्राइवेट किया जा रहा है। शिक्षा एक व्यवसाय हो गयी है। लोग दुकान-लगाकर बैठे है उसके सन्दर्भ में परसाई लिखते है "जैसा कि आरम्भ से ही घोषित कर दिया गया है यह कालेज हमारी फर्म की एक शाखा है इसलिए इसके पिसिपल का दर्जा हमारी दुकान के हेड मुनीम के बराबर रहेगा और प्रोफेसर लोग मुनीम माने जायेंगे।"[4]

एक कुलपति से भेट मे परसाई लिखते हैं कि ये सब गुण्डे और तुम्हारे जैसे आदमी इन्हे बिगाड़ते है न पढने के लिए छात्र आते है और न पढाने के लिए अध्यापक। अध्यापक

---

१ परसाई रचनावली - खण्ड ५, पृष्ठ १५४

२ परसाई - ऐसा भी सोच जाता है, पृष्ठ १२१

३ परसाई - ऐसा भी सोचा जाता है, पृष्ठ १२२

४ परसाई रचनावली - खण्ड ४, पृष्ठ ४३४

हाजिरी और तनख्वा के लिए आते है और छात्र ऊधम करने और नकल करने के लिए।

समाज सम्बन्धी विचार

परसाई समाज की सडान्ध को दूर करने के लिए तत्पर है। वे स्वय यही उद्देश्य बनाकर लेखन कार्य करते है। "समाज की अव्यवस्था दूर करने के लिए सामान्य जन को सजग करते हुए परसाई लिखते है कि अव्यवस्था दूर करने के लिए ठोस कदम उठाना होगा। मात्र भाषणो, लेखो, और सर्कुलरो से समाज की स्थिति नहीं सुधर सकती। इसके लिए समाज की व्यवस्था मे आमूल परिवर्तन लाना होगा। बिना व्यवस्था में परिवर्तन किये, भ्रष्ठाचार के मौके बिना खत्म किये और कर्मचारियो को बिना आर्थिक सुरक्षा दिए भाषणों, सर्कुलरो, सदाचार समितियो, निगरानी आयोगो द्वारा कर्मचारी सदाचारी न होगा।"[१] इसके माध्यम से परसाई उन परिस्थितियो को समाने लाते है जिसके कारण विसगतियो उत्पन्न होती है।

आज अल्प समय में और कम मेहनत से लोग सफलता प्राप्त करना चाहते है। परसाई का यही पगडन्डियो का जमाना है। आज वे लोग पागल या मूर्ख समझे जाते है जो आम रास्ते से सफलता प्राप्त करना चाहते है। "सफलता के महत्व का सामने का दरवाजा बन्द हो गया है। कई लोग भीतर घुसे है और उन्होने कुण्डी लगा दी है। जिसे उसमें घुसना है वह समाज नाक पर रखकर नाबदान मे घुस जाता है।"[२]

परसाई उन बुर्जगों पर चोट करते है जो खुद तो फैशन के सारे कार्य करते है लेकिन युवाओ को इसके लिए मना करते है। इससे सकीर्ण और कुन्ठा का जन्म होता है। "तुम्हारे बुजुर्गवार जो स्वय करते है उसे दूसरो के लिए वर्ज्य मानते है। ढलती उम्र का बूढा बालों में खिजाब लगाता है और ताकत की गोलिया खाता है पर अगर उसकी तरूणी लडकी आइने

---

१ परसाई – बटी का सदाचार, पृष्ठ ९

२ परसाई – पगडन्डियों का जमाना, पृष्ठ ८०

के सामने ज्यादा देर खडी रहे तो उसे यह लगता है कि यह गलत है। रात की काली चादर ओढकर सब कुछ करने वाले दिन निकलने पर कैसे सभ्य बन जाते है। तुम्हारे सामाजिक जीवन का पाखण्ड है यह जिसके कारण असख्य युवक युवती अपने जीवन को अन्त करने योग्य समझते है।"[१]

परसाई लिखते है कि "समाज में वह शक्ति आनी चाहिए कि सामाजिक मिथ्यावाद, असामाजिक कृत्य और समाज के लिए हानिकारक कर्मो का विरोध कर सके। तुम कहो प्रधानमत्री अभी देश पर सकट आया है।[२]

हमारी सस्कृति का मूल स्वर है–

सर्वेन सुखिन, सन्तु सर्वे सन्तु निराः मय. ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु खमाप्नयात् ।।

सबकी मगल कामना। सब सुखी हो। यह सस्कृति लोग से आयी है और शास्त्र बद्ध हुई है। किन्तु आज यह भावना खत्म हुई है। समाज का एक सुशिक्षित डॉक्टर सोचता है क्या डल सीजन है। साला हैल्थी सीजन चल रहा है प्रैक्टिस आधी रह गयी है।"[३] परसाई अनुभव करते है कि "मानव सेवा मे बहुत खतरे है मेरा दो बार घिराव हो चुका है और तीन बार पिट चुका हूँ।"[४]

---

१ परसाई रचनावली – खण्ड ६, पृष्ठ ४३
२ परसाई रचनावली – खण्ड ६,पृष्ठ ५१
३ भेंट चम्पाराम से, पृष्ठ ११३
४ भेंट चम्पाराम से, पृष्ठ १४०

साहित्य सम्बन्धी विचार

साहित्य को समाज की आवश्यकता पडती है क्योकि वह केवल भोजन करके जिन्दा नही रह सकता है। साहित्य समाज को, अपने को समझने के लिए प्रेरित करता है। साहित्यकार सृजन तो अकेले करता है लेकिन उसके मानस मे सम्पूर्ण समाज का अनुभव सशलिष्ट रहता है। साहित्य सृजन को लेकर वे कहते हैं कि "साहित्य का निर्माण कोई ईंट गारे की इमारत नही है जो कोई भी विशेषत॰ डिप्लोमा लेकर तैयार कर सकता है। यह तो एक भगीरथ प्रयास है जिसके लिए उत्साह, आत्मा की उज्ज्वलता, और पुण्य की धरोहर आवश्यक है। गगा को पृथ्वी पर लाने की सभी की इच्छा है। पर भगीरथ बनने का प्रयास कोई नही कर सकता है। उनकी परिकल्पनाए उनके जप-तप बस बादलो को चन्द बूदे ही आसमान से जमीन पर ला पाते है सभवत इन्हे ही वे गगा के छीटे समझ रहे है।"[१]

परसाई ऐसे रचनाकारो को आगे बढने का अवसर देना चाहते है जो समाज को बदलना चाहते है उसके अनुसार साहित्य में बुढापा वालो के सफेद होने और झुरिया आने से नहीं होता है साहित्य में बुढापे का अर्थ है नवीन चेतना को ग्रहण करने की शक्ति का लोप हो गया हो।

"मै शाश्वत साहित्य रचने का सकल्प लेकर लिखने नहीं बैठता जो अपने प्रति ईमानदार नही होता। वह अनन्तकाल के प्रति कैसे हो जाता है ये मेरी समझ से परे है।"[२] साहित्य भारत मे कभी व्यापार नही रहा। साहित्य ने यहाँ हमेशा मार्ग दर्शन का कार्य किया है "साहित्य हमारे यहाँ व्यापार कभी नही रहा। जो उसमें बनना चाहते है वे बेहतर है आढत की दुकान खोलें। यह वह धर्म रहा है जिसमे मिटना पडता है। कबीर की तरह घर फूँककर निकलना है।"[३]

---

१ परसाई रचनावली – खण्ड ६, पृष्ठ २४४

२ परसाई – रानी नागफनी की कहानी

३ परसाई रचनावली – खण्ड ६, पृष्ठ १९७

परसाई किसी भी बने-बनाये साँचे को तोड डालते है। चाहे वह कहानी हो अथवा निबन्ध। छायावाद मे भी लोग अपनी सामर्थ्य के अनुसार शब्द डालकर कविता तैयार करते थे। वे प्रकृति सादृश्य विधान के साँचे में कविता करते है। "जीवन को विचित्र करने के लिए जीवन देखना पडता है, समझना पडता है। मानव-जीवन गणित के सूत्रों पर आधारित नही होता वह मनोविज्ञान के नियमो से भी बँधा नही होता। साँचे मे ढला साहित्य प्राणहीन होता है।"[१] साहित्य जीवन से साक्षात्कार करता है।

राजनीतिक नेताओ की तरह साहित्यकार भी बडे-बडे गुटो मे बँटे है वे जन आन्दोलन करते है इस पर परसाई कहते है- "भारतीय लेखक एक साथ दो युगो मे जीता है मध्ययुग में और आधुनिक युग मे वह कुम्भन दास की तरह घडे बनाकर नही जीता है पर कहता है कि 'सन्तन कहा सीकरी सो काम'। वह रैदास की तरह जूते नही सीता, कबीर की तरह कपडे नही बुनता, मगर बात उन्हीं के आदर्शों की करता हैं।"

यह एक छद्म क्रान्तिकारिता है, इनाम लेने की कोशिश मे पीछे नही, अकादमियों के लाभ के लिए बराबर प्रयत्नशील अच्छी सरकारी नौकरी की बराबर तलाश मगर साथ ही यह भी सरकार लेखक को खरीद रही है। आप तो बाजार मे खुद माल की तरह बैठे हैं और खरीदार को दोष देते है कि कमबख्त हम लोगों को खरीद रहा है। फिर खरीदार क्या सिर्फ सरकार ही है ? क्या इससे बडे खरीदार नहीं है और क्या माल बिक नहीं रहा है।

हिन्दी में आलोचना की दुर्गति पर परसाई जी लिखते है कि आलोचना की स्थिति बडी दयनीय है विशेषकर आलोचको के बारे मे सोचा जाता है कि वे अपने समय के साहित्य से परिचित हो व विचार रखने में जल्दबाज न हो "पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है

---

१ परसाई रचनावली - खण्ड ६, पृष्ठ १६१

कि हिन्दी मे जो पढता है वह आलोचना नही लिखता है और जो आलोचना लिखता है वह पढता नही। हमारा ख्याल है कि हिन्दी का सब काम बडा वैज्ञानिक है डिवीजन आफ लेबर' हो गया है।[१]

साहित्यकारो के मौसम के लिए लिखने पर परसाई अपनी लेखनी चलाते है" चीनी हमले के समय जो कुछ लिखा गया या तो आत्मवादी लेखको के द्वारा या उनके द्वारा जिन्हे परसाई ने तीज-त्यौहार लेखक कहा है। ऐसा लेखक उनके अनुसार दिवाली आने पर दीपोत्सव पर लिखता है और सूरदास की जयन्ती पर लिखता है 'भारत मे फिर से आजा कवि सूरदास प्यारे' स्थितिया उनके लिए बनकर आती है। राखी है, बसतोत्सव है, होली है, और चीनी आक्रमण है कोई पर्व उससे बिना लिखे बच नही सकता। किन्तु इन पर्ववादियो की बात छोड दी जाय तो जो बडे प्रसिद्ध लेखक है उनकी उपलब्धि क्या रही ? क्या उन्होने जो लिखा उस सत्य का ईमानदारी से अनुभव भी किया जाय। जिन्होंने कभी युद्ध नही देखा उन्होने युद्ध साहित्य लिखने का दावा किया।

राजनीति और साहित्य के सम्बन्ध मे परसाई जी लिखते है कि "आजकल राजशक्ति और साहित्य का सघर्ष तीव्र होता जा रहा है। राजनेता सरकते हुए धीरे-धीरे साहित्य के मच पर आसीन हो जाते हैं। कुछ पीछे के दरवाजे से घुस आते है लज्जा तो हमारे हिस्से मे पडी है कि हम गाजे-बाजे के साथ साहित्य के मन्दिर में राजनीति की प्रतिमा स्थापित कर देते है। फिर नमन तो करते ही है जो नही करते उन्हे बुरा कहते है।"[१]

---

१ परसाई रचनावली - खण्ड ६, पृष्ठ १९१

२ परसाई रचनावली - खण्ड ६, पृष्ठ १९६

राजनीति सम्बन्धी विचार

परसाई मनुष्य को राजनीति से जुडा हुआ मानते है। उनका कहना है कि राजनीति हमारे जीवन का एक अग है। जीवन एक सम्पूर्ण तथ्य है राजनीति हमारे जीवन का हिस्सा है राजनीति मे बडी शक्ति होती है वह मनुष्य की नियति तय करने लगी है।"[१] विभिन्न प्रकार के वादो पर परसाई अपनी कलम चलाते है" गाँधीवादी और समाज वादी दोनो पगडण्डी माँगते है आसान रास्ता माँगते है अखबारो की सुर्खिया माँगते है, फूल मालाए माँगते है, स्टट मागते है इस गरीब की रोटी छीनी जा रही है यह नारा लगाते रहो। मगर जो रोटी छीनता है उससे न उलझे तो समाजवाद की रस्म अदा हो गयी।"[२]

आजकल राजनीति लोगो की बपौती हो गयी। यद्यपि राजतन्त्र समाप्त होकर प्रजातन्त्र यहाँ आ गया है फिर भी उनके वशज ही लगातार राजनीति में प्रवेश करते रहते हैं।" सुदामा के चावल मे कृष्ण कहते है कि "मेरी स्थिति तुम क्या समझोगे मैं यही नहीं समझ पाता कि कौन मेरा है और कौन पराया। जबसे मुझे यह राजपद मिला है असख्य आदमी मेरे आत्मीय हो गये है। पचीस सहस्त्र भतीजे, दस सहस्त्र मौसिया, और सहस्त्रो चाचिया आ चुकी है।"[३] साहित्य और सत्ता के सम्बन्ध मे वे आ चुकी है। साहित्य और सत्ता के सम्बन्ध मे वे एक साक्षात्कार में कहते है। "हर रचना यथास्थिति के विरोध मे होता है। सत्ता चाहे राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक या सामाजिक हो यथास्थिति वादी हो जाती है क्योंकि उसी मे उसकी सुरक्षा है। लेखक इस यथा स्थितिवाद को तोडना चाहता है जिससे मनुष्य समाज आगे बढ सके और उसकी जिन्दगी बेहतर हो। यही लेखक और सत्ता का टकराव होता है।"[४]

---

१ सारिका, १ मार्च १९८०, पृष्ठ ३१

२ माटी कहे कुम्हार से, पृष्ठ ८२

३ परसाई – जैसे उनके दिन फिरे, पृष्ठ ३५

४ समय चेतना – अक्टूबर १९९५, पृष्ठ ३२

राजनीति मे सब कुछ पूर्व निश्चित होता है। यहाँ लडाई भी इसलिए लडी जाती है क्योकि इससे दोनो लोगों को फायदा होता है। 'जनाब भुट्टों से भेट' मे वे लिखते है कि "राजनीति मे सबकुछ होता है आपस में तय करके लडाई भी होती है"। उधर उनकी हालात खराब है इधर मेरी। क्यों न हम लोग १५ दिन की एक लडाई और लड ले एक टूर्नामेन्ट सरीखा। मै अमेरिका से हथियार ले आऊँगा और वे रूस ले ले। फिर हम दोनो ५ साल तक जनता को बेवकूफ बनाकर मजे में राज कर सकते है"।[१]

'सदाचार की तावीज' में वे कैफियत मे लिखते हैं कि राजनीति बहुत निर्णायक शक्ति हो गयी है । वह जीवन से बिल्कुल मिली हुई है। वियतनाम की जनता पर बम क्यो बरस रहे है ? क्या उस जनता की अपनी कुछ जिम्मेदारी है। यह राजनीतिक दॉव-पेच के बम है। शहर मे अनाज और तेल पर मुनाफाखोरी कम नही हो सकती क्योकि व्यापारियो के क्षेत्रों मे अमुक-अमुक को चुनकर जाना है। राजनीति सिद्धान्त और व्यवहार की हमारे जीवन का एक अग है उससे नफरत करना बेवकूफी है।"[२]

'कहाँ है भारत-भाग्य विधाता ?' मे परसाई नेताओं की और करनी के आचरण को स्पष्ट करते हुए कहते है" लोकतन्त्र के रास्ते पर आम आदमी तो आगे बढ गया है क्योंकि उसका ध्यान चलने पर ही है, मगर नेता पीछे रह गये। वे एक-दूसरे को लत्ती मारकर गिराते है फिर उठते है, हाथ पाँव की चोट सहलाते है एक-दूसरे पर थूकते है फिर लातमार गिरते-गिराते है, धूल चाटते है गोया वही लडते-झगडते भाड झोक रहे है जनता आगे निकल गयी। नेता जब मच पर खड़ा होकर कहता है भाइयो, तुम्हे देश का निर्माण करना है तो लोग फुसफुसाते है इसलिए कि तुमने देश का नाश कर दिया है छात्रों की सभा में नेता कहते

---

१. स्त्र कमला प्रसाद – परसाई, चुनी हुई रचनाए, पृष्ठ ३०४

२ परसाई – सदाचार की ताबीज

है तो लडके कहते है कि इसलिए कि तुम चरित्रवान हो और सुधर नही सकते है।"

"राजनीतिज्ञो के ऊपर लिखते हुए वे उनका चरित्र बतलाते है। भाइयो हमारे हाथ मे देश की बागडोर है। हमे महान उत्तर दायित्व निभाना है यह उत्तर दायित्व क्या है यही कि मै मन्त्री बना रहूँ।"[१]

संस्कृति सम्बन्धी विचार

नेहरू जी ने दूसरो के विचारो को खुले दिमाग से सुनने और पढने को तथा दूसरों के प्रति सहनशीलता का भाव रखने को सस्कृति का लक्षण माना है।

मनुष्य केवल बाहय उपलब्धि से सन्तुष्ट नही होता उसे आन्तरिक सुख की भी आवश्यकता पडती है। मनुष्य मगलमय जीवन-मूल्यो को ग्रहण करना चाहता है। वह आत्मा का उदात्तीकरण और उन्नत भी चाहता है। यही सस्कृति का रूप है। परसाई मानते है कि "सस्कृति एक अनवरत मूल्य धारा है। वह जातियों के आत्म सचेत अस्तित्व से आत्मबोध से आरम्भ होती है। और मुख्य धारा मे सस्कृति की दूसरी धाराये मिलती जाती है। उनका समन्वय होता जाता है, इसलिए किसी जाति की सस्कृति उसी मूलरूप में नही रहती बल्कि समन्वय से वह अधिक सम्पन्न अधिक व्यापक होती है।"[२] परसाई जनता की सस्कृति को ही सस्कृति का वास्तविक रूप मानते है। "सस्कृति वास्तव मे लोक सस्कृति है वह लोक से पैदा होती है, और लोक में व्याप्त होती है। सामान्यजन की सस्कृति होती है और छोटे अभिजात्य वर्ग की दिखावट नही होती पडित नेहरू ने लिखा है कि" भारत की समन्वय संस्कृति है। यह समन्वय लोक जीवन मे है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर की एक कविता है भारत तीर्थ इसमें कहा गया है, "भारत महा मानवता का पारावर है। ये मेरे ह्दय इस पवित्र तीर्थ में

---

१ परसाई – चुनी हुई रचनाए – सं कमला प्रसाद, पृष्ठ १४७

२ परसाई – चुनी हुई रचनाए भाग-२ – स कमला प्रसाद, पृष्ठ ४३६

अपनी आँखे खोलो यहॉ आर्य है, यहाँ अनार्य है यहाँ द्रविड और चीनी वश के लोग भी है। शक हूण पठान और मुगल न जाने कितनी जातियो के लोग इस देश मे आये और सबके सब एक ही शरीर मे समाकर एक हो गये।"[१]

परसाई अपनी सस्कृति की बडाई तो करते है लेकिन उसकी मूल्यहीनता पर भी चोट करते है "साधो बात बहुत गम्भीर है वो विदेशी भारत को अभी तक समझ ही नही पाये है भूल जाते है कि हमारी हजारो साल की महान सस्कृति है और यह समन्वित सस्कृति यानि यह सस्कृति द्रविड, आर्य, ग्रीक, मुस्लिम आदि सस्कृतियो के समन्वय से बनी है। इसलिए इलायची मे कचरे का समन्वय करेगे, गेहूँ मे मिट्टी का, शक्कर मे सफेद पत्थर का, मक्खन मे स्याही सोख कागज का। जो हमारे माल मे मिलावट की शिकायत करते है वे नही जानते है 'समन्वय है जो हमारी सस्कृति की आत्मा है। और चाहे कोई एक हमसे एक पान भी न खरीदे, पर हम अपनी प्यारी प्राचीन सस्कृति को नहीं छोड सकते"।[२]

निष्कर्ष

परसाई का लेखन सम्पूर्ण भारतीय समाज का जीवित रूप है। जहाँ समाज का कोई कोना परसाई की समग्र दृष्टि से छूटा नही है। वे जीवन को सुधारने के लिए व्यक्ति को नहीं पूरी समाज व्यवस्था को बदलने की बात करते है। वे कल्पना जीवी नही यथार्थवादी रचनाकार थे। उन्होंने धर्म, राजनीति, शिक्षा, अर्थ, सस्कृति, साहित्य सभी क्षेत्रों की विद्रूपता ओ पर अपनी लेखनी चलायी है। राजनीति के सम्बन्ध में परसाई ने अधिक व्यग्य रचा है। क्योंकि वे राजनीति को मनुष्य का नियन्ता मानते थे। परसाई के लेखन–ससार में विधाओ की विविधता के साथ विचारों की भी विविधता है।

---

१ परसाई – चुनी हुई रचनाएं भाग–२ – सं कमला प्रसाद, पृष्ठ ४३९

२ परसाई – सुनो भाई साधो, पृष्ठ ५६

परसाई का रचना संसार

परसाई का लेखन समाज का सच्चा आइना है। वे भविष्यकर्ता भी है। जबलपुर के प्रहरी १९४७ से परसाई का लेखन शुरू हुआ। इसमें उनकी पहली कहानी 'पैसे का खेल' छपी तब से लगभग ९५ तक उन्होने विभिन्न प्रकार की पत्र-पत्रिकाओ के अलावा दैनिक पत्रो मे नियमित रूप से कालम लिखकर समाज को जागृत ही किया और अपने रचनाकार का कद स्वातन्त्रयोत्तर रचनाकारो में प्रतिष्ठित करा लिया। रवीन्द्र नाथ त्यागी परसाई के अवदान के विषय मे लिखते है कि "आजादी के पहले का हिन्दुस्तान जानने के लिए सिर्फ प्रेमचन्द्र ही पढना काफी है। उसी तरह आजादी के बाद के भारत का पूरा दस्तावेज परसाई की रचनाओ मे सुरक्षित है।"

परसाई का रचना ससार इस प्रकार है –

१ हँसते है रोते है – १९५६

२ तबकी बात और थी – १९५६

३ भूत के पॉव पीछे – १९६२

४ जैसे उनके दिन फिरे – १९६३

५ बेइमानी की परत – १९६५

६ सुनो भाई साधो – १९६५

७ पगडण्डियों का जमाना – १९६६

८ सदाचार का तावीज – १९६७

९ उल्टी सीधी – १९६८

१० और अन्त में – १९६८

११ निठल्ले की डायरी – १९६८

१२ ठिठुरता हुआ गणतन्त्र – १९७०

१३ अपनी अपनी बीमारी – १९७२

१४ तिरक्षी रेखाए – १९७२

१५ वैष्णव की फिसलन – १९७६

१६ मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाए – १९७७

१७ एक लडकी पाँच दीवाने – १९८०

१८ विकलाग श्रद्धा का दौर – १९८१

१९ पाखण्ड का आध्यात्म – १९८२

२० दो नाक वाले लोग – १९८२

२१ काग भगौडा – १९८३

२२ प्रतिनिधि व्यग्य – १९८३

२३ तुलसीदास चन्दन घिसै – १९८६

२४ कहत कबीर – १९८८

२५ हम इस उम्र से वाकिफ है – १९८७

२६ परसाई रचनावली – १९८५

२७ ऐसा ही सोचा जाता है – २०००

परसाई का स्वतन्त्र लेखन १९५७ से प्रारम्भ हुआ। १९५६ मे 'वसुधा' मासिक पत्रिका निकालना प्रारम्भ किया जो आगे चलकर आर्थिक तगी के कारण बन्द हो गया। परसाई 'प्रहरी' मे 'नर्मदा के तट से' शीर्षक अर्न्तगत 'अघोर भरैव' नाम से लिखते थे'। इसके अलावा परसाई इन्दौर अक के नई दुनिया में 'सुनो भाई साधो' साप्ताहिक लेख माला लिखना प्रारम्भ किया। नई कहॉनियाँ में 'उलझी–उलझी' और 'पाँचवा कालम' लिखा।

परसाई ने १९६५ में 'जनयुग' में 'ये माजरा क्या है' साप्ताहिक लेख माला 'आदम' नाम से, एक अन्य लेखमाला 'सुनो भाई साधो' कबीर नाम से लिखी। 'सारिका' मे 'कबिरा खडा बाजार मे' 'कथायात्रा मे' रिटायर्ड भगवान की कथा, परिवर्तन में अरस्तू की चिट्ठी, करन्ट मे 'देख कबीरा रोया' तथा 'माटी कहे कुम्हार से' कालम लिखा। १९८५ से 'तुलसीदास चन्दन घिसै' 'सारिका मे लिखना प्रारम्भ किया। 'गगा' में नियमित रूप से सस्मरण स्तम्भ लिखते रहे।

परसाई की प्रकाशित-अप्रकाशित सभी रचनाओ को एकत्रित करके 'परसाई रचनावली का प्रकाशन १९८५ मे राजकमल से स कमला प्रसाद तथा अन्य लोगों के सहयोग से किया गया है। परसाई रचनावली छ. खण्डो मे विभाजित है। प्रथम खण्ड मे लघु कथात्मक रचनाए, कहाँनिया रेखाचित्र, रिपोतार्ज, सस्मरण आदि है। डॉ धनजय वर्मा ने इसमे 'परसाई की कहाँनिया समकालीन हिन्दुस्तान का केलिडोस्कोव' नाम से लेख लिखा। इसमे कुल ९८ रचनाए है। परसाई रचनावली के खण्ड दो मे 'रानी नागफनी की कहानी' 'तट की खोज' दो उपन्यास कुछ कहानिया और लघु कथाए है। इसमें ४४ कहाँनिया तथा ६६ लघुकथाए है। 'ज्वाला और जल' नामक एक अन्य उपन्यास पाण्डुलिपि न मिलने के कारण छटा नही सका। रचनावली के खण्ड तीन में ललित निबन्धो और पत्रात्मक निबन्धों का सग्रह है। इनकी सख्या क्रमशः ९३ और ३४ है। परसाई रचनावली खण्ड चार मे कुल एक सौ अट्ठावन निबन्ध है जिसमें राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय के साथ, आत्मपरक और वैचारिक निबन्ध सकलित है इसमें परसाई का पहला निबन्ध 'इन्डियनटाइम' भी है जो २० सितम्बर १९५७ को 'प्रहरी' में छपा था। परसाई रचनावली खण्ड पॉच में दो स्तम्भों 'ये माजरा क्या है' तथा 'सुनो भाई साधो' की सामग्री संकलित है इसमें क्रमशः सतम्भ के अठहत्तर और एक सौ आठ निबन्ध है। परसाई रचनावली के अन्तिम खण्ड में कुछ प्रारम्भिक लेख, कहाँनिया, निबन्ध, समय-समय पर छपी उनकी पुस्तकों की भूमिकाए, संपादित आलेख, साक्षात्कार व्याख्यान, एक एक दीर्घ

कथा 'रिटायर्ड भगवान की कथा' आदि शामिल है १९५७ में 'परिवर्तन' मे 'अरस्तू की चिट्ठी' नाम से लिखा गया नियमित स्तम्भ भी इसी खण्ड में सकलित है। इसमे कुल एक सौ पैतीस शीर्षक है।

परसाई के उपन्यास और सामाजिक अर्न्तविरोध

भारतीय सामाजिक सरचना इस कोटि की है कि स्वतन्त्रता के पश्चात भी तमाम प्राचीन सामाजिक तत्व उसी प्रकार से विद्यमान है। भारतीय समाज में सामाजिक चेतना का विकास तो हुआ। लेकिन परम्पराए एव उसकी मानसिकता उसे पुरानी पीढी के साथ ही जीने के लिए विवश करती है। इसको लेकर परसाई ने अपनी सभी रचनाओं मे व्यग्य किये है।

स्वतन्त्रता पूर्व के समय भारत मे विभिन्न कारणों से एक मध्य निम्न वर्ग का उदय हुआ। जो आधुनिकता की तरफ दौडता था लेकिन पीछे से परम्परा उसकी पुकार करती थी जिससे वह मुड जाता था। इस कारण वह हमेशा अर्न्तविरोध मे जीता था, कुण्ठा से ग्रसित था। मध्य वर्ग विभिन्न वर्गों के मनुष्यो का एक समुदाय है यह वर्ग समाज का एक उल्लेखनीय प्रेरक भी है। सघर्ष और समाज सुधार ही इस वर्ग का उद्देश्य है। एक तरफ नैतिक आदर्शों के बल पर समाज की विसगतियों से लडता है। तो दूसरी तरफ असन्तोष की पीडा से ग्रसित हो खुद विसगति का प्रर्याय बन जाता है।

परसाई ने तट की खोज' 'ज्वाला और जल' तथा 'रानी नागफनी की कहानी' तीन उपन्यास लिखे।

(१) तट की खोज – परसाई का यह लघु उपन्यास शिक्षित मध्यम वर्गीय समाज के विखण्डित आदर्शों का यथार्थ चित्र है। महेन्द्र नाथ और शीला के सम्बन्ध काल्पनिक भावुकता से जुडता है लेकिन जीवन संघर्ष की कटुता और यथार्थ की भयकरता के सामने वह टूट जाता है।

उपन्यास की नायिका शीला प्रेम को छोडकर समाज की चुनौती स्वीकार करते हुए अकेले जीवन सग्राम मे उतर पडती है। 'तट की खोज' उपन्यास का मूल प्रश्न नारी की विवशता और प्रेम की विफलता है। कथा के प्रारम्भ मे शीला उस भारतीय युवती का प्रतिनिधित्व करती है। जो पढ लिखकर अपने विवाह की राह देख रही है। परसाई लिखते हैं "हमारे समाज में लडकियाँ शिक्षा प्राप्ति के उद्देश्य से नही वरन लडकोवालो की आकर्षित करने के लिए पढती है।"[१] भारतीय मध्यम वर्गीय समाज के नीरिहिता का परसाई शीला तथा उसके माँ–बाप द्वारा प्रदर्शित किया है बार–बार पिता के लौट आने पर शीला दु:खी होती थी, इसप्रकार सर्वगुण–सम्पन्न होने के बावजूद शीला की शादी नही हो पाती इसी बीच शीला के पडोस मे रहने वाले महेन्द्रनाथ ने शीला को एक प्रेम–पत्र दिया। प्रेमपत्र पाकर शीला एक सामान्ययुवती की तरह उसके प्रेम के सपने देखने लगती है। एक आकस्मिक घटना के कारण शीला का गुण्डों के डर से महेन्द्रनाथ के घर में घुसना तथा महेन्द्रनाथ का कायरता पूर्ण व्यवहार शीला की आत्मिक शक्ति को मजबूत करती है। महेन्द्रनाथ की दकियानूसी सोच से अलग होकर आदर्शों एव कोरे प्रेम का त्याग कर शीला तट की खोज मे आगे निकलती है। उपन्यास के दूसरे हिस्से के रूप मे शीला की सहेली विमला के भाई मनोहर के झुकाव को शीला के प्रति प्रदर्शित करने वाला है मनोहर शीला के प्रति प्रेम का नही बल्कि करूणा का व्यवहार करता है। अन्तत. शीला महेन्द्र और मनोहर को छोडकर अपनी निराशा और कुण्ठा के साथ अन्य स्थान पर चली जाती है और एक नया जीवन प्रारम्भ करती है।

शीला एक सामान्य मध्यवर्गीय दृढ निश्चयी बेसहारा युवती है, जो अपने अनुभवों से यह जानती है कि बिना माँ की जवान बेटी ऐसी फसल है जिसका रखवाला नही और जिसे

---

१ परसाई – तट की खोज, पृष्ठ १४

२ परसाई – सुनो भाई साधो, पृष्ठ ५६

वासना के ऊजाड़ू पशु चरने के लिए स्वतत्र है।"[१]

शीला के चरित्र मे जहाँ प्रारम्भिक अवस्था मे किशोर उम्र की रूमानियत है तो प्रौढ अवस्था मे प्रेम से मोह भग की स्थिति के प्रति सकारात्मक भाव है। इस मोह भग से उभर कर शीला प्रौढ बनकर तट के किनारे खडी दिखती है।

महेन्द्रनाथ आदर्शवादी पाखण्डी नवयुवक है जो विसगतियों पर बडी तीखी अलोचना लिखता है। लेकिन स्वय उसी को जीता है। महेन्द्रनाथ कलमवीर तो है लेकिन अन्दर से कायर बेइमान दिखावटी और कमजोर है। अन्य पात्रो मे मनोहर एक सदाशय उदार युवक है। तो शीला के पिता रिटायर विवश एक जवान बेटी के बाप।

इस उपन्यास की प्रमुख पात्र शीला का चरित्र प्रेमचन्द्र के सुमन या शरतचन्द्र की कमल या जैनेन्द्र की मृणाल से हटकर रचा हुआ चरित्र है। तट की खोज की शीला किसी की दया या सहानुभूति पर नही जीना चाहती है वह अपने बनाये रास्ते पर चलना प्रारम्भ करती है। इस प्रकार कथ्य और शिल्प की दृष्टि से यह एक सफल उपन्यास कहा जा सकता है।

(२) ज्वाला और जल – परसाई के इस उपन्यास का प्रकाशन १९५८ ई में भारतीय पुस्तक मन्दिर कलकत्ता द्वारा हुआ। इस लघु उपन्यास का नाटक विनोद एक सवेदनशील लडका है शराबी पिता द्वारा लगातार माँ की दुर्दशा करते देख कर विनोद प्रतिशोध की मूर्ति बन जाता है। वह पिता के प्रति नफरत रखता है। शहर में आवारगर्दी करता है अन्ततः वकील साहब, उनकी माँ का स्नेह तथा सुषमा का प्यार पाकर उसकी प्रतिशोध की ज्वाला शान्त होती है।

---

१ परसाई – तट की खोज, पृष्ठ १६

परसाई इस उपन्यास मे असहज दिखते है। वकील साहब द्वारा कथा को मैं शैली में प्रस्तुत किया गया है। इस कारण यह विवरणात्मक उपन्यास हैं कथ्य और शिल्प दोनो दृष्टियो से यह उपन्यास खास महत्व नही रखता है।

(३) रानी नागफनी की कहानी – रानी केतकी की कहानी के शीर्षक की लय मे परसाई ने 'रानी नागफनी की कहानी' नामक उपन्यास लिखा। १९६२ मे प्रकाशित स्वतन्तयोत्तर व्यग्य उपन्यासो मे इसका महत्वपूर्ण स्थान है। इसमे समाज, शिक्षा, राजनीति आदि विषय पर व्यग्य किया गया है। इस उपन्यास के विषय मे परसाई लिखते है। यह एक व्यंग्य कथा है। फैन्टासी के माध्यम से मैने आज की वास्तविकता के कुछ पहलुओ की अलोचना की है।"[१] बालेन्दुशेखर तिवारी ने इस उपन्यास के महत्व को इन शब्दों मे रेखाकित किया है "व्यग्य की अदभुत समझ और रचनाशीलता की मजबूत पकड के सहारे हरिशकर परसाई ने इस व्यग्य उपन्यास में कथा के प्राचीन आश्रय और वर्णन के घिसे हुए शिल्प का सुन्दर समन्वय प्रस्तुत किया है इसमे सन्देह नही कि परसाई की व्यग्य क्षमता ने 'रानीनागफनी की कहानी' को सामाजिक कुव्यवस्था और व्यापक विसगतियो का सन्दर्भ ग्रन्थ बना दिया है।"[२]

रानी नागफनी की कहानी का वातावरण सवाद और माहौल तथा इसके पात्र ऊपरी तौर पर मध्ययुगीन सामन्ती से दिखते है लेकिन यह समकालीन सामाजिक यथार्थ है। इस सामाजिक अन्तर्विरोध और विद्रूपता को कुँवर अस्तभान, रानी नागफनी, मुफतलाल, करेलामुखी, राजानिर्बल सिह, जोगी प्रपचगिरि, मुख्य अमात्य-गोवर्धनदास, भयभीत सिह और राखण सिह आदि पात्रों के माध्यम से व्यक्त किया गया है। परसाई ने शिक्षा व्यवस्था, अर्थ प्रणाली

---

१ परसाई – रानी नागफनी की कहानी, लेखकीय

२ बालेन्दु शेखर तिवारी – हिन्दी का स्वतंत्र्योत्तर हास्य एव व्यंग्य, पृष्ठ १५३

सामाजिक मूल्य, राजनैतिक कदाचरण, घूसखोरी तथा भ्रष्टाचार के ऊपर इस उपन्यास मे तीखा व्यग्य किया है।

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के कारण जहाँ पुरानी परम्पराये टूट रही है वही नये मूल्य भी निर्मित हो रहे है। वर्तमान परिवेश मे नारी उपभोग्य वस्तु है। राज्य हथियार बेचने के कारखाने है, शिक्षा घूसखोरी का अड्डा इस उपन्यास में युद्ध के वास्तविक कारणों के ऊपर भी एक गम्भीर प्रकाश पडता है। परसाई ने व्यक्तित्व के विघटन के साथ-साथ पतनशील सामाजिक व्यवस्था और विघटति पारिवारिक मूल्यों के अलावा हमारे समय की आर्थिक, राजनीतिक स्थितियों पर कठोर प्रहार किया है। यह उपन्यास प्रजातन्त्रिक व्यवस्था तथा सामन्तीमन की सडान्ध कहानी है, जिसके कारण सम्पूर्ण भारतीय जीवन पद्धति पस्त हो गया है। यद्यपि उपन्यास का मूल स्वर सामाजिक राजनैतिक व्यवस्था के ऊपर व्यग्य है। लेकिन राजनैतिक पाखण्ड दोगलापन प्रशासकीय भ्रष्टाचार तानाशाही प्रवृत्ति की नौकरशाही भी व्यग्य के शिकार बने है। उपन्यास मे कुवर अस्तभान का विवाह, मुफतलाल की नौकरी, पडोसी राज्य की राजनीति, विवाह के टेण्डर आदि कुछ ऐसे प्रसग है जो समाज की कुव्यवस्था को उठाते है।

फैन्टेसी शिल्प के माध्यम से सामाजिक, राजनैतिक व्यवस्था के शोषण और पाखण्ड को इस उपन्यास में चित्रित किया गया है। इस कथा का उद्देश्य अस्तभान की कथा कहना नही है, बल्कि उस सामाजिक कैद स्थल को दिखलाना है जहाँ पूरा समाज जकड़ा हुआ है।

इस प्रकार सक्षेप मे कहा जा सकता है कि परसाई ने फैन्टेसी शैली मे एक ऐसे उपन्यास की रचना की जो हमारे समाज की वास्तविकता की प्रखर व्यग्यात्मक आलोचना है।

परसाई की कहानियां

स्वतन्त्र्योत्तर कहानी विधा मे परसाई एक प्रमुख नाम है। हर विधा के कुछ अपने शास्त्र और ढाँचे होते है लेकिन हर समय कोई कबीर, कोई निराला, कोई मुक्तिबोध और कोई परसाई आकर उस साँचे को छिन्न-भिन्न कर देता है तथा अलोचना के सारे प्रचलित प्रतिमानो को बदलने के लिए विवश भी करता है।

इस समय के मूल्य सक्रमण, विपर्यय और स्खलन की स्थिति में परिवर्तन होता दिखाई देता है। मधुरेश लिखते है कि "राजनीतिक भ्रष्टाचार और सामाजिक विसगतियो की जितनी स्पष्ट पहचान हरिशकर परसाई की कहानियो मे मिलती है उतनी उस दौर के कदाचित किसी दूसरे कहानी कार में नही मिलती।"[१] परसाई लेखन को सामाजिक कर्म के रूप मे स्वीकार करते है। साहित्यकार और सामाजिक अनुभव के अन्तर सम्बन्धों की व्याख्या करते हुए लिखते है, "साहित्यकार का समाज से दोहरा सबध है वह समाज से अनुभव लेता है अनुभव मे भागीदार होता है बिना सामाजिक अनुभव के कोई सच्चा साहित्य नही लिखा जा सकता-लप्फा बाजी की जा सकती है। साहित्यकार सामाजिक अन्वेषण भी करता है। उन छिपे अधेरे कोने का अन्वेषण करता है। जो सामान्य चेतना के दायरे मे नही आते इन सामाजिक अन्वेषणो का विश्लेषण करता है कारण और अर्थ खोजता है उन्हे सवदेना के स्तर तक ले जाता है। और उन्हे रचनात्मक चेतना का अङ्ग बनाकर रचना करता है। और फिर समाज से पायी उस वस्तु को रचनात्मक रूप देकर समाज को लौटा देता है। इस तरह साहित्य का एक सामाजिक कर्म हो जाता है।"[२]

नई कहानी ने इसी सामाजिक सरोकार को मानकर कार्य करना प्रारम्भ किया। कमलेश्वर

---

१ स कमला प्रसाद – आँखन देखी, पृष्ठ २४६

२ पूर्वग्रह अक १०, पृष्ठ ४

ने एक स्थान पर लिखा "हर लेखक ने अपने अनुभूत जीवन की निरन्तरता मे जीवन खण्डो को उठाकर अभिव्यक्ति दी है। रेणु, राकेश, राजेन्द्र यादव, भीष्म साहनी, हरिशकर परसाई, अमरकान्त, रमेश वछी, मार्कण्डेय, शिवप्रसाद सिह, मन्नू भण्डारी, शैलेश मटियानी, ऊषा प्रियवदा, मधुकर गगाधर, राजेन्द्र अवस्थी, शानी, शरदजोशी जैसे सशक्त लेखको ने नये कहानी को जीवन्ता और विविधता दी है। परसाई नई कहानी को कहानी का विकसित रूप मानते है। उन्होने मध्यम वर्गीय कुण्ठा, एकाकीपन, विद्रोह और सवेदनहीनता की भावना के विपरीत भोगे हुए यथार्थ, गहरी मानवीय सवेदना और अनुभव की प्रमाणिक राजनैतिक धार्मिक और आर्थिक क्षेत्रों की सच्ची तस्वीर साहित्य के क्षेत्र मे व्यग्य विधा द्वारा सच्चे रूप में चित्रित किया। परसाई ने व्यग्य विधा में महत्वपूर्ण कहानिया लिखी, 'भोलाराम का जीव', 'भूत के पाँव पीछे', 'सदाचार की तावीज', 'जैसे उनके दिन फिरे' व्यग्य विधा की उत्कृष्ट कहानियाँ है।

परसाई का कथा वैशिष्टय

आजादी के बाद सामाजिक आर्थिक तथा पूँजीवादी व्यवस्था के कारण जनता मे भीषण आक्रोश व्याप्त था। इस समय आजादी के लिए अपना सब कुछ समाप्त कर देने वाले लोग अधिक परेशान थे। एक वर्ग और था जो राजनीतिक चेतना की करवटें बदल रहा था मध्यम वर्ग। परसाई ने मध्यम एव निम्न मध्यम वर्ग के लोगों को आधार बनाकर कहानियाँ लिखना प्रारम्भ किया। परसाई की कहानियों में उदासीनता आत्मलाप और नाकारात्मक भाव बोध नही है यहाँ गहरी मानवीय सवेदना है। परसाई की कहाँनियों के पात्र कभी जीवन की भीख मँगाते नजर नही आते। उन्होंने कहानियों के माध्यम से समाज की विसगतियों को उभारने का प्रयास किया हैं परसाई की सम्पूर्ण कहानियो को निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है।

राजनीति से सम्बन्धित व्यंग्य कथाएं

परसाई के व्यग्य का मूल स्वर ही राजनीति है' भेड और भेडिए' मे बूढे सियार के प्रतीक पूँजीपति नेता को भेड का सेवन करते हुए दिखलाया है। 'ग्रान्ट अभी तक नही आयी' मे अध्यापको को मन्त्री के तलुवे चाटते हुए दिखलाया गया है। 'राजनीतिक बँटवारा' मे पुराने राजनीतिज्ञ अपने लोगो को पार्टी में शामिल करवा दे है जिससे उनका फायदा होता रहे। 'लोहियावादी सामजवादी' मे एक अनुयायी नेहरू की उल्टी तस्वीर टॉग कर शीर्षसन की मुद्रा मे देखता है। 'सज्जन दुर्जन और काग्रेस जन में आदमी का एक अलग वर्ग काग्रेस जन को बनाते हुए दिखलाया गया है। 'प्रजावादी समाजवादी' मे स्तरहीन मानसिकता का चित्रण किया गया है। 'चीनी डॉक्टर भागा' मे एक योग्य दन्त विशेषज्ञ, चीनी डाक्टर को युद्ध के समय षडयन्त्र करते दिखलाया गया है।

'विकलाग राजनीति' लेखक की टूटी टाग के ऊपर की गयी राजनीतिक चर्चा है 'घुटन के पन्द्रह मिनट' में ससद सदस्य और साहित्यकार एक सरकारी दफ्तर में कुछ समय के लिए घुटते रहते है। 'बैताल की छब्बीसवी कथा' 'बैताल की सत्ताइसवी कथा' तथा 'बैताल की अटठ्इस्वी कथा' में गाँधी के हृदय परिवर्तन को आधार बनाया गया है। 'इतिश्री रिसर्चाय' मे बुद्धिजीवी और राजनेता के बीच मिलीभगत को दर्शाया गया है।

'मुन्डन' ससदीय कार्य प्रणाली को व्यक्त करने वाली कहानी है जिसमें ऊल-जुलूल विषयो पर ही चर्चा होती रहती हैं 'भोलाराम का जीव', 'जैसे उनके दिन फिरे' 'जिसकी छोड भागी' आदि कहाँनिया भी इसी कोटि की है। 'नगर-पालक' सत्ता के माध्यम से धन्धा करने की राजनीति को व्यक्त करती है। 'इतिहास का सबसे बडा जुआ' राजनीति की दुश्प्रवृत्ति को आधार बनाकर व्यक्त की गयी कहानी है। इस कड़ी में अनेक कहानिया है।

'त्रिशंकु बेचारा', लका विजय के बाद', 'पहला पुल', 'त्रिशकु बेचारा' आदि कहॉनियों

में पौराणिक कथाओ को आधार बनाकर वर्तमान विसगतियो का पर्दाफाश किया गया है।

सामाजिक व्यंग्य सम्बन्धी कहॉनियां

'वह क्या था' एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसमें किसी भी प्रकार की भावना का स्रोत नही फूटता। 'आसुविधा भोगी' ऐसे साहित्यकार की कहानी है जो खुद सुविधा भोगता है और कहता है कि दूसरा भोग रहा है। 'पुराना खिलाडी' एक ऐसे राष्ट्रभक्त की कहानी है जो इसीके माध्यम से दिन काट रहा है। 'तटस्थ' ऐसे लोगों के ऊपर व्यग्य है। जो किसी भी प्रभाव मे नही आते है। 'समय पर मिलने वाले' ऐसे लोगों की कहानी है। जो हमेशा लेट-लतीफ जीवन जीने के आदी है 'एक जोरदार लडके की कहानी' उन नवयुवको की कहानी है जो प्रेमिका के सामने बडी-बडी हाँकता है लेकिन हकीकत का सामना करते ही घबडा जाता है। 'एक मध्य वर्गीय कुत्ता' मे उच्च और निम्न वर्ग के बीच फॅसे मध्यम वर्गीय जीवन की कहानी हैं जो दिखावा तो करता है लेकिन जीता कुछ और है। 'दो नाक वाले लोग' उन गृहस्थो के ऊपर व्यग्य है जो कर्ज लेकर प्रतिष्ठा बढाना चाहते है। 'शर्म की बात पर ताली पीटना' मे शर्म की बात पर भी ताली पीटने वालो के ऊपर व्यग्य किया गया है। 'शवयात्रा का तौलिया' 'सडे आलू का विद्रोह' मेरी अक्ल का बाल' 'फेमिली प्लानिग' वे सुख से नहीं रहे' 'चार बेटे' 'आत्मज्ञान क्लब' 'मन्नू भैया की बारात 'प्रेमियो की वापसी' 'भीतर का घाव' 'बारात की वापसी' आदि कहाँनियों मे समाज की विसगतियो को लक्ष्य करके व्यग्य किया गया है।

परसाई की शुरू की कहानियो में जैसे 'पैसे का खेल' (परसाई की प्रथम कहानी) 'किताब का एक पन्ना' 'पडोसी के बच्चे', 'दुख का ताज', 'क्या कहा' आदि में व्यग्य की धार उतनी तीखी नही है। बल्कि ये कहाँनियां भावुक मन से लिखी गयी कहाँनिया है। परसाई की कुछ अन्य प्रसिद्ध कहाँनियां जिनमें सामाजिक विसगतियों को लक्ष्य बनाकर व्यग्य किया

गया है। 'एक सुपर मैन' 'छोटी सी बात' 'एक फिल्म कथा', 'देश भक्ति का पालिश', 'आशका पुत्र' 'कप्तान साहब' 'सेवा का शौक' 'हीरे के भीतर', 'स्मारक' 'खाली मकान' 'जिन्दगी और मौत' 'सामाजिक की डायरी' 'स्वर्ग से नरक' 'बदचलन' 'सूअर' 'जाति', 'सुशीला', दण्ड आदि जो समाज के हर कोने की विसगतियो को प्रकट करने मे पूरी तरह सक्षम है।

धार्मिक कहानियॉ

'सत्य-साधक मण्डल' मे धर्म के आड में अपने स्वार्थ की पूर्ति को रेखाकित किया गया है। 'नबर दो की आत्मा' मे साधुओ के ढोग को चित्रित किया गया है। 'मौलाना का लडका पादरी की लडकी' धार्मिक शोषण गठजोड की कहानी है। 'टार्च बेचने वाले' मे तथाकथित धर्म के ठेकेदारों के ऊपर व्यग्य किया गया है। 'कबीर की बकरी 'भक्तो मे मारपीट', 'पाठक जी के केश' 'मेनका की वापसी' आदि मे धार्मिक पाखण्ड तथा दिखावे को आधार बनाकर व्यग्य किया गया है। 'साधना का फौजदारी अन्त' कहानी में ऐशोआराम की जिन्दगी व्यतीत करने वाले साधुओ के ऊपर व्यग्य किया गया है। 'घोषित को नही दीनिह चादरिया' में उन साधुओ के ऊपर व्यग्य है जो शिष्यो को माया से दूर रहने का उपदेश देते है लेकिन खुद उसी से चिपके रहते है।

अपनी विभिन्न कहानियों के माध्यम से परसाई धाम्रिक व्याभिचारिता, दिखावे कर्मकाण्ड तथा असगतवातो को दिखलाने में सक्षम हुए है।

शैक्षिक एवं साहित्यक कहानियाँ

एकलव्य ने गुरू को अगूँठा दिखाया कहानी में पौराणिक कथा को आधार बनाकर शिक्षा की विसगतियों को रूपायित किया गया है। रिसर्च का चक्कर मे उन आचार्यों के ऊपर व्यग्य है जो शोधार्थियों से अपनी स्वार्थ पूर्ति करवाते है। 'वे बहादुरी से बिके' में उन लेखको

के ऊपर व्यग्य किया गया है जो अनीति द्वारा अधिक पैसा कमाना चाहते है। 'अपने-अपने इष्टदेव' साहित्यक विसगति को चित्रित करने वाली कहानी है। 'शिक्षको का कल्याण', 'कबीर समारोह क्यो नही हुआ' 'अध्यापको के आन्दोलन', साहित्य में ईमानदारी', समाजवादी ढाँचे मे साहित्य' आदि शैक्षिक एव साहित्यिक विसगतियो को प्रगट करने वाली महत्व पूर्ण कहाँनिया है।

कहानी तत्व की दृष्टि से परसाई की कहाँनियो भले ही उचित प्रतीत न होती हों, लेकिन कथ्य की दृष्टि से उनकी कहाँनिया समय को जीती है। राजेन्द्र यादव ने अपनी पुस्तक 'कहानी स्वरूप और सवेदना' मे लिखा है, "जिन लेखको ने अशुभ या सुन्दर पर तीखा व्यग्य किया है उसमे दुर्भाग्य से दो ही नाम है हरिशकर परसाई, शरद जोशी।"[१]

परसाई के निबन्ध

निबन्ध भारतेन्दु युगीन विधा का स्वरूप है भारतेन्दु के समय का निबन्ध व्यग्य की धार लिए हुए था। तो द्विवेदी युग का निबन्ध बौद्धिक प्राण ग्रहण किये था। प्रसाद व शुक्ल के समय का व्यग्य भाव प्रधान अथवा अन्तर्मुखी चिन्तन पर आधारित था। स्वतन्त्रोत्तर निबन्ध, व्यग्य की धार के साथ विषय की विराटता मे प्रवेश लिया। परसाई कहानी और उपन्यास से होते हुए निबन्ध विधा मे आकर रूक गये। नामवर सिह परसाई के विषय मे कहते है कि "परसाई के बारे मे एक बात कहूँ जिसकी जाँच की जानी चाहिए कि परसाई जी क्रमशः कहानी की दुनिया छोड़ते हुए उन निबन्धों की ओर बढने लगे जो घटनाओ को केवल उदाहरण के रूप में लिया करते थे। मुख्यतः उनका ध्यान निबन्धों की ओर गया परसाई को आज भी याद किया जाएगा तो उनके तेज तर्रार कुटीले निबन्धों के कारण किया जायेगा।"[२] 'बेईमानी की परत' पुस्तक में परसाई स्वीकार करते हैं कि, "कहानी के साथ ही

---

१ राजेन्द्र यादव – कहानी स्वरुप और संवेदना, द्वितीय स पृष्ठ ९०

२ पहल–७ प्रथम संस्करण, पृष्ठ १७-१८

मै शुरू से निबन्ध लिखता रहा हूँ और यह विधा अपनी प्रकृतिगत स्वछन्दता तथा व्यापकता के कारण मुझे बहुत अनुकूल प्रतीत हुई है। इनकी सभावनाओं का कितना उपयोग कर पाया हूँ। यह दूसरी बात है। इतना जरूर जानता हूँ कि निबन्ध लिखते हुए मुझे सार्थकता और सतोष का अनुभव हुआ है।"[१]

हरिशकर परसाई ने राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक एव शैक्षिक विसगतियो पर तीखा व्यग्य निबन्ध लिखा है। इन विषयो परसाई सबसे अधिक राजनैतिक व्यग्य लिखते है। परसाई द्वारा लिखे गये निबन्धो को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है। राजनैतिक निबन्ध, सामाजिक निबन्ध, धार्मिक निबन्ध, साहित्यिक एव शैक्षिक निबन्ध तथा अन्य निबन्ध।

राजनैतिक निबन्ध

स्वतत्रोत्तर काल की रचनाओ मे मामूलीपन को लेकर कविता मे नागार्जुन और गद्य मे परसाई ने सबसे अधिक रचना की। परसाई निबन्धो में भग की तरग की भूमिका नहीं है, बल्कि सतर्क बोध के साथ छद्म को उद्घाटित कर देने वाली रचना है। परसाई के निबन्ध 'विचारों का रूप चित्र' होता है। अधिकाश निबन्ध वार्तालाप की शैली मे है। परसाई के राजनैतिक व्यग्य 'परसाई रचनावली' भाग ६ मे अधिक सकलित है। 'जाँच कमीशन' 'सरकार का कुल्ला', जनता सरकार के धडाधड जाँच कमीशन बैठाने पर किया गया व्यग्य है। 'निर्णय दर्शन' में उन नेताओं की खबर ली गयी है जो हमे आगाह करते है कि अभी भी आजादी खतरे मे है। 'अपील का जादू' में तत्कालीन प्रधानमत्री मोरारजी देसाई के कार्यकाल में व्याप्त अनैतिकता पर व्यंग्य है। 'बडे जुल्म, छोटे जुल्म' जनता सरकार के कार्यकाल में बढते अपराधो पर व्यग्य है। मुर्दे का मूल्य' में हरिजनों एव मजदूरों पर किये गये अत्याचारों के ऊपर व्यग्य है। 'प्रधान मत्रित्व ही जीवन है' में प्रधानमत्री पद की होड में शामिल लोगो

---

१ 'बेईमानी की परत' – भूमिका, 'परसाई'

के ऊपर व्यग्य है। 'परछाँई भेदन मे' पौराणिक कथन के माध्यम से दिखावे के लिए की गई क्राति पर व्यग्य है।' सरकस मण्डली का शासन' जनता सरकार के मत्रियो के ऊपर व्यग्य है। 'हरि अतत हरिकथा अनता', 'अभूतपूर्व–भूतपूर्व', 'राजनीतिक कुत्ते' तथा 'आवारा युवको के जरिये आवारा क्रान्ति' इसी प्रकार के राजनीतिक व्यग्य निबन्ध है।

सामाजिक निबन्ध

परसाई उन रचनाकारो मे से है जो समाज की सवेदना को गहरे रूप से अनुभव करते है। 'दिशाहीनता' मे परसाई जी ने यह दिखलाने का प्रयास किया है कि आज की पीढी किस प्रकार दिग्भ्रमित है जो अन्धे से ही रास्ता पूछती है। 'वैरग शुभकामना और जनतत्र मे परसाई ने उस स्थिति का चित्रण किया है जहाँ शुभ कामना भी पैसे खर्च होने के कारण पीडा देने लगती है। 'राम का दुःख और मेरा' में लेखक पौराणिक कथा सूत्र पकडकर वर्षा ऋतु मे आम आदमी के छत टपकने की कथा को व्यग्य के माध्यम से कहता है। 'कन्धे श्रवणकुमार के' मे पीढियों के वैचारिक अन्तर को दिखालया गया हैं 'प्रेम की विरादरी' जातिवाद के ऊपर व्यग्य है 'किताबों की दुकान और दवाओ की' में ऐसे लोगों के ऊपर व्यग्य किया गया है जो बीमारी का बहाना बनाकर अपना काम निकालते रहते हैं। 'पेट का दर्द और देश का दर्द' मे लेखक मित्र के आग्रह पर अधिक खाने के कारण पीडित है और इसी से राष्ट का दर्द भी शुरू होता है क्योकि प्रति व्यक्ति के हिसाब से काम का घण्टा उँघने में बरबाद होता रहता है। 'एक बेकार घाव' मे दिखलायी देने वाला दर्द ही, दर्द हैं, इसका चित्रण किया गया है। 'स्नान' अन्धविश्वास के ऊपर व्यग्य हैं 'वो जरा वाइफ है न' मे उन लोगों के ऊपर व्यग्य किया गया है। जो दूसरो की स्त्रियो में प्रगति शीलता ढूँढते है लेकिन अपने मे 'मर्यादा' का ख्याल रखते है। 'चाँद पर नही जा सका' नाम अमर करने वालों के ऊपर व्यंग्य है। 'दूसरे की महिमा ढोने वाले में किसी अन्य के सहारे अपना परिचय बताने वालों पर व्यग्य है।

'मेरा सूना गया जन्म दिन' में उन लोगो के ऊपर व्यग्य मिलता है जो अपना जन्मदिन स्वय मनाते है और अभिनन्दन का खर्च भी स्वय ही वहन करते है। 'कबिरा आप ठगाइये मे स्वय की स्वार्थ पूर्ति पर खुशी और दूसरे की स्वार्थ पूर्ति होने मे दु ख के अनुभव के भाव को चित्रित करके व्यग्य किया गया है। 'नीलकठ' में पौराणिक कथानक के माध्यम से यह दिखलाया गया है कि शिव भी जहर कठ पर रोकने की शर्त पर पिये थे। अगर पेट पर रोकने की बात होती तो नही पीते तात्पर्य कार्य शिव भी प्रदर्शन की इच्छा से प्रेरित होकर करते है। 'निन्दारस' में निन्दा के उदगम को हीनता और कमजोरी से मानागया है 'कचहरी जाने वाला जानवर' वकीलो के ऊपर व्यग्य है।

साहित्यिक एवं शैक्षिक निबन्ध

'अहले वतन में इतनी शराफत कहाँ है जोश' में परसाई उन लोगों के ऊपर व्यग्य करते है जो लेखकों की छोटी मोटी बातो को बढा चढाकर प्रस्तुत करते है। 'लिटरेचर ने मारा तुम्हे' उन लोगो के ऊपर कटाक्ष है जो सरस्वती की प्रतिष्ठा पाने के लिए लक्ष्मी का भी परित्याग कर देते हैं। 'साहित्य और दो नम्बर का कारोबार' में उन लोगो के ऊपर व्यग्यमिलता है जो अन्य व्यापारो की भाँति साहित्य को भी एक व्यापार मानते है।

'रोजमर्रा का जीवन' 'प्राइवेट कालेज का घोषणा पत्र' 'एक दीक्षान्त भाषण', 'आलोचना की आवश्यकता' आदि निबन्धो में शैक्षिक व्यग्य किया गया है।

परसाई के पत्र निबन्ध उनकी रचना 'और अन्त में' मे संकलित है जो कल्पना के सपादक को लिखा था। यह मूलत साहित्यक निबन्ध है।

धार्मिक एवं अन्य निबन्ध

'उपवास से वर्षा' मे उन धार्मिक कृत्यो पर व्यग्य किया गया है जो आडम्बर युक्त है। 'कविता विज्ञान और धार्मिक मूढता' में आधुनिक युग की देन विज्ञान को धर्म को पीछे ले जाते दिखलाया गया है। कविता और साहित्यकार के ऊपर फतवा जारी किया जाता है। 'तेरा मेरा मनुआ कैसे एक होय' मे धार्मिक गुट बाजी है।

अन्य विषयों के निबन्धो मे फिल्म, सस्था या स्थान विशेष से सन्दर्भित निबन्ध है।

परसाई अपने लेखन उद्देश्य की सफलता के लिए, जन-भावना की 'आधार-भूमि' धर्म से कथाओ को लेकर, उसे नये सिरे से प्रस्तुत किया जैसे-'नीलकठ, 'प्रथम स्मगलर' आदि।

परसाई के रेखाचित्र व अन्य व्यंग्य रचनाएं

रेखाचित्र किसी व्यक्ति विशेष स्थान, अथवा उपादान की विशेषताओं का सक्षिप्त वस्तुगत विवरण होता है यह वहाँ अधिक प्रभावशाली असर उत्पन्न करता है जहाँ किसी व्यक्ति के कार्य-व्यापार के माध्यम से उसकी विशेषताओं का दर्शन कराया जाता है। इसमे नीतिपरायण बातों या शास्त्र-सम्मत समीक्षा के लिए स्थान नहीं होता। इसकी शैली अधिकाशत वाग्वैदग्धपूर्ण होती है।

नगेन्द्र ने इसे इस प्रकार परिभाषित किया है - "चित्रकला का यह शब्द साहित्य मे आया तो इसकी परिभाषा स्वभावत. इसके साथ आयी अर्थात रेखाचित्र ऐसी रचना के लिए प्रयुक्त होने लगा जिसमे रेखाए हो पर मूर्त रूप अर्थात उतार-चढ़ाव अर्थात दूसरे शब्दों मे कथानक का उतार चढाव आदि न हो तथ्यों का उदघाटन मात्र हो।"[१]

---

१ नगेन्द्र - विचार और विश्लेषण तथा नगेन्द्र के श्रेष्ठ निबन्ध - १२९

भगीरथ मिश्र रेखा-चित्र को इस प्रकार परिभाषित करते हैं– "अपने सम्पर्क में आये किसी विलक्षण व्यक्तित्व अथवा सवेदना को जगाने वाली सामान्य विशेषताओ से युक्त किसी प्रतिनिधि चरित्र के मर्मस्पर्शी स्वरूप की देखी, सुनी या सकलित घटनाओ की पृष्ठभूमि मे इस प्रकार उभार कर रखना कि हमारे हृदय मे एक निश्चित प्रभाव अकित हो जाय रेखाचित्र या शब्द चित्र कहलाता है।"[१]

रेखाचित्र और सस्मरण दोनो की साम्यता इस कदर है कि दोनो को अलग कर पाना कठिन है फिर दोनों मे अन्तर है रेखाचित्र के लिए कलात्मक शैली आवश्यक है सस्मरण के लिए भावुकता। सस्मरण किसी प्रसिद्ध व्यक्ति का होता है जबकि रेखाचित्र के लिए यह आवश्यक नही है। रेखाचित्र में रागात्मक स्पर्श मात्र होता है सस्मरण में आलोचक की मुद्रा होती है। रेखाचित्र में चित्रण अधिक होता है, सस्मरण मे विवरण अधिक।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद एक अन्य विधा ने जन्म लिया रिपोतार्ज इसमें सच्ची और छोटी छोटी घटनाओ को सक्षिप्त, आकर्षित कलात्मक तथा सवेदनात्मक रूप मे प्रस्तुत किया जाता है। यह रेखाचित्र से मिलता जुलता है। रेखाचित्र मे व्यक्ति या चरित्र की विशेषताओ का उद्घाटन होता है तो रिपोतार्ज मे घटना,दृश्य और वातावरण को प्रधानता दी जाती हैं रेखाचित्र और सस्मरण में शब्द शिल्प से सजाने के लिए मौका मिल जाता है जबकि रिपोतार्ज में त्वरित रचना करनी पडती है।

रेखाचित्रों के लेखक रूप मे हिन्दी मे कुछ नाम इस प्रकार है – महादेवी वर्मा, बनारसीदास चतुर्वेदी, प्रकाश चन्द्र गुप्त, जगदीश चन्द्र माथुर । सस्मरण लेखकों में प्रसिद्ध है– धर्मवीर भारती महादेवी वर्मा अज्ञेय अमृतराय आदि। रिपोतार्ज लेखन में राघेय राघव, प्रकाश चन्द्रगुप्त, अमृतराय, प्रभाकर माचवे आदि प्रमुख नाम हैं।

---

१. भगीरथ मिश्र – काव्य शास्त्र – ९७

परसाई के प्रमुख रेखाचित्र

'मनीषी जी' मे परसाई ने मनीषी जी का चित्रण कुछ इस प्रकार खीचा है "घुटनो तक खादी की धोती, खादी की मिरजई, पॉवो मे फटी चप्पलें, ऐसी कि पावों की रक्षा कम करे इज्जत की ज्यादा आँखो पर चश्मा, काले धागे से जेब में लटकी घडी बॉये हाथ मे छडी, कधो पर खद्दर बसना, काग्रेसी भक्तिन की साडी की तरह बेलबूटेदार किनारी का चादर'।

"स्वस्थ शरीर, रग खूब गोरा, बडा सिर जिस पर लम्बे-लम्बे घुँघराले चिकने केश उन्नत मस्तक प्रशस्त ललाट नुकीली नाक, बडी-बडी पानीदार आँखे जिनमे एक एक क्षण मे दर्शनिक सी चिन्ता और दूसरे क्षण मूठसी शून्यता, चौडा चेहरा जिस पर पहाडी झरने सी निर्मल हॅसी तथा बडप्पन और सदभावना की झलक।"[१]

वास्तव मे मनीषी जी की विचित्रताए और असाधारणताए, अकेले आदमी का साहस आम भारतीय आदमी की विलक्षण जिजीविषा अपने समाज से गहरे जुडने की प्रबल आकाक्षा का विलक्षण चित्राकन है।

'एक तृप्त आदमी की कहानी' मे परसाई जी एक ऐसे व्यक्ति का चित्र खींचते है जो परिस्थितियो से सघर्ष करके जीवन की मजबूरियों को नियति मान बैठा है। वह अपने जीवन मे उपलब्ध साधनो से सन्तुष्ट है परसाई उसका परिचय इस प्रकार देते है-

"असल नाम-नन्दलाल शर्मा"

"लडको के द्वारा बनाया गया और प्रचलित किया गया नाम एन एल मास्टर पेशा

---

१ हरिशकर परसाई - तिरछी रेखाए, पृष्ठ ५५-६६

२ पूर्वग्रह अक १०, पृष्ठ ४

स्कूल मास्टरी। वेतन ९० रूपया मासिक। ऊपरी आमदनी १५ रूपया (ट्यूशन)। उम्र ३५ के लगभग। शरीर स्वास्थ। रूप सेकेण्ड क्लास। परिवार माँ बीबी तीन बच्चे। आवास दो कमरे एक परक्षी – जिसमे एक कोने पर रसोई घर और उसके सामने दूसरे कोने पर पखाना (भोजन करते वक्त याद रहे कि अन्न का हश्र क्या होने वाला है। जैसे ज्ञानी को घोर भोग के बीच भी अन्त याद रहता है।) कमरे मे एक टेबिल (बिना टेबिलक्लाथ, पर स्याही के धब्बे और ब्लेड की खुदाई से अलकृत) दो आराम कुर्सी (आराम की स्थिति नाम के बाहर कही नही) दो बेत की कुर्सिया, एक लोहे की टूटी कुरसी (जो बैठने वाले के कपडे फाडने के काम आती है्ँ दीवार पर चीरहरण करते हुए कृष्ण की तस्वीर दूसरी तस्वीर हनुमान की सीना फाडकर अन्ताकरण मे अकित 'राम दिखाते' हुए एक चित्र गाँधी जी का (अखबार से फाडकर मढाया हुआ)"[१]

एन एल मास्टर इन्ही भौतिक साधनो के साथ जीते थे। उनका जीवन ऐसे ही कटता था" हर दिन ऐसा ही उगता ऐसा ही चढता है, ऐसा ही डूबता है। मौसम बदलते रहते है। मास्टर की दिनचर्या में कोई हेर–फेर नही होता है।

"वहीक्रम–रोज उठना। कोयले का मजन। फीकी चाय। पान की दुकान का अखबार, टयूशन। कोट के नीचे फटी कमीज। सडक के किनारे-किनारे स्कूल यात्रा। नमस्कार। अग्रेजी गणित, इतिहास, विज्ञान। हनुमान जी के दर्शन। सडक के नल से पानी। और अन्त मे रात को पत्नी से तुम मुझे अच्छी लगती हो।"[२]

"ऐसा आदमी दुर्लभ है। दुनिया में निराशा, विकलता, पिपासा और कुण्ठा के पुतले ही देखने में आते है। तृप्त आदमी आऊट–ऑफ–स्टॉक होता जाता है।"[३]

---

१ परसाई – काग भगोड़ा, पृष्ठ २४

२ परसाई – काग भगोड़ा, पृष्ठ २७

३ परसाई – काग भगोड़ा, पृष्ठ २९

'असहमत' एक ऐसे व्यक्ति का रेखाचित्र है जिसे शिकायत है कि उसकी योग्यता का समाज ने सही मूल्याकन नही किया। इसीकारण अपने परिवेश मे आये सभी लोगो से वह नफरत करने लगता है। प्रिसीपल से, छात्रो से, पूरी दुनिया से। उसका स्वभाव है– अपने को सही मानना और पूरी दुनिया को गलत मानना। परसाई असहमत की मन स्थिति का चित्रण इस प्रकार करते है। "वह खिसियाया, कैसे बेवकूफ से पाला पडा है। खीझ, कैसे बेइमान लोग है। क्रोधित हुआ, सबको देख लूँगा। तना, मै किसी की परवाह नही करता। ढीला हुआ, कैसा दुर्भाग्य है दुखी हुआ, ऐसो की ही चलती है, मेरी नहीं चलती, मन मे फिर तनाव आया।"[१]

'गॉधी का शाल' मे एक गाँधी भक्त का उल्लेख है जो गाँधी द्वारा शादी में मिले उपहार को अपनी प्रतिष्ठा का प्रतीक बना लिया था। और इसके सहारे वह हर समारोह मे मचासीन हो जाते थे। इनका चित्र परसाई ने इस प्रकार उतारा है। "सेवक जी रोज की तरह दरवाजे के बीच कुरसी लगाकर बैठे थे। गोद में मुडा हुआ अखबार पडा था। बार बार चश्मा निकालते, धोती में पोंछकर फिर लगा देते पर पढते कुछ नहीं। सोच रहे थे, सोच सोचकर आहे भर रहे थे और आहे भरकर कही शून्य मे देख रहे थे।"[२] सेवक जी शाल खोने के कारण दुःखी है उन्होने अन्ततः एक नयी शाल खरीदी और गाँधी के विचारों की रक्षा के लिए अपने ऊपर ओढी। इस प्रकार उन्होने निर्णय लिया कि वस्तु सत्य नही है भावना सत्य है।

काफी दिनों बाद सेवक जी जैसे ही मच पर माइक से बोलते है। मेरे विवाह के अवसर पर यह शाल गाँधी जी ने मुझे दिया था। बापू स्वय   कि एक व्यक्ति आवाज देता है "क्यो झूठ बोलते हो सेवक जी यह शाल तो बिलकुल नया है और मिल का है। भला गाँधी मिलका शाल देते है ?"[३]

---

१ सं कमला प्रसाद – परसाई रचनावली, पृष्ठ १४१

२ परसाई – सदाचार का ताबीज, पृष्ठ ९७

३ परसाई – सदाचार का ताबीज, पृष्ठ १०१

'बातूनी' असहमत की तरह नही है। उसमे उत्साह है। वह जान गया है कि इस दुनिया में सिर्फ योगयता से कुछ हासिल नहीं हो सकता है। अत वह अपनी बातो द्वारा महत्वपूर्ण बनने का प्रयास करता है। क्योकि उसके पास पैसा या पद नहीं है। परसाई के अनुसार उसके चेहरे पर भाव देखकर यह लगता है मानो वे सुरसा की भाँति कह रहे हो 'आज सुरन मोहि दीन्ह अहारा। परिस्थिति और आज की दूषित व्यवस्था ही 'बातूनी' जैसे पात्र के जन्म के लिए जिम्मेदार है।

'आइल किग' एक ऐसा रेखाचित्र है जो पूरी व्यवस्था को अपने मुठ्ठी मे किये रहता है। आइलकिग पैसे से राजनीति, पत्रकारिता, सामाजिक प्रतिष्ठा सभी खरीद लेता है" इस व्यवस्था मे पूँजी की जो साजिश है उसे परसाई आइलकिग के कृत्यो को बेनकाब करके दिखाते चलते है। 'ठडा शरीफ आदमी' एक ऐसे व्यक्ति का रेखाचित्र है जो व्यवस्था को साधारण जन के लिए नही मानता है। परसाई उसके बारे लिखते है कि ऐसे सब प्रसग टालता है जिनसे आहट हो। क्रोध से आहट होती है तो वह क्रोध नहीं करता"[१] परसाई उसकी तुलना उस बिल्ली से करते है जो चूहे के इन्तजार में घण्टो पर बैठी रहती हैं लेकिन उसकी उपस्थिति का पता तभी चलता है जब झपट कर चूहा पकड लेती हैं परसाई लिखते है "सोचता हूँ कि साधना से आदमी ऐसा ठडा हो जाता है? जिन्दगी में इतनी तरह की आगे है कहीं कोई गर्मी इसे महसूस क्यो नही होती ? जिन्दगी की जटिलता को सुलझाकर उसने किस तरह सीधा और सपाट कर लिया है "२

"एक भक्त" में भक्त ईश्वर को सर्वभक्तिमान मानता हैं लेकिन कुछ दिन बाद वह देखता है कि साहब लोग किसी के आगे सिर नहीं झुकाते। अत ईश्वर को छोडकर साहब को सर्वशक्तिमान मानने लगा। वस्तुतः यह रेखाचित्र पिछले लगभग २००० वर्षों से चली

---

१ स कमला प्रसाद – परसाई – चुनी हुई रचनाएँ – भाग दो, १३१

आ रही 'भौतिकवादी और भावनावादी' के सघर्ष की नियति को बहुत सफलता पूर्वक से चित्रित कर पाता है।[१] 'मुफ्त खोर' आत्म व्यग्य है इसमें परसाई ने यह दिखलाने का प्रयास किया है कि "अभिव्यक्ति की झूठी औपचारिक घोषणा के कारण लेखक को प्रकाशक की मनपसन्द चीज लिखनी पडती है। परसाई लिखते है दस्तखत करके उसे दे देता हूँ, आँखे बन्द करके सिर एक तरफ टिका देता हूँ मैं बेहद थक गया हूँ[२] इस रेखाचित्र मे प्रकाशक लेखक के मालिक-मजदूर की तरह सम्बन्ध को रेखाकित करते हुए परसाई ने खीझ पैदा की है

'आमरण अनशन' मे परसाई ने यह दिखलाने का प्रयास किया है कि जहाँ अहम् और स्वार्थ में टकराहट होती है वहाँ स्वार्थी जीतता है। नगरपालिका का अध्यक्ष गोबर्धन बाबू स्थानीय धनाढ्य व्यापारी सेठ किशोरी लाल और सत्तादल के महत्वपूर्ण नेता भैया साहब के बीच स्वार्थ ओर अहम् के बीच टकराहट होती है। तीनों आमरण अनशन पर बैठते है मुख्यमत्री भैया साहब का पक्ष लेते है जिसके कारण भैया साहब की जीत होती हैं

'रामदास' सुविधा मे प्रतिष्ठित और आत्म सम्मान सदगुणों के साथ आदर्श जीवन जीने की कल्पना की होगी। लेकिन समाज उसे ईमानदारी से जीने नहीं देता जिसके कारण "वह अपनी जिन्दगी की किताब को बडी सावधानी से बन्द करके रखता है। कि कही कोई पृष्ठ उलट न जाये और कोई पढ न लें।" 'रामदास समाज द्वारा निर्दयता पूर्वक सवेदनहीन बनाया गया व्यक्ति हैं यह ईमानदार व्यक्ति के बेचारा बनने की कहानी है।

'साहब महत्वाकाक्षी' में उच्चवर्ग के जीवनशैली को चित्रित किया गया हैं जहाँ नवधनाढ्य वर्ग रोटरी क्लब मे सूट पहने देश की दुर्दशा पर भाषण करने के लिए इकट्ठे

---

१ स कमला प्रसाद – आँखन देखी – पृष्ठ–२१६

२ परसाई रचनावली भाग १ – पृष्ठ १४६

होते है। वे स्वादिष्ट भोजन खाते है और कहते है। कि सारा देश भूखे मर रहा है। क्लब का अध्यक्ष साहब महत्वाकाक्षी' का रेखाचित्र है जो परसाई से कहता है आपकी कविता अच्छी थी। परसाई जब उत्तर देते है कि वह कविता नही कहानी थी। तो वे कहते है 'हाऊ साट एण्ड स्वीट' ओह तब तो बहुत अच्छी थी। यही रोटरी क्लब का अध्यक्ष कुछ दिनों बाद धोती और टोपी पहन लेता हे और पत्नी के कहने पर लोकसभा घर मे जाने का वचन देता है। इस रेखाचित्र मे कथनी और करनी के अन्तर को स्पष्ट रूप से रेखकित करने का प्रयास परसाई ने किया है।

'मुक्ति बोध' रेखाचित्र मे सस्मरणात्मक रूप मे रेखाचित्र खीचने का प्रयास परसाई ने किया हैं "इस रेखाचित्र द्वारा समूची व्यवस्था का उपहास कर व्यक्ति की स्वतत्रता और स्वेच्छा की गारण्टी देने वाले प्रजातत्र को निरर्थक सिद्ध किया गया है। इतनी यातनाए देने के बाद भी क्या वह व्यवस्था मुक्तिबोध के मूल्यो को, उनके उत्साह उनकी सवेदनशीलता, आत्मीयता एव समाजप्रेम को क्या जरा भी कमजोर कर पाती है। बिलकुल नही ?"[१]

परसाई मुक्तिबोध के लिए लिखते है "मुक्तिबोध की आर्थिक दुर्दशा किसी से छिपी नही है उन्हे और तरह के क्लेश भी थे भयकर तनाव मे वे जीते थे पर फिर भी बेहद उदार बेहद भावुक व्यक्ति थे। उनके स्वभाव के कुछ विचित्र विरोधभास भी थे पैसे-पैसे की तगी मे जीने वाला ये आदमी पैसे का लात भी मारता था।"[२]

परसाई के रेखाचित्रो की विशेषता

परसाई के रेखाचित्र बडी बारीकी से अपने पात्रों के व्यवहार की विशिष्टता को प्रकट

---

१ स कमला प्रसाद – आँखन देखी – पृष्ठ–२१९

२ परसाई शिकायत मुझे भी है – पृष्ठ १२७

करते हुए समाज के सम्पूर्ण व्यवस्था का चित्र भी खींचते है। परसाई के रेखाचित्र मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित है ये ऐसे व्यक्तियो के रेखाचित्र है। जो जीजिविषा की खोज मे सघर्षरत है। अपने जीवन के मीठे–कडुवे अनुभव को परसाई ने मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखने–समझने का प्रयास किया है परसाई ने मनुष्य की व्यक्तित्व सम्पन्नता तथा परतो के बीच व्यक्तियो के विशिष्ट व्यवहार और उसके माध्यम से पात्र के विशिष्ट मनोविज्ञान को चित्रित किया है। नर्मदा खरे ने 'बोलती रेखाए' (रेखाचित्र सग्रह) के सबध मे लिखा है कि रेखाओ से जीवन का मर्म बोलता है व्यग्य का जब जीवन की व्यथा से अभिभूत होता है तब वह 'रामदास' जैसी वेदना को साकार करता है। और जब उच्च वर्गीय पाखण्ड और सतहेपन पर हँसता है तब 'साहब महत्वकाक्षी' को मूर्त करता हैं इन रेखाचित्रो मे हमारे परिचित चरित्र ही है पर परसाई ने अपनी मर्मस्पर्शी दृष्टि से उनके भीतर पीडा आत्मसम्मान, स्वार्थपरता, कुण्ठा, पाखण्ड, छल, और दुर्बलता ओछापन और गहराई देते है

भाषा – परसाई की भाषा के कई रूप है उनके शब्द अर्थ के कई रूपो को ग्रहण किया है। वे सपाट बयानी से बात कहते है। प्रसगानुकूल भाषा को बदल भी देते है। कहीं–कही बुन्देलीका प्रभाव हल्का सा दिखता है लेकिन उसमे वे डूबे नहीं है भाव सवादी विचार धारा अपनाने के बावजूद वे आयातित भाषा का प्रयोग नही करते हैं जैसा कि अन्य मार्क्सवादी विचारक करते हैं।

मुहावरे, सूक्तिया और लोक्तियों का प्रयोग, वे बहुतायत ढग से करते हैं– पाप के हाथ मे पुष्प की पताका लहराती है (तटकी खोज)। अपनी अर्थ व्यवस्था को डगू हो गया है, लेटती है तो उठा नही जाता बिठा लो लुढक जाती है (पगडण्डियों का जमाना)। ऐसे बहुत ढेर सारे उदाहरण परसाई की रचनाओं में भरे पडे हैं।

परसाई ने तमाम रचनाए फैंटेसी के माध्यम से की हैं 'रानी नागफनी की कहानी',

'निठल्ले की डायरी', 'अकाल उत्सव' 'राष्ट्र का नया बोध', 'युग की पीडा', 'रिटायर्ड भगवान की कथा' आदि रचनाए फैटेसी का उदाहरण है। जहाँ फैटेसी के माध्यम से कल्पना के द्वार से वास्तवविकता के मकान में घुसपैठ की जाती है।

'प्रतीक' समय सन्दर्भ मे समय सचेष्ट ईमानदारी निभाता है प्रतीक मे आरोपित विषय की प्रधानता रहती है। और सकेत द्वारा अप्रस्तुत की ओर इगित किया जाता है। परसाई ने अपनी कहानियो में प्रतीको द्वारा सुन्दर योजना की हैं" हमप्रतीको से लडते है छाया पर हमले करते हैं अर्जुन मछली की परछाई पानी में देखकर ही उसे बाण से छेद दिया पर आज के हमारे धर्नुधर तो मछली को छोडकर उसकी परछाई को हो ही बाण मारते है शेर उधर खडा है, उसकी छाया पर गोली दागते है। 'जैसे उनके दिन फिरे' 'वैष्णव की फिसलन' में प्रतीक के माध्यम से परसाई कहानी को कहते है।

'बिम्ब' मे चित्र स्पष्ट अकित किये जाते हैं प्रतीक की भॉति रहस्यमय नही । जब कल्पना मूर्त रूप धारण करती है तो बिम्ब बनते है। परसाई हमारे जीवन के द्वन्द्वो को सतह पर दिखाई पडने वाले बिम्बों मे पकडते है। और गहरी समझ के साथ हमारी धार्मिक पौराणिक मानसिकता से जोडते है। उदाहरणार्थ–

स्त्री ने पूछा प्रियतम तुम कौन सा पद पसन्द करोगे ? वानर ने कहा प्रिये मैं कुलपति बनूँगा। मुझे बचपन से ही विद्या से बडा प्रेम हैं (लका विजय के बाद)

परसाई पौराणिक कथाओ को नये कलेवर में प्रस्तुत करते है। जिसके कारण उनके चरित्र नये अर्थ देने लगते है। 'सुदामा के चावल', 'श्रवण कुमार', 'मेनका का तपोभग', 'त्रिशंकु', 'देवता और राक्षस', 'पाप और पुण्य', 'एकलव्य ने गुरु को अगूठा दिखलाया' आदि इसी प्रकार की रचनाए है जिसमें परसाई ने पौराणिक कथाओं के माध्यम से समकालीन

घटनाओ को जोडने का काम किया है। "परसाई के व्यग्यो मे आधुनिक जीवन की विडम्बनाओं को स्पष्ट करने वाली मिथक योजनाए और फँतासिया भी मिलती है। परसाई ने मिथक और फतासी को स्वछन्दतावादी, व्यक्तिवादी की मनोगत धाराणाओं से मुक्त किया है उन्हे सामाजिक आर्थिक राजनीतिक आधार प्रदान किया है। इस प्रकार मिथ और फतासी को आधुनिक जीवन से जोडकर प्रासगिक बना दिया है।

"परसाई का व्यग्य मानवीय वजूद पर मडरा रहे हर खतरे की ओर इगित करता है वह परिवर्तन का सन्देश देता है। उनकी भाषा की दाहकता के करण ही विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने उसे भाषा की लपट कहा है।[१] कबीर, तुलसी आदि सन्तकवियो और खुसरो, मीर, गालिब से लेकर, 'ठेठ' आज तक हिन्दू उर्दू के जितने रूप हमारी भाषा में हो सकते है परसाई के गद्य मे उन सभी का स्वाद मिलता है यह आकस्मिक नही है कि प्रेमचन्द्र के बाद सबसे सशक्त गद्यकार और स्वातन्त्रोत्तर भारत के प्रतिनिधि लेखक के रूप में हम परसाई को नये सिरे से पहचान सकते है।

❑

---

१ परसाई रचनावली– खण्ड १ – पृष्ठ २

पंचम अध्याय

समग्र परसाई साहित्य का मूल्यांकन

व्यंग्य के सौन्दर्य शास्त्र के परिप्रेक्ष्य में परसाई साहित्य

सृजनात्मकता, दर्शन और वर्णन की शक्ति से युक्त मानव-मानस-व्यापार है जिसके माध्यम से वस्तु के मर्म का साक्षात्कार से मूर्त-अमूर्त प्रकाशन होता है। सभी के अन्दर सृजन की क्षमता कमोवेश होती है लेकिन उचित अवसर, अनुकूल परिस्थितिया तथा अभ्यास द्वारा इसका प्रस्फुटन होता है-कलाकारों, सृजनहारों में यह क्षमता अद्‌भुत रूप से पायी जाती है- "वस्तुत सृजनात्मकता मनुष्य की अन्तश्चेतना की वह जन्मजात स्वायत्त शक्ति है जो प्रेरणा एव तदनुकूल परिस्थिति होने पर उद्‌भूत एव व्यापार तत्पर होती है तथा ज्ञान एव अभ्यास से विकसित की जा सकती है।"[१] व्यग्यकार भी इसी प्रकार सृजन करता है उसके लिए भी व्यग्य एक दर्शन की विधि है जो मूल्य बोध एव सौन्दर्य बोध से प्रेरित होकर व्यक्ति और समाज की कुरूपता पर, मूल्यहीनता पर, विडम्बना पूर्ण स्थिति पर, व्यवस्था के पगुपन पर, विभाजित व्यक्तित्व पर सर्जनात्मक प्रहार करता है। व्यग्यकार अपने सामने वाली वस्तु से जिस कोण से सवेदित होता है रचना-प्रक्रिया मे वह उसी को उभारने लगता है। अपनी अलग दृष्टि, अलग वैचारिक प्रतिबद्धता और अनुभव गहनता के कारण एक ही विषय-वस्तु की रचना की परिणित अलग-अलग होती है। इसी कारण से प्रत्येक व्यग्यकार की अपनी रचना-प्रक्रिया होती है और अलग रचना दृष्टि भी।

मलय, व्यग्य शास्त्र के नौ रूप बताते है जिसे वे 'रूप, उपरूप और अनुरूप' अनुभाग मे बाँटते है-"रूप तीन होते हैं-तीक्ष्ण-वैदग्ध्य, विडम्बना और व्यग्य। उपरूप भी तीन होते हैं, उपहास, निन्दा-विनोद और हेय हास। अनुरूप भी तीन होते हैं-कटाक्ष, प्रभर्त्सना और आक्षेप। व्यग्यकार तीक्ष्ण-वैदग्ध्य मे प्रत्युत्पन्नमति से हास्यास्पद (शत्रु) का हथियार छीनकर उसी पर प्रहार करता है। तो विडम्बना में एक ओढी हुई विमूढता से घेरकर उसका खात्मा

१ डॉ मिशा अग्रवाल – सृजनशीलता और सौन्दर्य बोध, पृष्ठ ४५

कर देता है। व्यग्य रूप मे वह खुलकर योद्धा की भाति आक्रमण करता है। उपहास, निन्दा, विनोद मे व्यग्यकार निजी शत्रु मानकर व्यवहार करता है। उपहास मे अपने को ऊपर रखकर उसके लिए लोगो के मन मे तिरस्कार की भावना भरता है। निन्दा-विनोद में उनकी मान्यताओं को मनोरजन की वस्तु बना देता है। हेय हास द्वारा उसे सीधे घृणा का पात्र बनाया जाता है। व्यग्य अनुरूपो मे कटाक्ष द्वारा सीधे प्रहार किया जाता है, प्रभर्त्सना द्वारा प्रपची को हजारो लाखो की दृष्टि मे तुच्छ अयोग्य सिद्ध किया जाता है। आक्षेप द्वारा क्रोधातुर सीधा प्रहार किया जाता है।"[१]

परसाई के व्यग्य एक दूसरी तरह से ऐतिहासिक सदर्भ में पहुँचकर स्वीकृत रास्ते पर चलने की ताकत देते हैं। परसाई के व्यग्यो में व्यग्यशास्त्र के सभी रूपो के दर्शन होते है, पहले रूप का दर्शन कबीरदास 'जतन से ओढी ज्यो कि त्यों धर दिनिहि चदरिया' द्वारा श्रेष्ठता की भावना के परिणामस्वरूप समाज की विसगति को लक्षित करते हुए सभी की पोल खोलते है। परसाई की सजग चौकन्नी दृष्टि मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए समाज के हर भाग में उपस्थित हो जाती है। व्यग्यकार के लिए अपूर्व साहस और सहृदयता भी आवश्यक है। परसाई के व्यग्य इस लिहाज से खरे उतरते हैं। वे बगैर किसी दबाव का अनुभव किये समाज के सभी लोगो के ऊपर व्यग्य बाण छोडते है। व्यग्यकार मूल्यों की रक्षा के लिए अपने को अधिक जिम्मेदार मानता है इसीलिए जब मूल्यो का विघटन होते व्यग्यकार देखता है तो उन लोगों की आलोचना करना शुरू कर देता है। परसाई इस कार्य में समकालीन व्यग्यकारो में सबसे आगे थे। बुद्धि और कल्पना के विचित्र सयोग से व्यंग्य की जो भूमि तैयार होती है उसमे यथार्थ अधिक होता है यथार्थ की रचना करते समय व्यग्य रचनाकार परसाई यह सदैव ध्यान रखता है कि करुणा का परित्याग पूरी तरह से न किया जाय। व्यंग्य मानवीय सहानुभूति से ही पैदा होता है मानवता को विकृत कर देने वाली व्यवस्था के प्रति परसाई की दृष्टि

---

१ सं० कमला प्रसाद-आँखन देखी-३०४

आक्रोशित ढग से पडी है।

रचना का सौन्दर्यशास्त्र रचना के विकास के साथ विकसित होताहै। परसाई ने इस काल की घडी मे भाषा के रचनात्मक मानको से रिश्ता कायम किया और सामाजिक प्रेरणा के लिए अपनी सटीक भाषा रची। उन्होने भाषा में सवेदनात्मक प्रयोजन को उभारा, सौन्दर्य शिक्षा के लिए लोक भाषा की लहरो और अनुगूँजो को खोजा। व्यग्य केसौन्दर्य शास्त्र की चर्चा करते समय यह भी विवाद उठता है कि जब यह विधा के रूप मे स्वीकार्य नही है तो इसका सौन्दर्य शास्त्र कैसे निर्धारित किया जाय ? व्यग्य का सौन्दर्य शास्त्र वास्तविक आत्मीय वैचारिक एव मानवीय प्रतिबद्धता के बिना अधूरा होता है लेकिन यह प्रतिबद्धता महज वैचारिक प्रतिबद्धता तक सीमित नही होता।

परसाई की प्रतिबद्धता, मानवीय पक्षधरता, सजग विवेक चेतना का अविभाज्य अग है। परसाई का महत्व सम्पूर्णता में है। वे आदि से अन्त तक मानवीय मूल्यो की परम्परा को टटोलते हुए चलते है, जिसके कारण ही वे व्यग्य को एक नयी मानवीय भूमि दे सके। परसाई ने अपने व्यग्यो द्वारा एक विशाल लोक को शिक्षित करने का काम किया है। परसाई की रचनाए रचना और रचयिता की दृष्टि की पूर्णता का अद्भुत उदाहरण है। परसाई का व्यग्य अनुभव की व्यापकता और भाषा कीसहजता के साथ, मानवीय सरोकारो का जिम्मेदारी पूर्ण कार्य किया है।

नयी कहानी और परसाई

यथार्थवादी ताना-बाना ओढकर १९५५ के आस-पास नयी कहानी ने साहित्य के क्षेत्र मे प्रवेश किया। इस आन्दोलन को हवा देने मे कई समकालीन लेखकों ने महत्वपूर्ण योगदान किया। कमलेश्वर के विचार नयी कहानीकारों के सन्दर्भ में इस प्रकार है-हर लेखक ने अपने अनुभूत जीवन की निरन्तरता में से जीवन-खण्डों को उठाकर अभिव्यक्ति दी है। रेणु, राकेश,

राजेन्द्र यादव, भीष्म साहनी, हरिशकर परसाई, अमरकान्त, रमेश वक्षी, मार्कण्डेय, शिवप्रसाद सिंह, मन्नू भण्डारी, शैलेश मटियानी, ऊषा प्रियम्वदा, मधु गगाधर, राजेन्द्र अवस्थी, शानी, शरद जोशी जैसे सशक्त लेखकों ने नयी कहानी को जीवन्तता और विविधता दी है।"[१]

परसाई नयी कहानी के सन्दर्भ में समकालीनता का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि "हमसे पहले की कहानी का एक पूर्व-निश्चित चौखटा था। छन्द-शास्त्र की तरह उसके भी पैटर्न तय थे। पर जैसे नवीन अभिव्यक्ति के आवेग से कविता मे परम्परागत छन्द-बन्धन टूटे। वैसे ही अभिव्यक्ति की माग करते हुए नये जीवन-प्रसगो ने, नये यथार्थ ने, कहानी को उस चौखट से निकाला। आज जीवन का कोई भी खण्ड मार्मिक क्षण अपने मे अर्थपूर्ण कोई भी घटना या प्रसग कहानी के तन्त्र मे बँध सकता है।"[२]

नये कहानीकारों को उनके लेखन की विषय वस्तु के आधार पर तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-

मार्कण्डेय, रेणु, शिव प्रसाद सिह आदि आचलिक कथाकारो मे से हैं। सामाजिक या रोमाटिक नये कहानीकारों में- मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, निर्मल वर्मा, ऊषा प्रियम्वदा, आदि का नाम महत्वपूर्ण ढग से लिया जा सकता है। "जिन वर्गों के प्रति जनमानस में आक्रोश था उन्हें कुछ लेखकों ने गहरे रूप से पेश किया है। उन तमाम स्वार्थी वर्गों के प्रति एक तीव्र घृणा और हिकारत का दृष्टिकोण पैदा हुआ। हरिशकर परसाई ने अकेले ही नेता वर्ग के आडम्बर को अनावृत किया। केशव चन्द्र वर्मा ने सस्थाओं और व्यक्तियो की आन्तरिक विसगति को पकड़ा। शरद जोशी ने आदमी में उपज रहे दूसरे आदमी या उसके दोहरे व्यक्तित्व को उधेड़ कर रखा। और श्रीलाल शुक्ल ने वर्तमान अफसरशाही को नश्तर लगाकर

---

१ कमलेश्वर नयी कहानी की भूमिका, ४०-४१

२ हरिशकर परसाई का लेख-नयी कहानी सन्दर्भ और प्रकृति, ५६

चीरा।"[१] नयी कहानी जीवन-सत्य की कहानी है। इस कहानी में जीवन के स्पन्दनों को अधिक महत्व दिया गया है।

परसाई भी इसी समय कहानी लिख रहे थे। उन्होंने अपनी कहानियों में विस्मित आदमी को जगह दी। परसाई नये कहानीकारो से हटकर मानवीयता से ओत-प्रोत कहानी लिख रहे थे। जब नयी कहानी मे बकौल मुक्तिबोध "आधुनिक मानव की विविध मनोदशा को उसके सन्दर्भों से काटकर, उसके बाह्य सामाजिक परिणाम के पृष्ठभूमि से काटकर, उस मनोदशा को अधर मे लटका कर चित्रित किया जा रहा था और कहानी में एक धुँध समा रही थी।भीतरी और बाहरी दोनो ओर, परिणाम स्वरूप वस्तु सत्यो के सवेदनात्मक चित्रो का प्राय· लोप हो रहा था तब परसाई ने समकालीन मनुष्य के भरसक विविधता भरे समग्र और सम्पूर्ण बिम्ब पेश किये।"[२] नयी कहानी के व्यग्य खण्ड में परसाई का यह महत्वपूर्ण योगदान है।

हिन्दी का व्यग्य १९६० से धीरे-धीरे परिपक्व होना प्रारम्भ हुआ और परसाई शरद जोशी, नरेन्द्र कोहली, श्रीलाल शुक्ल, के० पी० सक्सेना आदि के हाथों में पडकर युवावस्था को प्राप्त हुआ। स्वातन्त्र्योत्तर परिवेश गत विसगतियों तथा रचनाकारों की रचना क्षमता ने मिलकर व्यग्य को 'मसखरेपन' से हटाकर 'दायित्वपूर्ण विधा' बना दिया। किसी रचनाकार की रचना उसके अनुभवो से समृद्ध होती है। परसाई का लेखन उनकी 'आँखन देखी' है। उनके अनुभवों की साक्ष्य है।

परसाई का लेखन देखा सुना है। उन्होने कबीर की भाँति दुनिया को देखा समझा है। समाजकी हर विसंगति से वह उलझते है, हर पाखण्ड से वह टकराते हैं। आम आदमी के

---

१ कमलेश्वर-नयी कहानी की भूमिका १३२

२ सं० कमला प्रसाद-परसाई रचनावली खण्ड १, पृ० १५

दर्द को देख, केवल करुणा प्रकट नहीं करते है बल्कि वे लडने को प्रेरित करते है, मानवीय सवेदना का प्रश्न लेकर राजनीति से जुडते है। परसाई ने राजनीति और साहित्य का गहरा सम्बन्ध जोडा। वे उन लोगो के खिलाफ है जो साहित्य और राजनीति को अलग करना चाहते है। परसाई के अनुसार अगर शासक इस प्रकार की सलाह देता है तो वह बहुत बडा राजनीतिज्ञ है। लेखक जैसे बुद्धिजीवी को अपने रास्ते से वह हटाना चाहता है।

व्यग्य को परसाई ने एक नया अर्थ प्रदान किया। वे स्वय स्वीकार करते है कि व्यग्य को मैने कभी उपहास नही माना है। यह एक गम्भीर और जिम्मेदारी पूर्ण लेखन है। परसाई का साहित्य इस अर्थ में अधिक महत्वपूर्ण है कि इसे पढकर पाठक चुप बैठ नही सकता उसकी चेतना में हलचल होगी। विसगतियो के प्रति वह सचेत होगा। विश्वनाथ तिवारी लिखते हैं–"साल्जेनित्सीन ने तो यहाँ तक कहा है कि किसी देश मे बडे लेखक की उपस्थिति उस देश के भीतर एक दूसरी समानान्तर सरकार के समान है। यदि कोई रचना समाज को सोचने की दिशा देती है। उसकी सवेदना का विकास करती है। उसके सभ्रमो को तोडती हुई उसके मन का परिष्कार करती है। तो क्या यह समाज को बदलना नही है? यह सम्भव है कि लेखक जिन चीजो को बदलने के लिए लिखता है, वे चीजे न बदले या चरितार्थ न हो पर इससे यह तो निष्कर्ष नही निकलता कि वह लेखन को निरर्थक मान ले।"[१]

व्यग्य सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक सभी क्षेत्रो मे जो असहज है उसकी यथार्थ तस्वीर प्रस्तुत करता है। परसाई समाज के कमजोर एव दलित वर्ग से अपना जुडाव रखते हैं। वे उन सभी लोगों पर, सभी क्षेत्रों पर चोट करते हैं जो विकृत हो गया है जो विसगतिपूर्ण हो गया है। प्रगतिशील मूल्यों की रक्षा गैर-प्रतिष्ठा के लिए चलने वाले जन सघर्षों में अपनी लेखनी से जैसा योगदान परसाई ने किया किसी अन्य लेखक ने नहीं किया।" परसाई अपनी

---

१ विश्वनाथ तिवारी–नये साहित्य का तर्कशास्त्र, पृ० २०

कमियो को भी देख सके हैं इसलिए वे दूसरे की बुराई भी देख सके हैं। अपने नैतिक साहित्य और मानवीय सरोकारो से गहरे लगाव के कारण उन्होंने व्यग्य को विधा बना दिया। यद्यपि परसाई व्यग्य इसे स्पिरिट मानते है लेकिन हिन्दी साहित्य को 'सक्षम एव सार्थक व्यग्य' देने वालो में परसाई का नाम अग्रणी है।

परसाई एक प्रतिबद्ध व्यग्य रचनाकार है। उनका प्रधान लक्ष्य मानवीय मूल्यो की स्थापना करना है। इसके लिए उन्होने व्यग्य को माध्यम भर चुका है। परसाई की फटकार उपदेशात्मक नही है बल्कि सवेदना के साथ सुधरने के लिए किया गया पूरा प्रयास है। परसाई ने कही–कही घोर क्रान्तिकारी विचारो का भी प्रतिपादन किया है। जैसे–"सार्थक श्रम से बडी कोई प्रार्थना नही है बालिग होने से पहले बच्चे को कोई धर्म दे देना दण्डनीय अपराध होना चाहिए।"[१] हिन्दी मे परिमार्जित, बौद्धिक और गम्भीर व्यग्य की कमी को परसाई ने पूरा किया। उन्होंने केवल बौद्धिकता के सहारे लेखन कार्य नही किया। मानवीय सम्बन्धो को भी वे उससे जोडते है। अपने आर० एस० एस० सम्बन्धी लेख के कारण उन्हे मार भी खानी पडी। तत्पश्चात् परसाई लिखते है 'मेरा लेखन सार्थक हो गया। व्यग्य की वर्ग शक्ति की शिक्षा उन्होने गोर्की से ग्रहण की थी। कबीर की अक्खडता और सच्ची सीधी बात कहने के साथ उन्होने वैज्ञानिक समाजवाद का विचार भी अपने अन्दर समाविष्ट किया। जिससे व्यग्य के व्यापक क्षेत्र का निर्माण हुआ। परसाई स्थानीय से अन्तर्देशीय घटनाओं को अपने लेखन का विषय बनाते हैं। उनके लिए छोटी घटना उतनी ही महत्वपूर्ण थी जितनी कोई बडी अन्तर्देशीय या अन्तर्राष्ट्रीय घटना। वे पूरी तल्खी के साथ सबकी खबर लेते हैं।

परसाई अपने निबन्धों में जीवन की विसगतियों पर पूरी क्षमता के साथ प्रहार करते हैं। वे जानते हैं कि मानव मात्र की लडाई अकेले ही नहीं लड़ी जा सकती है। इस लड़ाई

---

१ आँखन देखी–कमला प्रसाद १२८

मे सम्पूर्ण समाज को सम्मिलित होना पडेगा। "मेरा मतलब कि साहित्यकार क्रान्तिकारी चेतना का तो निर्माण करता है, परन्तु क्रान्ति जन-आन्दोलनों से ही आती है। साहित्य उसमे सहभागी होता है।" परसाई व्यग्य के साथ चेतना मे परिवर्तन करते चलते है।" परसाई के तेज और तेवर महान मानवीय गुणो को स्थापित करने के लिए बहुत जरूरी है। ऐसे ही व्यक्ति की लेखनी स्याही से नही खून से लेख लिखती है। व्यग्य करती है और हृदय भेद देती है। "इस गद्य के बलिष्ठ और पुरुषार्थों प्रवीण व्यग्यकार की रचनाए ऋषियों की ऋचाओं को मात करती है। जो भारतीय चिन्तन-पद्धति मे आमूल परिवर्तन करती है।"[१] इस प्रकार परसाई का व्यग्य पाठक की सोच को प्रभावित करता है। जैसा कि परसाई जी कहते हैं कि मेरा लेख पढने के पहले व्यक्ति जैसा रहता है। पढने के बाद भी ठीक वैसा नही रह पाता है।

वर्ग सघर्ष और लगातार बढ रही द्वन्द्वात्मकता के कारण अधिकाश लेखक भी अपनी पक्षधरता को निर्धारित नहीं कर पाये है। परसाई ने अपनी पक्षधरता निर्धारित कर ली है। वे शोषित पीडित वर्ग के साथ अपनी पक्षधरता घोषित करते है। परसाई के साहित्य के विषय में "यह सवाल उठाया गया है कि इनका अवदान क्या है?" उन्हे किस रचना के लिए आज से दस बीस या पचास बरस किया जाता रहेगा।"[२] इस प्रश्न के उत्तर मे धनजय वर्मा ने कहा है, "क्या विश्व-आहित्य में ऐसे रचनाकार भी नहीं हुए जिन्हें किसी रचना विशेष के लिए नही, बल्कि उस समग्र लेखन के लिए याद किया जाता है, किया जाता रहेगा, जिससे साहित्य की मौजूदा सस्कृति में एक क्रान्ति आयी और एक नयी सस्कृति की रचना हुई।"[३] परसाई ने एक प्रतिबद्ध बौद्धिक पाठक वर्ग तैयार किया है। एक कुशल सर्जक की भाति विसगतियों को चीड़-फाड़ कर निकाल फेंकने में कामयाबी हासिल की है।

---

१ समय-चेतना/अक्टूबर १९९५/३१

२ परसाई रचनावली भाग-१, पृ० १०

३ परसाई रचनावली भाग-१, पृ० १०

निबन्ध की विधा परसाई ने अपनी स्वच्छन्दता के कारण अधिक पसन्द किया। इसी कारण कहानी के बाद सबसे अधिक उन्होने निबन्ध विधा को ही अपनी रचना के लिए चुना। यद्यपि उन्होने राजनैतिक, सामाजिक धार्मिक सभी मूल्यों पर लिखी तथापि राजनैतिक व्यग्य अधिक लिखा। उनके विचारो मे राजनीति ही आम आदमी की भाग्य विधाता है। एक विशेष विचारधारा से प्रतिबद्ध होने के बावजूद उनकी रचनात्मक क्षमता की धार कुद नहीं हुई है। परसाई का "निबन्ध साहित्य एक वृहत युग गाथा लगता है। वह एक विशद असमाप्त महाकाव्य लगता है। वह स्वातन्त्र्योत्तर भारत की युग-गाथा है। व्यग्य-निबन्धो का यह महाकाव्यात्मक प्रभाव हिन्दी की गई उपलब्धि है। वर्तमानता, मामूलीपन की अनिवार्यता, महत्ता इन सबके साथ परसाई के निबन्धो के शिल्प और विधा के नये पन का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है।"[१] परसाई ने अपनी रचनाओं द्वारा स्वतन्त्रतावाद की सामाजिक चेतना को जगाने मे महत्वपूर्ण कार्य किया है।" परसाई के गद्य लेखन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उन्होंने भारतेन्दु युगीन गद्य और खास कर व्यग्यात्मक निबन्ध लेखन की श्रेष्ठ परम्परा को नये सिरे से अविष्कृत किया और उसका कलात्मक विकास किया। इस विकास मे सिर्फ श्रेष्ठ परम्परा से जुडकर उसकी कडियो को आगे बढाने की बात ही नही, बल्कि सार्थक और नवीन प्रयोगों की मौलिक प्रतिभा के भी हमे भरपूर दर्शन होते है। इसलिए यह विकास एक गुणात्मक विकास है।"[२]

"परसाई के लेखन को समग्रता मे देखा जाय तो वर्तमान भारत के द्वन्द्व का चित्र उभरेगा। इस चित्र में एक कसमसाता, छटपटाता हुआ भारत है जिसे एक और छद्म भारत ने दबोच लिया है। दबोचने वाला और दमित दोनों भारत सक्रिय है। दोनों के बीच निरन्तर

---

१. विश्वनाथ त्रिपाठी – देश के इस दौर में पृष्ठ-११

२ परसाई रचनाबली खण्ड-२, पृष्ठ-२

दाँव-पेच चल रहे है। शोषक, शोषित, उनकी समस्याए, सास्कृतिक, आर्थिक आचरण सब परस्पर सम्बद्ध है। इस सघन परस्पर-सम्बद्धता, को ही वर्तमानता की अखण्डता समझिए। इसमे उच्च वर्ग, मध्यवर्ग, और निम्न वर्ग सबकी आशाए, आकाक्षाए है। सबके अपने-अपने दुःख है। दुःख और सुख विविध है, भिन्न है, छद्म है, सच्चे है।"[१]

परसाई का प्रत्येक व्यग्य निबन्ध किसी घटना पर सवेदनात्मक प्रतिक्रिया होती है। सवेदना-नैतिकता-पुष्ट होती है। परसाई का सवेदनात्मक आग्रह अधिकाधिक स्थितियो के विश्लेषण, परीक्षण के निष्कर्ष का परिणाम होता है। परसाई के व्यग्य मे मनोविकारो का समावेश अधिक है। व्यग्य मे तेज और दीप्ति करुणा की होती है। व्यग्य उनके लेखन का रूप होता है। यही कारण है कि परसाई के अधिकाश निबन्ध समकालीन कहानीकारो की कहानियों से अधिक पढे जाते है। इनके निबन्धो मे कहानीपन का समावेश होता है। निबन्धो मे घटना और चरित्र का परस्पर प्रभाव भी दिखलायी पडता है।

परसाई के व्यग्य निबन्धो मे साहित्य का अधिकाधिक रूप समाहित होता है फिर भी ये निबन्ध होते हैं क्योकि इसमें कथा प्रवाह नही होता, विषय प्रधान होता है। विचार सूत्र ही मुख्य है। अन्य साहित्य विधाए साधन रूप मे आ गयी हैं। इसी कारण परसाई के निबन्ध चित्रात्मक हो गये हैं। जैसे 'प्रेमचन्द के फटे जूते' 'लिटरेचर ने मारा तुझे' आदि में।

परसाई ने जन सामान्य को सम्बोधित करते हुए 'सुनो भाई साधो' की तरह अपने निबन्ध वार्तालाप शैली में लिखा है-इनके निबन्धो मे पाठक और श्रोता की उपस्थित बनी रहती है। बीच में परसाई अपने को टोकेगे, लौटो परसाई जोक पर लौटो।" अनौपचारिक गप्प-सप्प, बहस या वार्तालाप की तरह वे कहीं से शुरू होकर, कहीं भी खतम हो सकते हैं। प्रारम्भ प्रायः किसी व्यक्तिगत घटना, अखबार की खबर या विचार से होता है। अगला सूत्र, किसी

---

१ पं० विश्वनाथ त्रिपाठी-देश के इस दौर में, पृ० ११

मित्र, रिश्तेदार या व्यक्ति के आगमन से आता है। किसी घटना या स्थिति पर टिप्पणी भी बहुत दूर तक चल सकती है। इनके निबन्धो के अनेक लघु कथा खण्ड भी होते है। बीच का अश, टिप्पणी, सवाद, करनी-चित्रण, सूक्तियो, सूत्र-वाक्यों से भरा होता है। जिसमे नाटकीयता होती है। अनेक स्थलो पर लेखक अपनी सारी लेखकीय मुद्रा त्यागकर सीधे व्यक्ति तौर पर बात करने लगता है।"[१]

परसाई के व्यग्य निबन्धो की भाषा उनकी नैतिक सवेदना के आधार से जुडी है। इतराने वाले लोगो की भाषा भी ओवर एक्टिग करती है। ओवर एक्टिग का उपयोग वे भाषा के माध्यम से व्यक्त करते हैं। उससे उनका मुखौटा अधिक स्पष्ट हो जाता है। जैसे-साहित्यकारों का यह जुमला- 'मूल्यो का विघटन हो रहा है', 'नये साहित्यकार सुविधा भोगी हो गये है आदि।

विश्वनाथ तिवारी ने उनके निबन्धो की भाषा एव व्यजन-विवेचन करते हुए लिखा है, "अनावश्यक रहितता सौन्दर्य बोध का भी आधार है। शरीर, कर्म और भाषा सबका। शरीर मे जितना जो जहाँ चाहिए वहाँ उतना होना चाहिए। ज्यादा मास, ज्यादा हड्डी, ज्यादा लम्बी नाक, सब सुन्दरता के विरोधी है, तोंद, मोटापा, शारीरिक असुन्दरता के कारण है। इसी तरह अनावश्यक से कम भी असुन्दरता है। विकलागता है। सौन्दर्य-सुषमा। सुसगति मे है। वह अनावश्यकता और न्यूनता का विरोधी है। भाषा मे सुन्दरता तभी आती है जब वह अनावश्यक से बचे। आचरणगत अनावश्यक स्वाग है। अनावश्यक अर्थ सग्रह पूजीवाद है। यह अहकार का ही आर्थिक पक्ष है। परसाई का व्यग्य व्यग्यपूर्ण स्थितियों की समाप्ति चाहता है। यह उनकी सवेदना का आधार है। जो शिल्प में भी प्रतिफलित होता है।"[२]

---

१ विश्वनाथ तिवारी – देश के इस दौरे में, पृष्ठ-१०८

२. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी – देश के इस दौर में ११०

कहानी के बने-बनाये ढर्रे को प्रेमचन्द ने अगर छोड दिया था तो परसाई ने एकदम उससे नाता ही तोड़ लिया। परसाई ने अपनी कहानियों मे सस्कार और सस्कृति को बदला। परसाई की कहानियो मे "व्यक्ति की, समकालीन समाज की, प्रवृत्तियो की युगात्मा एक साथ है। उनके चरित्र एक ऐसे अनुभव को रूपायित करते है। जो सामान्य दुनिया मे असामान्य है उनमे समकालीन रीतियो और रिवाजो का व्यापक विवरण और विश्लेषण है। वहाँ आत्म तुष्ठ मध्य वर्ग है। आत्मदम्भी बुद्धिजीवी है। दर्द को कलेजे की भट्टी मे गलाकर हसने वाले, उदासीन वृत्ति की विक्षिप्त सी लगने वाली निरपेक्षता को प्रतीकी कृत करते पात्र हैं। ईमानदारी की बीमारी से ग्रस्त लोग है। जिनकी करकती खागालती वेदना का घुमडता हुआ नि.शब्द शोर हमारी-आपकी आत्मा तक को कपा देती है। समकालीन भारतीय जीवन का ऐसा कोई भी कोना और वर्ग, चरित्र और व्यक्ति नही है जो परसाई के कहानियों मे मूर्त नही हुआ होगा।[१] इसी कारण यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि परसाई की कहानियाँ स्वतन्त्रता बाद के हिन्दुस्तान की कहानी है। ये कहानियाँ सम्पूर्ण रूप मे मिलकर भारत की एक ऐसी तस्वीर उभारती है जो कि भारत की सच्ची तस्वीर लगती है।

स्वतन्त्रता बाद के समय जहाँ नये कहानीकार कुठा, सन्त्रास, प्रणय और परिणय मे फसकर कथावस्तु का चुनाव करते थे। परसाई अपने समाज में घट रहे छल और पाखण्डो के विरुद्ध एक जोरदार आवाज लगा रहे थे। मानवीय सम्बद्धता का जो रूप परसाई की कहानियों मे दिखलायी पडता है। वह रूप नये कहानीकारों में से किसी की भी कहानी मे नही मिलता है। परसाई के व्यग्य ने समाज के ढके पाखण्ड को उभारने का कार्य किया। परसाई ने अपनी कहानियो में एक विस्तृत फलक को उतारा है जहाँ एक प्रतिरोध और प्रतिवाद उपस्थित है। इनके कहानियों में रिश्तों की एक गाँठ बँधी है। जहाँ इसकी रक्षा के लिए

---

१ सारिका १९८४, १६-३१ मार्च ६८

२ विश्वनाथ प्रसाद तिवारी - देश के इस दौर में ११०

चौतरफा लडाई है। समाज का क्रान्तिकारी परिवर्तन मनुष्य की मुक्ति, एक बेहतर ससार की रचना, यही वह परिप्रेक्ष्य है। जिसके लिए कहानियाँ लिखी गयी है।

परसाई की कहानियाँ जितनी सहज और सीधी जान पडती है, उतनी है नही। सीधी-सहज भाषा एक परिपक्व वयस्क चेतना और गहरे चिन्तन भवन के परिणाम स्वरूप ही उभर पाती है। परसाई की कहानियों मे निबन्ध और टिप्पणियाँ, साक्षात्कार और स्मरण, रिपोर्ताज और रेखाचित्र के विद्यागत मोटिफ घुल मिल गये है। पुराण कथा, दन्त कथा, और मिथक, बैताल कथा, तिलस्मी, ऐय्याशी, लोक कथाए, लोक वार्ता, स्वाग, कपोल कल्पना, फैटेसी, लघु कथा सभी कुछ के साथ परसाई आदि काल से लेकर आधुनिक काल तक की सारी कहानियो की विशेषताए समेटे हुए हैं।

परसाई की कहानियो की भाषा आम बोलचाल की भाषा है। क्योकि उन्होने विषय-वस्तु का सचयन जहाँ से किया है भाषा का चुनाव भी वही से किया है। ये नहीं कि विषय कही का और भाषा कही की। मध्य वर्ग को चित्रित करते समय वे उनके ही परिवेश की भाषा, बोलचाल, मुहावरे, कहावते आदि को प्रयोग मे लाते है। इनकी इसी विशेषता के कारण परसाई की कहानियो का पाठक भी अलग से तैयार हुआ है। परसाई भाषा के साथ कोई अतिरिक्त छेड़छाड़ नहीं करते है बल्कि कभी-कभी उसे 'जस को तस' परोस देते हैं जिससे गद्य का नया मिजाज भी बना और तेवर भी बदला।

परसाई की कहानियाँ लोगों की जुबान पर बैठी है और लोगों के विचारों को पुष्ट करने के लिए उदाहरण स्वरूप काम आती है। धनन्जय वर्मा उनकी कहानियों की विशेषता इस प्रकार बतलाते हैं, "परसाई की कहानियों का जायजा लें, तो उनमें से समकालीन मनुष्य की इतनी विविध शक्लें उभरती हैं, उसमें इतने मुत्तलिफ चेहरे और उसके इतने सघन एव व्यापक प्रतिरूप सामने आते हैं कि वे सब परसाई के अनुभव ससार की गहनता एव विविधता के

ही प्रतीक हो जाते है। परसाई की कहानियाँ इस लिहाज से 'समकालीन भारत का एक सैरवीन कैलिडोस्कोप' है। और यह बना है उन सबीहों से जो मुक्तलिफ वर्गों और स्थितियो प्रसगो और घटनाओं में फसे और जद्दोजहद करते मनुष्य की है। जो अपने माध्यम से राजनीति, प्रशासन तत्र, शिक्षा, नौकरशाही, गरज की समकालीन जगत के लगभग हर स्तर को रौशन करती है।"[१]

स्तम्भ लेखन परसाई की रचना का एक महत्वपूर्ण भाग रहा है। धनन्जय वर्मा ने लिखा है कि, "प्रेमचन्द के बाद अकेले परसाई है जिन्होंने सपाट गद्य की अखबारी तात्कालिकता को इतनी रचनात्मक उत्तेजना दी है कि उनके अनुभव, चरित्र और घटनाए अनायास प्रतीक और व्यग्य का दर्जा अख्तियार कर लेते हैं। और समकालीन इतिहास के अनिवार्य अग बन जाते हैं।"[२] नियमित कालम द्वारा लेखन कर्म करने से परसाई का व्यग्यकार अधिक सृजनहार हुआ। परसाई ने राजनीतिक व्यग्य द्वारा लोगों की राजनीतिक चेतना के ऊपर जमी काई को हटा दिया। वे तात्कालिक होते हुए भी इस अर्थ मे कालजयी रचना करते थे कि मानव मूल्य दिन प्रतिदिन नही बदलते है। स्तम्भ लिखते समय परसाई की भाषा स्थिति प्रवेश और विषय-वस्तु के अनुरूप होती थी। राजनीतिक व्यग्य में जहा राजनीतिक शब्दावली का प्रयोग किया जाता था। पौराणिक कथा आख्यानो में धार्मिक शब्दावली सहज आ जाती थी। जहाँ कही भी परसाई ने आधुनिक जीवन शैली को लेकर स्तम्भ लेखन किया है, वहाँ भाषा भी उन्ही के अनुरूप है। इस प्रकार विषय वस्तु के अनुरूप भाषा का प्रयोग करके परसाई ने स्तम्भ लेखन में व्यग्य की धार को तेज किया है। चाहे वह 'कविरा खडा बाजार में' हो 'तुलसी दास चन्दन घिसै' हो 'सुनो भाई साधो' हो 'ये माजरा क्या है' हो अथवा अन्य कोई।

---

१ सारिका १९८४, १६ से ३१ मार्च, ६८

२ परसाई रचनावली खण्ड-५, फ्लैप

परसाई ने अपने रेखाचित्रों मे मध्यमवर्गीय रचना ससार का ऐसा शब्द चित्र खीचा है कि वस्तुस्थिति का उद्घाटन बडी ही सूक्ष्मता के साथ कुशलतापूर्वक हो जाता है।

परसाई रेखाचित्रो को लिखते समय उन सम्पूर्ण कारणो की भी छानबीन करते चलते हैं जिसके कारण पात्र की मनोदशा इस प्रकार की हुई। यह परसाई की अपनी विशेष वैचारिक दृष्टि मानवीय सवेदना सिक्त भावना के कारण ही हो पाता है। अन्य किसी व्यग्यकार के अन्दर इस प्रकार की क्षमता और कौशल का दर्शन नही होता। व्यग्य विधा के माध्यम से परसाई ने जिन रेखाचित्रो की रचना की है, वे मानवीय चेतना को समझने की दृष्टि से एक-एक विषय का काम करते है। यही कारण है कि परसाई गहरी भूमि मे उतर कर पात्रो का सही अकन करते हुए पाठक के अन्दर करुणा पैदा कर सके हैं। परसाई के रेखाचित्र हसने को नही सोचने को बाध्य करते है, मुक्तिबोध का सस्मरण लिखते हुए परसाई ने उन तमाम स्थितियो का चित्रण भी किया है जिससे मुक्तिबोध जीवन भर सघर्ष करते रहे। इसके माध्यम से परसाई ने मानवता विरोधियों से लडने का सकल्प दुहराया है।

परसाई के रेखाचित्र इसलिए और अधिक महत्वपूर्ण है कि ये समाज की विसगतियो को उभारते हुए हमारे सामने सच्ची तस्वीर पेश करते हैं।

परसाई ने व्यग्य लेखन के क्षेत्र मे उस ऊँचाई को छुआ है जो निबन्ध लेखन मे रामचन्द्र शुक्ल तथा उपन्यास और कहानी मे प्रेमचन्द ने। स्वतत्रता पूर्व भारत को समझने मे अगर प्रेमचन्द की कहानियाँ और उपन्यास सहायक है, तो परसाई की व्यग्य रचनाओं की अगुली पकड़ कर स्वतत्रतावाद के भारत को सच्चे रूप में घूमा जा सकता है। परसाई व्यग्य को गम्भीर लेखन मानते थे, साहित्य का मनुष्य से गहरा लगाव स्वीकार करते थे। यही कारण है कि परसाई की रचनाओं मे समाज की विद्रूपता का उद्घाटन दाँत निकालने के लिए नही दात पीसने के लिए होता है। समकालीन अन्य व्यंग्यकार हल्की-फुलकी चुहलबाजी करके

अपने दायित्वो की इतिश्री कर लेते थे, लेकिन परसाई समाज के वे सिपाही है जो गली-मुहल्ले, सभा, गोष्ठी-स्कूल-कालेज शादी, विवाह तथा सामाजिक गतिविधियो के हर कार्यक्रम मे उपस्थित होकर अपनी सस्कृति की परम्परा का निर्वाह करने के लिए प्रेरित करता है।

परसाई की रचनाए हमेशा मानवीय सरोकारों से जुडी रही है। किसी भी विषय पर लिखते समय परसाई की दृष्टि मानवता को खोजती फिरती थी, जहा भी जैसे भी इसके उद्घाटन का अवसर मिला परसाई ने उसे उसी रूप मे उपस्थित कर दिया। परसाई ने यथार्थ की स्थिति का भी कल्पना के द्वारा चित्रण किया है जो कि कल्पित होते हुए भी यथार्थ है। परसाई ने शुरू की रचनाओं मे जैसे 'तट की खोज', 'ज्वाला और जल', 'पैसे का खेल' तथा अन्य मे मध्यम वर्गीय भावुकता से ग्रस्त थे लेकिन बाद की रचनाओं मे परसाई ने व्यग्य का इतना पैना प्रयोग किया है कि समाज का हर दानव घायल नजर आता है। समकालीन व्यग्यकारों की यह स्थिति नही है। शरद जोशी, श्रीलाल शुक्ल, नरेन्द्र कोहली, रवीन्द्र त्यागी आदि सभी मे एक उन्नतशील व्यग्यकार तो मौजूद है लेकिन वैचारिक प्रतिबद्धता तथा मानवीय सवेदना की उस पृष्ठभूमि का अभाव इन लोगों के अन्दर दिखलायी पडता है जिसका परसाई के पास खजाना है। परसाई कबीर की भाति मनुष्यता से गहरे रूप से जुडे थे। मार्क्स के विचारों से प्रेरित थे। चेखव की सवेदना थी तो मन के अन्दर तुलसी की समन्वय वादिता थी। परसाई बौद्धिक पाखण्ड मे जीने वाले प्राणी नहीं थे। यथार्थ की कठोर भूमि पर चलने वाले मध्यम वर्गीय प्राणी थे। सुख-दु:ख की पीडा को वे बगैर किसी कलात्मकता के साथ कह डालते थे।

स्वतत्र भारत में परसाई का हिन्दी साहित्य में एक विशेष स्थान रहा है। निबन्ध कहानी, रेखाचित्र तथा कालमों के माध्यम से परसाई ने एक ऐसा गद्य रचना ससार बनाया जो कि स्वातन्त्र्योत्तर भारत में अन्य किसी के पास नहीं है। प्रेमचन्द के बाद ये दूसरे सबसे बडे

गद्य रचनाकारों मे से है। शिल्प वैविध्य तथा विषय वैविध्य के कारण भी ये प्रेमचन्द्र की परम्परा मे ही सम्मिलित होने योग्य है। व्यग्य रचनाकारो में यह सदा पहली पक्ति के पहले व्यक्ति ही गिने जायेगे। 'शेर जग गर्ग' एक बातचीत में स्वीकार करते है कि अब व्यग्यकार से पाठको की अपेक्षाए बढ गई हैं वह अपने आपको फूहड विषयो से ही क्यों बाँधे। व्यग्यकार को अब मनोरजन के लिए नही पढा जाता उसे विचारक एव चिन्तक की मान्यता दी जाती है। हरिशकर परसाई को लोग पढते हैं तो इसलिए क्योकि उससे दिमागी खुराक मिलती है। रवीन्द्रनाथ त्यागी तो बहुत आनन्द देता है।"[१] इसी प्रकार नरेन्द्र कोहली एक बातचीत मे स्वीकार करते है कि व्यग्य के क्षेत्र मे शुरू मे मैं तीन ही नाम महसूस करता था, परसाई, शरद जोशी और रवीन्द्र त्यागी। आगे वे कहते हैं कि हरिशकर परसाई से मैने व्यग्य के सस्कार ग्रहण किये। परसाई व्यवस्था को ही बदलना चाहते हैं तो शरदजोशी विसगतियो का तो विरोध करते है लेकिन प्रजातान्त्रिक व्यवस्था को बदलने का विशेष बल नही है और रवीन्द्र नाथ त्यागी साहित्यिक है। तात्पर्य कि परसाई के अन्दर समग्रता को ग्रहण करने की शक्ति है और समग्रता से प्रकट करने की भी। परसाई का साहित्य इसलिए अधिक मूल्यवान है कि इन्होने साहित्य को व्यक्तिगत होने से बचा लिया। स्वतन्त्रता बाद जब साहित्य की सभी विधाओं में वैयक्तिकता का बोलबाला था तो परसाई अकेले ऐसे साहित्यकार थे जोसाहित्य का सम्बन्ध मानवता से जोडकर चल रहे थे। आज का साहित्य पूरी तरह से वैयक्तिक हो गया होता अगर परसाई जैसा मानवीय गुणों से युक्त व्यक्ति उस समय उपस्थित न हो गया होता। परसाई ने साहित्य को दिग्भ्रमित होने से बचा लिया। उन व्यग्यकारों के लिए भी ये मार्गदर्शक बने जिन्होंने व्यग्य लेखन क्षेत्र में पदार्पण किया। परसाई ने व्यंग्य विधा का मानदण्ड उसी प्रकार निरधारित किया जिस प्रकार आलोचना का रामचन्द्र शुक्ल ने।

---

१ सारिका १९८४-१६ से ३१ मार्च, पृ०-१७

व्यग्यकारो की एक पीढी परसाई के व्यग्य लेखन को आदर्श मानकर लेखन कार्य कर रही है। यहपरसाई की रचना के स्वीकार्य का सबसे बडा प्रमाण है और यही परसाई के साहित्य का महत्व भी।

सीमाए – कतिपय विद्वान व्यग्य को छिद्रान्वेषी विधा कहकर इसकी आलोचना करते है इसके उत्तर मे परसाई जी कहते हैं कि, "मेरे लेखन मे तिरस्कार नही, बल्कि आलोचना और जीवन समीक्षा है। अगर मैंने विभिन्न क्षेत्रो में व्याप्त विसगतियो पर व्यग्य किया है तो मैने यह बतलाने की चेष्टा की है कि कहाँ-कहाँ क्या गलत है उसे बदलना चाहिए। तिरस्कार मे मनुष्यता को नकारने, मनुष्य मे आशा खो देने का भाव होता है यह मेरे लेखन मे नही है।"[१]

परसाई का व्यग्य ससार बहुत विस्तृत है। परसाई की व्यग्य रचनाए वहाँ धूमिल-सी दिखती है जहाँ पर वे व्यक्ति विशेष पर प्रहार करते हैं। परसाई जैसे समर्थवान व्यग्यकार के लिए यह अशोभनीय सा लगता है। यही बात उनके मुहावरों और वाक्यो के लिए भी कही जा सकती है जिसका प्रयोग वे कई बार करते हैं। धनजय वर्मा इस सदर्भ मे कहते हैं। "इधर कुछ दिनो से परसाई ने भी कुछ खास वृत्तों में ही चक्कर काटना शुरू कर दिया है। उनके एक साथ चार पाँच व्यग्य पढ लिए जाये तो एक अजीब-सी एकरसता और मैनरिज्म का एहसास होने लगता है।"[२] परसाई के ऊपर धनञ्जय वर्मा का यह कथन राजनीतिक व्यग्य में अधिक दिखलायी पडता है कभी-कभी परसाई व्यग्य की विद्रूपता को प्रगट करने के लिए ऐसे शब्दों का भी प्रयोग करते हैं जो शिष्ट समाज मे अनुचित माना जाता है।

---

१ 'समय चेतना' अक्टूबर १९९५, पृ०-३०

२ कमला प्रसाद- 'आँखन देखी', पृ०-२७५

परसाई का व्यग्य वहाँ भी असरदार नही रह जाता, जहाँ वे समाज सुधारक या उपदेशक की भूमिका मे लेखन कार्य करते है। इस प्रकार की कमी इनकी प्रारम्भिक रचनाओं में ही अधिक है। लगता है कि परसाई के पास उस समय जहाँ अनुभव की कमी थी वही वे तब तक निश्चित नही कर पाये थे कि अपना लेखन वे किस विधा मे करें। उपन्यास विधा को छोडकर जैसे ही परसाई ने व्यग्य विधा को ग्रहण किया उनकी रचनाओं में प्रौढता के दर्शन होने लगे। इस प्रकार परसाई की यह कमी दूर हो गयी।

बालेन्दु शेखर तिवारी परसाई के व्यग्य के सन्दर्भ मे लिखते है कि, "दुर्भाग्यवश परसाई की सभी रचनाए यथार्थ पर सीधी चोट करने वाली नही हैं अपितु कुछ कमजोर रचनाओं मे परसाई का कौशल गुदगुदी कर समाप्त होजाता है जैसे विज्ञापन मे बिकती नारी', 'नान', 'बारात की वापसी', आदि।"[१] परसाई की यह कमी उनकी अपनी चूक के कारण ही है जहाँ कही भी वे प्रायोजित रचनाकार के रूप मे उपस्थित हुए है वहाँ उनके व्यग्य की धार अपेक्षाकृत अन्य व्यग्य रचनाओं के कम हो गयी है। 'कबिरा खडा बाजार' कालम लिखते हुए भी परसाई प्रहारक व्यग्य क्षमता नही उत्पन्न कर पाये हैं क्योकि वे पार्टी प्रेरित होकर लिख रहे थे।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि कुछ सीमाओं को छोड दिया जाये तो परसाई के अन्दर समाज को तिलमिला देने वाली व्यग्य रचना करने की क्षमता मौजूद है और उन्होंने ऐसा किया भी। अपनी व्यग्य रचनाओं से परसाई ने समाज का एक नव प्रबुद्ध वर्ग तैयार किया जो घटनाओं तथा परिस्थितियो का सटीक और यथार्थ विश्लेषण कर सकने में सक्षम हुआ।

❑

---

१ बालेन्दु शेखर तिवारी 'हिन्दी का स्वातन्त्र्योत्तर हास्य एवं व्यग्य', पृ० २०३

षष्ठ् अध्याय
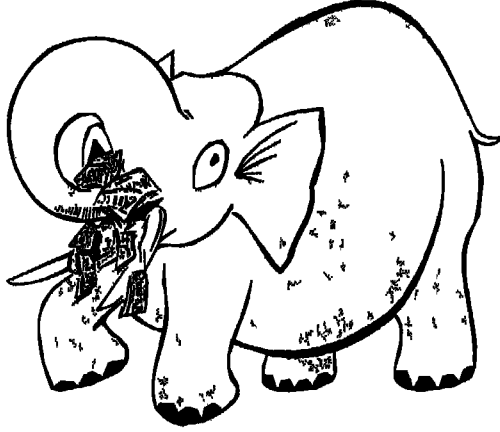
उपसंहार

उपसंहार

समकालीन भारतीय समाज का पूरा चित्र परसाई के लेखन मे उतर आया है। परसाई के रचना ससार मे यथार्थ की पूरी शृखला उपस्थित है। इन्होने समाज का नग्न यथार्थ रूप सबके सामने उपस्थित कर दिया है।

आजादी के बाद इस देश मे विसगतियो का विस्तार अधिक हुआ है। व्यक्ति, जीवन, समाज, राजनीति, धर्म, शिक्षा, सभी क्षेत्र विसगति की सक्रामक बीमारी से ग्रस्त हो गये। जिसके लिए परसाई सबसे अधिक अपराधी राजनीति को ठहराते है। वर्तमान समय में कर्तव्य निष्ठ और ईमानदार व्यक्ति को समाज से बहिष्कृत करने का कार्य चल रहा है लेखक इस मनोदशा का पर्दाफाश कर देता है। अपने लेखन मे विसगतियो विकृतियों की अधिक सूक्ष्म तरीके से दिखला कर व्यग्यकार समाज को प्रशिक्षित करना चाहता है। उसके समझ समाज की ये विसगतियाँ और विकृतियाँ अधिक मुखर होकर उसकी रचना का आलम्बन बन जाती है और इस तरह व्यग्य की धारा प्रवाह सर्जना प्रारम्भ होती है।

मध्यम वर्गीय सामाजिक सरचना में जहाँ लेखक पीडा मोह से ग्रसित है वहीं उसका गाँव और गाँव वासियो से दूर दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं है। परसाई का साहित्य ऐसे मे गाँव और नगर जीवन का बिदूपताओ के साथ लिखित दस्तावेज है। परसाई का व्यग्य सामाजिक करुणा की भूमि पर उत्पन्न होता है। और उनकी आक्रामकता का स्रोत भी यही करुणा है।

परसाई अन्यायी समाज व्यवस्था को खीच-खीच कर सरे आम पीटते हैं और इसके लिए औरों को प्रेरित भी करते है। सामन्त वादी जीवन प्रणाली और प्रजातन्त्र की खोखली

जिन्दगी के बीच विसगतियॉ अपने आप अधिक पनप गयी है। सक्रान्ति काल में आदमी दोराहे पर खडा दुहरी जिन्दगी व्यतीत कर रहा है। एक तरफ शोषित पीडित आदमी की व्यथा है। तो दूसरी तरफ वैयक्तिक पाखण्ड और मूल्यहीनता। अपनी वैचारिक दृष्टि के साथ परसाई उसका सामना करने के लिए आदमी को जगाते है। परसाई की वैचारकि दृष्टि अपनी है अपनी इस अर्थ मे कि वे किसी समस्या का हल अपने परिवेश में करना चाहते है। वे किसी आयातित दर्शन भाषा से उसका निदान खोजने का प्रयत्न नही करते है।

मानवीय-सम्बद्धता के कारण ही परसाई का साहित्य हास्य साहित्य से अलग गम्भीर साहित्य हो सका। तीन दशको के अन्तर्गत उनके व्यग्य के कई पडाव आये। लेकिन प्रारम्भ से ही वे मानते है। कि "जीवन की सबसे अच्छी व्याख्या कार्लमार्क्स की है। मनुष्य की नियति को बदलने वाला सबसे श्रेष्ठ और अन्तिम दर्शन मार्क्सवाद है।" परसाई एक साक्षात्कार मे स्वीकार करते है कि मैं कोरा आदर्शवादी मार्क्सवादी नहीं हूँ जो नारे लिखकर अपने कर्तव्यो की इतिश्री समझ लेते है। परसाई का लेखन किसी 'फ्रेम' में कसा नही है। अपने समकालीन व्यग्य लेखको की भॉति, या फिर कहानीकारो की भॉति। परसाई की रचना-प्रक्रिया की यात्रा सवेदना से, अनुभव से, जीवन से, सामज का दर्शन तक की यात्रा है। इसीकारण उनकी कहॉनियों के पात्र सजीव, स्थितियाँ वास्तविक प्रसग जलते हुए और घटनाए होती है। यहाँ भोगे हुए यथार्थ से अधिक यथार्थ के भोग और अनुभवकी प्रमाणिकता की कहाँनियाँ हैं। परसाई की आस्था जिस दर्शन में है वह भी इन्हे बाध्य नहीं कर सका है कि उसी परिप्रेक्ष्य मे विषय-वस्तु का चुनाव करे। परसाई प्रगतिशील विचारों के वाहक थे वे नवीन विचारों के भारतीय परिवेश मे ग्रहण करने की बात करते थे। उनके विचार से किसी भी व्यक्ति का उत्थान अपनी ही जडो से जुडकर अधिक हो सकता है।

परसाई का लेखन सहज, सरल, सपाट बयानी चलता है जिसके कारण स्वधन्यमान्य

आलोचक उनकी रचनाओ का निम्नकोटि मे रखते है। आलोचको के अनुसार इनकी रचनाओ मे कलात्मक सौन्दर्य का अभाव है। लेकिन यह नही भूलना चाहिए कि सीधी और सहज भाषा के विकसित करने के लिये चिन्तन मनन और विचारो की स्पष्टता होनी जरूरी है। परसाई की रचनाए रहस्यवादी कलागत ऊचाई को भले ही प्राप्त न हो, लेकिन प्रकृति सौन्दर्य – स्वाभाविकता उनकी कहॉनियों में अवश्य आती है।

वर्ग, उत्पादन–प्रक्रिया से उत्पन्न वह व्यक्ति समूह होता है जिसके हित एक हो। मार्क्सका वर्ग सघर्ष का सिद्धान्त समाज में उत्पादन तथा वितरण की प्रक्रिया पर आधारित दो वर्गों को मानकर चलता है। वर्गों के स्वरूप मे भले ही कभी अन्तर आ गया हो। किन्तु समाज मे उत्पादन कर्ता, और उत्पादन के साधनो पर स्वामित्व रखने वाला वर्ग हमेशा रहता है। अर्थात श्रमिक वर्ग और पूँजीवादी वर्ग। पूँजीवादी वर्ग, श्रमिक वर्ग का हमेशा शोषण करता रहा है। श्रमिक वर्ग जीवन–संघर्ष मे हाडतोड मेहनत करता है लेकिन अन्तत. गोदान के होरी की भाँति पराजित हो जाता है और पूँजी वादी वर्ग रेणु के मैला आचल के विश्वनाथ की भाँति अपने छल–प्रपच से प्रत्येक व्यवस्था को झुठलाते, कानून को अगूठा दिखलाते अपना वर्चस्व बनाये रखता है। इस प्रकार दो ही वर्ग समाज में बनते है। शोषण और शोषित।

परसाई जी ने अपनी रचनाओ मे पूँजीवादी शोषक वर्ग और शोषित वर्ग के बीच के सघर्ष को दिखलाया है परसाई अपनी रचनाओं द्वारा वर्ग चेतना पर विशेष प्रकाश डालते है। इस कारण से उनकी रचनाओं में सामाजिक चेतना के सरोकार अवश्य आ गये है। इनके लेखन में सामाजिक सन्दर्भो की प्रमाणिकता और चिन्तन की विश्वनीयता अवश्य आ जाती है। परसाई की रचनाएं कभी–कभी विचार–प्रवाह में एकरसता ले आती है, लेकिन कभी भी वे रचनाएं उबाऊ नहीं होती है। परसाई शिल्प पर अपना ध्यान केन्द्रित नहीं करते है बल्कि वे विषय वस्तु के कथ्य पर अपना ध्यान अधिक केन्द्रित करते है।

परसाई की रचनाए उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की पहचान है। सामाजिक नवनिर्माण की अपनी विशिष्ट चेतना और रचनात्मक उद्देश्य परकता परसाई की रचनाओं की खासियत है परसाई की रचनाएँ–जातिवादी, धनाढ्य राजनेता और शिक्षित वर्ग के नैतिक एव, सास्कृतिक स्खलन को उनके सम्पूर्ण घृणित परिवेश के साथ प्रस्तुत करती है। परसाई सामाजिक बुराइयो और जातिवादी रूढियों के खिलाफ एक लम्बी लडाई लडते है। जो प्रत्येक स्तर पर होने वाले अन्याय तक पहुँचती है वे नये समाज के निर्माण का सत्–सकल्प लेकर लेखन कर्म को करते है सामान्य जन की हित–कामना ही उनकी रचनाओ की समस्या है और मूल लक्ष्य भी। परसाई यथार्थवादी रचनाकार है जीवन की सच्चाइयो को उजागर करने वाले व्यग्यकार भी व्यग्य की दृष्टि की परिपक्वता ने परसाई को ऐसी वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान की है किसकी परिधि नितान्त वैयक्तिक से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं तक फैली है।

परसाई की रचनाओ मे सक्रिय चिन्ताओ और प्रक्रिया की खोज पडताल की गयी है। परसाई आलोचको के लिए एक कठिन चुनौती पेश करते है कि सहज सी दिखने वाली रचनाओ का वैशिष्ट्य कैसे निर्धारित किया जाय। आलोचकों ने अभी तक इस पर कोई ठोस कार्यवाही नही किया है शोध प्रबन्ध मे इस पर कुछ प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

परसाई सरल जीवन के सहज रचनाकार है वे जटिलता को भी सहजता मे पिरोकर प्रस्तुत करते है न कि सरल को जटिल बनादेते है। परसाई इस दृष्टि से अद्वितीय है वे छोटी से छोटी घटना का उल्लेख करते हुए बडी सी बडी समस्या को सामने लाकर उपस्थित कर देते है। परसाई की यह विशेषता उन्हे मनोवैज्ञानिक की कोटि में रखने के लिए बाध्य करती है। दैनिक छोटी घटना अनुभव विस्तार द्वारा अर्थ ग्रहण करके लम्बी बनती जाती है और इस बीच सामाजिक विद्रूपताओं का खुलकर प्रदर्शन भी करता है।

परसाई भारतीय जीवन की परम्परागत जातीय स्मृति का निर्माण करने वाले इतिहास

पुराण और अनेक पात्र अथवा घटनाए अपने सघन मिथको के पौराणिक आच्छादन के बाहर आते है और अदभुत रचनात्मक सहयोग देकर वे एक महत्वपूर्ण समकालीन अर्थतक व्यग्य को ले चलते है। व्यग्यकार की यह विशेषता होती है कि अपनी जमीन से चीजे उठाता है और उसे सर्वथा नया अर्थ देकर वापस लौटा देता है इस प्रकार वह रचनात्मक पुन सृजन करता है यह अर्थ व्याप्ति की भूमिका नही होती है बल्कि समकालीन अर्थ से आत्मीय रिश्तो की खोज होती हे। परसाई की रचनाओ मे परम्परागत पौराणिक सामग्री का उपयोग रचनाशीलता की इसी समकालीन अर्थ व्याप्ति के स्तर पर है। जागृत–विवेक परम्परा के अपने विनयशील आत्मीयता के साथ समकालीन चेतना अपने रिश्ते इसी रूप मे कायम कर पाती है।

एक रचनाकार के रूप में परसाई ससार मे जो कुछ सुन्दर है उसकी रक्षा करना चाहते है जिसके कारण ससार की असुन्दरता के प्रतिपक्ष में वे खड़े है। वे कहते है मै असगति, असमानता के खिलाफ हूँ।" मानव के आगे सबसे चामत्कारिक गुण–जीने की उसकी सहज इच्छा का सम्मान करते है। सवेदना युक्त होने के कारण वे मानवीय क्रूरता के विरोध मे खडे हो सकते है। परसाई समाज की बीमारी को ठीक करना चाहते है जिससे सक्रामक रोग फैलकर मानवताको पूरी तरह से नष्ट न करदे। परसाई अपनी सवेदना युक्त दुनिया में, जड हो गये परिवेश पर, मानवीय निराशा पर लूटखसोट और भोग पर, किसान और मजदूर की दुर्दशा पर, छात्रों की अराजकता और दिशाहीनता पर, धार्मिक पाखण्ड और शोषण पर, इन्सानी रिश्तों की समाप्त होती गरिमा पर, गरीबी और भूख पर, अकाल और मौत पर, पूँजीवादी समाज रचना की बुराइयों पर और इससे पैदा सास्कृतिक वैचारिक जड़ता और दिग्भ्रमित पर निर्मित हुई है। उसका आधार है हमारा सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक जगत जिसमें मनुष्य के कर्म का निषेध हो गया है।

लगातार पराधीनता से भारतीयो में जड़ता की पैठ हो गयी थी वे यथास्थितिवादी हो

गये थे। परसाई आदर्शवादी स्थिति को हटाकर उसकी यथार्थ स्थितिका दिग्दर्शन कराना चाहते थे। परसाई की रचनाएँ इसलिए सक्रिय राजनीति कर्म का फल है। लोगो को उनके आदर्श व्यक्तित्व का सच्चा ज्ञान कराकर परसाई उनके खिलाफ घृणा पैदा करना चाहते थे। इनकी रचना सोचने की दिशा देती है सवेदना का विकास करती है, सम्भ्रमों को तोडती है तथा जड मस्तिष्क का परिष्कार करती है।

परसाई की रचनाओं मे गम्भीर तात्विक विश्लेषण नहीं है किसी दर्शन के प्रति प्रचार-प्रसार नही है नही शब्दों की साहित्यक कलाबाजी है, परसाई एक सामाजिक रचनाकार है। समाज मे जो कुछ घट रहा है उसके गवाह है जो जनता की अदालत में आकर वगैर किसी प्रलोभन और दबाव के सच्ची गवाही पेश करते है। परसाई और व्यग्य आधुनिक जीवन मे एक दूसरे के पर्याय भाव है। परसाई ने हिन्दी गद्य में व्यग्य को एक विधा रूप में स्थान दिलाया है। अपने प्रतीको और बिम्बों द्वारा परसाई ने हिन्दी गद्य की विधाओं मे नये रूप का प्रयोग किया है। परसाई समाज के भीतर बहने वाली विद्युतधारा की भाति है जो प्रकाश देती है प्रकाश देते समय इनकी भाषा सहज सरल और अत्यन्त धारदार होती है, इसमे विभिन्न प्रकार की वस्तुओं स्थितियो, सम्बन्धों और घटनाओ का यथार्थ वर्णन होता है।

अमीर खुसरो से लेकर आधुनिक गद्यकारों के विभिन्न भाषा प्रयोग को परसाई ने यत्र-तत्र अपनी रचनाओं मे स्थान दिया है। जैसा कि विदित है कि गद्य का विकास साम्राज्यवादी आन्दोलन के विरोध मे शक्तिशाली ज्ञानात्मक अस्त्र के रूप में हुआ था। परसाई जी का गद्य लेखन उसी गद्य परम्परा को आगे बढाया है और उसका कलात्मक विकास करता है। परसाई के निबन्धों में भारतेन्दु युगीन गद्य की व्यग्यात्मक दृष्टि है वैयक्तिक स्वच्छता और व्यापकता है। तो प्रेमचन्द्र की कथात्मक सहजता और पैनापन भी। भारतेन्दु और प्रेमचन्द्र के बाद एक युग धारा का परसाई ने नेतृत्व किया।

परसाई ने बहुत अधिक कहानियाँ लिखी है। उनकी कहानियो का महत्व इस बात मे है कि जहॉ तत्कालीन कहानीकार नयी कहानी के नाम पर कुण्ठा, सत्रास, हिसा, अजनबीपन और यौनविकृति को परोस रहे थे, तो अकेले परसाई यथार्थवाद के खुरदरी भूमि पर मानवता के शब्दचित्र बना रहे थे। परसाई नई कहानी आन्दोलन के कहानीकारों मे बहुत महत्व रखते है क्योकि इन्होंने मनुष्य के मानवीय पक्ष का रचनात्मक उपयोग की दृष्टि से सहयोग लेने का प्रयत्न किया है।

कहानीकार का जब कैनवस बडा होने लगता है तो वह कहानी से उपन्यास लिखने की तरफ बढता है। परसाई ने भी उपन्यास लिखे है लेकिन व्यग्य की मार सक्षिप्तता मे अधिक होती है विस्तार मे नही। परसाई अपने उपन्यासों मे वैसा व्यग्य नही कर पाये है जैसा निबन्धो और कहानियों मे। अत इन्होंने जल्द ही उपन्यास लिखने का का मोह त्याग दिया।

परसाई उपन्यास, कहानी निबन्ध और रेखाचित्र के अतिरिक्त अखबार के कालम भी लिखते थे। जिसमे इन्होंने नागरिक जडता और सामाजिक उदासीनता को तोडा हैं। परसाई बुद्धजीवियो के ऊपर भी कडा प्रहार करते है। जो समाज को गति देने के विपरीत खुद रोग ग्रस्त हो गये है। परसाई की रचनाये पाठको की चेतना को झकझोरती है वे किसी आलोचक का मोहताज नहीं होती है कि प्रशसा करके प्रतिस्थापित किया जाय। समकालीन मनुष्य के अन्दर घृणास्पद और हास्यापद को परसाई निकाल फेंकना चाहते है। परसाई को उनकी रचनाओं के माध्यम से पाठक जानता और समझता है। उनके लिए अलग से किसी सेमिनार का आयोजन नहीं किया जाता है।

प्रेमचन्द्र के बाद परसाई अकेले ऐसे गद्यकार है जिनके अनुभव चरित्र और घटनाऐं अनायास प्रतीक और बिम्ब का दर्जा हासिल कर लेती है। और परसाई की रचनाएँ समकालीन इतिहास का अग बन जाती है। परसाई ने भारतीय समाज को विश्व दृष्टि से देखा और जीवन

दर्शन से समझा। परसाई जी को इस बीच जो कुछ भी बुरा लगा उसका रहस्योद्घाटन वे अपनी रचनाओ में करते है परसाई सामान्य से असामान्य की ओर बढने वाले रचनाकार है वे व्यक्ति के माध्यम से समाज की बात कहते है। साहित्य का उद्देश्य सौन्दर्य की सृष्टि करना होता है इसलिए बहुधा जीवन मे जो कुछ सुन्दर, सौम्य और प्रिय है इसी धनीभूत अभिव्यक्ति की ओर कवियों और विचारको का ध्यान जाता रहा है।

व्यग्यकार की दृष्टि सुधार की अपेक्षा भ्रष्ट स्थितियों को बदलने मे होती है। परसाई कहते है। कि" मै सुधार के लिए नही बदलने के लिए लिखना चाहता हूँ यानी कोशिश करता हूँ कि चेतना मे हलचल हो जाय। कोई विसगति नजर के सामने आ जाय। इतना काफी है आजका समय खोखलेपन और पाखण्ड का समय है। जिसपर व्यग्यकार की दृष्टि अनायास पड जाती है। कबीर से लेकर परसाई तक ने समाज के इसी पाखण्ड पूर्ण जीवन पर करारा प्रहार किया है। खीज घृणा आक्रोश भय, उत्साह, समत्व उदासीनता आदि अनेक भावनाओ तक फैला हुआ है। आज का व्यग्य विशिष्ट परिस्थितियों, वर्जनाओं और विसगतियों की उपज है।

व्यग्य की अनेक परिभाषा दी गई कोई उसे हास्थ मिश्रित कहता है तो कोई विद्रूपता पर सीधा प्रहार मानता है लेकिन वर्तमान व्यग्य असत्य, अनीति, अत्याचार विकृति विसगति और पाखण्ड का उद्घाटन कर अहिसक शाब्दिक तीखा प्रहार करता है। यह मृदुल न होकर कटु एव मर्मस्पशी होता है। व्यग्य तो प्रहार करता है लेकिन उसकी सहानुभूति मानव से जुडी रहती है। व्यग्य करते समय व्यग्यकार का मूल उद्देश्य उन स्थितियो का निरीक्षण करना होता है जिसके कारण समाज में विसगतियों का जन्म हुआ है। आधुनिक व्यग्य अभिव्यजना का एक विशिष्ट प्रकार अर्थबोध की अनुपम शक्ति के साथ समाज की प्रगति परक संघर्षशीलता का प्रतीक है।

परसाई ने स्वतत्र भारत की वास्तविक स्थिति का चित्रण अपनी रचनाओ में किया है। वे विसगतियो को नगा कर देते है तथा सत्ता एव व्यवस्था उससे जुडे नौकरशाही और राजनीति को भी पेपर्दा करते है। वे कहते है। कि मैने देखा कि जीवन मे बेहद विसगतियों है अन्याय, पाखण्ड, छल दो मुहाँपन, अवसरवाद असामञ्जस्य आदि है। मैने उनके विश्लेषण के लिए साहित्य, दर्शन, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र आदि का अध्ययन किया। जिसके परिणामस्वरुप मार्क्सवाद को अपनाते हुए भी मेरी एक व्यापक दृष्टि बनी है। "परसाई ने अपनी तमाम रचनाओ मे इसी दृष्टिको साकार किया है। परसाई मनुष्य को अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए उत्तेजित करते है। उन्होने उन स्थितियो का चित्रण अपनी रचनाओ मे किया है जिससे शोषक वर्ग ने जन समाज का शोषण किया है। पूजीवाद के प्रति परसाई जी खुला विद्रोह करते है वे कर्मठ रचनाकार के रूप में अपनी सृजनात्मक यात्रा करते है जहाँ सम सामयिक जीवन व्यवस्था और उससे जुडी सामाजिक व्यवस्था की भदेश स्थितियों को परसाई अपने व्यग्य लेखन के माध्यम से एक सघर्ष धर्मी स्वरूप देते है वे सच्चे जन मानस के लिए सघर्ष करते है। और स्वय भी इसका प्रतिफल भोगते है।

परसाई सामाजिक समस्याओं से प्रेरित होकर रचना करते है जिसके कारण उनकी रचनाओ में सहज आक्रोश होता है वे उस आदमी की जड़ता पर भी फटकर लगाते है जो समझौतावादी होकर जीवन जीना प्रारम्भ कर देता है परसाई कहते है कि सवाल यह है कि लेखक अपने को आम आदमी से जोडता है कि नहीं । नही जोडता है तो वह बैठकर लिखेगा हम मर गये है हम सूअर है हमारी मरण स्थिति यह है"। इसी परिप्रेक्ष्य में कहा जा सकता है कि परसाई का लेखन आम आदमियों के लिए है यद्यपि परसाई व्यक्ति के लिए रचना नहीं करते है। वे वर्ग केन्द्रित रचना करते है। वर्ग शक्ति की यह शिक्षा गोर्की से पायी है। जिन्दगी परसाई के लिए विश्वविद्यालय है जहाँ वे शिक्षा ग्रहण कर अपने विचारो को फौलादी जामा पहना सके है।

मध्य वर्गीय त्रस्त मानवता परसाई के साहित्य में नवविचार प्राप्त करती है। अधिकार चेतना को जागृत करने में उनका साहित्य मे विशिष्ट स्थान है। लम्बे और कर्मठ जीवन में स्वय भोगे यथार्थ को परसाई ने साहित्य मे परोसा है। परसाई यह देखते है कि राजनीति के लोग किसी प्रकार अपने विरोध करने वालो का मुँह चुप करा देते है। इसके पीछे भी उनकी गहरी राजनीति रहती है ऐसे ही राजनीतिज्ञ और राजनीतिक विचारों के परसाई खिलाफ है राजनीति व्यवस्था आदमी की जरूरतो को पूरा करने के लिए अस्तित्व में आयी अब अगर यह आदमी की आवश्यकताओ को पूरा करने के बजाय उनका शोषण करने लगे तो पर्दाफाश होना ही चाहिए। परसाई ने यही कार्य अपने व्यग्य लेखन द्वारा किया है।

परसाई जी रूढ अर्थ मे धार्मिक नही है वे मानवतावादी धार्मिक व्यक्ति है आपका समाज अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए धार्मिक बना है। परसाई जी इसका विरोध करते है वे कहते हैं "धर्म का उपयोग तो अब दगा कराने के लिए रह गया है" इसी सन्दर्भ मे उन्होने लिखा है "विधाता जब मनुष्य को बनाकर दुनिया मे भेजने लगता है तो उसके कान के पास मुँह लगाकर धीरे से कहता हे कि देख दुनिया में सबसे अधिक अकल मैने तुझी को दी है। हर एक से विधाता यही कह देता है इसीलिए हर आदमी जन्म से ही उपदेशक हो जाता है" इसमें परसाई यह कहने को उद्धत है कि व्यक्ति दूसरे के मतो को सुनना ही नही चाहता वह केवल अपनी बात ही सुनाना चाहता है और उसे मनवाना भी चाहता है।

अन्धविश्वास का बोलबाला हमारे समाज में इस तरह है कि उससे निजात पाना मुश्किल है इस सन्दर्भ में परसाई जी धार्मिक बुद्धिजीवियों के ऊपर व्यग्य करते है "साधो अपरिग्रहो को बुद्धू बनाने के प्रयत्न चालू हो गये है। जगह-जगह यज्ञ हो रहे है। हजारों लाखों रूपये चन्दे में मिलजाते है यहाँ अस्पताल या स्कूल के लिए फूटी कौड़ी गाँठ से नहीं निकलती है। वहाँ यज्ञ के लिए रुपये निकल आते है। इस तरह से यज्ञ हो रहे है कि सारे देश के

वातावरण मे धुँआ छाजायेगा और ग्रहो को दिखायी नहीं देगा कि भारत कहाँ है बस वे चीन की ओर चले जायेगें।

परसाई जी सर्वहारा वर्ग से जुडे रचनाकार हैं वे उन्ही के लिए सघर्षरत है वे उसके खिलाफ है जो रचनाकार के परिवेश के लिए बाधक हे। परसाई जी इसीलिए उन बुद्धिजीवी साहित्यकारो को भी फटकारते हे जो सर्वहारा वर्ग की उन्नति के रास्ते के काँटे है परसाई के पास मनोविज्ञान की वह सूक्ष्म दृष्टि है जो अपने सशक्त अनुभव द्वारा और अधिक फलीभूत होती है। परसाई की रचनाओ मे अगर हास्य का पुट कही आ गया है तो वह केवल प्रसग वश है उसका अलग से उद्घाटन नही किया है मूलत. उनकी रचनाओं मे शोषकों के प्रति नफरत और शोषितो के प्रति सहानुभूति का ही पुट मिलता है।

समाज की व्यापक विसगति को आज का व्यग्य अपना लक्ष्य चुनता है और एक-एक के ऊपर प्रहार करना प्रारम्भ कर देता है। व्यग्य प्रहार के साथ अपने पक्ष में और लोगों को करने का कार्य भी करता है। व्यग्य लोगों को मानवीय गुणों का पाठ पढाता है और अपने साथ सभी को सत्य के मार्ग पर चलने का आग्रह करता है।

भारतीय राजनीति की दिशा जब समाजवादी क्रान्ति की ओर बढने लगी तो कुछ लोग उसे रोकने का कार्य करने लगे। परसाई ऐसे लोगो के भी खिलाफ है जो समाजवादी की दिशा को मोड देते हैं परसाई की दृष्टि मे सामाजिक क्रान्ति के साथ सास्कृतिक क्रान्ति होनी आवश्यक है 'चूहा और मैं' में परसाई ने आदमी को चूहे से भी बदतर बताकर यह आक्षेप डाला है कि चूहा जैसा प्राणी अपने अधिकारों के लिए लडता है लेकिन आदमी चेतनाशील हो कर भी अपने अधिकार के लिए लड नही सकता है। वह घुटन भरी जिन्दगी तो जीता है लेकिन अपने लिए लड़ नही सकता है परसाई की यही दृष्टि नारी के सन्दर्भ में भी है वह नारी को आश्रित बनाकर नहीं जिलाना चाहते है। वे उसे अपने पैरों पर भावनामुक्त होकर

जीने के लिए प्रेरित करते है। परसाई ने अपनी कहानी 'गहरा घाव' मे दहेज के कारण भाभी द्वारा उत्पीडित एक ऐसी युवती का रेखाचित्र खीचा है। जो घर मे बहू की भॉति नही नौकरानी की भॉंति जीवन जीती है परसाई 'तटकी खोज' मे इसी प्रकार नारी को स्वतन्त्र जीवन जीने की कला सिखलाते है।

भारतेन्दु समय के सारे सर्जक व्यग्य के माध्यम से भरपूर प्रहार करते है। नई कविता तो व्यग्य कविता ही बन गई। निराला व्यग्य की ओर विशेष रूप से प्रवृत्त हुए, बाद में यही निराला प्रगतिशील कविता की ओर अग्रसर हो गये। नागार्जुन, त्रिलोचन और रामविलास शर्मा प्रगतिशील चेतना से सम्पन्न कवि थे। प्रगतिवाद और प्रयोगवाद के बीच कहानी उपन्यास, निबन्ध सभी ने आधुनिकता का पल्ला पकड लिया। १९६० के आस-पास सामाजिक राजनैतिक परिस्थितियाँ तथा अस्तित्व वादी दर्शन ने इसे और पुष्ट किया। पुराने मूल्यों, आदर्शो और आस्थाओ के विघटन के कारण जिन्दगी में अजनबीपन और अलगाव आ गया जिसका अर्थ था आदमी की जिन्दगी का कोई अर्थ नहीं। इसी समय साहित्य को मानवीय सरोकारों से जोडते हुए परसाई ने लेखन कार्य आरम्भ किया। व्यग्य साहित्य में हरिशकर परसाई श्रीलाल शुक्ल, रवीन्द्र त्यागी, शरद जोशी, वालेन्दुशेखर तिवारी, डॉ वरसाने लाल चतुर्वेदी, के पी सक्सेना, मनोहर श्याम जोशी आदि प्रमुख है। हरिशकर परसाई के बाद हिन्दी व्यग्य के क्षेत्र में वर्तमान जीवन की सडान्ध विद्रूपता, विसगति जीवन के प्रति आस्था इनके प्रधान विषय हैं निराला की तरह परसाई ने भी जीवन में घोर सघर्ष किये है। उनकी दृष्टि विसगतियो को दूर करने की है। उनकी मान्यता हे कि "व्यग्य जीवन से साक्षात्कार करता है जीवन की आलोचना करता है। विसगतियों मिथ्याचारो और पाखण्डो का पर्दाफाश करता है।" परसाई सामाजिक यथार्थ के लेखक है वे समाज के हर अग पर चोट करते है जो विकृत हो गया है। परसाई मध्यम वर्गीय समाज की बुराईयों को दूर करने के लिए कबीर की भॉति लुकाटा

लेकर आगे–आगे चलते है लोगो को अपने पीछे आने के लिए प्रेरित भी करते है।

परसाई के नेतृत्व मे व्यग्य शैशव से युवावस्था मे पहुँचा। शूद्र से ब्राह्मण का दर्जा प्राप्त किया। परसाई व्यग्य क्षेत्र मे एकमात्र ऐसे व्यग्यकार है जो पूरी तरह प्रतिबद्ध है। परसाई की व्यग्य रचनाओं का अध्ययन गम्भीरता पूर्वक समकालीन मानवीय कष्टे का अध्ययन होगा। जो कुछ है उससे बेहतर चाहिए, समाज को साफ करने के लिए एक मेहतर चाहिए की मान्यता के साथ परसाई ने एक कुशल सर्जक की भूमिका निभाई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

अग्रेजी-ग्रन्थ

१ मेरी डिथ - आइडिया आफ कॉमेडी - १९५६ करनैल यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयार्क

२ गिलबर्ट हिघेट-द एनाटामी सटायर-न्यूजर्सी १९६२

३ जेम्स सदर लैण्ड-द इगिलश सटायर-यूनिवर्सिटी प्रेस कैम्ब्रिज

४. नारमन फलाग-इग्लिश सटायर - जार्ज जी हारुप १९४६

५ आर के लक्ष्मण-द वेस्ट आफ लक्ष्मण - पेंगइन प्रकाशन-२०००

६ जान एम बुलेट - जोनाथन स्विफ्ट एण्ड दि एनाटामी-

७ हुमायूँ कबीर-इन्डियेन हैरिटेज सटायर - एशिया पब्लिशिग हाउस बम्बई-१९६०

८ बी वी मिश्र-दि इन्डियन मिडिलक्लास - आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस १९६१

संस्कृत ग्रन्थ

१ अभिनव गुप्त पाद- ध्वन्यालोक (हिन्दी) व्याख्याकार आचार्य जगन्नाथ पाठक-
चौखम्बा प्रकाशन बनारस-प्रथम स -१९८४

२ कुन्तक-वक्रोक्ति जीवितम् - निर्णय सागर प्रेस बम्बई-१९३५

३. भरतमुनि - नाटय शास्त्रम् - चौखम्बा, बनारस-१९२९

४. भवभूति - उत्तररामचरितम् - निर्णय सागर प्रकाशन-१९३०

५. मम्मट - काव्य प्रकाश - भन्डारकर इन्स्टीटयूट पुणे-१९३३

आधार-ग्रन्थ

१. अजातशत्रु - आधी वैतरणी सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९८५

२. अमृतराय - बतरस, हस प्रकाशन, इलाहाबाद-प्रथम, १९७३

३. अमृतराय - मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाएँ, ज्ञान भारती, दिल्ली-प्रथम, १९७७

४ अमृतलाल नागर - कृपया दाएँ चलिए, राजपाल, दिल्ली-प्रथम, १९७६

५ अमृतलाल नागर - चकल्लस, राजपाल, दिल्ली-प्रथम, १९८६

६ अमृत नाहटा - किस्सा कुर्सी का, राजपाल, दिल्ली-द्वितीय, १९७७

७ अशोक शुक्ल - प्रोफेसर पुराण, विवेक प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९७६

८ इद्रनाथ मदान - बहानेबाजी, लिपि प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९७८

९ उषावाला - कफनचोर का बेटा, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९७६

१०. कन्हैयालाल कपूर - हास्य बत्तीसी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९६६

११ कन्हैयालाल नदन - श्रेष्ठ व्यग्य कथाएँ, पराग प्रकाशन, दिल्ली-द्वितीय, १९७६

१२ काका हाथरसी - काका की फुलझडियाँ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-१९८८

१३. काका हाथरसी एव गिरिराजशरण अग्रवाल - श्रेष्ठ हास्य-व्यग्य एकाकी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९७९

१४ काका हाथरसी एव गिरिराजशरण अग्रवाल - श्रेष्ठ हास्य व्यग्य कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९७८

१५. काका हाथरसी एव गिरिराजशरण अग्रवाल - श्रेष्ठ हास्य व्यग्य निबन्ध, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९७९

१६ के.पी. सक्सेना - कोई पत्थर से, आलेख प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९७९

१७ के. पी. सक्सेना - मूँछ मूँछ की बात, साहित्य रत्नालय, कानपुर-प्रथम, १९७९

१८. के. पी सक्सेना - रहिमन की रेलयात्रा, राष्ट्रीय प्रकाशन मदिर, भोपाल-प्रथम, १९८२

१९. के.पी. सक्सेना - नये गिरिगिट, विवेक प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९७५

२०. केशवचन्द्र वर्मा - अफलातूनों का शहर, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली-प्रथम, १९७४

२१ केशवचन्द्र वर्मा - आधुनिक हास्य-व्यग्य, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली-प्रथम, १९६१

२२. गुलाबराय - कुछ उथले कुछ गहरे, शिवलाल अग्रवाल, आगरा-प्रथम, १९५७

२३. गुलाबराय - ठलुआ क्लब, साहित्य रत्न भडार, आगरा-१९६३

२४. गोपाल प्रसाद व्यास - अली सुनो, राजहंस प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९४७

२५ गोपाल प्रसाद व्यास - हलो-हलो, नेशनल पब्लिसिग हाउस, दिल्ली-प्रथम, १९६९

२६ ज्ञान चतुर्वेदी - प्रेत कथा, समातर प्रकाशन, भोपाल-प्रथम, १९६८

२७ नरेन्द्र कोहली - आधुनिक लडकी की पीडा, नेशनल, नई दिल्ली-प्रथम, १९७८

२८ नरेन्द्र कोहली - आश्रितो का विद्रोह, नेशनल, नई दिल्ली-प्रथम, १९७३

२९. नरेन्द्र कोहली - एक और लाल तिकोन, नेशनल पब्लिसिग हाउस, नई दिल्ली-प्रथम, १९७०

३० नरेन्द्र कोहली - जगाने का अपराध, नेशनल पब्लिसिग हाउस, नई दिल्ली-प्रथम, १९७३

३१ नरेन्द्र कोहली - त्रासदियाँ, राजपाल, दिल्ली-प्रथम, १९८२

३२ नरेन्द्र कोहली - पाँच एब्सर्ड उपन्यास, नेशनल, नई दिल्ली-प्रथम, १९७२

३३ नरेन्द्र कोहली - मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाएँ, ज्ञान भारती, दिल्ली-प्रथम, १९७७

३४ नरेन्द्र कोहली - शम्बूक की हत्या, कल्पतरू, दिल्ली-प्रथम, १९७५

३५ प्रभाकर माचवे - खरगोश के सीग, नीलाभ प्रकाशन, इलहाबाद, द्वितीय, १९६०

३६ प्रभाकर माचवे - तेल की पकौडियाँ, ज्ञानोदय, इलाहाबाद-प्रथम, १९६२

३७ प्रेम जनमेजय - बेशर्ममेव जयते, पराग प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९८२

३८. प्रेम जनमेजय - राजधानी मे गँवार, पराग प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९७८

३९. फणीश्वरनाथ रेणु - उत्तर नेहरू चरितम्, राजकमल, नई दिल्ली-प्रथम, १९८८

४०. बदीउज्जमा - एक चूहे की मौत, राजकमल, नई दिल्ली-प्रथम, १९७१

४१. बरसानेलाल चतुर्वेदी - चौबेजी की डायरी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९९०

४२. बरसानेलाल चतुर्वेदी - टालू मिक्स्चर, साहित्य सहकार, दिल्ली-प्रथम, १९७८

४३. बरसानेलाल चतुर्वेदी - नेताओ की नुमाइश, किताब घर, दिल्ली-प्रथम, १९८३

४४. बरसानेलाल चतुर्वेदी - भोला पडित की बैठक, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली-प्रथम, १९७५

४५ बरसानेलाल चतुर्वेदी - मंत्री जी के निजी सचिव की डायरी, साहित्य सहकार, दिल्ली-प्रथम, १९८०

४६. बरसानेलाल चतुर्वेदी - मि चोखेलाल, सरस्वती बिहार, दिल्ली-प्रथम, १९८०

४७ बरसानेलाल चतुर्वेदी - मूँछ पुराण, श्री हिन्दी साहित्य ससार, दिल्ली-प्रथम, १९७९

४८ बरसानेलाल चतुर्वेदी - मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाएँ, ज्ञान भारती, दिल्ली-प्रथम, १९७७

४९ बरसानेलाल चतुर्वेदी - साली वी आई पी की, किताब घर दिल्ली-प्रथम, १९८९

५० बरसानेलाल चतुर्वेदी - सिफारिश पुराण, श्री हिन्दी साहित्य ससार, दिल्ली-प्रथम, १९८३

५१ बालेन्दुशेखर तिवारी - इक्कीसवी सदी मे व्यग्यकार, श्याम प्रकाशन, जयपुर-प्रथम, १९८९

५२ बालेन्दुशेखर तिवारी - किराएदार साक्षात्कार, श्री हिन्दी साहित्य ससार, दिल्ली-प्रथम, १९८५

५३ बालेन्दुशेखर तिवारी - क्रिकेट कीर्तन पचशील प्रकाशन, जयपुर-प्रथम, १९८८

५४ बालेन्दुशेखर तिवारी - बानगी, किशोर विद्या निकेतन, वाराणसी-प्रथम, १९८०

५५ बालेन्दुशेखर तिवारी - बिना यात्रा की यात्रा, पारिजात प्रकाशन, पटना-प्रथम, १९८५

५६ बालेन्दुशेखर तिवारी - मेरी प्रिय व्यग्य रचनाएँ, राज पब्लिसिग, दिल्ली-प्रथम, १९८८

५७ बालेन्दुशेखर तिवारी - रिसर्च गाथा, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर-प्रथम, १९७९

५८ बालेन्दुशेखर तिवारी - व्यग्य ही व्यग्य, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम १९८७

५९. यशवत कोठारी - यश का शिकजा, सत्साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली-प्रथम, १९८३

६० रवीन्द्रनाथ त्यागी - अतिथि कक्ष, राजपाल एण्ड सस, दिल्ली-प्रथम,१९७७

६१. रवीन्द्रनाथ त्यागी - आत्मलेख, नेशनल पब्लिकशिग हाउस, दिल्ली-प्रथम, १९८८

६२ रवीन्द्रनाथ त्यागी - उर्दू-हिन्दी हास्य-व्यग्य, पराग प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९७८

६३. रवीन्द्रनाथ त्यागी - कृष्णवाहन की कथा, नेशनल, नई दिल्ली, प्रथम, १९७१

६४. रवीन्द्रनाथ त्यागी - खुली धूप मे नाव पर, लोकभारती, इलाहाबाद-प्रथम, १९६३

६५. रवीन्द्रनाथ त्यागी - देवदार के पेड, नेशनल, नई दिल्ली-प्रथम, १९७३

६६. रवीन्द्रनाथ त्यागी - फूलो वाले कैक्टस, पराग प्रकाशन, नई दिल्ली-प्रथम, १९७८

६७. रवीन्द्रनाथ त्यागी - भित्ति-चित्र, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९६६

६८. रवीन्द्रनाथ त्यागी - भल्लिनाथ की परम्परा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद-प्रथम, १९६९

६९. रवीन्द्रनाथ त्यागी - मेरी व्यंग्य कथाएँ, पराग प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९७६

७०. रवीन्द्रनाथ त्यागी - मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाएँ, ज्ञानभारती, दिल्ली-प्रथम, १९७७

७१ रवीन्द्रनाथ त्यागी - शोकसभा, नेशनल, नई दिल्ली-प्रथम, १९७४

७२ रवीन्द्रनाथ त्यागी - सुन्दर कली, सम्भावना प्रकाशन, हापुड-प्रथम, १९७८

७३ रामनारायण उपाध्याय - नाक का सवाल, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९८३

७४ रामनारायण उपाध्याय - बख्शीशनामा, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९८०

७५ रामनारायण उपाध्याय - मुस्कुराती फाइले, प्रतिभा प्रतिष्ठान दिल्ली-प्रथम, १९८७

७६ लतीफ घोघी - किस्सा दाढी का, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९८०

७७ लतीफ घोघी - जूते का दर्द, श्री हिन्दी साहित्य ससार, दिल्ली-प्रथम, १९८३

७८ लतीफ घोघी - तीसरे बन्दर की कथा, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९७७

७९ लतीफ घोघी - बबलूमियाँ कब्रिस्तान मे, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९७९

८० लतीफ घोघी - बीमार न होने का दु:ख, सौरभ प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९७०

८१ लतीफ घोघी - बुद्धिजीवी की चप्पले, पचशील प्रकाशन, जयपुर-प्रथम, १९८५

८२ लतीफ घोघी - बुद्धिमानो से बचिए, पचशील प्रकाशन, जयपुर-प्रथम, १९८८

८३. लतीफ घोघी - मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाएँ, ज्ञानभारती, दिल्ली-प्रथम, १९७९

८४ लतीफ घोघी - लॉटरी का टिकट, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम, १९८६

८५ लतीफ घोघी - सकटलाल जिन्दाबाद, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९७८

७६. लतीफ घोंघी - सोने का अडा, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९७८

७७ लक्ष्मीकान्त वैष्णव - नाटक नही, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९८३

७८ लक्ष्मीकान्त वैष्णव - मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाएँ, ज्ञानभारती दिल्ली-प्रथम, १९८२

७९. शंकर पुणत्ताम्बेकर - अंगूर खट्टे नहीं हैं, पचशील प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९८५

८०. शंकर पुणताम्बेकर - एक मत्री स्वर्गलोक में, साहित्य रत्नालय, कानपुर-प्रथम, १९७९

८१. शकर पुणताम्बेकर - कैक्टस के काँटे, पचशील प्रकाशन, जयपुर-प्रथम, १९७९

८२. शंकर पुणताम्बेकर - प्रेम विवाह, पंचशील प्रकाशन, जयपुर-प्रथम, १९८१

८३. शंकर पुणताम्बेकर - बदनामचा, पचशील प्रकाशन, जयपुर, प्रथम,१९८८

८४. शकर पुणताम्बेकर - विजिट यमराज की, पचशील प्रकाशन, जयपुर-प्रथम १९८३

८५ शरद जोशी - किसी बहाने, नेशनल, नई दिल्ली-प्रथम १९७१

८६ शरद जोशी - जीप पर सवार इल्लियाँ, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली-प्रथम, १९७१

८७ शरद जोशी - तिलस्म, राजपाल एण्ड सस, दिल्ली-प्रथम, १९७३

८८ शरद जोशी - दूसरी सतह, अनादि प्रकाशन, इलाहाबाद-द्वितीय, १९७८

८९ शरद जोशी - दो व्यग्य नाटक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-द्वितीय १९८२

९० शरद जोशी - पिछले दिनो, राजपाल एण्ड सस, दिल्ली-प्रथम, १९७९

९१. शरद जोशी - मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाएँ, ज्ञानभारती प्रकाशन नई दिल्ली-प्रथम १९८०

९२. शरद जोशी - यथासम्भव, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली-प्रथम, १९८५

९३. शरद जोशी - रहा किनारे बैठ, नेशनल, नई दिल्ली-प्रथम, १९७२

९४ श्याम गोइन्का - गजत्व दर्शन, अभिव्यजना प्रकाशन, नई दिल्ली- प्रथम, १९८९

९६. श्याम गोइन्का - नसबदगी, विवेक प्रकाशन, दिल्ली- प्रथम, १९७९

९८ श्यामसुन्दर घोष - एक उलूक कथा, ग्रथ अकादमी, दिल्ली-प्रथम, १९७२

९९ श्यामसुन्दर घोष - तिकडम बनाम तिकडम, हिन्दी साहित्य ससार, नई दिल्ली-प्रथम, १९७४

१०० श्रीलाल शुक्ल - अगद का पाँव, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-प्रथम, १९८०

१०१ श्रीलाल शुक्ल - मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाएँ, ज्ञानभारती, दिल्ली-प्रथम, १९७७

१०२. श्रीलाल शुक्ल - यह घर मेरा नही, सम्भावना प्रकाशन, हापुड-प्रथम, १९७९

१०३. श्रीलाल शुक्ल - यहाँ से वहाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-द्वितीय, १९७५

१०४. श्री लाल शुक्ल - रागदरबारी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-सप्तम १९८२

१०५. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - काठ की घण्टियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-प्रथम, १९७०

१०६ सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - गर्म हवाएँ राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली-प्रथम, १९६९

१०७. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - बकरी, लिपि प्रकाशन, नई दिल्ली-प्रथम, १९७४

१०८. सुदर्शन मजीठिया - छींटे, लिपि प्रकाशन, नई दिल्ली-प्रथम, १९७४

१०९. सुदर्शन मजीठिया - टेलीफोन की घण्टी से, पचशील प्रकाशन, जयपुर-प्रथम, १९८३

११० सुदर्शन मजीठिया - मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाएँ, ज्ञानभारती, दिल्ली-प्रथम, १९८०

१११ सूर्यवाला - अजगर करे न चाकरी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९८९

११२ हरिशकर परसाई - अपनी-अपनी बीमारी वाणी प्रकाशन दिल्ली-२०००

११३ हरिशकर परसाई - कविरा खडा बाजार मे, वाणी प्रकाशन-पचम, २००१

११४ हरिशकर परसाई - कहत कबीर, ज्ञानभारती, दिल्ली-प्रथम, १९८८

११५ हरिशकर परसाई - जैसे उनके दिन फिरे, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली-प्रथम, १९६७

११६ हरिशकर परसाई - ठिठुरता हुआ गणतत्र, नेशनल, नई दिल्ली-प्रथम, १९७०

११७ हरिशकर परसाई - तब की बात और थी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-प्रथम, १९५६

११८ हरिशकर परसाई - तिरछी रेखाएँ, वाणी प्रकाशन दिल्ली-२००१

११९ हरिशकर परसाई - निठल्ले की डायरी, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली-प्रथम, १९६८

१२० हरिशकर परसाई - पगडडियो का जमाना, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली-प्रथम, १९७६

१२१. हरिशकर परसाई - पाखण्ड का अध्यात्म, पराग प्रकाशन, दिल्ली-१९८२

१२२ हरिशकर परसाई - मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचनाएँ, ज्ञानभारती, दिल्ली-चतुर्थ, १९८७

१२३ हरिशकर परसाई - रानी नागफनी की कहानी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-प्रथम, १९६१

१२४ हरिशकर परसाई - वैष्णव की फिसलन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-१९७८

१२५ हरिशकर परसाई - शिकायत मुझे भी है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-१९७०

१२६ हरिशंकर परसाई - सदाचार का ताबीज, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी-प्रथम, १९६७

१२७ हरिशंकर परसाई - हँसते हैं, रोते है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-प्रथम, १९५६

१२८. मधुसूदन पाटिल - अथ व्यगयम, सस्ता साहित्य भण्डार, नई दिल्ली-प्रथम, १९८१

१२९. मधूसूदन पाटिल - हम सब एक है, सस्ता साहित्य भण्डार, नई दिल्ली-प्रथम, १९८७

१३०. मनोहर श्याम जोशी - इस देश का यारों क्या कहना, प्रभात प्रकाश दिल्ली-२०००

१३१. यशवंत कोठारी - हिन्दी की आखिरी किताब, श्याम प्रकाशन, जयपुर-प्रथम, १९८१

१३२. श्यामसुन्दर घोष - रोशन हाथों की दस्तकें, प्रज्ञा प्रकाशन, गोड्डा-प्रथम

१३३ श्रवणकुमार गोस्वामी - जगलतत्रम्, राजकमल प्रकाशन, नई-दिल्ली-प्रथम

१३४ सुदर्शन मजीठिया - पब्लिक सेक्टर का साँड, शान्ति प्रकाशन, आसन, प्रथम, १९८९

१३५ सुदर्शन मजीठिया - मुख्यमत्री का डण्डा, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ-प्रथम, १९७४

१३६ सन्तोष खरे - धूप का चशमा, प्रारूप प्रकाशन, इलाहाबाद-प्रथम, १९९८

१३७ ससारचन्द्र - सटक सीताराम, हिन्दी साहित्य ससार, नई दिल्ली-प्रथम, १९७६

१३८ हरिशकर परसाई - बेईमानी की परत, यूनिवर्सल बुक डिपो, जबलपुर-१९६५

१३९ हरिशकर शर्मा - शकर सर्वस्व, गया प्रसाद एण्ड सस आगरा-प्रथम, १९५१

आलोचनात्मक ग्रन्थ

१ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - चिता मणि भाग १-इन्डियन प्रेस पब्लिकेशन प्रयाग

२ आचार्य राम चन्द्र शुक्ल - रसमीमासा नागरी प्रचारिणी सभा काशी - तृतीय स २०१७

३ डॉ इन्द्रनाथ मदान - हिन्दी की हास्य व्यग्य विधा का स्वरूप और विकास हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग

४ डॉ. कमल किशोर - रवीन्द्र नाथ त्यागी प्रतिनिधि रचनाए-प्रथम-१९८७ पराग प्रकाशन दिल्ली।

५. स. कमला प्रसाद- ऑखनदेखी - वाणी प्रकाशन दिल्ली-द्वितीय सस्करण २०००

६. नगेन्द्र - रास सिद्धान्त नेशनल पब्लिकेशन्स-नई दिल्ली-प्रथम १९६४

७. नामवर सिंह - कविता के नये प्रतिमान - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम १९६८

८. डॉ. निशा अग्रवाल - भारतीय काव्य शास्त्र, लोक भारती, इलाहाबाद, प्रथम १९९६

९. डॉ. निशा अग्रवाल - सृजन शीलता और सौन्दर्य बोध-हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग-१९८५

१०. डॉ. निशा अग्रवाल - बाँकमालो के दर्शन -विभा प्रकाशन, इलाहाबाद- प्रथम २०००

११. पुष्पपाल सिंह - हिन्दी साहित्य-आठवाँ-दशक-सूर्य प्रकाशन-प्रथम १९८४

१२. डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी - हिन्दी का स्वातन्त्रयोत्तर हास्य और व्यग्य-अन्नपूर्णा प्रकाशन-प्रथम १९७८

१३ बालेन्दु शेखर तिवारी - हिन्दी व्यग्य के प्रतिमान-गिरनार प्रकाशन, मेहजाना प्रथम १९८८

१४ बालेन्दु शेखर तिवारी - व्यग्य ही व्यग्य-सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९८७

१५ डॉ वैरिस्टर सिह यादव - हिन्दी लोक साहित्य में हास्य और व्यग्य-राष्ट्रीय साहित्य सदन-लखनऊ-१९७८

१६ डॉ मनोहर लाल देवलिया - हरिशकर परसाई की दुनिया-साहित्य वाणी, इलाहाबाद - प्रथम १९८५

१७ डॉ मनोहर लाल देवलिया - हरिशकर परसाई-व्यक्तित्व एव कृतित्व - साहित्यवाणी प्रथम, १९८६

१८ डॉ मलय - व्यग्य का सौन्दर्य शास्त्र -साहित्यवाणी इलाहाबाद-प्रथम, १९८३

१९ डॉ राम विलास शर्मा - निराला की साहित्य साधना-भाग-२-राजकमल प्रकाशन दिल्ली-१९७२

२०. प्रा रा. वा. पाटिल - एकव्यग्यात्रा - आलोक सास्कृतिक अकादमी जलगाँव-प्रथम-१९८६

२१ रामस्वरूप चतुर्वेदी - हिन्दी नवलेखन - भारतीय ज्ञानपीठ-१९६०

२२ डॉ. वीरेन्द्र मेहदीरत्ता - आधुनिक हिन्दी साहित्य में व्यग्य-रिसर्च पब्लिकेशन्स - दिल्ली-प्रथम, १९७६

२३ श्याम सुन्दरघोष - व्यग्य क्या ? व्यग्य क्यो ?-सत्साहित्य प्रकाशन-प्रथम १९८३

२४. कमलेश्वर - नयी कहानी की भूमिका, अक्षर प्रकाशन-दिल्ली-प्रथम, १९६९

२५. प्रेमनारायण टण्डन - हिन्दी साहित्य मे हास्य-व्यग्य, हिन्दी साहित्य भडार लखनऊ-प्रथम, १९६१

२६. डॉ वा. रा. देसाई - स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबन्ध एवं निबन्धकार, चिन्तन प्रकाशन कानपुर-प्रथम, १९८७

२७. महावीर प्रसाद द्विवेदी - हिन्दी साहित्य में हास्य और व्यग्य, हिन्दी साहित्य भंडार-

लखनऊ-प्रथम, १९६७

२८ शेरजग गर्ग - व्यग्य के मूल भूत प्रश्न, सामाजिक प्रकाशन दिल्ली-प्रथम, १९७९

२९ स कमला प्रसाद - परसाई रचनावली, छ.-भाग, राजकमल, दिल्ली-प्रथम, १९८५

३०. शेरजग गर्ग - स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कविता में व्यग्य, सामाजिक प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, १९७२

३१ डॉ बरसाने लाल चतुर्वेदी - आधुनिक हिन्दी काव्य मे व्यग्य -दिल्ली १९७३

३२ डॉ हरिशकर दुबे - स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी गद्य मे व्यग्य, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम, १९९७

३३ सुरेशकान्त - नरेन्द्र कोहली-विचार और व्यग्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम, २००२

३४ स्मिता चिपणूलकर - हिन्दी के प्रमुख व्यग्यकार, अलका प्रकाशन कानपुर-प्रथम, २००१

३५. चन्द्र प्रकाश - रागदरबारी कृति से साक्षात्कार, सजय प्रकाशन, दिल्ली-प्रथम २००१

३६. डॉ मदालसा व्यास - हिन्दी व्यग्य साहित्य और हरिशकर परसाई, विश्वाविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी-प्रथम, १९९९

३७ राधेमोहन शर्मा - हरिशकर परसाई की वैचारिक पृष्ठभूमि, राधाकृष्ण प्रकाशन २००२

३८ विश्वनाथ त्रिपाठी - देश के इस दौर में, सम्भावना प्रकाशन इला सधोधित सस्करण-राजकमल प्रकाशन से-२०००

३९ सुरेश माहेश्वरी - स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी व्यग्य का मूल्याकन, विकास प्रकाशन कानपुर-प्रथम, १९९४

४०. संसार चन्द्र - हिन्दी हास्य-व्यग्य निबन्ध- रुपयात्रा किताब महल इलाहाबाद १९८१

४१. रमेश कुन्तल मेघ - आथातो सौन्दर्य जिज्ञासा- वाणी प्रकाशन २०००

४२ रमेश कुन्तल मेघ - क्योंकि समय एक शब्द है - लोक भारती, इलाहाबाद-१९७५

पत्र-पत्रिकाएं

- आजकल-दिल्ली
- आलोचना- दिल्ली
- ज्योत्सना-पटना
- धर्म-युग- बम्बई
- नई-कहानिया-इलाहाबाद
- नई-दुनिया-इन्दौर
- नवभारत टाइम्स-बम्बई
- प्रकर-दिल्ली
- रग-बम्बई
- रग-चक्ल्लस-बम्बई
- वीणा- इन्दौर
- व्यग्यकार-रायपुर
- व्यगयम्-जबलपुर
- व्यग्यविविधा- हिसार
- व्यग्यशती-रायपुर
- समीक्षा-पटना
- समय-चेतना-दिल्ली
- साप्ताहिक-हिन्दुस्तान-दिल्ली
- हरिगधा-चण्डीगढ
- हास्यम्- बम्बई
- हिन्दी एक्सप्रेस- बम्बई

अभिनन्दन-ग्रन्थ

- व्यास-अभिनन्दन-ग्रन्थ
- स्मारिक - (१९८२)-२-३ अक्टूबर प्रगति शील लेखक सघ का आयोजन
- डा बरसाने लाल अभिनन्दन, डॉ प्रकाश चतुर्वेदी

शब्द कोश

- नालन्दा विशाल शब्दसागर
- लघु हिन्दी शब्द सागर
- वृहत अग्रेजी हिन्दी कोश-भाग एक हरदेव बाहरी
- आक्सफोर्ड इगलिश डिक्शनरी
- इनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटानिका